संपादक को बतयाव

हम बुन्देली-बुन्देली चिल्ला रये बरसन से बुन्देली में लिख पढ़ रये और वे कै रई अपने छुटके से के तुमौ तो बा गटर- पटर बोली बोलने है जौन अंगरेजी कहाउत है । ई के लाने तुमैं अंगरेजी मीडियम में डारो है, पइसा खरचा कर रये है, सो जो सब जो बुन्देली बोलबे कर रये का? अब देख लो वे काय कै रई, अब तो हिन्दी बोलबो सोई अच्छो नईं लग रओ । हम जा साफ-साफ और ईमानदारी वारी बात या कै रये है के जो हो रओ है सो लगन लगत है के हम तो धार के विरोध में तैर रये है - पे करने परहे - तैरने परहे। काय से के जो हमें दिखात है के यदि बोली-बानी रई तो हमाई बुन्देली पहचान रै जैहे नईं तो कौन सी पहचान और कौन सी संस्कृति सब डूब जैहे। सो भईया पैले तो बुन्देली खों घर में शुरू करने है कछू झिझक नईं मानने । हम जा नईं कै रये के और कौनऊँ भाषा नई सीखने। खूब सीखो। खूब बोलो पे बुन्देली पे रोक टोक नें लगाव । जा सोई अपनी मतारी आय । नयें लोगन से ईको परिचय कराओ जानो जरूरी है।

हमाई जा चिन्ता ईसें और भारी हो उठी है के जिनने बुन्देली के लाने अपनी पूरी जिन्दगी खपा दई अब वे हरें-हरें खिसकत जा रये । अबई-अबई ऐसे चार जने हमाय बीच से परलोक सिधार गये । गुणसागर सत्यार्थी, कैलाश बिहारी िद्ववेदी , दुर्गेश दीक्षित और शिरीष जी ऐसेई रचनाकार हते जिनने बुन्देली की नोनी पताका फैराई । देस देसांतर तक में इनने बुन्देली को नांव करो । खूबई कवितायें बुन्देली में रचीं और सुनाई, बुन्देली शब्दकोष रचे, बुन्देली की पत्र-पत्रिकायें निकारीं। ऐसे गुनइन लोंगों को जावो बुन्देली की बड़ी हान है। हम तो उने श्रद्धांजली दे रये हैं पे वे जोन रस्ता पे चले ऊ रस्ता पे हमें चलने को संकल्प सोई लेने है। अपने बाल-बच्चों में बुन्देली के लाने प्रेम सिखाऊने है।

'बुन्देली दरसन' आपई सबकी किरपा पर परसाद से चल रई है। लेखकगण हमें अपनी रचनायें भेज देत हैं जा उनकी बड़ी अच्छी भावना है के वे हमाई ई पत्रिका खों अपने दिल से चाउत हैं और ऊकी चिन्ता करत हैं । जब बुन्देली की अच्छी-अच्छी पत्रिकायें बंद होत जा रईं तब हम जा पत्रिका निकार रये हैं। बड़ौ कठन होत जा रओ जो सब काम, पे मन में ठान लई सो ठान लई। पांव पछारूँ नईं धरने । समय बदलत रात सो सबई बदल जात है ई बदलाव को हम सुआगत करत हैं । पे जा सोई कात के शबद ब्रह्म आय

ऊको सोई कछू धियान रखो जाबे। जोन जमीन पे रे रये, जोन को पानी पी रये, अन्न खा रये, पैन ओढ़ रये ऊ जमीन को संबंध सोचो तनक-मनक तो बुन्देलखण्ड से है और जाकी बोली-बानी आए बुन्देली। सो कछू बुन्देली के लाने करबो सोई जरूरी है और ई पत्रिका को निकारबे को जोई उद्देश्य रओ के हमें बुन्देली के लाने कछू करने है। आप सब विचार करो के तुमाई 'बुन्देली दरसन' यदि बन्द हो गई तो ई ऐरिया खों रोशनी देवो वारो एक झरोखा बन्द हो जैहे। सो आप सब जनन खों ईये विचार करने है।

आगे अब अंक आपके हाथ में आप अपने विचार हमें जरूर भेजियो । ई पत्रिका खों निकारबे में जिनने सहयोग करो है वे हैं डॉ श्यामसुन्दर दुबे जो कि साहित्य के उजयारे नखत हैं और अपने महामहिम राष्ट्रपति द्वारा जो सम्मान पावे वारे हैं उनने ई पत्रिका के संपादन में न भुलाबे वारो हमाओ सहयोग करो है- सो उनखों भगवान और आगूँ बढ़ाउत रहे ये हमाई कामना है।

संपादक

23

2023

रोशनदान

जादातर खिड़कियों पे रोशनदान बने रात है जे आकार में बहुत छोट होत हैं। दीवार की ऊंचाई पे जे चौखटे आकार में होत हैं। जे बन्द नई करे जात इनमें से रात दिन उजियारो और बेहर आउत रत। जे भले बाहर वालों को अन्दर को कछू दिखा नई पाउत पे अंदर की गंध अंदर को थोड़ो बहुत हल्ला गुल्ला इनसे झिरपत रत है जो घर की पूरी तासीर बता देत है पे घर की दीवारों पे रोशनदान तो बड़े जरूरी हैं तो अबकी बेर हम रोशनदान में कछू चिठ्यिां रख रय हैं हमाय पुराने घर को पूरो जायजो ई रोशनदान में आपको मिल जेहे।

1. मोहन 'शशि'
2. शिवभूषण सिंह गौतम 'भूषण'
3. डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त
4. उमाशंकर खरे 'उमेश'
5. चन्द्रप्रकाश पटसारिया
6. डॉ. कुंजीलाल पटैल मनोहर
7. डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'
8. डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही'
9. दीनदयाल तिवारी 'बेताल' (ता)
10. सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव 'सुमन'
11. राजीव नामदेव 'राना लिधौरी' राना
12. डॉ. एल.आर. सोनी 'सीकर'

सभी पेज पर 2023 करें।
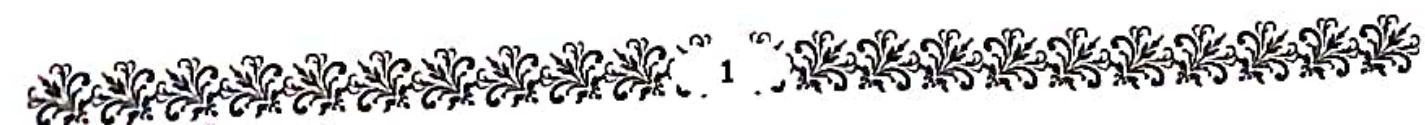
परम आदरणीय अग्रज डॉ. मनमोहन जी पाण्डे
सम्पादक- 'बुन्देली दरसन' हटा
कर जोड़ विनत प्रणाम

बुंदेली दरसन की जै-जै

कल-कल, छल-छल बहती दूधाधार और प्रेरक हरीतिमा शोभित श्रृंगार लिये 'बुन्देली दरसन 2021' का अंक हाथों में आया, अंक का आमुख ही बहुत आया। सम्पादकीय में इस वय में भी आपके हौसलों की उड़ानों और हमीर सी हठ- 'ने भरे 'बुदेली मेला' पे 'बुंदेली दरसन' को अंक जो निकरहे' ने, बुंदेली के प्रति आपके समर्पण ने झकझोर दिया।

'चौपड़ा,' में बुंदेली वैभव के हर लेख ने प्रभावित किया। 'बिहर' में समाहित आठों कहानियां 'कहते नहीं बनता क्या कहिये' एक से बढ़कर एक। 'बहू हो तो गुनन में आगर, पथरा के पांव और मछला का विवाद, आशा है कि रंगमंचों पर धूम मचायेंगे और इस 'तलैया' को धन्य बनाएंगे। दोहों, मुक्तकों, गीतों, गजलों, कविताओं से भरी 'झिरिया' की रचनाएं पढ़ते-पढ़ते लगा- 'कैसी करिये एसों... जियरा पराये बस हो गए।' कुछ रचनाओं का जादू तो सर चढ़ बोल रहा है। 'पुखरा' इस बात का प्रमाण है कि आपका संयोजन, समर्पण और श्रम सार्थक हो रहा है।

'बुंदेली दरसन' का हर अंक पढ़ा जा रहा है, उसकी रचनाएं पाठको को कहीं गुदगुदा रही है, कहीं हंसा रही है तो कहीं ज्ञान और चिंतन की खिड़कियां खोल प्रेरणा के पुण्य खिला रही है। मेरी दृष्टि में आपका यह प्रयास बुंदेलखंडियों और बुंदेली प्रेमियों के मध्य चंदन चर्चित होगा। एतदर्थ आपका अभिनंदन...वंदन।

मोहन शशि
वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार,
सूत्रधार 'मिलन' संस्था गली नं.2,
शांतिनगर (दमोहनाका), जबलपुर।

बुंदेली दरसन के प्रति

सन् दो हजार इकइस बसंत की छाया।
बुंदेली दरसन अंक चतुरदस पाया।।
अवगाहन कर मन हुआ प्रफुल्लित ऐसे।
सदियों से बिछड़ी निधि पाई हो जैसे।।
झिरिया, पुरखा, चौपरा औविहर तलैया।
राखी सहेज सॉची सम्पादक भइया।।
बुंदेली बानी को पानी लहरावै।
इतिहास, संस्कृति परम्परा दिखरावै।।
किस्सा कहानियाँ लोकरीति की बातें।
व्याहे बरात में 'बाबा' वाकी रातें।।
चन्देरी का इतिहास हटा का परिचय।
माड़व गढ़ का अस्तित्व करें निर्झर तय।।
जितना जो कुछ भी श्रेष्ठ जहॉ से पाया।
एकत्रित कर पत्रिका रूप छपवाया।।
नइ पीढ़ी परिचय पाय पुरा वैभव से।
संकल्प रहा संपादक का शैशव से।।
यह सदप्रयास आगे भी रहे निखेर।
वर्धक्प भाव कर सके न कोई अंतर।।
मनमोहक मनमोहन जी की मेहनत है।
'भूषण' भावत सादा चरणों में नत है।।

भवदीय
शिवभूषण सिंह गौतम 'भूषण'
अन्तर्वेद, कमला कालोनी
छतरपुर (म.प्र.) 471001
मो. 9826756929

'बुंदेली दरसन' प्रकाशन हेतु शुभाशंसा'

आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त
एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), स्वर्णपदक प्राप्त पी.एच.डी.
सेवानिवृत्त प्राध्यापक (संस्कृत)

कीरति मनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।। रा.च.मा. 1-13-9

वाणी का बड़प्पन उसके लोक कल्याण में निहित होता है। 'साहित्य' परम कल्याणकारी संरचना है। वर्षो से 'बुंदेली दरसन' पत्रिका का प्रकाशन मानव-समाज के समक्ष श्रेयप्रद साहित्य के रूप में रहा है। मानव-जीवन का उद्देश्य पुरुषार्थ-चतुष्टय की उपलब्धि
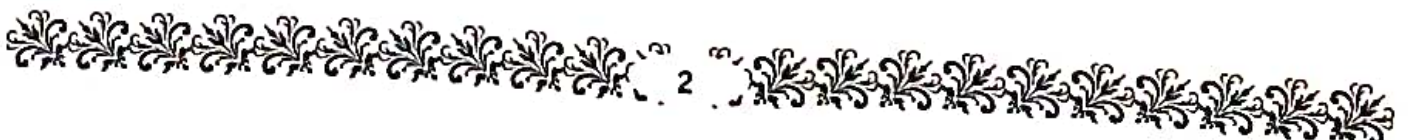
।'बुंदेल दरसन' पत्रिका उक चारों की सन्निधि लोक के हित में प्रस्तुत कर महत कार्य में संरत है।

सद् साहित्य श्रेष्ठ सत्संग का कार्य करता है। वह व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारता है और उसके प्रेय तथा श्रेयार्थ सन्मार्ग भी प्रशस्त करता है।'बुंदेली दरसन' उद्व के पोपण के रूप में प्रदृष्ट है।

'बुंदेली दरसन' पत्रिका की सबसे बड़ी विशेपता मृदुल बुंदेली संस्कृति का संरक्षण कर माधुर्य पूर्ण बुंदेली वाणी को सरल सहज भाव से प्रश्रय देना है। इस पत्रिका में नैतिक मानों के साथ विविध विषयों के परिज्ञान हेतु सुचिन्तन भी दृष्टव्य है। यह पत्रिका प्रद्योतित करती है, कि अपनी बोली या अपनी भाषा सर्व-समुन्नति का मूल है। अत: इसे हृदय से अपनाना चाहिये। यथा, महाकवि भारतेन्दु जी ने कहा है कि- उन्नति

'निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भापा ज्ञानके, मिटत न हिय को शूल'।।

अस्तु, संस्कृति-संरक्षण, सामाजिक-समरसता, विविध विषयक ज्ञान, प्रकृति प्रेम, देशभक्ति, बुंदेली साहित्य-समृद्धि आदि दृष्टियों से यह 'बुंदेली दरसन' पत्रिका परमोपादेय परमोपयोगी तथा महत्वपूर्ण है। इस हेतु इस पत्रिका के परम यशस्वी सम्पादक सम्भावनीय डाक्टर मनमोहन पाण्डेजी को हार्दिक शुभकामनायें, आभार एवं धन्यवाद।

इतिशम्

प्रस्तोता-निवास- श्रीमती लक्ष्मीगुप्ता-भवन,
उद्योग विभाग के पास, सिविल लाइन्स,
दतिया (म.प्र.) 475661

बुंदेली साहित्य, संस्कृति एवं कला पीठ पृथ्वीपुर (निवाड़ी) म.प्र.

प्रति,

आदरणीय डॉ. श्री पाण्डेय जी

सादर प्रणाम

मान्यवर,

आपके कुशल सम्पादन में प्रकाशित बुन्देलखण्ड की ख्यातिनाम बुंदेली पत्रिका 'बुंदेली दरसन' एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसका हम सभी पाठकों को स्तवन करना चाहिये।

बुंदेली भाषा में प्रकाशित इस पत्रिका में जहाँ हमें बुंदेली साहित्य, संस्कृति, कला, पुरातत्व, पर्यावरण आदि की सुरूचि पूर्ण जानकारी पढ़ने को मिलती है वहीं बुंदेलखण्ड की अनेक ऐतिहासिक घटनाओं को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त होता है।

आपका यह सद् प्रयास स्तुत्य एवं अभिनन्दनीय है। सपरिवार स्वस्थ सानन्द की कामना।

- उमाशंकर खरे 'उमेश'
बोट क्लब के पास
राधा सागर तालाब पृथ्वीपुर
जिला निवाड़ी (म.प्र.)

बुंदेली दरसन पत्रिका-

सम्पादक श्रद्धेय परमादरणीय पाण्डे जूको

बुंदेली दरसन से हमने,
पौर उसारे गजियारे मँझयाये।
बरा कड़ी आंवरिया हिंगोरा,
पछयावर, भात, पापर भुंजवाये
पाण्डे साहित्यकार सम्पादक,
घर घर लिख किताब पहुँचाये।
रीति नीति और गीत बुंदेली,
संस्कृति रक्षा कर आप बचाये।

- चन्द्रप्रकाश पटसारिया
महा. राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित पूर्व प्राचार्य
इन्दरगढ़ जिला दतिया म.प्र.
मो. 9893678267

बुंदेली दरसन में लोक धरोहर का प्रदर्शन

बुंदेली की महान आत्मा डॉ. एम.एम. पांडे जू. अपुन बुंदेली दरसन के माध्यम से बुंदेलखण्ड के चौपरा, विहर, तलैया, झिरियाँ पुरखा जैसे स्तंभों में मौलिक लेख, लोकगाथाएं, लोककथाएं, कहानियां, कविताएं एवं भांति-भांति की झलकियां, झाकियां प्रकाशित कर बुंदेली मनीपियों की रचनाधर्मिता के साथ अनुशीलन को धरोहर को विलुप्त होने से बचाने के लिये भगीरथी धर्म का स्तुत्य प्रयास अपने तन, मन और धन से कर रहे हैं। अपुन की इस सेवा के लोकरिण से आने वाली पीढ़ियां कभी उरिन नहीं होंगी।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. कुंजी लाल पटेल 'मनोहर'
रेडियो कालोनी के सामने गली नं.01
पन्ना रोड छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9425879773

।। सम्मति ।।

विगत ..... वर्षों से बुंदेली संस्कृति व साहित्य का दिग्दर्शन कराने वाली स्तरीय पत्रिका 'बुंदेली दरसन' का प्रकाशन अनुभवी, कर्मठ व विद्वान संपादक श्री मान एस.एम. पाण्डेय जी करते आ रहे हैं। यह एक गौरव की बात है। क्योंकि बुंदेलखंड की सभ्यता व संस्कृति तथा साहित्य से संबंधित पत्रिकाओं का नितांत अभाव हो गया है। विगत कोरोना के संक्रमित काल में दो वर्ष खाली गये। सागर से श्री. के.के. जैन द्वारा संपादित 'ईसुरी', नर्मदा प्रसाद जी गुप्त द्वारा प्रकाशित मामुलिया, तथा सुरेन्द्र जी शर्मा शिरीष की आथाई की बातें व कन्हैया लाल शर्मा कलश द्वारा प्रकाशित 'बुंदेली वार्ता' पत्र इसी दुनियां की कृतियां रही हैं जिन सबकी पूर्ति वयोवृद्ध संपादक श्री एस.एम. पाण्डेय जी एक युवा हृदय का जोश व ऊर्जा लिये 'बुंदेली दरसन' आप, हम सब तक पहुंचा रहे है। यह अत्यंत स्तुत्य कार्य है। बुंदेली बानी झांसी डॉ. आर.एन. शर्मा द्वारा प्रकाशित तथा 'बुंदेली बताशा' डॉ. डी.आर. वर्मा द्वारा संपादित व प्रकाशित होने वाली पत्रिकायें भी नियमित नहीं निकल सकी। बुंदेली संस्कृति साहित्य सभ्यता को चित्रित करके हम सबको यथार्थ में दर्शन कराने वाली पत्रिका 'बुंदेली दरसन' है। आज के इस भौतिक वादी युग में मोबाइल व दूरदर्शन के कुप्रभावों से बुंदेली संस्कृति चोटिल होकर कराह रही है। ऐसी पत्रिकायें उसे संजीवनी का काम कर रही है। बुंदेली साहित्य के अनेक अछूते आयाम, इतिहास का आइना तथा वर्तमान युग की मांग के अनुरूप यथेष्ट सामग्री 'बुंदेली दरसन' से सुधी पाठकों को मिलती है। इसके उत्तरोत्तर क्रमिक विकास की समस्त शुभ कामनाओं के साथ संपादक व समस्त सहयोगियों बहुत-बहुत साधुवाद।

- दयाराम शर्मा बेचैन
पी.एच.डी.
स्मायरी झाँसी उ.प्र.

आदरणीय,

पाण्डेय जी

सम्पादक बुंदेली दरसन

मान्यवर,

आपुन की पठाओ भओ बुंदेली दरसन कौ वर्ष 2021 कौ अंक मिलो पढ़कें जी खिलक उठो। जीमें चौपरा, झिरिया, तलैया, पुखरा, सबइ में भरी पीठर भाँई नीकें भीतइ नोंनी लगी। बन्न-बन्न की किसायें, लेख संस्मरण, कवितायें भीतइ मनें भाँईं।

अंक कौ प्रकाशन बन्न बन्न के बहुआयामी औ सजे-सजाए रूप में सौंहूँ आओ। जौंन आशा के अनुरूपइ नईं संभावना सें बढ़कें गओ। जगाँ-जाँ चावनें उतै चित्रावली बिना कंएं सब कछू कै डारत।

अंक बुंदेली भाषा साहित्य, संस्कृति, संस्कार, आचार-व्यौहार दरसन सें समजबे समजाबे बारी जानकारी प्रकाशित कर अपुन नें अपनें कुशल संपादकीयता से संगै-संगै बुंदेलखण्ड कौ पूरी दर्शन करा दओ ईके पैलाँ जोंन पत्रिकाएं छपत रईं उनमें हम जो कछू नईं पापाए, वौ सबइ कछू ईमें पाकें जी गद-गद हो गओ। हम चाउत है कै सबै ती ऑगूं भविष्य में ई पत्रिका में सबइ कछू बुंदेलिअइ में छपै तौ और साजी राय।

ई तरा की ऐसी नोंनी पत्रिका कौ संम्पादन करवे सें अपुन हमाए लानें बड़वाई के पात्रइ नँईं समादरणीय सोउ हैं।

भवदीय
राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही'
शारदा विद्या मंदिर छतरपुर म.प्र.

परम श्रद्धेय डॉ. पाण्डे जी

सादर चरण स्पर्श

मैंने बुंदेली दरसन 2021 बाँची नौ मोय ऐसी मिठास सौ अनुभव भव जैसे कौउन सुरीरी मिठाइ मो मे घुर रइ होय सबइ रचनाकारों और लेखको ने पाठक गणों के सामने अपनी रचनायें और लेख रखे है उनकी जित्री तारीफ करी जाय उतनइ थोरी है। और आप जैसे महापुरुष विद्वान और मनीषी सबखो एक संगै लैके हल रय सोजी प्रयास अनुकरणीय और प्रसंसनीय है। पोथी में वर्णित सामग्री ज्ञानदायनी, प्रेरणादायनी है। ईकी तारीफ करने की मोरे लिंगाँ सौनउ शब्द नैयाँ। और ई उम्र में आप सबइ लेखकों, रनाकारों खो बुंदेली के प्रचार प्रसार के लाने प्रेरित कर रय सो आपकी सबरी गतिविधियाँ वंदनीय है। ईश्वर आपखों लामी उमर देवै और स्वस्थ रखे ऐसी मोरी ईश्वर से विनती है। अंत में सबइ मनीषियों विद्वानों और पाठकगणों से मोरी राम-राम

धन्यवाद
दीनदयाल तिवारी बेताल
श्री सिद्धबाबा कालौनी टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9893153534

परम आदरणीय, पाण्डेय जी

सादर प्रणाम

आप द्वारा सम्पादित 'बुंदेली दरसन' का पिछला अंक प्राप्त हुआ पढ़कर मन प्रफुल्लित हो गया। आपके सम्पादन की कला निश्चित रूप से सराहनीय है। सभी प्रकार के लेखकों, रचनाकारों को आपने 'बुंदेली दरसन' में स्थान देकर सभी का सम्मान किया है।

र पालिका के सहयोग कि बिना भी आपने 'बुंदेली दरसन' के काशन का जो निर्णय लिया है वह अत्यंत सराहनीय है क्यों कि बुंदेली दरसन' से हजारों पाठकों की आस्थायें भी जुड़ी है।

बुंदेली भाषा, बुंदेली संस्कृति तथा बुंदेली विद्या को जीवित खने का आपका प्रयास धन्यवाद के योग्य है। बुंदेली लेखकों, चनाकारों के मनोबल को बढ़ाये रखने का आपका प्रयास अद्वितीय है जो आगे मील का पत्थर साबित होगा। हम सभी लेखकों, रचनाकारों, साहित्यकारों की ओर से आपका शत-शत नमन करते है, वन्दन करते है।

सुरेन्द कुमार श्रीवास्तव 'सुमन'
कुसमरा (नावली) जालौन
मो. 9415924778

परम् आदरणीय डॉ. मनमोहन पांडेय जू
संपादक- 'बुंदेली दरसन' स्मारिका
'सादर चरण स्पर्श'

डॉ. मनमोहन जू पांडे कै नौने संपादन से छपत भई पत्रिका 'बुंदेली दरसन' कौ हरेक अंक सुदया से धरवे लाग होत है। इतैक विलात रचनाएँ पढ़वे खौं एक संगे मिल जात है। जो एक शोध के कम नइयाँ। ई पौथी के सबई तरां कौ बुंदेली साहित्य पढ़बे खौं मिल जात है।

ई उम्र के भी डॉ. पांडे जू बुंदेली की सेवा कर रय वे भौतई बधाई के हकदार है। आप बुंदेली साहित्य को भंड़ार हर साल भर रय है।

'बुंदेली दरसन' कै सफल संपादन के लाने हम डॉ. मनमोहन जू पांडे खँ को भौत-भौत बधाई देत है के आप ई को प्रकाशन करकें बुंदेली वोली और ई बुंदेली माटी कौ ऋण चुका रय।

जय बुंदेली-जय बुंदलखण्ड'
'धन्यवाद'

राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'
संपादक 'आकांक्षा' पत्रिका
अध्यक्ष-म.प्र. लेखक संघ, टीकमगढ़
शिवनगर कालौनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)-472001
मो. 09893520965

'बुंदेली दरसन' बोलती है- (सोरठा)

1. 'बुंदेली दरसन' हाथ सन् 2021 भी छपा गेट अप भी है श्रेष्ठ बहुरंगी वृत में दिखे।
2. संपादकीय के भाव तीन पृष्ठ भी कह रहे हृदया पांडे जू श्रेय चार शीर्ष के दिख रहा।
3. 'चौवारा' के शोध 24 की संख्या वनी, डॉ. खरे, का मिनी लेख नयानयापम भी लिये।
4. 'विहर' भी कहनी खण्ड 8मी प्रतिभागी वने। नायक कहा सुधौ लक्ष्मी भाजा सन्ही लीरै।
5. 'तलैया'- एकांकी सूझ है तीन मी वान कर रहे। माणक मछला व्याहे उत्तम भी है।
6. झिरिया भी कविताओं वन पड़ी। 20 मी हीरा कवि छ्दो की खान है। 20 कवि हीरा मिले। एक से वढ़कर एक गोस्वामी माटी वर्तन अच्छे लगे।
7. 'पुरवा' पत्रण का सार 10 न भी कुछ-कुछ लिखाए। 135 पृष्ठ किताब सीकर भी दे लिखद है।

डॉ. एल.आर. सोनी,
(सीकर भवन) न्यू दतिया पब्लिक स्कूल, ठंडी सड़क, दतिया
म.प्र. 4766
मो. 4938304850

झरोखा

'राम झरोखा बैठकर सबका मुजरा लेय' जा बात कवि पे भी लागू होत है ऊ सोई सबकी बातें अपनी कविताई में कै देत है। झरोखा घर की दीवार में ऐसो बनाओ जात है के एक बड़ी खिड़की जैसो होत है पे खिड़की दीवार में ऐसो बनाओ जात है के एक बड़ी खिड़की जैसो होत है पे खिड़की दीवार में सीधे-सीधे रहत है जबके झरोखा में नीची जग्गा पे बैठवे एक चौंतरिया बनी रात है। एई चौतरिया पे आप बैठो और बाहर को सब कछू देखो अच्छी उजयारो आऊत है और बैहर खूब लगत है। सो झरोखा मन खों सुख देवो वारो हैं। ई झरोखा में आप वरन-वरन की कवितायें पढ़ों जिनमें जीवन-जगत को सब रस भरो है।

झरोखा

कलयुग के जे जुलम रामजी, अब तो सहे नें जाएं

– मोहन शशि

कलयुग के जो जुलम-सितम, अब देखे-सुने न जायें,
कलम खून के अंसुआ ढारे, अक्षर शब्द डरायें।।
जे सुन्दर ललना सुकुमारी, फूलन जेंसी प्यारी,
पढ़-लिखकें गुनवारी, काम-धाम हो रहीं अगारी।
केऊ जघा लरकियां, दे रई हें लरक खों मात,
जरे-बरे जा रये, उनको सुख काए न देखो जात।
छेड़त, पल्लू खेंचत, करत इशारे रे अश्लील,
कहूं पे कांटे, कहूं पे बिटियन छाती ठोंकत कील।
बेलन सें बरछियां भोंक रये, बिकट बिष बुझे बान,
जो है हिन्दुस्तान, न सपने बनहे रे तलवान।
किते जा रहो देश, बहक कें किते जा रहे हो तुम,
आज की नारी नें सह पाहें, बैठ न रेहे गुमसुम।
कुटम-कबीलन खाते, काये परस रए कबरसतान।
चेत जाव, नई ते धर लो को, मिटहे नाम-निशान।
पल दो पल की मस्ती, कारे बदरा जीवन छायें,।
कलयुग के जे जुलम रामधई, देखे-सुने न जायें।
महातारी, भौजी, बहना-सी, मानों रे हर नारी,
जनम देत, पालत-पोसत हे, बड़ो करत अवतारी।
मौंसी, माई, बुआ, एई नारी तो है घरबारी,
सास एई, सरहज हे एई, एई हे नोंनी सारी।।
अपने नातन खों तो राम, का खा औरन खों रावन,
देख अकेली, बिना देर, तुम झपट पड़त हो खावन।
चीतकर नें सुनत दरिन्दो, सुनत नें हाहाकार,
मौज मना, पिटरोल डार कें, केंसे करत सिंसकार।
कौन भूत चढ़ जात मूंड़ पे, खेलत खूनी फाग,
मानवता पर दाग लगा, फिर गात दया को राग।
भीख दया की मांगत रई, बा बिटिया सोई घिघयाकें,
तब नें दया समझ आई, अब का होनें पछताकें।
अट्टहास वे याद करो, अब काए मोंह लटकायें,
कलयुग के जे सितम रामजी, देखे-सुने न जायें।।
सीखत किते चाल शैतानी, नारी जात फंसात,
दीन-धरम धर ताक पे वैरी, नोंच-नोंच फिर खात।
कांड 'निर्भया' भओ, लगो अब हूहें ने बलदान,
जो देखो तो, रक्तबीज से बढ़त जात शैतान।
अंग-अंग पोलत मोंड़िन के, करत हें टुकड़ा-टुकड़ा,
वन-बीरानन फेंकत, खोजे-खोजे मिलत ने मुखड़ा।
फंसा, कार में कई कोसन लो, ले गए दुष्ट घसीट,
नाखूनों सें मूंडे लो, छिल गओ पेट ओर पीठ।
कित गओ भेजा अरे रामजी, कित गओ हाय करेजा,
छाती फाड़त खबर, सुन्न सो पड़ गओ पूरो भेजा।
चालीसक भए घाव, क्रूर-करतूत विकट बेढ़ंगी,
चिथी-बिथी हो कपड़ा उड़ गए, लाश पड़ी रई नंगी।
कंस समान कुकर्मन की, के मोंह सें कथा सुनायें,।
कलयुग के जे जुलम-सितम, अब देखे-सुने न जायें।।
इन पिशाच बेपीरों पे, रए की मस्ती के साये,
दर्द भरी चीखों को, भीख दया की नें दे पाये।
आंखन होउत हो गए अंधरा, कानन होउत बेहरा,
कोन नशा सिर चढ़ नाचत रओ, को जिन दए तो पहरा।
एक अकेली बा-लाडो, ढ़ो रई ती घर को भार,
टोके संगे तुमनें तो, घर भर खो डारो मार।
पूत नई, जे तो कपूत सें, बढ़के हें कुलघाती,
इनको छातिन पे चढ़वादो, ढूँढ़के पागल हाथी।
शेर, बाघ, भेड़ियन के आंगे, जीते जो फिकबाव,
नई तो डुंडी पीट, फेंकदो इनखों जरत अलाव।
'जेंसी करनी-वेंसी भरनी' जब लो नें कर पाहो,
जे तो गदर मचेंहें, तुम बस हांत मलत रह जाहो।
कोई उपाय करो, जे दुश्मन, घोर नरक पड़ जायें।
कलयुग के जे जोर जुलम, अब देखे-सुनें न जायें।।
एक द्रोपदी लाज खों लेकें, भारी भओ महाभारत,
इते फांस नें गड़त, हजारन बिटियां रोजई मारत।
तन-मन छलनी करत, मिला धर देत हें माटी-धूर,
राक्षसपना तो देखो, भूंज देत भरकें तन्दूर।
ऊँची अटरियन सें फेंकत, ओर गोली मार उड़ात,
ज्हर देत, फांसी पे टांगत, नदिया, कुआं डुबात।
बड़ी घिनौनी तरकीबन सें, मारी जा रईं बिटियां,
आखें मूंदे कब लो सोहो, कब गड़हें रे मकियां।
जब सब मटियामेंट होत, तब जागत पुलस, प्रशासन,
मरे को शोक मनाउत तक में, आड़े आत अनुशासन।
हम जागें, तुम जागो, जागे मिलकें सकल समाज,
तबई चिरैयां जी पाहें, घुट-घुटकें मरहें बाज।
सिंसकार सूरज उगायें, नित नओ सबेरो लायें।
कलयुग के कसाइयतपनो अब तनक सहे न जायें।।

नारी है तो नर हे, नर हें तो जानों हें नार,
दोनऊं हैं तो चल रओं हे, दुनियां को कारोबार।
जियन देव बिन डरे उनें, दे दो समान अंधयारें, अधिकार'
भेंटो नारिन खों उजयारो, हर लो हर अंधकार।
कलयुग की जे सीता-राधा, बाधा बिन जी पाएं,
जागे सभ्य समाज, सभ्यता की सब अलख जगाएं।
नारी सोई अपने में दुर्गा, दुर्गावती जगाबें,
आड़ें आबे दुष्ट तो, झासीं की रानी बन जाबें।
सुनों! ल्दे अबलापन के दिन, तुम सबला हर हाल,
जगो, भरो हुकार, मचे दुष्टन खेमों भूचाल।
बिन्ना! बिन सोचे-समझे, आगी ने डारो हाथ,
बार नें बांको कोई कर पाहे, हें सहाय रघुनाथ।
जनता ओर जनतंत्र जुरें, जे भूत नें उमछा पायें।
कलजुग के जे जुलम-सितम, अब देखे-सुने न जायें।

– मोहन श[illegible]
वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार, सूत्रधार 'मिलन' सं[illegible]
गली नं.2, शांतिनगर (दमोहनाका) जबल[illegible]
मो. 94246589[illegible]

फागुन मइना ललित बसना

बसंत

– राम गोपाल प्रजापति 'अनजान'

फागुन मइना ललित बसन्त, कोइलिया पंचम सुर बोलै।
बिरछन के पियराने पात, हबा के चलतन टूटत हैं,
डारें हो गईं नग्ड. धड़ग्ड., उनन में कोंपें फूटत हैं,
पतझर भऔ बगैचन-बाग, पतोरा इतै-उतै डोलै। फागुन0।।
खेतन में सरसों फुलयात, छटा देखत मन हरसाबै,
परपट चना, गेंउँ की बाल, फूल अरसी कौ मन भाबै,
भौरा उड़-उड़ लेत पराग, फूल अपनौ जब मौं खोलै। फागुन0।।
ठाड़े खेत रखायँ किसान, घरउअन कों संगै लेबें,
भर कें गुफना मारें तान, चरेरू बिलगाइयाँ देबें,
गवें कछू मन चले फाग, सुनत मिसरी सौ रस घोलै। फागुन0।।
नदियन, ताल, तलइयन झुण्ड, मछरियन के किलकार भरें,
बैठे बगला, ढेंका पार, एकचित हो के ध्यान धरें,
है किटकोला धुन में मस्त, पेड़ पै डारन कौं कोलै। फागुन0।।
मौंड़ीं-मौंड़ा खेलत गेंद, फिरत दौड़े खरयानन में,
बहुयें-बिटियाँ भरीं हुलास, लेयँ हरयारी खेतन में,
कोउ हँसिया सें काटै घास, कोउ-कोउ खुरपी सें छोले। फागुन0।।
बीती ठण्ड चाँदनी रात, सुहानी मौसम आ गओ है,
बूड़े डुकरा और डुकरियन, बेचारिन कौं सुख भओ है,
भइया रइयो नईं 'अनजान' भजत रइयो अब बमभोलै। फागुन0।।
फागुन मइना ललित बसन्त, कोइलिया पंचम सुर बोलै।

1288 सन्तोषी माता मन्दिर के पास,
राजेन्द्र नगर उरई (जालौन)
मो. 9450708750

अटकाऊ फागें

– अभिनन्दन गोइल

भौंरा काय न चम्पै चाहै, ई कौ कारन का है।
स्सारी में सब कोऊ जाने सुधर फूल चम्पा है।
के कछु जहर भरो चम्पा में, कै कछु रार बढ़ा है।
तजन पराग काये से मधुकर, माने कौन वृथा है।
दसानंद के गुरू गंगाधर, साँची भेदवता है। (1)
मोरो जौ अटका परचानों, होय तुमहारौ जानौ।
देव की चुल में नाहर घुस गऔ, रोवे ठांड़ौ दानो।
बंदरा रओ पकर पटवारी, नौरा रोवै थानौ,
हिरना तौ पेड़ो पै चढ़ गओ विधना पेरे गानौ।
गंगाधरा मोहलत दई तुम खां बरस बरस रोज लो छानो। (2)
हरि कौ सिंधु सुता मन मोहे! च्रन कमल चित सोहे।
तीन मीन पालीस चंद में मनो राह बैठो हो।
चार चकोर सात है खंजन, सुक्र सनीचर दो है।
गंगाधर गावें दंग में, इनकी समसर को है। (3)
करके चन्द्रमुखी सिंगार, गई ब्रजराज निहारन।
चलत कुंज बन पुंज सुगंधन, ज्यों रितुराज बहारन।
सारी सेत हीर हारन, कच मुहा झल हजारन।
बोधन बता नायिका कौनी, करो नाम उच्चारन। (4)
मुंदरी कौन दिसा कपि डारि, उत्तर कहौ विचारी।
कितनी बेरा कौन लगन में सीता कर में धारी।
कौन नक्षत्र कौन तिथि अंतर, गए रावन दरबारी।
द्विज भरतम काये भेद फाग को बता बोल के हारी। (5)

'विन्ध्य जाउली' से साआर

बुंदेली खान-पान

– गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

मोटौ खाबौ और पिहिरबौ,सबकौ जानों मानों
खानपान बुंदेलखंड का, सुनियौं तना पुरानों
खाजे खुरमी और ठडूला, भरीं कसारन गुजियाँ
बुंदी पपरियां खीर इंदरसे, लडुआ खुरमा बतियाँ
भरीं कठारी पकवानन सें, डार कें गड़ियाघुल्ला
खाकें पेडा बालूसाही, कलाकंद रसगुल्ला
पतितपावन पै रौनक बरसै, मनुआँ देख अघानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

लपसी चीला चौंसेला उर, फरा गुलगुला खा लो
गतरी लुचई सुहारी खिचरी, खाकें जिउ जुड़ा लो
पुआ खोचला हलुआ मांड़े, और चूरमा तेली
मींड़ा खीच बफौरा आंसें, गुड़ला बनें बुँदेली
मगज मलीदा बिरचादीं उर, तसमइ खाय फलानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

मका जुनई बिर्रा की रोटी, हँतपउं उर लुचयाऊँ
फुलका कैले बारे उमदा, सुन लो और बताऊँ
वरा मगौरा कढ़ी भात संग, चना दार बनवइयौ
घी शक्कर पापर संग सानों, फिन कालौनी खइयौ
बिसर नें पाहौ गुन बारौ है, स्वाद लेव पैचानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ सुनियों तना पुरानों

बरी बिजौरी और कचरियां, रुच रुच खइयौ भैया
बगरौ मठा रायतौ पाचक, रित में खांयें खबैया
भूँजा थुली महेरी लपटा, कुदई मठा संग डारी
उरगठियन कौ बनें ओंरिया, डुबरी मउअन बारी
बुंदेली कौ जन जन खावै, खावै इयै गुड़ानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियौ तना पुरानों

कनकौआ लिसुआ और चौरइ, भतुआ की बा भाजी
मैंथी पालक चेंच नोंरपा, सरसों पोई ताजी
चनन की भाजी खोंट बनावें, सूकौ कबउं भुरारा
कै दरभजिया खात निभौना, बदलै मन की धारा
खटुआ के पत्तन की चटनी, चोंखौ तना अथानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

पैलौ झला असाड़ी गिरतई, खोंअ चकोंड़ा लावें
बात नसाउत है जा भाजी, ईखों बा कें खावें
पथरचटा पथरी खों काटै, लगै मकोय सलौनी
कड़यारौ जब बनें नोंनियां, भूँक बढ़ावै नोनीं
सुकरा ऊमर और गिजावर खातइ जी लुभयानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

तुरई पड़ोरा मेंनर भेड़ा, सेम करेला घुइयां
फलकुलिया मुनगा की कोंसे, दार में डारें गुइयां
परबल उर कचनार ककोड़ा, कटहल और मुरारे
खुटला और अंगीठा सूरन, दिख नइ रओ भिड़ारे
कुटकी कांकुन समा बाजरा, हिलबिलान भओ जानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियो तना पुरानों

लहसुन प्याज टमाटर गोभी, आलू कुमड़ा भूरा
फली ग्वार जगनतिया सलजम, गाजर कुंदरू मूरा
खाव गड़ैलू और कसेरु, तूमा जामुन काली
तागत खों तुम खाव लिसोड़ा, और नैंनुओं खाली
ऐंसी नोंनों लगै जायकौ, गुन सोउत बर्रानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ सुनियों तना पुरानों

पनों आम कौ उर कै सांहें, चोंखी भरीं दुफरियां
भटा के भरता संगै खइयौ, कंडा सिकीं गकरियां
धनियां मिरची नोंन में पीसौ, संग पौदीना डारौ
मेंड़ पै होरा बालें भूँजौ, खाकें बखत गुजारौ
बना बांह कौ करौ मुड़ीसौ, सोव पिछौरा तानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

डसा कें कोंरीं और मसूसा, भुन्दा गदा झंगोरौ
डसे बेर बिरचुन खटमिट्ठौ, गुर में सतुआ घोरौ
जे सतुआ कउं मित कौ खैहौ, तौ ऊ तन भिद जैहै
डर जो जादां खैहौ तौ फिन, लोटा सुइ पकरैहै
सेचे समज कें ईसें चलियौ, फिन ना दिऔ उरानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

डसा कें सकला उर महावरीं, खाव सिंगारे रित में
घाम सें आकें सुसता लइयौ, बातें धरियो चित में
बिलम जाय जब तना पसीना, फिन पीनें तुम पानी
कया मौसम मार सें बचहै, हुइयै नें हैरानी
कैत ऐई सें गांठ बांदियौ, जैंसौ सुनों बखानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियो तना पुरानों

चिरपोटा उर खाव चीमरी, डेंगरा सेन कचरियां
ककरी केरा बिही कलींदौ, कमलगटा की छतियां
तेंदू चरवा बेल करोंदा, छीतुल उर पोंड़ा
खिन्नी इमली बेर मकोरा, खावें मोंड़ी मोंड़ा
रित कौ रित में जो फल होवै, ओई लगै सुहानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों

बिड़ई पंजीरी अंगरभुसा उर, गुड़धारी अमघोरा
खड़ई टका पइसा उर दरिया, लचका कौ लमडोरा
कबऊँ बनें बिसवार के लडुआ, और हरीरा बॉकौ
ब्याव में देत हते मिरच्वानी, दिखै न इत उत झोंकौ
अब स्वादी खड़बरा दिखै न, ऐंसौ आओ जमानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों
मुरका लटा सिमैयां भेंगरीं, मालपुआ है मैंगौ
निब्बू ओंरा कैंथ पपीता, स्वद से खैयौ घैंगौ
बखत बखत पै फरतीं जिन्सें, होतीं भौतइ नोंनीं
खातन असर दिखातीं अपनों, सुदरै सूरत रौनीं
पच्छिम बारी बैहर लगतई, जौ मौसम कुमलानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों
स्यानन के अनुभव की सांसउें, कोउ नें कदर ना जानीं
खाबौ पीबौ आंग लगत्तो, का कइये हम सानीं
बदली हवा में रंग ढंग बदले, कीखों दइये खोरी
परम्परा सब टूटत जा रइ, हो रइ सीना जोरी
ढला चला सब बदलत जा रओ, गेरऊँ हमने छानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सुनियों तना पुरानों
गुप्तेसुर कयें पीजा बरगर, नूडल तजौ बिरानों
चायनीज्र फुड हॉट डॉग खों, जन मानुस भैरानों
युवा आज बगयानों फिर रओ, सहरन में बैहानों
गडुआ ग्वांच लगत नैयां जू, सांची कहो अहानों
सोंदी मॉटी में रस नैयां, जानें क्यांय बिलानों
खानपान बुंदेलखण्ड कौ, सनियों तना पुरानों

769 गली नं. 17 शांतिनगर, जबलपुर, म.प्र.
मो. 74921904[illegible]

बुंदेली गजलें

– महेश कटारे 'सुगम'

धन दौलत खों लात मार रये बौरागए का?
आई लस्मी खों बिड़ार रये, बौरा गए का?
नौनी बातें नौनी लगत किताबन में
उनखों जीवन में उतार रये, बौरा गए का
बड़े चोर हैं बड़े बड़न सें है यारी
तुम उनके खूँटा उखार रये, बौरा गये का
कुर्सी नइयाँ जा कुबेर की चाभी है
ऐसौ मौका काय टार रये बौरा गये का
रिशपत में जो दै रऔ सो मसकां लै लो
सुरसा सौ मौ काय फार रये बौरा गये का
काम निकल गऔ भगा देऔ बदमाशन खों
अपने घर में काय पर रये बौरा गये का
गंगा बै रई हात, पाँव, मौं धो डारौ
का सोचत हौ, का विचार रये बौरा गये का।

(बिड़ारना = भगाना। नौनी = अच्छी। मसकां = चुपचाप)

* * * * * * * * * * *

तुम का कैहो हमें पतौ है
रिसया जैहो हमें पतौ है
मिला, जुरा कै बिना आग कौ
धुंआ उठै हो हमें पतौ है
मढ़ हौ दोस कौन के मूड़े
किये बचैहौ हमें पतौ है
झूटी गंगाजली उठा कें
कसमें खैहौ हमें पतौ है
पैलें तो ईमान मार हौ
फिर पछतैहौ हमें पतौ है
बिना करें तुम बैठें बैठें
कब तक खैहो हमें पतौ है
बीतेगी जब खुदई मूंड़ पै
खुद चिल्यैहो हमें पतौ है
पीले लाल कमऊँ तो हुइयौ
कां तक सैहो हमें पतौ है

– बीना (सागर) म.प्र.
मो. 9713024380

हम

– साकेत सुमन चतुर्वेदी

तानों न ऐसौ कै टूट जायें हम
चाहो न ऐसो कै रुठ जाये हम
गुर की डिगरिया से मीठो बने।
लप्सी सौ तुमखौं सरुंट जायें हम
ज्यु तौ भलाई कौ घेला मोरौ
मरौ न हूदा कै फूट जायें हम
कोऊ पुछडेआ तौर नंइयाँ मोरौ
धोखे सैं तुमने जो छूट जायें हम
आंचर में भर लो है मौका तुमें
मसकऊ न धुतिया के सूंट जायें हम
साजे तो हैं पर न मूरख सुमन
तुमखौं जवा सौ न कूट जायें हम

– 36-15 प्रेमगंज, सीपरी बाजार
झाँसी, 284003 (उ.प्र.)
मो. 09433907387

जीवन-जलधारा

– पं. श्याम सुन्दर शुक्ल

जींवन नदिया अगम जलधारा
सुख दुःख दोऊ किनारे अजूबा
गजव है, इनको पसारा। जीवन नदिया ....
घात लगायें बैठे कितने बगला भगत सयारे
लुक छिप उछरत गिरत परत मुख आश मीन बौराने
बालापन के सपनें लूटें, ढ़ीम डारैं गारा।
जीवन नदिया ....
लहर लहर लहरात समै के पौन डुलावैं पानी
ऊपर नैंचें होत होत वीते वरसात जुआनीं
उफन उफन घर कितने बहाये जब मद चढ़त अपारा।
जीवन नदिया ....
सिमट जात काया मनरंगी उकतावै पछतावै
फिर विरथापन ग्रीषम आवै सेत रेत कढ़ आवै
जो कऊँ समुद तलक न पौंचो, सूरज सोखत धारा।
जीवन नदिया अगम जलधारा, जीवन नदिया ....

शुक्ल सद गार्डलाइन दमोह (म.प्र.)
मो. 9826522901

बुंदेली चौकड़ियां

– रामानन्द पाठक 'नन्द'

मौंडी विदा न देखी जानें, जियत जीव मर जानें।
भरे तला में कमल खिलोतो तौ, उयै सूक मुरझानें।
उनकी याद पलतती विटिया, विछुरत जी तरसानें।
नन्द खिलौना बूढ़े मन को, होली बैठ के जानें
करके अब बज्जुर की छाती, जारई उनकी थाती।
दिया धरो रओ लपक झपक के, जा रई जीवन वाती।
दुःख दालुददुर भग जाउतते, जब आकें किलकाती।
दद्दा हम है रंज करो ना, नंद देख मुस्काती।
झूला जियै झुलाओ छइयां, लैंके चले पिठइयां।
खेल खाल के घर आउतती, चड़ जात ती कइयां।
कन्यादान करत में मोरी, भर भर आई डवइयां।
छौड़ नंद घरघूला सूनौ, संग चली गई सइयां।
गरे लगै जब बिटिया रोई, कंदा भींज गये दोई।
तुमई मताई दद्दा मोरे, हो गये निठुर बिछोई।
हंस हंस भूख मिटाई तुमने, सपरा चुटिया गोई।
उन्ना नन्द सूकवे डारे, सौ सौ बेर निचोई।
मौंड़ी में ममता झलकत्ती, ओली में किलकातती। किलकतती।
याद तुमाई रै रै आई, जब लोटत बिलखतती।
धीर धरे धरे न नेक धरधरा, मोई जान फिसलतती।
छाती फटी नंद डोली में, मौड़ी जब हिलकतती।

नन्द भवन नैगुवां
ग्राम व पोस्ट नैगुवां बाया पृथ्वीपुर
जिला निवाड़ी म.प्र.

बसंती चलवै मन्द वयार वेतवा

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव 'पीयूष'

झिरी बहेरा से झिरी, मृदुशीतल जलधार।
नदी वेतवा रूप में, किया बहुत विस्तार।।
बैतों के झिरा खड़े, सुंदर से अभिराम।
वेत्रवती उरवेतवा परो एइ से नाम।।
कलयुग की जे गंग है, पतित पावनी धार।
करवे खोंजे बेतवा, आ गहै है उद्धार।।
जो जो श्रृद्धा भाव से बुड़की आन लगायें।
माइ बेतवा से सबह धन वैभव जस पायँ।।
राज घाट में बेतवा, करती है सिंगार।
पोंच ओरछा राम के, रहै है चरन परवार।।

चित्रांश कालोनी टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9179982221

बुंदेलखण्ड

– गृहस्थ संत श्याम जी महाराज
ज्ञानी जी महाराज

खण्ड अनेकों हैं भारत में, बड़े-बड़े बरबंड
सब से न्यारा मेरा, प्यारा वर बुंदेलखण्ड
उत्तर में रवितनया यमुना, करम कहानी कहती है
दक्षिण में मेकल गिरि कन्या पावन रेवा कहती है
पूरब सीमा टौंस सँभाले पश्चिम चंबल शौर्य प्रिया
चित्रकूट के कामद गिरि में, राम लखन सियवास किया
राजापुर के तुलसीदास ने, मानस को लिख नाम किया
महाकवी केशव ने जग को अमित ज्ञान उपदेश दिया
जानत सभी शौर्य गाथा को प्रतिभा परम प्रचंड
सबसे न्यारा...................................
नगर ओरछा जग में जाहिर, फैली कण-कण प्रभुई
रानी कुँवरि गणेश अवध से लला राम महलन लाई
श्री राम प्रभु महलन मंदिर में प्रत्यक्ष विराजे हैं
परब्रह्म हरि के स्वरूप में सुन्दर आसन साजे हैं
श्री कुँवर हरदौल देवजू सुर सम मानें जाते हैं
बुंदेल खंड के सभी घरों में, प्रथमहि पूजे जाते हैं
वीर सिंध से महाराजा भए, कियो विस्तार अखंड
सबसे न्यारा.................................
छत्रसाल बुंदेला राजा, धनी रहे करवाल के
सकल देश में धाक जमाई, परम विवेकी ख्याल के
प्रकटत जहाँ मेदिनी हीरा सुन्दर रतन रमा खानी
ऐसी परना नगरी आकर कीन्ही छत्ता रजधानी
नगर महेवा ताल धुबेला योग ध्यान हिय में धारे
छोड़ सकल जंजाल मोह के परमधाम पुर पग पारे
ज्ञानी द्विज के हृदय गर्व है, जन्म भूमि शिरमंड
सबसे न्यारा.................................

शिष्य धर्म संघ, वाराणसी

(बुंदेली व्यंग)

पी गऔ दूद बिलौटा

– के.एल. वर्मा 'वि

खिसया खूब खसम से कै रई लगौ न चका चकौटा।
साठ साल कौ जुरों जुटाओं पी गऔ दूद विलौटा।
चमक दमक सोने कैसी ती, सबके सब पितराने।
मसकऊं मसकों कढ गये घांसै जाने कितै चिमाने
देख समय कौ फेर, फेर मौ,
पी गऔ दूद विलौटा
झुटई लेना झूट चेबना झूठ के कारौ बारी।
च्लत जिन्दगी नइयाँ नौनी सुआरत संग चिनारी।
मौका मिलत मगत पाछु से, टेकत टेकत छोटा।
पी गऔ दूद विलौटा
खेत रखावे धरौ त्याके तुमने नऔ बिजूकौ
जी कौ मो तक-तक के रव जग रात दिना लौ झूँकौ।
सबरौ दूद वगर गऔ घूटे जी खो तुमने ओटा।
पी गऔ दूद विलौटा
कथनी करनी एक मई नई, बातन कै कै बदला।
अपनी अपनी ढपली ठौकत, अपनौ अपनौ ढपला।
नइयाँ एक जबर मुन्सेलू, पकरे इनके झोटा
पी गऔ दूद विलौटा
अब पछताऐं होत कछु नई, चुग गई खेत चिरइयाँ।
उतरी कलई कराई ती जो, टीनन बनी कुपइयाँ
चटनी बरत नेक नई, घिसतन लुड़िया और सिलोटा
पी गऔ दूद विलौटा
गप्पू पप्पू बातन आके सबरौ बाम उजारौ
बन्ज रंज में होत दिखो नई, बूढ़ौ मऔ बन्जारो।
बिन्दु फैर करे का जौ, जो खाली होवे टोंटा
पी गऔ दूद विलौटा

भोपाल
मो. 7425079493

लोकदेवता हरदौल

– डॉ. कुंजी लाल पटेल 'मनोहर'

मलला की ओरछा, नदी वेतवा तीर।
ोजी के लाला अमर, खाकर विष की खीर।। 1
चुगलों ने चुगली करी, भर जुझार के कान।
भाई को मरवा दिया, ठान चुगलिया ठान।। 2
वर ने भौजाई को, मानो जननि समान।
भाभी ने पालो उन्हें, माता ज्यों संतान।। 3
सती डिगी नहिं सत्य से, पति का मान प्रभुत्व।
दिया हलाहल लला को, बचनों में अस्तित्व।। 4
लाला के भोजन बने, जहर मिले पकवान।
देखत सूंघत मर गये, साथी नौ सौ ज्वान।। 5
मैहतर बाबा ने करे, बिष भोजन भरपेट।
स्वामी संग सेवक चले, कूकर जहर चपेट।। 6
राजा को कोसे प्रजा, सुन गुनत हैरान।
तोता मैना तज गये, लाला के संग प्रान।। 7
हाय ओरछा नगर में, जनता की चिक्कार।
धरती पटी अधर्म से, आंसु रहे धिक्कार।। 8
पापी भाई कसाई की, मरी दया कुल लाज।
अनहोनी करके रहा, (हरे) दिबाया आज।। 9
देवर की अर्थी चली, कोसन लगी कतार।
आज ओरछा का दिया, बुझवा दिया जुझार।। 10
राजा ने ऐसौ मढ़ो, रानी पर अपराध।
भैया को मरवा दिया, जैसे बाघ वियाध।। 11
भाभी की जिस गोद में, पले पुसे हरदौल।
उसी गोद से उठी है, वीर बुंदेला बौल।। 12
बहू गोद में धर गयीं, सासो सुत कुल नूर।
धोये भाई भुजाई के, पाप पुण्य भरपूर।। 13
देवर थे भौजाई के, धर्म कर्म कुल सेतु।
कुंवर मरे लाला अमर, चीकट कारज हेतु।। 14
दतिया से न्यौते गये, सब राजन के पास।
यह न्यौतौ हरदौल को, लेकर जाव खबास।। 15
कइयौ तुम हरदौल से, भानेजन कौ काज।
आकर तुम्हें संवारने, वयाव काज में लाज।। 16
पाती पहुँची ओरछा, ब्राजे जहां जुझार।
नाम देख हरदौल का, राजा भये अंगार।। 17
पाती फैंकी व्याव की, सांसी सुनों खबास।
जौ न्यौतौ जीनें लिखो, जाव उसी के पास।। 18

पाती लेकर चल दिया, पहुँचा दतिया खास।
कथा विथा हरदौल की, फौरन कही खबास।। 19
बहिन ओरछा को चली, रटती उनके कौल।
मूंड चेटका मारती, तपे जहां हरदौल।। 20
आभा आई सामनें, आभा से आबाज।
चीकट लेकर आयेंगे, करने कन्या काज।। 21
जाव बहिन चिंता तजौ, लगुन सगुन स्वीकार।
चीकट लाकर करेंगे, हम सब साकोचार।। 22
आई चंवल देश से, दतिया नगर बरात।
मामा चीकट के लिये, पारें यहां उलात।। 23
छकड़ों में भरने लगा, चीकट का सामान।
मामा (ममा) उरच से किया, दतिया को प्रस्थान।। 24
चीकट के सामान लै, आये मंडप (बी) बीच।
आभा ठांड़ी सामने, जीवित सामू मीच।। 25
टींका कर टींकन लगे, स्वागत हेतु बरात।
होन (ळोन) लगी ज्योंनार जब, मामा परसत भात।। 26
ब्हिन भैंटती रो रही, धन्य भाई के कौल।
मरे भाइ जीवित मिले, चीकट लै हरदौल। 27
भाई जब लौटन लगे, कर कन्या के काज।
देख भांजी कह रही, मामा रुकलो आज। 28
कछू गाँठ में बांध दो, भानेजन की आज।
माई जो बिन भाई की, उनके करियौ काज।। 29
पावन सावन मास में, राखी के त्योहार।
राखी पौंचा चढ़ावें, भाई बहिन के प्यार।। 30
बचन मान कर दो बचन, जिन पर औसर काज।
गांवन गांवन पौचियौ, मामा सहित समाज।। 31
न्यौते आवें सभी के, तुमको जब हो व्याह।
सबके काज संभारियौ, ऐसी सबकी चाह।। 32
बरुआ बाजनी अमरपुर, मागौनी मटगांव।
मामा भांजी को दिये, पांच गांव पर पांव।। 33
गांवन गांवन चौंतरा, देस विदेस मुकाम।
वीर बुंदेला के सुयश, भले लछारे नाम।। 34
कहां न उनके चौंतरा, कहां न उनके नांव।
कहां न उनको पूजते, कहां न उनकी छांव।। 35
जहां न उनके चौंतरा, वहां न उनके नांव।
पांच गांव पूजत नहीं, लला छांव के पांव।। 36

आबें औसर काज में, चौकट उनके कॉल।
लोक देवता हो गये, भाभी के हरदौल।। 37

राखी के त्योहार का, भैया रखते ख्याल।
रक्षा बंधना बँधाते, बहिनों से हर साल।। 38

धन्य ओरछा की धरा, धन्य वीर सिंह बौल।
लोक देवता हो गये, धन्य कुंवर हरदौल।। 39

देवर से देवता बने, करके चीकट काज।
लोक देवता लोक के, लोक पूजता आज।। 40

भैया बैरी बहिन के, कहते लोक पुरान।
चीकट बाले हो गये, मामा एक महान।। 41

माहिल शकुनी कंस के, बहिनों प्रति प्रतिमान।
मामा ड्रामा कर मरे, कहते लोक पुरान।। 42

चतुर पैंतरे बाज थे, माहिल शकुनी कंस।
तीनों की करतूत के, जग जाहर विध्वंस।। 43

पता:- रेडियो कालोनी के प
गली नं.01 पन्ना रोड छतरपुर (म
मो. 94258797

दोहा

– हरिविष्णु अवस्थी

परम भागवत धर्म की, मादक मथुरा भक्ति।
पली बुंदेली भूमि में, पाकर, नूतन शक्ति।।
कृष्ण निहारें एकटक, जिस राधा की ओर।
ऐसे नंद किशोर के मधुकर शाह चकोर।।
भक्तमाल में कृष्ण की, जिन फूलों की बास।
बे बुंदेली सुमन हैं, हरिराम जी व्यास।।
करके केश्व राय के, मंदिर का निर्माण।
वीरसिसंह जू ने किया, ब्रजरज का सम्मान।।
चोअ पड़ी जब धर्म पर, बने बुंदेला ढाल।
बने शाह मधुकर सभी, तभी बने छत्रसाल।।
राधा वल्लो कृष्ण थे, नृप मधुकर के नाथ।
दिल्ली पति के सामने, झुका न उनका माथ।।
कृष्ण चरण छूकर हुआ, पावन यमुना नीर।
जमुना से मिल बेतवा, हो गई एक शरीर।।
घर-घर वृंदावन यहाँ घर-घर में घनश्याम।
हर घर गोकुलदास है, घर-घर है बलराम।।
मोहनगढ़, बल्देवगढ़ और पुरा वृषभान।
कृष्णायन ही बन गया, टीकमगढ़ स्थान।।
स्कंत से डरता नहीं कभी बुंदेला खून।
बढ़ता है अवरोध ज्यों, त्यों-त्यों बढ़े जुनून।।
अस बुंदेली धरा पै टीकमगढ़ मुकाम।
करत आज वृजभूमिको शत्-शत् बार प्रणाम।।

अवस्थी चौराहा, स्टेट बैंक के पास,
टीकमगढ़ (म.प्र.) मो. 9407873003

बुंदेली रचना

– डॉ. कृपाराम 'कृपालु'

कक्को भुगत रई कंगाली
धुतिया पैरे थिगरा वाली कक्को
कमर सूक कें दूनर हो गई दिहिया पर गई काली कक्को
दो बीघा की हती टपरिया, जोत लई मुखिया ने
खावे भर कों हटे कनूंका, मेट दये नश्यां नें
क्हां जांय डर की सें कांवे, पेट डरौ है खाली
कक्को भुगत.......................1

सामा फटौ डड़ौ दो जांगा, भसक जात बैठत में
आंग दिखा रओ आंगू पाछू लाज अउवत चलतम में
भीतर कों दोइ अंखियां धस गई, दिनक रात भओ काली
कक्को भुगत.....................2

दो दो दिनां लौ हो रय फांके, आंखन दिखे ना रोटी
जा दुआरें, वा दुआरें झांकें, कांपत बोटी बोटी
भूस लगत है भोरइयां सें, मिले खांय कों गाली
कक्को भुगत....................3

कभऊं मठा में नोन मिला कें, पी कें वे सो जातीं
पी रई हुकरों मन मसोस कें, अतीत में खो जातीं
विधना नें मोय दुःख लिखें हैं, करे को देखाभाली
कक्को भुगत.............................4

ढ़ट्टा लग रये हैं कानन में, सुना परै ना उनकों
बैंठीं रोय रईं आंगन में, ठोक रईं करमन कों
कोऊ सुनइयां नईं 'कृपालु' सूक चुकी है डाली
कक्को भुगत रई कंगाली धुतिया पैरे थिगरावाली
कमर सूक कें दूरन हो गई, दिहिपा पर गई काली

उरई जिला जवलौन

जाड़ौ होन लगो अतकारौ

– आशाराम त्रिपाठी

जाड़ौ होन लगो अतकारौ, दिन पै दिन चेंगारौ।
कानें आंतर जां देखै तां लगो सीत कौ पारौ।
राख ओढ़ कें आगी लुक रई कीकौ लेय सहारौ।
दिनराजा निरसई के मारे हो गओ हीन दिहारौ।
भरकें खुंस दलांकत जाड़ौ, नईयां ईकौ खाड़ौ।
कउं पाला कउं बरफ गिरा दई जुलम जोतबे चांड़ौ।
चौपट करत उनारी कौंरी भरो न अबलौं भांड़ौ।
सूरज हां दिन भर ललकारत हांकत रात अखाड़ौ।
जम गओ जरें गाड़ जड़कारौ, अब नईं दै रओ टारौ।
चूले गुर्सी कोंड़े कै रये हमें न अब उसकारौ।
पल्ली ने तौ हाथ उठा लये कमरा करत किनारौ।
जाड़ौ सुन दिन पै दिन दिन कौ सूकर जात दिहारौ।
कईये कीसें हालाकानी, जाड़ै चढ़ी ज्वानी।
थर थर थर थर कपे बुढ़ापौ लल्थरया रई बानी।
गतिया बांधे सिकुरी बैठी बारी बैस चिमानी।
उने बचा लईयौ विधना जे रातन लौटत पानी।
जूड़ी लहर कऊं की लाटी, आगई इतै मुराटी।
मारत ऐसी मंतर जल्दी दिन लै जात कुलांटी।
गरम हरफ एकऊ न जाने पढ़े बरफ की पाटी।
बीत जात दिन जैसें तैसें रात कटत न काटी।
जाड़े की ज्वानी बुड़की लौ, होन लगत फिर ढीलौ।
जालिम ज्यादा जुलम जोत रओ जान परत हड़सीलौ।
समय फिरत सो होत डड़ारौ विरछा बड़ौ पतीलौ।
इक दिन होत भोंथरौ कुसिया कितनऊं होय नुकीलौ।

म.नं. 19, स्वतिक, सीटीओ, बैरागढ़, भोपाल
पिन कोड- 462030
मो. 7987597462

बुंदेली चौकड़ियाँ

– कल्याण दास साहू 'पोषक'

होंनों नइँ होवै अनोंनों, होवै नोनों-नोंनों।
हँसौ-खेल लो 'डर' बतिया लो, रनै इतै है जोंनों।।
सबके मनकौ स्वाद बनों रय, खारौ होय 'न' रोंनों।
'पोषक' सार जेउ जीवन कौ, महकै कोंनों कोनों।।
'पोषक' बने काय दीवानें, अपनो धरम भुलाने।
ऐसी माया कौन काम की, जो संगे नइं जानें।।
जा मानव की देह मिली है, परमारथ के लानें।
जीवन सफल होत है उनकौ, जो खुद खों पैचानें।।
'पोषक' मानत काय न हटकी, मति तोरी है भटकी।
जनत है पर मानत नइयाँ, अकल कितै है अटकी।।
देख-देख के कारगुजारी, दिल में भौतइं खटकी।
जादाँ हुसियारी नइँ अच्छी, प्रभु जानत घट-घट की।
'पोषक अत काय खों करतइ सरग मूड़ पै धरतइ।
अपनें दोष और पै मढ़कें, हालौ-फूलौ फिरतइ।
तन कौ मैल छुटावै रोजउँ, साफ 'न' मनखों करतइ।
लोक और परलोक बिगारत, ईसुर सें नइँ डरतइ।।
'पोषक' अपनें अन्दर झाँकौ, बात 'न' ऊसर फाँकौ।
के कितनें गैरे पानी में, अपने कद खों आँकौ।।
की (की) में कितने ऐब भरे हैं, ढूँढ-ढूँढ के हाँ कौ।
एक दिनाँ हो जात उजागर, दोष कभउँ 'ना' ढाँकौ।
'पोषक' (रामापन) रामायन खों बाँचै, ज्ञान भरौ है साँचै।
चिन्तन-मनन करौ अब निसदिन, गुन-अवगुन खों जाँचै।।
देखौ विधना के दरपन में, अपने मन कौ ढाँचै।
राम नाम से राखौ मतलब, हँसी-खुशी से नाचै।।

- किले के पास पृथ्वीपुर
जिला- टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9981087763

होली

– डॉ. महावीर प्रसाद चंसौ

होली दाहन जात हैं, वरण-वरण सब लोग।
होली के पकवान को, प्रथम लगावत भोग।।
दूजे दिन उस भस्म को, सब मिल तिलक लगाएँ।
काहुक धूल कीचड़ सने, कुछ भस्मी बरसाएँ।।
दोपहरी में स्नान कर, रंग अबीर लगाएँ।
प्रेमभाव में मिलत सब, जाति भेद बिसराएँ।
दिखें न ईर्ष्या द्वेष कहिं, होली के त्यौहार।
करें 'श्वपच स्पर्श सब, मिलन करें अति प्यार।
भारतीय संस्कृति निहित, 'श्वपच करें स्पर्श।
सर्वधर्म सब जाति गत, त्यौहारी उत्कर्ष।।
मिलत परस्पर प्रेम अति, प्रेम न हृदय समात।
युवा प्रौढ़ अरु वृद्ध जन, होली रँग रँगजात।।
कहीं ढोलकी थाप तो, कहिं मृदंग झपताल।
कहीं मजीरा खंजरी, करतालन के ताल।।
सरंगी के स्वर कहीं, सारँग राग सुहात।
हारमोनियम सँग कहीं, गावत फाग जमात।।
कहिं इकतारा केंकड़ी, कहिं सितार के तार।
कहीं पियानो बेन्जो, थाली घट बेतार।।
भाभी देवर को कहीं, नारी रंग सजाएँ।
कजल बैंदी महावर, रंग बिरंग बनाएँ।।

देवर भाभी पर कहीं, रँग अबीर बरसात।
लड्डु रसगुल्ला गजक, देते हैं सौगात।।
कहीं-कहीं यह कहावत, होती है चरितार्थ।
जेठा हू देवर लगें, मादक फगुन यथार्थ।।
है वसंत का आगमन, मदन जगावत द्वार।
वशीभूत सब नारि नर, बालक वृद्ध कुमार।।
तन्मय वृद्धा-वृद्ध हूँ, होली गीत सुहाव।
वासंत फगुनी हवा, मानो युवा बनाव।।
होरी में रसिया रसिक, गायक हुए निहाल।
मनहु रंग ऋतु आ गयी, बरसत रंग गुलाल।।
कहीं लेद जिकड़ी कहीं, कहिं-कहिं ठुमरी राग।
'महावीर' कहिं चौकड़ी, रचित ईसुरी फाग।।
हुरियारिन की टोलियाँ, घर-घर रँग बरसायँ।
पिचकारी रंग की भरें, सम्मुख देय चलायँ।।
कोई केशरिया रँगे, कोई पीले लाल।
कोइ भँग की जुंग में, बदली दीखे चाल।।
जन-जन में उत्साह अति, जन-जन में शुचि भाव।
भारतीय त्यौहार में, 'महावीर' सद्भाव।।

वंतरा, जालौन (उ.प्र.)

चन्द बुंदेली चौकड़ियां

– उमाशंकर खरे 'उमेश'

गुइयाँ रितु बसन्त की आई, जन-जन खों सुख दाई।
बन-उपवन सब फूलन लागे, फूल उठी अमराई।।
कूकन लगी कोकिला कारी, बिरहन खों दुख दाई।
कयँ उमेश रंग पीन ले आवें, भारी धूम मचाई।।
कैसी चुनर करी रंग-रस की, लगी लाड़ली मन की।
कच-कच टाँके हते सितारे, गोट जड़ी मुतियन की।।
ओढ़ चुनर निकरी पनघट खों, नजर परी मोहन की।
कयँ उमेश अब छैल छबीली, हो गई श्याम बरन की।।
कान्हा ऐसी खेलत होरी, श्याम बरन भइ गोरी।
अंग-अंग रंग डारो मोहन, लाज सरम सब तोरी।।

गोरो बदन साँवरो कीन्हो, भरी मांग में रोरी।
कयँ उमेश छैल छलिया ने, छली राधिका गोरी।।
मोरी नई रेशमी सारी, तार-तार कर डारी।
तन की चोली तन तन फट गई, मुतियन जरी किनारी।
लाल गुलाल मली मुख ऊपर, भर मारी पिचकारी।
कयँ उमेश ढीट कुँवर ने, कंचन देह बिगारी।।

पता- पोट क्लब के पास, राधा सागर तालाब
टीकमगढ़ रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी
मो. 6266663080

b-I> c:\stand07\Hata2023\bund23.pm5 .... inset ....17 04042023(1)

बुंदेली चौकड़ियां

– चद्रीप्रसाद खरे 'निरंकार'

1

मुँदरी दई उतार सिया ने लै लाई प्राण पिया ने
सकुच सकुच दै रयै उतराई-लई न केवरिया ने
चरन पकर सिरनवा विजय कर-बात कही सुखिया ने
बड़े भाग्य जौ आसर पायौ-ई घर के मुखिया ने
'निरंकार' सरबस हँस पालऔ-मोरी सरसुतिया ने

2

मुँदरी दैन लगे उतराई-सिया सहित रघुराई
व्याकुल भयौ सुगर केवरिया-चरन गहो अकुलाई
नाथ आज मैं भयौ सनाथा-सकल संपदा पाई
दीनदयाल कृपाल आपकी कृपा मिली सुखदाई
फिरती बेर नाथ जो दैहौ-सो लैहौं सिर नाई
'निरंकार' निर्मल लवर दैकें केवट कीन्ह विदाई

3

मुँदरी हनुमान खाँ दैके- बचन माधुरे कैकें
दै आशीष शीष कर फेरो-खासौ दास बनै कें
प्राण प्रिया लौ मो प्रीतम की-जाव खबरिया लैकें
बाहू बल और विरह प्रेम की-सबई बात समझै कें
'निरंकार' निर्मल मन सिय कौ-कहियौ सबई रूचै कें

4

मुँदरी लैलई हे हनुमत ने, पकना दई रघुपत ने
चरन शीष घर लाई आशीषें-नेम निभाओ चित ने
कर दऔ जनम सफल अब मोरौ-राम काज के हित ने
राम हृदय घर जात निरंतर संग कपीते जितनें
खोजत खोह नदी वन पर्वत-लीन भये हैं इतने
'निरंकार' सागरतट आये करी सहाय सूमत ने

5

मुँदरी रघुनंदन सियाजू की हरन शोक सिया जू की
व्याकु वदन विलोक पवन सुत-धार बही असरू की
कीन्ह बिचार मुद्रिका डारी-ओट अशोक तरू की
चितवत चकित चीन गहलीनी-अंकित नाम प्रभु की
सोचत सीय अजय रघुराई-रचना नहिं जादू की
कपि बरनै गुंण राम धनी के घरी एक न चूकी
'निरंकार' सुन बिरह वदन में-नई चेतना फूँकी

ए.आई.आर. टी.वी. कलाकार
ग्रेड-ए छतरपुर
मो. 9977338575

लग रव फिर चुनाव आ गये हैं

– सुरेन्द्र श्रीवास्तव सुमन

लग रव फिर चुनाव आ गए हैं
बड़े-बड़े कद्दावर नेता, गाँवन में आ रए हैं
कवहुं जे सीधे मों ना बोलें, देखइ कें मों अपनो फेरें।
गाँव गलिन में सबरें फिर रए, घर-घर दाँत निपोरें।।
छुआ छूत को भेद न कर रए, थरिया परस संग में खा रए।
एकइ खटिया बैठकें के रए, भेदभाव मिटवा रए।।
'सुमन' छुअत लावें भारत वे, तिनके गुन गा रए हैं।।1।।
लग रव फिर चुनाव आ गए हैं
पाँच साल नौ मौज उड़ाई, सरकारी रबड़ी सब खाई।
अपनो रुतवा बनो रहे सो, गाँव-गाँव मे रार कराई।।
जबसें वे चुनाव को जीते, गाड़ी कबहुं गाँव नइ आई।
राशन 'सुमन' गरीब को खा गए, खूबइ काली करी कमाई।।
हमइ तुमाये सगे हितैशी, सबको समझा रए हैं।।2।।
लग रव फिर चुनाव आ गए हैं
गली-गली की नाम करा रए, सबजबाग सबकोइ दिखारए।
देओ वोट जीत कें आवें, आतइ काम लगारए।।
अपनो-अपनो नाम लिखादेव, संगे मोबाइल इरवा देव।
गोदी जई गाँव को लेंहें, अवकीं बस जितवा देव।।
लच्छेदार लुभानी बातें, देकें फिर भरमा रए हैं।।3।।
लग रव फिर चुनाव आ गए है।
हलुआ भइयन की बन आई, रोजंइ उड़ रइ दूध मलाई।
भण्डारे खुल गये गाँव में, हो रह खूब चराई।।
कुकरा, मछली, मुर्गी, मुर्गा इनकी सामत आई।
देशी और विदेशी मदरा हो रइ खूब पिवाई।।
खा पी 'सुमन' चोर रेतन की, विरदाबलि गा रए है।।4।।
लग रव फिर चुनाव आ गए है।

कुसमरा (नावली) जालौन
मो. 9415924778

ना पसरौ ई भेंवर गैल में

– द्वारिका प्रसाद शुक्ल 'सरस'

मोरी अरज सुनी काय नई।
बन्द कर दई वे सबरी गैलें।।
पैलें काय एसौ नई लगाव नेव तो,
जीकों तुमरे संगई हमई निवैलें।
बोल बतावौ बंद करौ ना हमसें,
अनबोलनों करके अपनी अपनी कर ना ठेलें। मोरी.......
जियत जियत कौ नातौ है तुमसें,
संग समेंलें मिलत रव तुमई हमें टटोंलें।
सजन बन सजनी सें मींठे बोलत रव बोल,
ई जीवन कों मिल जुल कें दोउ जनें हें सैलें। मोरी.........
जैसई जुर मिलकें तुम सबई बेंड़े आज,
कजंत एसइ मन मिलाकें बैठे होते पैलें।
तौंना टूटती जा डोर मिलन की,
औरई ना रूठती मानव मन की बिगड़ैलें। मोरी..........
वढ़ती बेल ना बीच में काटी होती,
तौं ना खिचतीं चलत बैल की सैलें।
देय मचकोरा सौ गढ़ला हॉको,
टूटो मन रूठो जन मन भय मेंले। मोरी.........
अव काहे की सरागोट लगी करेंजें चोट,
ऊपरी मन मिलॉय रव कैसउें हाथ ना दैलें।
तुमरी जानी सवई ने है जा है मानुषताई।
अव का होल ना लगौ तुमई पचारी सैलें।। मोरी............
सवई जानत जे वातन के हैं भन्ना,
कभउें काउ की मदद करी होय, नदिया नॉव तौ खेलें।
जीको हती भाग्य भरोसें नाव धार के बीचई,
वेई लगे पार किनारे सवसेंई है पैलें।। मोरी............
शुक्ल 'सरस' को और, कछुअई नई है चानें,
फोरत रय जे खेतन की पानी सी है मेलें।
हॅस खेल लेव सबई के संगै मिल जुलकें,
ना मिलें जे दिनों विन बचपन के है खेलें।। मोरी........

गणपति भवनशुक्लाना मुहल्ला टीकमगढ़
मो. 7000394297

कुण्डलियाँ

डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्या

(एक) भारत देस महान

नदियाँ-झरना, गिर-गुफा, सुगर बाग-वन खान।
सस्य स्यामला है धरा, भारत देस महान।।
भारत देस महान, फूल-फल औसद वालौ।
ध्रतुअन कौ सिरताज, सुगर पसु-पंछित वालौ।।
हीरा ज़ीरा-मोंतीं स्वर्न 'स्याम' जू। कमजी नँइँयाँ।
सुजन-संत-बिद्वान ग्याँन कीं गहरीं नदियाँ।।

(दो) भारत माँ कीसें कहै

भारतमाँ कीसें कहै कड़ रए पूत कपूत।
त्कत बिरानीं अपँइँ तज, ऐसी है करतूत।।
ऐसी है करतूत, थूँक रइ दुनिया जीपै।
च्लें पतन की गैल, कोउ कयतौ का ईंपै।।
सुभ-सुभ करवौ 'स्याम' न काये लाल! बिचारत।
कैसें रहै महान, अपँव जौ प्यारौ भारत।।

(तीन) मधुर बोलबौ सीखो

कोयल कउआ सें कहै, देस छोड़ जिन जाव।
निज करकसता त्याग दो, इतई मौंज उड़ाव।।
इतई मौंज उड़ाव, बोलबौ सीखो मींठौ।
काये कोउ भगाय, काय काऊ सें रूठौ।।
सुनकें मीठें बोल होत मन सबके कायल।
पैहौ बौ सनमान 'स्याम' जो पा रइकोयल।।

1001.ए, चुर्खी रोड बघौरा,
उरई (जालौन) उ.प्र. 285001
मो. 8595137010, 7408439308

वसन्ती चलवै मन्द वयार

– डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त,

वसन्ती चलवै मन्द वयार।
सुहावन शोभन सब संसार।।
कोकिल कौ कल सबको भावै, धरती सरस धान्य उप जावै।
आम्र बौर परिमल सरसावै, गद गद हो गौरइया गावै।
जल थल क्षितिज स्वच्छ सर वर कौ लज करै श्रृंगार।
सर्वदिशि सौन्दर्य साकार, वसन्ती चलवै मन्द वयार।।
निम्ब आम्र की सुरभिसुहाई, फूलत फलत सकल अमराई।
महुअन ने सुगन्ध मैहकाई, कलिकायें सबके मन भाई।
मान गुमान छोड़ सब प्राणिन कौ मधुरिम व्यवहार।
सरस सौहार्द बनौ आधार, वसंती चल वै मन्द वयार।।
कान्त कु मुदिनी शशि को भावै, सबके हिये हुलस जगावै।
रवि को लख जलजा खिल जावै, प्रिय तृग हिरणी मोद मनावै।
कर कलिका कपोल आलिंगन, भ्रमर करै गुंजार।
योगिजन छिप कै रहे निहार, वसंती चलवै नन्द वयार।।
पंचताण कंदर्प सैमारे, सावधान हो धनु संधारे।
तक तक गिर लवन्ह को मारै, संयम के खुल गये समद्वारे।
तेल, तूल, माम्बूल तरणि तरुणी मनभावन-हाट।
भरे यौवनहित यह उपहार, वसंती चलवै नन्द वयार।।
फगुआरे फगुआ खोंगारये, काम्य कुसुमचारिउ दिशिछारये।
यौवन अंखियन सोंवत यारये, नई नवेलिन के मन भारये।
बड़े जतन सें कछुक संभारे निज छाती कौ भार।
करैयाँ का है अब जौ 'मार', वसंती चलवै नन्द वयार।।
जौ बसंत है बड़ी सुहावन, सबको प्रिय, सबको मन भावन।
प्रिय यह पुण्य प्रकृति कौ पावन, सुखद शस्य सुषमा कौवर्तन।
पीत वसन पहनें सरसों, गावै सुमंगलाचार।
सजे है घर घर वंदनवार, वसंती चलवै नन्द वयार।।

श्रीमती लक्ष्मीगुप्ता भवन,
सिविल लाइन्स दतिया (म.प्र.) 475661
मो. 9826249448

रामकथा

– निहालचन्द शिवहरे

घुटरन चलत हते अयोध्या में राम
हमरे ओरछा में राजा बनकें पधारे
धन्यभाग बुंदेलन के
कै कलजुग में लेंकें अवतार
ओरछाधीश बन वेत्रवती के तीर
पुख्य नक्षत्र में महाराज
ओरछाधाम भले पधारे जू
अपुन सें ऐसोई नेह जौरें रइयो
निहुर के हम आपहीं कै पैरया लागा
विनती आपहू से हमरी
विघनन के बिंगना विनाशें रामजू
वेतवा भई गंगा सी
बुंदेलखण्ड की आन बान
तुम्हरे आवन से बनी पहचान
सरद जुन्हैया सी पहरन तुम्हारी
मनको भावै फेंटा व पाग में छवि न्यारी
ढांक, ढेंका नगड़िया, डुगडुगी, रमतूला संग
बर्दी में जवान देत रामराजा को जुहार-गुहार न्यारी
जमाने भर के मंदर में नइयाँ यहाँ सी रीत पुरानी
राजा रानी के लाने राम मौड़ा बनके ओरछा आये
जाड़से वे मंदर न जाकर
रानी महल में निवास बनायके रहत हैं
प्राण प्रतिष्ठा नाय भई जायसे
मोड़ा राम दरसन दैवे
मंदर से बाहर आयकें
इतै उतै से आये भक्तन को देत आशीष हैं।
जायसे हम भक्तन से कहत हैं
फिरकें अवाइं होवे जू ओरछा में

374 नानमक गंज, सीपरी बाजार,
झाँसी उप्र. 384003

(बुंदेली गीत)

मन में रई ऊल

– डॉ. राज गोस्वामी

घूंघट की झूल कभंउ जूड़े में फूल।
चल चलें उचकउओं मन में रई ऊल।।
पनियाँ खों जावें वे
मन मन सरमावें।
ठांड़ी हो जाऐं कितउं
औरन गरमावें।
ठुमका लगात चलें जौंड़ करें भूल।
चाल चलें उचकउओं मन में रई ऊल।।
जो देखै राही बौ
पीछें लग जावै।
ई के सिवाय बाय
और नइ दिखावैं।।
खेल छोड़ छाड़ भगें होय चाऐं हूल।
चाल चलें उचकउओं मन में रई ऊल।।
कुअला पै बैठ बैठ
बीन सी बजाऐं।
कबै बौ चिताय इतै
मौ तरें चिताऐं।।
अपनों ना मौ देखें मौ पै चढ़ी धूल।
चाल चलें उचकउओं मन में रइ ऊल।।
कुअला सें घर कों जब
जावें खों होंऐं।
वे अपने प्रेम बीज
जातन में वोंऐं।।
अपनी सुनान लगें का उनकौ मूल।
चाल चलें उचकाउओं मन में रई ऊल।।
वे कत सब घर पै हैं
मौका ना मिल पै।
मन में जो फूल खिलौ
पूरौ ना खिल पै।।
ई से इतइ लौट जाओ छिद हैं ना शूल।
चाल चलें उचकउओं मन में रई ऊल।।

श्री सदन सिविल लाइन्स
दतिया (म.प्र.)
मो. 9229688096

बुंदेली दोहे

– कर्मयोगी (डॉ.) सुरेन्द्रकुमार

जोतत बोयत नींदते, देखत परे मचान।
हैं किसान के गुन यही, देख फसल दे तान।।
खावत सतुआ घोरकें, बंधे पिछोरी कान।
बैलन कांधे हर रखें, जावत खेत किसान।।
कजरा कजरी गा रहे, आल्हा खों दे मान।
ऊदल भैया लड़ैया, हमूं बेइ ईमान।।
मोड़ा मोड़ी खेलते, आँगन या फिर पौर।
द्वारे पे गैयां बँधीं, हमसें बड़ो न और।।
मूंछन पै दे ताव वे, ठोकत अपनी जाँघ।
लरनै मरनै होय तो, हमें दिखइयो आँख।।
आंगन में मँड़वा गड़ो, दूर बिछी है खाट।
कोने में लुचई बनें, लगत ब्याव को ठाठ।।
मूंड़ पकर कें रो रये, जैसें मर गव बाप।
ठठरी पै ले जाय कौ, गठरी कौ संताप।।
गुरसी पै तापत रहो, भगत फिरै सब ठंड।
भुनसारे जा तला पे, मारो सौ सौ दंड।।
चढ़त जवारे देखकें, मन में सब हरसात।
अबकें अच्छी होयगी, निहचें ही बरसात।।
दईं कुलरियां पेड़ खों, बेंट ओइ सें पाय।
रोउत हैं अब छांह खों, गैयन गये चराय।।
आ तौ जिज्जी देख लो, जा मोड़ा की बात।
कै रव कर दो ब्याव मो, नइतौ कूदन जात।।
दद्दा आ गय टेरबे, का हो गइ है बात।
मोड़ा मोड़ी देखतन, अपनै घर भग जात।। (अपने)
ऊसइ ऊसइ कह रहे, ऊसइ ऊसइ बात।
ऊसइ ऊसइ मान लो, ऊसइ ऊसइ भ्रात।।
तीज और त्योहार सब, मिलें मनायें लोग।
देत भुजरियां सभी को, राम राम कह लोग।।
बुन्देली कौ राज हो, आल्हा से हों बीर।
राज करैं सिरि रामजू, नदी बेतवा तीर।।

प्रधान सम्पादक- पार्श्व ज्योति मासिक,
सम्पादक- सुदर्शन चक्र (ई न्यूज लेटर)
सम्पति- अध्यक्ष- हिंदी विभाग एवं हिंदी शोध केन्द्र,
सेवासदन महाविद्यालय, बुरहानपुर
संपर्क- एल. 65, न्यू इन्दिरानगर,
बुराहरपुर-450331 (म.प्र.), मो. 9827722392

(बुंदेली गीत - थोथे ग्रामीण लोक विश्वास पर करारा व्यंग्य)

गांव के गुनियाँ

- परशुराम भास्कर 'विमल'

टॉकर एण्ड राइटर आकाशवाणी
ऑल इण्डिया रेडियो

गांवन-गांवन डरी बैठकें, जितै जुरे सब नर नारी।
खूब मसकें खा रये गुनियाँ, जिनसे सब दुनिया हारी।।
सब बनत है जौन घोल्लॉ, ऊके सबरे बाल सुनों।
हैंकूं करतन सरम लगत है, अपने मन में तुमई गुनों।।
पउवा पीकें चमक छोड़ दो, कछू जनें बैठे-कैरये।
ऊपर हेरौ-नेंचे हैरो, ऐसी जा शिक्षा दै रये।।
करीं करकें खेल जमा दो, तौ हुइयै इज्जत भारी- खूब मसकें खा रये......
अददी पीकें तनक देर में, उठे रत वे झर्राकें।
हांत-पांव सब कपें जोर सें, बात करत वे घबराकें।।
आंय-बांय हम बक न पावें, इतनो ध्यान करें रइयो।
जादां न चढ़ पाय मजे से, निबुआ काट प्या दिइयो।।
बातें बना बनाकें सबरीं, कला दिखा रये वे न्यारी - खूब मसकें खा रये...
छिंगरी पकर मसक रये कौंचा, कैरये बिननू भूत लगो।
नजर लगी है तुमरे ऊपर, की कौ जादू आन जगो।।
काल अकेलीं गईंतीं हारै, टारफेर सब मई सें भओ।
नईयां चित्त ठिकाने ईसें, जी तोरौ सब घबरा गओ।।
मी करदें हम करिया ऊकौ, जॉन करत है गददारी - खूब मसकें खा रये...
पूजा कौ सामान मंगा लओ, ठॉडे, कर लेय दो बुमकरा (बुकरा)
मुर्गा और बुकईयाँ पकरें, बैठे उतै कछू डुकरा।।
चौंतरा ऊपर बैठ घोल्लॉ, हॉथ ठोक रये दम भरकें।
कूका दैके कात सबई सें, सरक आव मोरे करके।।
गौर सें देखत नई बऊँवन खॉ, उनकी है जा हुसयारी- खूब मसकें खा रये.......
तबियत बिगरी होय काऊकी, कात परौसी सुन प्यारे।
अजमा लो डरवाबें बैठक, दूर हुँयें वे दुःख सारे।।
खर्चा खूबई करकें वे तौ, और गसे-बीमारी में।
जॉन गई ऐसे में घरके, भूल रये गमारी में।।
सबई तरा बरबाद करो सो, धरी रकम लै गये सारी- खूब मसकें खा रये...
रोजऊँ मिसल बनाकें बैठे, माल खाये से लाल परे।
इनें दिखात बरोंटन पूजा, दारु पीके भुत्त डरे।।
कुकरम कर नठया भये पूरे, जीनें (जीवन) भर जे पाप करे।
रीते कुआ पतोरन कैसें, कमऊँ काऊ के नहीं भरे।।
होत फिरे बदनाम मुफत में, और मिली संग में गारीं- खूब मसकें खा रयेकृ
अस्पताल की दवा खाये सें, उतई ठीक हुइयों भइया।
जौ दरबार लगाबौ छोड़ो, ईमें सार कदू (कछू) नईयाँ।।
जीवन कौ सुख चॉने होवै, तौ इनसें दूरई रइयो।
गॉव गली के गैलारन सें, तुम जा ऐसी कै दिइयो।।
करियो न विश्वास कोऊ अब, 'परशुराम' जा उच्चारी- खूब मसकें खा रये.

'विमल' साहित्य 'सदन'
ग्राम सप्तवारा पो. स्यावरी
बाया- मऊरानीपुर जिला झांसी उ.प्र.
मो. 9935967278

बुंदेली गीत

- गुलाब सिंह यादव 'भाऊ'

हरि सोभजो रजावे
सखी री कै दिन करौ बहाने,
एक दिन सासरें जानें।
फूली फिरत गदूल सौ फूला,
एक दिन जौ कुम्लाने।। सखी री..........
जा काया माया में भूली,
पाछें फिर पछतानें।
समुरा के घर जानों पराए,
मिलें हजारन तानें।। सखी री.........
गैल गलन इतरा रई भारी,
हँसत ना मिलौ भियानें।
कछु करौ धरौ उ घर कों,
जातें तुमें निभानें। सखी री..........
अबै फिरत हौ डार दुपट्टा,
ढाकें भाऊ है जानें।। सखी री............

लखौरा टीकमगढ़ म.प्र.
मो. 9669651046, 8349911413

बिदाई

– डॉ. डालचन्द्र अनुरागी

जानै कौन घरी वे आयें।
अपनी बिदा करा लै जायें।।
न कोऊ पंण्डत ब्याव पठें पढ़ें,
न फेरे सात जगायें, जानै कौन........
नोबें चाये विसूरै सब जन,
विनै रोक न पायें, जानै कौन.......
ऐसे बिकट पाइने है वे,
छन न देर लगायें- जानै कौन.......
मौन कंठ अलसायीं अखियाँ,
अब कीसौ हैं नेह लगायें- जानै कौन.......
चिरनिंदिया की वोझिलता को,
कोमल पलक उठां न पायें- जानै कौन.......
अनुरागी दुल्हिन डोली पै,
लटकें फूल लतायें- जानै कौन.......
इ करमन की बाँध पुटरिया
संग लाद लै जायें।
जानै कौन घरीवे आये।।

कामरे रोड बैंक कालोनी, पानी की टंकी के समीप
राजेन्द्र नगर उरई, जिला- जालौय यू.पी.
मो. 9161828824

(बुंदेली गीत)

उठी हाट जीवन की

– डॉ. रामकृपाल 'कृ

विषय बासना के पानी से, प्यासा बुझी न मन की।
उरझे रहे काँच किरचन में, उठी हाट जीवन की।।
छाने दुनियाभर के पनघट, भरौ न खाली मन-घट।
लटपट भये न टूटी झंझट, मिटीन मन की खटपट।।
माया जाल कठिन दुनिया कौ, सुध न करी सुमिरन कौ।
विषय बासना के पानी से, प्यासा बुझी न मन की।।
घट गओ तेल निघट गई बाती, आ गव दिया बुझानें।
स्वाँसा चलत-चलत थम जाने, मन पंछी उड़ जानें।।
जंग लगी तन के पुरजन में, जोत घटी आँखन की।
विषय बासना के पानी सें, प्यासा बुझी न मन की।।
चन्द्र लोक पै चरन धरे हैं, ऊँचे उड़े गगन में।
भूल गए धरती पै चलबौ, का पाओ जीवन में।।
गई जबानी की टनकई सब, खाल सिकुड़ गई वन तन की।
विषय र्अवसना के पानी से, प्यासा बुझी न मन की।।
अन्त समय कोउ काम न आबै, झूठी दुनियादारी।
भवसागर के भौंर फँसी है, नइया नाथ हमारी।।
अब 'कृपाल' कर कृपा उबारौ, आस लगी दासन की।
विषय बासना के पानी सें, प्यासा बुझी न मन की।।

जालौन उ.प्र.
मो. 9838928403

पेड़ न कटवाइयो

– डॉ. सुरेश 'पराग'

पिया मानो बात हमाई, पेड़ न कटवाईयो,
पिया मानो बात हमाई, पेड़ न कटवाईयो,
पेड़ से जल है, जल से अनाज है,
येई नाज पे हमें नाज है,
जेई पेड़ धरती को ताज है।
जे धरत की शान, पेड़ न कटवाईयो,
पिया मानो बात हमाई, पेड़ न कटवाईयो।
जेई पेड़ पानी बरसावें,
बढ़ी बाढ़ से हमें बचावें,
पर्यावरण को स्वच्छ बनावें,
जे हैं अपने पुत्र समान, पेड़ ना कटवाईयो,
पिया मानो बात हमाई, पेड़ न कटवाईयो!
मीठे फल और छाया देवें,
वायु प्रदूषण को हर लेवें,
बदले में जे कछू न लेवें,
बसत इनयीं में सबके प्राण, पेड़ न कटवाईयो,
पिया मानो बात हमाई, पेड़ न कटवाईयो!

– डी.के. 4, दानिश कुंज
केलार रोड़, भोपाल म.प्र.
मो. 9406744415

तीरकस

पुरानी हवेलियों अटारियों में तीरकस रहत ते। जे दीवारों में भौत विस्तार वारे नई रात ते। दीवार की ईंटो में एक दरार सी छोड दई जात ती जो तीनेक फुट लो नीचे जात ती। पे जा दरार सीधी नई होत ती ऊपर छेद होत तो और छेद से नेंचे की तरफ एक पतरी सी सीधी पोल बना दई जात ती। जहां छेद रहत तो ऊके चारों ओर सोइ छोटे-छोटे टुकले कर दय जात ते। जे भीतर से बाहर बंदूक चलावे या तीर चलावे बनाये जात ते। बाहर के आदमी पे अचछो निसानो सद जात तो। जे तीरकस हम नाटक रूप में दे रय हैं। नाटक हंसी मजाक और गंभीर बातों बारे होत हैं सो तीरकस से साधों अपने बान।

एकांकी

गाँव हमाओ ऐसो नोनो

- स्यामसुंदर

दृश्य

(झोपड़ी जैसो घर है। दरवाजे की जगह टटिया लगी है। दरवाजे के बाजू से एक चौंतरिया है, गाँव की गैल है सो आवो-जावो मचो हैं गुचई टटिया के सामने खड़े है। कछू हाथ से ऐसे कर रहे है। सामने सें धप्पे अपनी बछिया को गिरमा हाथ में लमें आ रये है।)

धप्पे- काये इत्ते भुनसारें काम खों आ गये इते।

गुचई- (जर्दो थूकते हैं) का लतायें। बहू को रात में पेट पिरानो सो हमने विचार करो के नौ मईना चढ़ गये है। जो पेट नोड़ पिरा रओ जो तो कोनऊ जीवधारी धरत पे आने या मचल रओ है, हमने तुमायी भौजाई सें कई के जल्दी करो हटा अस्पताल में ले चलो उतई जचकी हुईये।

धप्पे- जो तो तुमने अच्छो सोचो। सरकार ने वा जननी गाड़ी चलाई है ईके लाने ऊसों बुला लेने तो।

गुचई- लेव अपनी धुनकन लगे कछू लगाई खोई सुन लेव मालक! बीचई में रोक दओ।

धप्पे- का बतायें। हमाई जाई आदत पर गई। से कछू बुरई तो कई नैयाँ। सुनाओ फिर कर भओ।

गुचई- का होने तो। हमने तुरत मोबाईल सें जननी बुला लई! व आ सोई जल्दी गई। उन्ना-लत्ता समेटे बहू खों लओ, और पूरो घर ओई में लद गओ। वा जोन लौरी बिटिया है- ओई खों घर रखावे छोड़ दओ।

धप्पे- घर में काम धरो। हमई से कै दई होती हम अपनी रतिया खों तुमाय ना भेज देते।

गुचई- का बतायें सब उलात में हते। सो कोऊ सें कछू कैम नई पाये। फट् से गाड़ी में बैठे। और जे पौंचे अस्पताल। पे का बतायें। हमाओ भाग्ई कछु ऐसो है, ऊते कोनऊ डागदर नई। कौनऊँ मिसिया नई। बहू अस्पताल के दरवाजे पे तड़प रईती। तुमायी भौजाई ने हम औरन सें कई के दूर हो जाओ। ऊने गाड़ी को परदा सो बनाओ। संगे गई जिज्जी और तुमाई भौजाई ने जचकी करा दई। कहाँ-कहाँ के रोने की आवाजें आइन लगी। हम खूब हाले फूले पौंचे। उनने बताइ के बरात आ गई। हमनें कई अच्छी भओं लच्छमी आई। और ओई जननी में घरे आ गये सो इते ठाड़े हैं कि सूदरे महराज से पत्रा और दिखा लें।

धप्पे- मीत अच्छो रओं जा बलाओ। उगे अस्पताल में नाँव-गाँव चढ़ गइयो तो वा लाड़ली लच्छमी जोजना है सरकार की और जचकी पे पईसा सोई मिलत है-

गुचई- हिन्नी! एकजनी वाई हती उन्ने सब संभार लओ तो कै रईं तीं। अस्पताल में एक जाझाँ पे हमें मची ती तालाबेली सो गये।

धप्पे- चलो! अच्छो करो : तो अब हम लढुआ खेंवे आ रये हैं। (धप्पे चले जाते हैं। गुचई आवाज लगाते है। टटिया की ओट से एक स्त्री का मुख दिखता है)

जगरानी- काये दद्दा। कायखों टेर रये।

गुचई- नातन भई है, सो सूदरे महराज से पत्तरा दिखा जाने है।

जगरानी- बैठो चौंतरिया पे! वे पूजा कर रये हैं भेजत हों।

(पंडित जी टटिया में से निकलते हैं)

गुचई- महाराज जूखो पाँय लागन!

सूदरे- खुशी रओ जजमान! कहो बताओ कैसे अवाई भई!

गुचई- नातन भई है सो आओ हों :

सूदरे- चलो अच्छो भओ नातन तो आय लच्छमी को औतार! ब्ताओ कबै भई!

गुचई- ऐई हिन्नी ऊँग आयतीं पहर भर रात गयें।

(सूदरे महराज पत्रा देखते है। ऊँगलियों पे गिनती सी गिनते है)

सूदरे- अच्छी घरी-बेरा भई! बस तनक दिन चढ़े काकुन को नेग कर देने। फिर दिस्टत खो और उठा लेने। और सोमवार खों चौक कर लईयो!

गुचई- नाँव और बता देते।

सूदरे- जमना रख लईयो रास को जोई नाम आय! फिर तुमाई मरजी कतकड़ा कछू रख लईयो।

(जगरानी झाडू लगाने निकल आऊत है)

जगरानी- बिटिया को होबो पैलऊँ पेल अच्छो मानो जात है।

गुचई- सो तो है पंडिताईन बू!

सूदरे- जे सोइ पेलई पेल भइती अपने मताई-बाप खों, देख लो कित्ते सुखन भजी रईं।

जगरानी- सुख सोई भाग में बदे रात ने बदे ती हमें सुख सो पटक दओ बाप ने इते!

गुचई- अरे पंडिताईन जू जो का भाँख रईं।

जगरानी- अपनी जाँघ उघारो आपई मरिये लाज। सो कछू नें पूँछो। तुमाय सूदरे महराज के रा जेब से आई-सो सुरगई में रै रईं हो!

सूदरे- तो कौन से नरक में रही हो!

जगरानी- नरकई या! भोग रईं हों। ने अबव झोरी फाँद के माँगबे तो खेबे के लाले पर जैहे, यऊँ-कबऊं तो भूखे पेट सोऊने आऊत है।

...ठीकई है पे परमात्मा ने आँख ऊँगरियन एक मोड़ा दहते है ... चिंता खाय जात है।

सूदरे- तो का तोई खों चिंता है मैं सोई भीतर-भीतर घुरो आ... हों पे करों का!

जगरानी- देखो दद्दा। तो जनम लेनो हमैं गरे पर गओं हम बनी-...री नई कर सकत। हम कहूँ काम करवे जायें तो आदमी कान...त है के हमैं महराजन से काम नई कराऊन कामखों पाप में डार...।

सूदरे- ऐसे कुल में जनमी हो। वे ठीक तो कात-कामखों पाँच...तीं इते उते!

जगरानी- छोड़ो जे वातें। अव कौन ऊँचो कौन नीचै! अव तो ...म करो मेहनत करो को जमानो है। हाथन खों काम होवे और ...यों में ताकत होवे तो वायरे काम को टोटो नईयाँ। मैं ने कित्ते बार ...ई के छोड़ो इखों सव कछू निकर चलो कहूँ और जहाँ काम मिले। पे जे मानत नाईयाँ! कैरओ इतै मरहै- इसई जी हैं। वे मरत-मरत जी रये।

गुचई- जीने जनम दओ-ओई सब देहे-कायखों चिंता में पर गई। अव हमई खों देख लो दो छोटे-छोटे खेत में खा रये। हती वाप-दादों के पास मुतकी जमीन पे अवतो वटँत-वटँत रै गई दो टुकड़ा खेत!

सूदरे- भैया करमन की गत न्यारी। अव हमई खों देख लो। तनक सी मंदर की पूजा हती-घंटी हलाऊत ते कछू नाज पानी मिल जात तो वाई छूट गई।

गुचई- अरे! कवै कैसे छूट गई।

सूदरे- अवई चारेक दिनाँ पेलें। हम नाँदिया खों अच्छो रगड़-रगड़ के नव्हाऊत ते पता नई कैसे ऊको एक कान टूट गओ। बस मंदिर के मालिक नाराज हो गये ओर उनने हमसें मंदर की कुची ले लई।

जगरानी- देख लो। दद्दा! इनके धरे गुन मैं जानत हों। इनने जब मोय सुनाई के नँदिया को कान टूट गओ तो मैं ने कई के कै दईयो पता नई कौन टोर गओ जल चढ़ावे तो कित्ते लोग आऊत हैं वे नई जे ठैरे सन्त वसी हरीचंद सो अव भुगते अरे जे भुगते सो भुगते हम सोईं बिगर गये।

सूदरे- जाँदा ने वोल! दव तोईरी वात मान हैं वता आज गुचई दद्दा के सामू वता दे।

जगरानी- तो सुन लो हमैं इते नई रानें कहूँ चलो दिल्ली चलो चाय भोपाल चलो। उतई गुजर-वसर कर हैं।

गुचई- सही कई पंडिताईन ने! जे विचार वन रओ तो अच्छोई आ!

सूदरे- वात तो अच्छी कई! पे दूसरी जग्गा कौन खुली किवरियाँ मिल जैहे! ने जान ने पहचान वाहर का कर है।

जगरानी- मजूरी करहै और का करहै।

गुचई- सही कै रईं अव कर जो विचार मैं सोई साँसत में हों भाऐ भी मन नई लग रओ पे का करों हरों लो इते लड़का के रओ के तुमने जीवन भर जुआ खेलो और सव गमा दओ। अव वताओ यही उमर जुआ खेलवे की सो खेलत रओ जमीन विकत रई वे अव पता प्ला चल रओ के अपनो कित्तो नुकसान कर लओ। जुआ तो छोड़ दओ। पे जब सव कछू स्वाहा हो गओ तब छोड़ो सो अव पछतायें होत का जव चिड़िया चुन गई खेत।

सूदरे- हम एकई जैसे है ई गाँव में कौनऊ सुख नई है।

गुचई- सही है दुःख पुरम बहुत हो गओ अव चल रओ हो नई तो घर पे चार सुनने आहे है।

दृश्य - दो
(पार्श्वध्वनियाँ)

(घर को आँगन ढोलक बज रई है गान तल हो रओ है। एक तरफ चूल्हा सुलगो है मिट्टी के वर्तन में कछू उबल रओ है

गीत

चढ़ुआ चटाई नेग माँगें नकद वैका......)

गुचई- एक घरी बेरा अच्छी वताई है सूदरे महराज ने और जमुना नाँव रखवे की कई है को जानलो चढ़ुआ चढ़ रई दी वस हो गओ।

गुलाटी- मैं तो अपनों काम करई रई हो। पे जो नओ जमानो आव सो नाँव तो अपने लड़का ने पेलऊँ सोच लाओ। कैरओ की ऐश्वर्या रखने है।

गुचई- अव जा तें जाने तोऐ लड़का जानें।

गुलाटी- जो तो सव हो जैहे पे विसवर की सौदा तो लाऊवें है हटा जाने पर है।

गुचई- वनवा ले परचा पईसा धेला तो हो नईयाँ सव उधार आऊने है-

गुलाटी- मोरे पास परे है कछू डब्बल! पे उतने से काम नई वनने लड़का से पूँछत हो। कछू ओईखें लिंगा हुईये।

गुचई- पनवेसरी! ऊकै लिंगा कहाँ से आहें! ऊ तो सव पी गओ हुईहै। वस! ऊखो पईसा मिलो और ऊने वोतल पकरी। अव वाय वन गओ है तो कछू सुधर जाये। वे मुश्कल दिखात है ई शराव ने सव सत्यानाश कर दओ। गाँव भर ओई में डूव गओ।

गुलाटी- छोड़ें! असे अपन पे कारज सन परो है सो इंतजाम तो करनई पर है। विसवार की सौदा को परचा का वनाऊने वानियाँ सव जानत है मँहगाई जान खाँच जात है। सो सव थोरो-थोरो लाहने है।

गुचई- देख लड़ुवा रिश्तेदारों में सोई भेजने पर हैं सो थोरे में का

काम चल जैहे। गुड़ के भाव आसमान छूरये ऊकौ लेनेई पर है।

गुलाटी- हओ! ऊकोलेने पर है।

(गुलजारी आता है शराब पीकर)

गुलजारी- बऊ! बापन खाँ अचाके से मनाऊँने है। गंता में कछू कोर-कसर नेई रखबे गाँवभर खाँ न्यौतने है और कछू शहर से सोई बुलवाने। काय से के हम पेलऊँ पेल बाप बने है।

गुचई- हौंत में मूठी फरफरा उठी। पेलऊँ पेल बाप बने हो, ससुरजू जा तो हम सोई जानत है पे ये यहाँ से लाओ।

गुलजारी- तुम आव हमारे पिताजू सो कछू नई के, ग्योंपे तुम हो पनईयाँ लगाके जांग के हो। भगवान ने दिन दिखायें तुम गरीबी खाँ रोऊन खो। तुम कबऊँ ने सुधर सो। हव्वल कहाँ से लाबो में बताऊत हों बा जौन पीभरयारी फटिया है ऊखों बेंच देहैं। कछू आई दिमाग में बात!

गुचई- हओ! काय ने आहे तुम हमाये लड़का भर नोंई तुम तो हमाये पुरखा हो। गुरुमहाराज हो और का का कयै तुम हमाये भगवान हो।

गुलजारी- बस जादा नई रंग में भंग करबो की ठान लई का।

गुलाटी- बेटा! जे तो ऐसई बकत रात जाओ तुम जाओ। सब साके न्यौरे अच्छे से हुइये। तुम्हारी मानी जैहे।

गुलजारी- जा कड बऊने! फरकबे पर जाये! जे कछू अड़बंगा हार है तो इनको हम देख लें है हमाये पिताजू हमे कछू नई बोलत।

(गुलजारी चला जाता है)

गुचई- देख रई हो कैसी बातें करत है। गुस्सा तो ऐसी चढ़त है के इखों मार डारे या फिर हमई फाँसी लगा लेयें।

गुलाटी- कैसी बातें या कर रये। अब हो गयी है लड़किया सो सुधर जैहे ज्यादा ने सोचो।

गुचई- काय ने सोचें। हमें तो आगे लौ को दिखात है दिखों जमीन बिक गयी तो कोऊ ने पूँछ है हमें सरकार से कोई रासन पानी नई मिल रओ।

गुलाटी- ई में तुमाई गलती।

गुचई- बताओ कैसे गलती हम नई करी सब गलती लड़का पैदा करो हमनई ने घर गिरस्ती मिटाई हमने।

गुलाटी- का ले बैठे हम तो जान कैरये ते के बनवा लेते भूमि हीन बैठ को कागज।

गुचई- कहाँ से बनवा लेते। ईमें में फँसी है जा जमीन। इनको छोड़ो जिनके पास लाखन करोड़न की जायदाद है और सरकारी रासन लै रहे। सरकार सोई का देखत परखत नईयाँ और फिर रासन पानी देके जनता खों निकम्मी बनावो नाई का।

गुलाटी- सरकार की सरकार जाने। हमें ईसे का लेने देने अपनो देखो जाओ बाजार और ल्याव किसयार की सौदा के टेर ने ...

गुचई- जाने तो है ऊ तो जो करने आऊत सबई करने। पे ... के लच्छन ठीक नई। हाँ तुमें एक बात सुनाऊने।

गुलाटी- सुनाओ! का सुनाऊने।

गुचई- जे हमाये पुरोहत है न सूदरे महराज। उनकी ... पूजा कम गई। बिचारे बड़े परेसान है। पंडताईन तो कै रईती जा क... छोड़ के कहूँ और चलो। वे गाँव छोड़बे को विचार कर रये है। ... सोई सोच सकत है देखो अबै अपन काम करने में कच्चे नईयाँ ... निकर पर है तो कछू काम मिलई जैहे। सो जो घर अब ... लगौ है तोरी राय का है।

गुलाटी- अबे तो जो सामने है ऊखों निपटाओ। आगे कछू ... सोचने तो पर है।

गुचई- अब खेती-किसानी के भरोसे रेबो हो नई सकत है ... जहाँ सींग समा है ठतई चलने पड़ है।

गुलाटी- चलो तुमाई बात मान लई।

दृश्य - तीसरा

(सूदरे महराज पंडताईन गुचई और गुलाटी गठरिया पुटरिया रखें सड़क के किनारे पे बैठे है)

सूदरे- अपन खाँ दमोंव चार बजे लौ पहुँचबो जरूरी है। दिल्ली की रेल छैः बजे है ओई खाँ पकरने है। अबे बजत हुइये डेढ़ बस मोटर आई और फटाफट चढ़ने है।

गुचई- तुम दौड़ जनी पैले चढ़ जईयो सीट गेंत लेने फिर सामान हम औरें चढ़ाउत रेहें पे करने जल्दी है जब परदेस खों निकरई परै तो अब उतावली में काम लेने और हुस्यारी सोई चाने पईसा सम्हार के रखने।

गुलाटी- हमै तो घर छोड़बौ मरबे जैसो लग रओ। अच्छो नई लगत है। ऐसो लग रओ है के घरे लौट जाये। का कैसी हुइये परदेस में कैसे आदमी मिलत है।

राजरानी- कै तो ठीक रई, अब देख जो-जो ... खों लटका लेंके हम कहा फिर रये है। पे जा तो बताओ के गुलजारी काम नई आओ पतैबे ऊ होतो तो मोटर में अलग से सीट मिल जाती।

गुचई- पंडताईन जू! ओई के कारण तो अगाने पर रयौ। परो हुइये कहूँ नाली में शराब ने मटियामेट कर दओ सब! ओईखो सबक सिखाबे को हमने ठानी और निकर परे।

राजरानी- अब रैहे अकेलो सो मूँड़ पे जब सब आ जैहे, तब समज में आ जैहे। हे भगवान। सुधर जाये तो का नोंई काने।

गुलाटी- अब सुधरे चाय मिटे अपन तो निकर परे। पता नई का होने कहाँ मरने-खपने, कहाँ ठिकाने लगने।

गुचई- हू है वही जो राम रचि राखा। भाग के लिखे अक्षर

मेट सकत है। बदो हुईये बनवास भाग में सो सब मोह-छोंह के पड़े।

सूदरे- भैया अम्मा को चकर बड़ो होत है। कहाँ रामश राजा रये ते और कहाँ बनवास पे चले गये। 'मुनि वशिष्ठ से पंडत नी [illegible] लगन धरे। सीता हरन [illegible] दसरत को विपत पे विपत । सो भैया जब कि तिरलोकी नाथ पे विपदा परी तो हम तो ठैरे [illegible]।

गुचई- ठीक कई आपने पे अपन पे कौन विपत आ परी है अपन हँसी खुसी से चल रये ते दो पईसा कमाबे जात कछू डीलडौल बो हे तो फिर देख है।

गुलाटी- विपत जाई या कहाउत का छोड़बो निधन नोई तो [illegible]। इते के फोहा जैसी नातन छोड़ी अटारी छोड़ी संग सहेलियां छोड़ी। हेन छोड़े तो जा विपत से कम आय का।

(बड़े दा का प्रवेश)

बड़े दा- सड़क पे डेरा ढपोला लमे बैठे का कहूँ तीरथ बिलाकरवे जा रये के कहूँ ब्याव सादी है।

सूदरे- ने तीरथ बिल्ला करने जा रये ने कहूँ ब्याय-सादी है करमन गति न्यारी ऊधौ। सो करम मो जहाँ ले जाय उतई जा रये।

बड़ेदा- राम-राम कैसी बातें कर रओ हो पंडत जू। कौन से करम बिगड़ गये आपके। मैं समझो नईयाँ के आप काह केन चाहत हो।

सूदरे- ऐई के ई गाँव से हमओं दाना पानी उठ गओ है। गाँव छोड़ रये है अब जैहे जहाँ रेल ले जैहे पापी पेट भरने है।

बड़ेदा- का के रये पंडत जू। इते जानबकार होके ऐसी बातें करत हो। बताओ का गाँव में पेट नई भर रओ। का जजमानों को टोटो पर गओ।

सूदरे- का [illegible] बड़ेदा हती मंदर की पूजा सो वा छूट गयी और [illegible] मिलत नईयाँ, पूजा पतरीसे घर नई चलत और बनी मजूरी हमसें कोऊ करवाउत नईयाँ।

बड़ेदा- अरे! हम पैलऊँ बताऊते। पूजा छूट गयी काम छुड़ा लओ सरकार ने।

सूदरे- कछू ने कहो हमीरो दोस हतो।

बड़ेदा- सो कैसे?

सूदरे- हमारे हलका नंदी को कान टूट गयो तो सो हमाये लाने मँदिर के कपाट बंद हो गये।

बड़ेदा- कछू बात नईयाँ। हमाये पास [illegible] है हमाये पुजारी की नौकरी लग गयी सो चलो गओ। तुमे जो पूजा में मिलत तो कर्यो दुगनों देहे।

सूदरे- पूजा अकेली से काम ने चलहै है।

बड़ेदा- गांव में पंचायत हुइये और अपनों काम दओ जेहे। हमाई बात मानो। परदेस मै का धरो है और हाँ तुम गुचई भैया काये जा रये।

गुचई- हमाई ने पूँछो बड़ेदा।

बड़ेदा- काम ने पूँछें।

गुचई- जन घराई को कुरवा आँख फोड़ रओ तो कौन से फरयाद करें। हमाओ लड़का कैसो है? आप सब जानत हो। अब [illegible] सुनी जमीन बेच रओ है। बताओ हमाओ ई गाँव में कैसे रैये बन है।

बड़ेदा- तुम ने रेहो तो और बिगड़ जैहे।

गुचई- अब सब राम भरोसे है हम तो चले।

(गुलजारी, गुलजारी की पत्नी अपनी बच्ची को लिये आउत है)

गुलजारी- हमाये बाप मताई हमसे रूठ के कहाँ जा रये। हमें तो ई बात को अबई पता लगा के जे कहूँ जा रये है।

(बहू सास के पाँव पकड़ लेती है)

गुलाटी- नई बहू! पाँव ने पकड़ो अब मौत हो गई हमें इते नई रहने है।

गुलजारी- बड़ु तुम ने रेहो तो हम ने रेहै। हमई चल है।

गुचई- प्यारे पुतरा! पियो खूब दारु। हमने तुमै छोड़ दओ हमाये ऊपर दया-दिपटी करो।

(गुलजारी रोने लगता है)

गुलजारी- नई जे कान पकरे अब दारु नई पियूँगा। आप लौट चलो।

बड़ेदा- देखो गुचई अब हमाये ऊपर छोड़ दो हम गुलजारी को समझाते है। उसे तुमै सिकायत ने रहै।

गुलजारी- बड़ेदा। ए ई जलनी की कसम जो अब दारु पियूँ।

बड़ेदा- शाबाश बेटा। अगर पी लई तो गाँवभर में जलूस निकार हो।

गुलजारी- मंजूर। अब लौट चलो।

बड़ेदा- देख का रये उठाओ गठरी पुटरी पंडत जू और गुचई [illegible] गाँव को लौटो।

(सब गाँव को लौटते है)

'गीत'

गाँव छोड़ के अब नई जाने गाँव हमाओ ऐसो [illegible]।
रहने हमें इतई माटी में खाने इतई को खारो [illegible]।
प्यारो-प्यारो लोग इतै के पुरखन को है इते [illegible]।
उतई हात [illegible] काम मिलेगा [illegible] [illegible] [illegible]।
छोड़ो मोह सहर को भैया गाँवों [illegible] नहीं [illegible]

समाप्त

एकांकी नाटक

चौसर

– भास्कर सिंह माणि

पात्र परिचय

गुड्डी – निरक्षर युवती
लल्ला- रईस बिगड़ैल युवक
घसीटे- गुड्डी का साथ भाई
फुद्दी- गुड्डी का बूढ़ा बाप
रामकली- गुड्डी की अम्मा
लूले अरमान व फटूले- ग्रामीण संभ्रांत नागरिक

(नाटक आरम्भ से पैले कोरस गान गानें। ई के बाद पात्र परिचय कराने)

कोरस

अपई आन वान शान पै कुर्वान रई बिटियाँ।
लाज देश की बचावे को बलिदान रई बिटियाँ।।
पढ़ लो तुम आसऊँ अपय वेद और पुरान को।
जन गण मन गान वन्देमातरम रई बिटियाँ।।
राष्ट्र की लाडली स्वाभिमान रई बिटियाँ।
अपई आन वान शान पै कुर्वान रई बिटियाँ।।
वीर माटी को करजा सारन्धा चुका गई।
वीरांगनाएं जौहर की अग्नि में समां गई।।
आज फिरसें ऐसियाई चिंगारियाँ चाउनें।
सीता अनुसुईया मान नारी को बढ़ा गई।
नये नये इतिहास के रचत रई बिटियाँ।
अपई आन वान शान पै कुर्वान रई बिटियाँ।।
पद्मा दुर्गा झलकारी पानी पै गर्व देश को।
सुभद्रा नायडू टैरेसा पै अभिमान देश का।
होली दिवारी ईद मिलजुल मनाऊँतीं।
इनई से महक रओ उद्यान देश को।
द्वेष भेदभाव से दूर-दूर रई बिटियाँ।
अपई आन वान शान पै कुर्वान रई बिटियाँ।।
दहेज के लाने ना मारईयों इने कभऊँ।
बुरी नियत से माणिक ना देखियों इनें कभऊँ।
यमराजऊ ने भी हार इनसें मानी है युद्ध में।
कठोर शब्द वान से छेदियो इनें कभऊँ।
ऐश्वर्य की पताका फहरात रई बिटियाँ।
अपई आन वान शान पै कुर्वान रई बिटियाँ।।

दृश्य

(गुड्डी अपने घर चौतरा झाड़ रई ओई टेम लल्लू आ जात। लल्लू नीम के पेड़ की आड़ में ठाँड़ो हो जात और जैसेई लल्लू की गुड्डी से नजर मिलत, लल्लू इशारो गुड्डी लल्लू के ऐंगर पौंचजात। घसीट जो सब देख लेते और छुपकें लल्लू और गुड्डी की बाते सुनें लगत)

गुड्डी- (धीरे से) का कै रमे?

लल्लू- मुलक दिन हो गये तुमसे मिले।

गुड्डी- तो का कर देवे?

लल्लू- (मुस्कुराते हुए) सब जाती समझती तोऊ, आओ नई

गुड्डी- नई, पहले ब्याओ करो। बाद सब कछू।

लल्लू- (हॉत पकर कें) अबे जे बाते छोड़ो। ब्याओ कर लें, चाय जब। तुमे हमारा प्यार पै भरोसो नईयाँ का? तुमें हमाई कसम।

गुड्डी- (झुंझलाकर) जो तुम कत हम तुमहि मानत। अब तुम हमाई मानों।

लल्लू- हम सब कछू तुमई की तो मानत।

गुड्डी- तुम समझों करो। तुमई ने कइती अब हम जब भी आयें हैं दूला बन के आयें है। हमनें तुमाई सब मान लईती।

लल्लू- दूला बनकें आयें है। तुमाई कसम।

गुड्डी- (क्रोध में) तुम दद्दा बनवे वाले हो। अब काये दूला बन हो।

लल्लू- (घबराकर) का का का कै रई। दुवारा कओ।

गुड्डी- हाँ! मैं माँ बनने वाली हूँ। जल्दी घर पै बात करो। जल्दी ब्याओ करो।

लल्लू- (क्रोध में) काये झूठी बोल रई। तुमे शरम नई लगत। नीचपना की बातें कर रई।

गुड्डी- सई कै रई। अब नीचपना कैरये पैला काये नई सोची समझी।

लल्लू- (जेब रुपइया निकार कै) कै लेओ रुपइयां बच्चा गिरा दो।

गुड्डी- नई।

लल्लू- काय।

गुड्डी- मोय ऐसी वैसी मोड़ीसमझ रये का?

लल्लू- (समझात भये) तुम कछू समझती नईयां। ब्याओं के पैले मोड़ी मोड़ा, कोऊ का कै है।

गुड्डी- जो तो तुमे पैले सोचनेंती। तुमई ने कइती चिन्ता नई करो। ब्याओ हमें करने। इते उते के को होत।

लल्लू- अबे हमाई बात मान लो।

गुड्डी- नई, ब्याओ करो नई तो...।

लल्लू- नईं तो का? का कर हो। जो दिखाई दे वो कर लो।

गुड्डी- बखेड़ा खड़ो नई करो। हमाई बात मान जाओ।

लल्लू- का मतलब?

गुड्डी- तुमाई और हमाई लाज जई में है। ब्याओ कर लो।

लल्लू- नई कर तो का हो जै? हम कैं रये वोई। हमाओ कछू बिगर वदनामी तुमाई हुये। अन्यथा तुम समझे। (घसीटे पेड़ की ड़ से निकल कर सामने आ जाता है)

घसीटे- अन्यथा, का कर ले हो?

कल्लू- अन्यथा बोई कर है जो अवे तक तुम जैसन कैसंग रत आये। का तुम जानत नईयाँ?

घसीटे- (क्रोध से) तनक जीव में लगाम लगाओ। नई तो।

लल्लू- नई तो का कर लेओ हो?

घसीटे- जेल की चक्की पिसवा दे है।

लल्लू- मोय

घसीटे- हाँ, तोय

लल्लू- (रुपइया दिखाते हुये) जै रुपइया लेओ। चुपके से धरे वैठो। जेई है तुमाई औकात।

घसीटे- जै रुपइया काऊ और को दिखाइयो। अवे तुम हमें नई जानत। तुम जैसे मुलकके पइसा वले गुंडा बदमास देखे। कानून के आंगू सब चुखरा बन जात। तुमका चीज हो।

लल्लू- तुमे जानत, तुमाये पूरे खानदान को जानत। मजदूरी करत रये मजदूरी करो। हमाये मो न लगो।

घसीटे- (लल्लू के ऊपर झपटता है) हराम जादे। आज वतात हम की अनाज वोरा की तरा उठा उठा के पटक है। तव समझ में आये तोय।

लल्लू- (पांछे हटत भये) तोमं और तेरी जा बहिन को। गोली से उड़ा दे।

घसीटे- तोय मार के तेरी लाश को पेड़ से टाँग दें। डी ए ने करा के गुड्डी के बच्चा को तुमाई जमीन को मालिक बना दें।

लल्लू- हरामखोर ते अपई औकात जानत है। हमसे बरावरी कर रओ। हम जमींदार है जमींदार।

घसीटे- (गुस्से से) कुत्ते। हम अपई औकात जानत और तुमऊँ की औकात जानत। दो कोढ़ी....।

(लल्लू और घसीटे में हातापाई होन लगत ओई वेरा लूले, अरमान,फटूले पोंचजात और वीच बचाओ करन लगत)

लूले- का बात?

घसीटे- जो पइसन से इज्जत खरीदन आत है।

लूले- मैं नई समझो।

घसीटे- (कान फुसफुसात भये) अब तो समझ गये।

लूले- (लल्लू की तरफ देखत भये) जो गलत बात है तुमाई।

लल्लू- (आँख दिखात भये) देखो तुम हमाये बीच में नई परो।

फटूले- इनकी औकात है हमसे ब्याओ करने की। भइया इनमें का कमी है। जो तुम हो सौ जै है। का जै इंसान नईयाँ?

लल्लू- कां जै, कां हम।

फटूले- अगर जै तुमाये वरोवर के नई हते तो तुमने।

लल्लू- हाँ, हाँ इन जैसे मुलकके हमाये इते काम करत। हमें जो नींको लागत इस वोई करत।

लूले- लल्लू, लल्लू पना न दिखाओ।

लल्लू- हमने पैलेई कैदई। हमी हो गओ सौ हो गओ। रुपइया लेओ बात को खत्म करो। हम की की से ब्याओ करे। का तुम कई जानत।

फटूले- विवाद न बढ़ाओ। वे जमानें गये जव तुमाई मनमानी चलतती।

लल्लू- अब चुप हो जाओ। दूला के मोसिया नई वनों नई तो तुम जानत हो हम का कर सकता।

घसीटे- (कालर पकड़कर) हम जब देख हो तब देख हो। हम अभई दूध को दूध, पानी को पानी करें देत।

लल्लू तुम का कर लेओ।

घसीटे- हम तुमें अभई इतई जिन्दा गाढ़दे।

लल्लू- जा को अंजाम जानत?

घसीटे- कानून से तो वाद में निपट है। पहले तुमें निपटा दें।

(लल्लू कट्टा निकालता है। अरमान छुड़ा लेता है)

अरमान- बहुत हो गओ नंग नाच। बन्द करे। अब जाये घसीट के पंचायत में ले चलो। उतई निपटारों करवाये है ईको।

(लल्लू भगन लगत अरमान लूले फटूले दौड़के पकड़ लेत)

लल्लू- छोड़ दो छोड़ दो अव ऐसो नई कर।

अरमान- छोड़ देगें, छोड़ देंगे, हमेशा-हमेशा के लाने छोड़ देवी। पैले जो वताओ गुड्डी के गरे मिलने के मौत

(सभी लोग लल्लू को मारन लगत। ओई टेम हल्ला गुल्ला सुनके गाँव के मुखिया मुनोर आ जात। रामकली हंसिया कें के आ जात। जैसेई हंसिया से रामकली वार करती। लल्लू चिल्लात बचाओ बचाओ और जमीं पै गिर परत)

लल्लू- नई-नई हमें नई मारो। हम ब्याओ के लाने तैयार। हम गुड्डी से ब्याओ कर है।

फुद्दी- (खांसत भये) जो झूठी बोल रओ, जो झूठी बोल रओ। जो जन्म को झूठा है।

लल्लू- (डरत भये) नई नई मैं साँची कै रओ। पूरे गाँव के सामनूँ कैरओ। हम ब्याओ कर हैं। गुड्डियई (गुड्डी) से कर है।

परदा गिरता

मैं घोषणा करता हूँ कि यह एकांकी नाटक मौलिक अप्रकाशित एवं अप्रसारित है। यह अन्यत्र विचाराधीन की है।

मालवीय नगर (बजरिया) कोंच
जिला- जालौन (उ.प्र.) 285205
मो. 9936505493

(वन संवर्द्धन संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं वन सम्पदा के विनाश पर आधारित - मौलिक बुन्देली लघु नाटिका)

उड़े पखेरु-रोवें रुख

- स्वामी प्रसाद श्रीवास्तव

पात्र-परिचय

1. कवि (पुरुष पात्र)
2. कल्पना (स्त्री पात्र)
3. मानव (पुरुष पात्र)
4. वृक्ष-(रूख) (पुरुष पात्र)
5. प्रदूषण (पुरुष पात्र)
6. धरती (स्त्री पात्र)

संकेत- (कवि का निवास-कवि के साथ काव्य जीवन की प्रेरणा-सहचरी कल्पना का साकार रूप में प्राकट्य)

कवि- लेखनी मचल रई है मन होत के प्रकृति की मनोरम छ्टा खौं शब्दन की लरियन में पो कै एक सुन्दर माला बना दैं-पै कल्पने?

कल्पना- ई में काय की अड़चन-लेखनी उठाओं और श्रीगनेश कर दो-फिर का प्रति की छटा तो खुदई छा जैहे-अपुन की रचना में।

कवि- नई कल्पना-अब सबई कछू तो बदल गओ-ई भौतिकवादी समय में-बिना आंखन सें देखें-कलम आगे खों बढ़तई नैयां। ऐंसो लगत जैसें शब्द, भाव, प्रतीक और अलंकार हमसें मौं छुपाकें दूर भग रये होंय।

कल्पना- कविराज! अपुन कौ कुंठित मन देख कें ऐसौ लगत-जैसें समौ को परिस्थितियन से आये बदलाव खों सांमू सै देखै बिना कछू लिखौंई नई जा सकत-सो चलौ अपुन दोई जनै संगे चलकें प्रकृति कै दर्शन करैं।

कवि- कल्पना तुमायें बिना तौ कवि कछू करई नई सकत, तुम जब भाव देती तबई ऊ की भावना प्रबल होत औ लेखनी चल परत-ई सें तुमें तो संगे चलनेई परहे।

कल्पना- देखो नाथ-कल्पना कवि की दासी है बिना कवि के ऊ की, को आये पूंछन-कोनऊ मोलय-भाव नईंयां, ऊ की रौज-बूझ तौ कवि की लेखनीई सें आय होत औ फूलत-फलत।

कवि- कवि के मन, मानस और बुद्धि में कल्पनई तौ [illegible] ई सें जो तुमें सहचरी [illegible] तो ई में कोनऊ [illegible] नईं।

कल्पना- बिल्कुल सई अपुन ने स्वामी।

कवि- तौ चलौ प्रिय, तैयार हो जाओ-ऊँचे-ऊँचे पारवा घटियां, हरे-भरे भांत-भांत के बिरछा-बेलें गुच्छन की देखवी, जिन के हरे-हरे पत्तन औ फूलन ने प्रकृति की [illegible] आंचर में समेट कें डांग की सुन्दरता में एक लम्बो वितान तान दओ है। महाकवि तुलसीदास नै रामचरित मानस में लिखो है 'विटप वेल तृण अगणित जाति, फल प्रसून पल्लव बहुं भांति।' आज सब देखवे मिलहैं।

कल्पना- अरे इत्तो नई कविराज-उनने पहारन सें झरत भये चांदी से चमकत सुन्दर झरनन को कित्तो सजीव बरनन करो है मानस में 'झरना झरहिं सुधारस वारी,' और मनमौज सें इठलात भई मन्द हवा के लाने लिखै कै 'त्रिविध तापहर त्रिविधि बयारी'- सो स्वामी ऊ हवा के झौंका जब शरीर खों छूहे तौ कितनो सुख मिलहै

कवि- महाकवि तुलसी ने जंगल के वनचरन को एक संगै रैवो, चरबो, घूमवो, आपुस कौ मेल मिलाप बिना बैर भाव के जीबो, कितनों सुन्दर बरनन करो 'करि केहरि कपि कोल कुरंगा-विगत बैर बिचरहिं सब संगा'।

कल्पना- और पखेरुअन को चित्रण तौ देखो-महाकवि ने किते सुन्दर भाव सें लिखो-जिनकी बोलीं, चेंचयावो मन खौं मोह लेत 'नीलकंठ कलकंठ शुक, चातक चक्र चकोर, भांति-भांति बोलहिं विहंग, श्रवण सुखद चितचोर'।

कवि- बिल्कुल सई कई कल्पना तुमने,वनन के आंचल में छुपी प्राकृतिक छटा कितनी मनमोहक हू है जां पै- 'गुंज मंजुल मधुकर श्रेणी' -तुमई बताओ-ऐसी सुन्दर डंगाई में हारे-थके मन खौं कित्ती शांति मिलत हुऐ।

कल्पना- देव (हंसकर) प्रकृति की ऐसी मनोहारी सुन्दरता देख-अपनी कल्पा खौ भूल तौ न जैहो?

कवि- नई कल्पने! उतै तौ तुमाओ सौन्दर्य औरई निखर जैहे औ जा रुकी भई लेखनी, छलांग लगा-लगा कैं, खुदई चलवे खौं विवश होजें, प्रकृति के सौन्दर्य खौ समेंट कैं अपनो कविता में भर ले है।

कल्पना- तौ अब काय खौ अबेर कर रये कवि-उलात करो। झुलापटेय में कड़ चलें पूरौ दिन मिलजे अपुन खौ।

कवि- चलौ प्रिय-चलौं।

(पदचांप के स्वर)

(अन्तराल ध्वनि के साथ यवनिका का गिरना)

दृश्य द्वितीय

(यवनिका का उठना)

संकेत- (स्थान-वन प्रान्तर में कवि और कल्पना का प्रवेश-पद चांप के स्वर)

कवि- (आश्चर्य से) कल्पना। महाकवियन ने प्रकृति कौ वरनन अपनी रचनन में करो है ऊ सौ तौ इतै कऊ नई दिखात। ऊ उजरे टीला टांगरे, घास-चारे की हरयाइ की बात का, इतै तौ ती पे तिनका लौ नईयां-कटा-भरका ओ सन्नाटो। न तो ठंडी हवा झौंका, न पंछीयन की मीठी-मीठी बोलीं-वन के पशु कां चले -उनकी गुहार औ दलाकें कछुअई नई सुना पर रई इतै।

कल्पना- मौं खां सोऊ असमंजस हो रओ स्वामी-कां गई वा नन की शोभा-इतै कौ हाल देख ऐसो लगत जैसे महाकवियन नै ना देखें दाखें अपनी कल्पना के सहारै प्रकृति के सौन्दर्य को वरनन वनन में कर दओ होय।

कवि- ऐसौ नई हो सकत देवि! आदि कवि काव्य कला के नक हैं। प्रकृति कौ ओर से छोर तक बरनन सांमू सैं देंखे बिना नई लेख सकत-उनने पार-पारियां, नरियां-भरका घांस-फूस औ पेड़न के छांवरे में बैठ कैं जो कछु देखो, बोई लिखो हुऐ।

कल्पना- ठीक है मान लौ उनने सब देख-दाख कै लिखो- पै बताओं इन पारवन के रूख कां गये-लगत जैसें हल्के बच्चन को मूढ़नो कर दओ होय-उनपै एक जरिया झकुटियां तक नई दिखात, पानी के झरझरात झरना, कलकल करती नदियां-नरवा-जिनमें चुरू भर पानी नईयां-आकाश सैं अपनी प्यास बुझावे खौं पंछी उड़कै आउत हुऐं, तो विचारे प्यासेई लौट जात हुऐ, न इतै अब शेर, चीता, भालू, हिनना, हाती, बारासिंगा, बन गऊऐं, नीलगाय, कस्तूरी मृगा आपुस में लड़त-भिड़त-खेलत-खात कऊ लौ नजर नई आ रये। हातियन के झुण्ड के झुण्ड अब सूड़ में जल भरकें आपस में अठखेलियां करत कितऊँ नई दिखा रये-का-का- लिख डारो कवियन ने अपनी कवितन में-इतै तो कछू नई दिखा रओं।

कवि- तुमाओ कैवो सई है कल्पने-देखे ई नीले आकाश में ना झुण्ड के झुण्ड परेवा उड़त दिखात न सुआ, ना कोयल की कूंक, गौरैया को चैचयावो लौं तौ नई सुना पर रओ और न मैंपर की मांछियन की भिनभिनाहट सबई-सब तौ बिला गओ।

कवि- टीक है तुमाओ सोचबो देवि। न जानै का हो गओ ई वन खौ-धरती की हरयाई खों कौ चर गओ। झुरमुटन - रबन में लुकत-छिपत प्यारे हल्के-हल्के खरा कां गये। करधई, सागौन, बेरीं, बमूरा, आम, महुआ, तेंदू, छेवला और करील के निकुंज जां पै मोर नचत तै कऊ तक नई दिखाई दै रये। औ लड़ैया-लुखईयां?

कल्पना- कृष्ण जू कौ विन्द्रावन, सीता मैया की वनवास स्थली, ऋषि-मुनियन की तपो भूमि, शकुन्तला-दुष्यन्त के प्रणय कुंज-हे वनराज तुमें का हो गओ।

कवि- भगवान जौ कैसो परिवर्तन। कछु समझई मै नई आउत।

कल्पना- अधीर न होओ स्वामी! चलौ आगें देखे-कैसों का है।

कवि- हमाओं मन तौ टूट सौ रओ देवि। अब देखो न, न तौ कऊँ रंग-बिरंगे फूल दिखात न मीठे-मीठे फल-न फुदकतीं तितलीं-कान लगत जंगल में मंगल-ऋतुराज बसंत सोऊ कऊं छुप कै अंसुवा बुआ रओ हुए। ढूंढो कल्पना ढूढ़ों बसंत खों, कवि पद्माकर कौ बसंत कां चलो गओ-जी खौ उनने 'विपिन में, बृज में, नवेलिन में, बेलिन में, वनन में, और बागन में बिचरत देखो तो (निराश होकर) निराट लाबरीं बातें, कऊ कछू नई हतौ, सब अतिश्योक्तियों कौ चमत्कार-कवियन नै तिल कौ ताड़ बनादओ।

(निराशा भरे स्वर में गाते हुए)

फूल नई, भौंरा नई, छत्तन पै भिन्नार
धूरि-धुवां छायो दिखत, कउं न बसंत बहार
कउं न बसंत बहार, कोकिला कूंक बिलानी
डजरे वन अब गीत बसंती भये बेमानी
बिना बसंत के आश, बिरह केहि विधि हरपाये
कहां छुपे ऋतुराज, कवि कैसेहिं गुण गाये।

कल्पना- इत्ते निराश काये हो रये देव। हमें आश और विस्वास के पिछौरा के छोर पकर आंगू बढ़कें, उन परिस्थितियन खों देखनें और समजने पर है जिनके कारन वनन की सुन्दरता, को सत्यानाश भओ, कौ जुम्मेदार है इनके ऊजर बनावे को-देखेई सैं पतौ चलहे।

कवि- हॉ- (संभलकर) आदि कवि अटूंठां नई लिख सकत-उनने जो कछू देखों हुए-ओ-ई लिखो हुये। तुम ठीक के रई कल्पने-हमें आगूं चलके समजने पर है ई विनाश कौ कारन।

कल्पना- चलो स्वामी।

(अन्तराल ध्वनि के साथ)

यवनिका का गिरना

दृश्य-तृतीय

संकेत- (स्थान वन प्रान्तर-कल्पना और कवि-कुल्हाड़ी से वृक्ष काटने के प्रत्येक आघात के साथ-आह-आह के करुण स्वर)

वृक्ष- खट्ट ---- खट्ट, ---- खट्ट --- खट्ट (स्वर)

आह - आह - बचाओ अरे रे-हीं-ही-ही आंह-मरो-बचाओ-आह

कल्पना- रुकौ स्वामी - सुनौ कोऊं चिल्ला रओ-लगत कोनऊं आफत कौ मारो है। हमें ऊ की सहायता करौ चईये।

कवि- हओ, सुनातौ पर रई अबाज-चलों-चलौ-ऊ खौ बचायें-कौनऊँ के प्रान संकट में हैं (वहीं से जोर से चिल्ला कर) कौ हो भैया, कां हो गओ, को सता रओ तुमें - हम आ रये हैं

बचाओ, तुम घबराओ ना।

वृक्ष- (दूर से क्षीण स्वर में) मैं पेड़ो हो-रूख-रूख-भैया, बचाओ मो हां-आह जो मानव मोओ नामई-निशान मिटावे पै उतारूं है। ई की कुलैया मोओ वंशई नाश कर रई-ई खौं रोक दो-मोहां बचालो।

कवि- वो देखो --- वो देखो - सांमू विचारो रूख-औ मानव - कित्ती निरदईता सैं कुल्हरिया से काअ रओ-चलो ऐंगर चलकें कुलैया छुडालें ऊ की।

कल्पना- चलो-चलो जल्दीं चलो वो भग न जाये।

कवि- ये ..... ये .... रुकौ भैया .... रुकौ .... हमाई बात सुनो - हमाई हटकी मानौ।

मानव- (निरुत्तर कवि की ओर देख-पुनः कुल्हाड़ी चलाना)

खट्ट----खट्ट---कवि-ऊतर काय नई देत-मौं पै टटा लगौ का तोरे?

वृक्ष- (करुणार्त स्वर में) को हो भैया-मोहां बचाओ-ई हत्यारे मानव सैं -

कवि- मैं एक कवि हों।

वृक्ष- (रोते-गिड़गिड़ाते आहत स्वर में) कवि .... कवि, मो हां बचालो कवि - छुडालो ई हत्यारे मानव की कुलैया - ई नै सबरी डगांई खौं रनवन कौ कर दओ औ अब जंगल कौ नांमई निशान मिटावे पै उतारूं है।

कवि- रुकौ मानव, अपनौ आगौ-पीछों सोचो तनक-ई तरा सें जंगलन की कटाई करत रये तौ एक दिनो मानव जीवन घोर विपत में पर जे है, जा बात की कूतखाड़ है तुमें कछू लगे बस्य कुलैया चलावे-हमाई कई मानो, फैंकों ई सत्यानाशी कुलैया खौं।

मानव- (कवि की ओर देख मुस्कराते हुए) तुम को होत हमें समझावे वारे-कवि हो, घरै जाव और कविता लिखौ-हम जो कर सो रये करन देव-बिलांरा न डारो- नईतर हम ....(झुक कर पुनःपेड़ पर कुल्हाड़ी चलाना-)

वृक्ष- खट्ट----खट्ट----आह---कवि आह - तुम देख रये हो कवि ई दुष्ट मानव की हठ-हेंकड़ी औ अड़ियल सुभाव-तुमाई एकऊनई चली-है गये मौ बजाकै ऐसौ लगत जैसें ई जमाने में तुमाई लेखनी कुंठित हो गई, विचार, भावना और जोश कछू नई बचौ तुमाये भीतर में। ठांड़े-ठांड़े मोई हत्या होतन देख रये-ऐसो अन्याय पै तुमाई आत्मा तनकऊ दुखी नई भई, एक अकेले मौ खां नई बचा पाये-कवि जो समाज खौ दिशा देत-अपने शब्दन के बान से बड़े-बड़े बाहुबलियन औ महारथियन खौं तरीछो कर देत-धरती पै बिछा देत-ओई सांचो करतव पालक और भ्रष्ट पालक कौन कओ जात-पै तुमाई बातन की तो तनकऊ असर नई भओ ई दुष्ट पै-(स्वर) खट्ट--खट्ट---आह---खट्ट---आ-- ह। (भरभराकर वृक्ष के [illegible] का भीषण उद्घोष के साथ-आह-का लुप्त होना)

(अन्तराल-शोक ध्वनि)

प्रदूषण- (पार्श्र्व से-चारों ओर से-क्रूर राक्षसी हं[illegible] वातावरण में गूंजती हुई)

ह--ह--ह--अ--ह--ह--ह--ह--ह--अ--।

कवि- (भय मिश्रित स्वर में) प्रिय---ये----ये-- राक्षसन जैसी कूर हंसी, आंधी, धूरा जे लंगूटे---कौनऊ अनहोन[illegible]

प्रदूषण- (कड़कते सवर में) ऊ सैं का पूंछ रये कवि, ह[illegible] पूंछो। हम हैं प्रदूषण नाव तो सुनो हुये तुमने--ह--ह--ह- प्रदूषण, हों कवि-प्रदूषण--ह--ह---ह--

कवि- (घबराहट के स्वर में) प्र---प्र--- प्रदूषण।

प्रदूषण- हां कविराज प्रदूषण! ई मानव नै मौ खां खुद बुलौआ दओ-नेवतो दें कै बुलाओ औ मैं आ गओ--सबरे पर्यावर[illegible] खौ प्रदूषित करकै प्रलय मचा दैहो संसार में अपने पंजन में सृष्टि ख[illegible] जकड़ कै खा जै हो -- (क्रूर हंसी) ह -- ह -- ह --।

कवि- न -- ई -- नई। मैं ऐसी अनर्थ न हौन दे हो --- तुम लौट जाओ प्रदूषण जां सै आये होव।

प्रदूषण- तुम कवि हों, कवतई लिख सकत-औंर का कर सकत-ई मानव खौं नई समझा सकत-ढीट है, कितनऊं समजाओं मानतई नईयां-अरे-ई खौ तनकऊ कूतखाड़ नई है कै जिन पेड़न-बिरछन खौ स्वास्थ्य और समृद्धि कौ अंग मानौ ताज-उनई खौं लगौ काटवे-खुद अपने पांवन पै कुलैया मार रओ-ई अज्ञानी खौं अपने भले-बुरये की तनकऊ खबर नईयां। एक दिना ऐसौ हुये कै ई को सांसें शुद्ध हवा खों तरसैं ओ धरती के प्राणी खुद मर कटकैं हमाओ अहार बन है। --- (हंसी) ह---ह---ह------।

कवि- (आश्चर्य से) हे भगवान-जा कैसी विपदा?

संकेत- (पार्श्र्व से मेघ गर्जना के साथ-एक चीत्कार के स्वर)

धरती- न---ई---न---ई---। कोऊ है इतै--मोई रक्षा करो - बचाओ-मौखां-ही---ही---ही---(रोने के स्वर)

कवि- तुम को हो भद्रे-हमाये सांमू आकै बताओ-अपनी व्यथा। मैं कवि हौ देवि।

धरती- (सिसकियों के साथ) जी खौं आदि कवियन ने शस्य-श्यामला कओ, पांच तत्व जी सै ब्रह्मा नै मानव को शरीर बनाओ उनमें एक-अपनी छाती चीर कैं संसार के प्रानियन के पेट भरवै खौ अन्न देत-मैं ओई धरती आंव भैया। देखों बिरछन की आधाधुन्ध कटाई सैं चौमासे में पानी के तेज बहाव ने मोई छाती के टूंका-टूंका कर दये-उर्वरा शक्ति वै के समुन्दर में समा गई-औ मोरे

चर में रै गये वस्य ककरा-पथरा-जा हालत कर दई ई हठीले नव ने -

T- (छि) वसुन्धरे तुम? घोर विपदा-पै जा बात समझ में नई आई वृक्ष औ कटाव।

धरती- बेटा- वृक्षान की जरें हमाये भीतर भौत गैरे तक फैल : भूमि खौ अच्छे सैं जकड़ें रातीं जी सै चौमासे में पानी के तेज हाव सैं खेतन कौ रव वऊत नईयां उनकी ऊपर की भुरभुरी मांटी ी सैं उपज खौ तागत मिलत वै जात-खेत में वड़े-बड़े कटाओं रका हो जात-पज घट जात-वो दिन दूर नईयां जब मोव नावई मेट जै- अस्तित्व रेगिस्तान बन जैहें।

कवि- जा तौ भौंतई भारी विपदा है, पैदावार के लाने।

धरती- हां बेटा। एक कुदांई बरावर बढ़ रई आवादी कौ भार, और दूसरी तांई भू-क्षरण और वनन कौ विनाश-वर्षा की कमीं से सूका को डर, पारवा और रूखई-तौ पानी वरसाउत सौ दोवठन कौ नाश करवै लगो जौ मानव-अपने आगे की ऊ खौ तनकऊ चिन्ता नईयां ई नादान खो, (विलखकर) परनाम जो हुये कै हमाये बेटन खौ अकाल कौ मौं देखने पर हे। भूक-प्यास सैं किलविला के मर जै विचारे।

कवि- ऐसो न कओ माता---धीरज धरौ।

धरती- तुमने माता कै कैं मोय आंचर खौं हला दओ बेटा। मानव अथर्ववेद के ई प्रसंग खौं विलकुल भूल गओ कै धरती सैं हम जो कछु लेत हैं उये उत्तोई पैदां करकैं आगे की सन्तानन के लाने देवे-बचा कै राखें-जोई ऊ कौ करतब है। देखों बेटा धरती ऊ की मां है। वनस्पतियां मां की लाज, जल जीवनदाता ओं जे हरे-भरे वन जल के वाहक है-जै सब बातें विसर गई ऊ खौ जुट गओ विनास करवे खौं।

कवि- सई है मां-पूरी सच्चाई है अपुन की वातन में-- (कल्पना की ओर) कल्पने।

कल्पना- स्वामी।

कवि- विनाश की भयंकर संभावनाएं-एक कुदाई सघन औद्योगीकरण-कारखानन के धुवां-गैसन सैं पर्यावरण कौ दूषित होवो, दूसरी तांई भू-क्षरण औ अनावृष्टि इन सब आफतन की जर है डांग में रूखन की वैजां औ आंदरी कटाई।

कल्पना- भौत सई कई महाकवि। वृक्ष खराव हवा खौं सौख कैं शुद्ध-साफ ताजी-जाती हवा फैलाउत जी से पर्यावरण प्रदूषित नई होत।

कवि- जेऊ नई कल्पना-हरे-भरे पेड़े मानसून खौ अपनी तांई खैंचत-आकर्षित करत जी सैं खूब बरषा होत, नदियां-नरवा उफनन लगत ताल-तलैयां पानी सैं लवानय भरजात-खेतन खौ मनचाव सिंचाई के लाने नहरन खौं पानी मिलत-खूब अन्न उपजत। (थोड़ा रुक कर) धीरज धरौं धरती माता हम तुमें रेगिस्तान नई बनन दे है अपनी कलम की ताकत सैं जन-जन के सोच खों बदलहै - क्रान्तकारी परिवर्तन करा कैं दम ले हैं।

धरती- तुमाओं कल्यान हो बेटा-मोव आशीर्वाद है कै तुमाई लेखनी सदां जन-कल्याण के गीत लिखकैं ज्ञान के अंधियायें सैं उजयाये में ल्याये जन-मानस खौं-उंगली बतायें-जगायें जी सै उनको घर-परवार, गांव, देश और पूरो संसार सुख-समृद्धि सैं जियें कोऊ भूक-प्यास सैं न मरे।

-अन्तराल ध्वनि-

(यवनिका का गिरना)

दृश्य-चतुर्थ

संकेत- (वन प्रान्तर में नदी के कूल पर कवि एवं कल्पना-नदी के वहाव का कलकल स्वर-कवि-कल्पना के चलने की पदचांप)

कवि- देवि-हम भूलत-भटकत नदी के किनारे पै आ गये-ई की दशा तो देखों, लगत जैसें विचारी कौ सबई कछू बिला गओ होय औ दुख के असुवा बुआउत पतरी धार सैं धीरे-धीरे वै कैं अपने ठिकाने पौंचवे खौं मजबूर है च - च - च --

कल्पना- नदिया की कंगारन पै लगे घने पेड़-पौंधन की हरियाई नाश भये सैं वा रोय नई तो का करै स्वामी-वेई तौ ऊ को श्रृंगार हते-उनपै लगे चिरैंयन के घैसुआ-अब नई दिखत-चैनुअन को चेचयावों सैं ऊ कौ आंचर ममता के खिलौनन सैं खेलत रात तो (आकाश की ओर देख-सहसा पंक्षियों के कलरव के स्वर) देव-स्वामी देखो-वे देखो-परखेरुअन के झुंड के झुंड-बसेरो लेवे अपने टोर-ठिकाने की तलाश करत भये उड़त जा रये-अब कितै मिलत जांगा बसवै खों। इनै तक नई छोड़ो मानव ने, विचारन के विशरमा के ठौर तक उजार दये।

कवि- (विव्हल होकर) भौतउ अन्याय-अब औरन सुनाओ कल्पना। मानव ई बात खौं तौ बिल्कुलई भूल गओ कै इनई पक्षियन की डीन, उडडीन, अवड़ीन, प्रडीन, अवरोह और प्रोह उड़ानन सैंई आज के वैज्ञानिकों ने आकाश में वायुयान को भांत-भांत की उड़ान भरके चील- गाड़ियन खों उड़ावे की कलाएं सीखीं है अरे हम तौ पक्षियन के करजदार है उनको रिन चुकावे को बात तौं गई चूले में मानव ने उनके बसवे की जगा, उनके घेंसुआ, प्यास बुजावे बारे पानी के अड्डा सबई कछू उजार के ऐसी क्रूरता करी उनके संगे-छी--छी--छी।

कल्पना- मन खां विचलित न करौ स्वामी-कवि की जुम्मेदारी भौत कठिन होत-कैसऊ परिस्थित आय वो घबरात नइया-निराश

भये सैं मनोबल गिरत और भाव जाके कऊ दुक जात।

कवि- का करैं-संवेदनशीलता तौ कवि को गुन होत कल्पना (संभल कर दृढ़ता से) हमें अब अब्दुल सलीम फतेअली जैसे पक्षियन के मसीहा तैयार करनै परहें जो लोगन खों पखेरुयन के संगे साजो व्योहार करबे की, उनकी जरूरत, उपयोगिता औ उनसें प्रेम-करबे की गली बतायें, समजायें।

कल्पना- (यकायक उच्च स्वर में-आखेटक को देख कर जो शिकार के उद्देश्य से छिपता छिपाता-वन्य पशुओं की तलाश में वन में जाते हुए दिखता है) वो देखो-वो देखो-देव, सामें जंगल तांई-शिकारी-हां-हां शिकारियय आय हांत में गड़ासिया औ बका लयें बेजुान पशु-पक्षिन खौं मार कै खा जात। स्वामी जल्दी करो-ऊखौं रोको कवि नईतर वो विचारे हिन्नन खौं मार डारहे, अबै-अबै दिखाने मोंहां छ्लांगे लगाउत, नांयखों झुरमुट तांई दौरत गयेबे सब।

संकेत- (हांथी की चिघाड़ के साथ मृगों के भागने की सरसराहट के स्वर व बहेलियों की हांक का कोलाहल)

कवि- (कड़कते स्वर में) ये--ये--रुको--रुको, ठैरौ शिकारी। अपने हांत की बका खौं फेंक दो, छोड़ो अपनों निशानों-हिंनन खौं न मारिओ बताय देत हम फिर पछतेहो। इन विचारे बेजुवान हिंनन खौं न मारिओ बताय देत हम फिर पछतेहो। इन विचारे बेजुवान जीउवन खां मार के खावो, पाप औ हिंसई नई कानूनी अपराध हैं डांग के जानवार सब प्रकृति की दैन है, धरोहर औ जंगल की शोभा है। हमाये पुरखन नै वन के जीउवन खौं अपनों संगी-साथी मानों अरे देवी-देवतन नै तौ वन के प्राणियन खौ अपनो वाहन बना कें उन्हें सम्मान दऔ-हम उनकी पूजा करत-जै सब बातें भूल गई तुमें, हथयार लऔ औ चले आये इनकी जान लेवे। ध्यान सें सुनो-सृष्टि के कौनऊं अंश खौं नष्ट करबे की अधिकार नईयां तुमें। जो न मानहो तौ तुम राजदण्ड के भागी बनकै जेल में डरे-डरे सड़ो, आई बात समज में।

(आखेटक का शिकार छोड़ कर वापिस चले जाना)

कल्पना- जा ठीक रई अपुन ने खुर्नाशया कैं खरी-खोटी सुनाई सो डर कैं भग गओ हत्यारो नईतर बिचारे किते हिन्नन खों मार डारतो जो अज्ञानी मानव।

कवि- (दुखी मन से एक पेड़ से टिक कर बैठ आह भरते हुए)

अंतस में वेदना के भाव उठ रहे है देवि-बायरैं कहबे खों बेताब हैं।

कल्पना- अर्न्तआत्मा की भड़ास जो होय, ऊ खो कहन दो कवि, मन कछु हल्को होजे।

(आल्हा तर्ज)

कवि- उड़े पखेरू-रौवे रूख, तऊ मानव की मिटी न भूख
पार-पारवा बिला गये कऊं, नदियां नरवा गये सब सूख
प्यासी धरती बिलख कहे, मोयं बेटां भूखे तलफे कूंख
बिगिरो पर्यावरन हाय रे, कट गये घेर डांग के रूख
पंगत जैबे-आव प्रदूषण, मौं फारैं सिरसा सी भूख
मुरा-मुरा कै लील जायगो, जस पेरत कोल्हू में ऊंख।
उड़े पखेरू रोवें रूख

कल्पना- देव!

ना कऊं दीखैं सौंन चिरैइयां, ना सुनाये डोंका की हूंक
चड़ती उतरत पेड़ गिलैंइयां, ना मीठी कोयल की कूंक
घना गरजैं ना नचैं मयूरियां, बुदियन बिना पपीरा मूंक
भूकी लखीं रमातीं गैइयां, जियरा मोओ भयो दो टूंक
हे कान्हा कां गओ बिन्द्रावन, कां तुम्हरी मुरली की फूंक
कां गोपिन संग रास रचाहो, कांहो तको कदम सैं टूंक

कवि- वा कल्पने-वेदना के स्वरन से सुर मिलाकें तुन्ने सबरी बातें कै डारीं। जंगल को उजरबो, पेड़-पौधन की दशा, वन के पशु-पक्षियन की शिकार, ऊंचे-ऊँचे-पहारन-टोरियन को नाश, बरषा के सोतन की बरबादी, पानी खौं तरसतीं नदियां, कछू लौ ठौ नई बची, सब उजार दओ ई सत्यानाशी अज्ञानी मानव ने-भौतई गम्भीर समस्या बन गई कल्पना हमें कछू न कछू उपाय सोचने और करने पर है।

कल्पना- हां स्वामी! अज्ञानी मानव खों बनन के विनाश करबे सें रोकबे को उपाय अवश्य करने पर हे (पार्श्र्व से पुनः खट्ट-खट्ट-खट्ट के स्वर के साथ आह-आह के स्वर)

सुनो देव! जा अवाज-लगत मानव फिर पेड़ काटन लगो-चलो ओई तांई चलकें ऊऐ रोकै।

कवि- (परेशान सा होकर मांथा पीटते हुए) ना जाने मानव की अकल खों का हो गओ कित्तो समजाव ऊ ने एकऊ नई मानी-अपनो आंगो-पीछो, भलो-बुरौ कछु नई सोचत मूरख। चलों फिर मुड़फोर करें-समजायें-मानत कें नई पनमेश्वरो।

कल्पना- चलो देव।

-अन्तराल ध्वनि-

(यवनिका का गिरना)

दृश्य-पंचम

संकेत- (स्थान-वन प्रान्तर-कल्पना, कवि और मानव)

संकेत- (पार्श्व से-स्त्री-पुरुष के संवेत स्वर में दूर से आकाश में गूंजता-दोहा)

वृक्ष कबहुं नहिं फल भखै, नदी न सिंचे नीर।
परमारथ के कारणे, साधुन धरा शरीर।।

कवि- आकाशवानी! काय भैया तुमें नई सुना परी का! रुको कान खोलकैं हमाई बात सुनो।

परमारथई जिनके जीवन की मूल साधना होय ऐसे तपसियन विनाश-धिक्कार है मानव तुमाये जीवन खो धिक्कार है तै काय नी मनमानी करवै पै तुलौ- (कड़कते स्वर में) रुक जा-भौत हो तोई मनमानी-अब मैं तो खों बृक्ष न काटन देहो-हमें देओं जा लईया (कुल्हाड़ी हाथ से छीनने का प्रयास)

मानव- (लापरवाही से अट्टास करते हुए)-ही-ही-ही-ह-ह--ह--

तुम को होत रोकवे बारे, हमें तो ऐन काटने, तुम काजी कै ल्ला?

कवि- हम एक कवि है मानव, कवि कौ धरम होत, समाज खौ सई दिशा दिखावे कौ-ई सै हम तुमाये भले ही बात कर रये, तरां-तरां सै समजा रऐ-तुम गम्भीर हो कै हमाई बातन पै ध्यान देव। मां शारदा दुखी हो मोय कंठ में बिराज कैं जो कछु कये चाउत सो सुनो।

मानव- (कुल्हाड़ी एक ओर रख-जमीन में बैठ कर-कवि की ओर देखते हुए)

हां सुनाव-का सुनाउत?

दोहा- काट-काट विरछा मनुष, कार रओ सत्यानाश
दरद न जानो पेड़ को, गिरत धरा पर लाश
टूट गिरे जब घेंसुआ, पंछी भयेउ उदास
प्रान बचा सब उढ़ गये, ढूढ़त फिरहि निवास
ममता की मूरत धरा, फैला आंचल रोय
बचा मोई दुर्गति नई, मोड़ा भूखे सोय
बेजुवान वन पशु फिरत, इतै-उतै भिर्रयात
जाल शिकारी के बिदौ, अपनी जान गंमात
ऐई सैं तुमें समजा रये भैया के- ....
दोहा- सुधर-संभल अज्ञानी नर, ना कर ऐसी भूल
काल परे पछतायगो, मरहे फांसी झूल।।
सुनो रूख की चीख तुम, रोको क्रूर प्रहार।
चेतन सैं जड़ ना बनौ, पांव कुल्हाड़ी मार।।

कवि- जंगल खौ उजार कैं बन्टाढार कर दऔ, ऐसे आंदू लगे तुम औरन खां, अरै भैया आंगू की सोचो, अपने मोड़ी-मोंड़न को भलौ तकौ-तनक गम्म खांव-कुलैयां टिका दो कितऊँ घर के कोने में।

मानव- रूखन के काटवे सैं तुम काय रोक रये हमें, ई सैं का नुकसान होत, डूठा फिर पीक जैहें।

कल्पना- नई मानव-जो कंत तुमने पेड़ की कटाई न रोकी औ बनन खौ ऐसई उजारत रये तो ई के परिणाम तुमें आंगू भुगतने परहे-ई बात खौ अच्छे सैं सोच समज लो।

कवि- प्रकृति की दई वन सम्पदा, ऊ की सुन्दरता के विनाश से होवे बारे नुकसान के दुष्परिनाम की चर्चा कभऊं नईं सुनी तुमने? तौ ध्यान सैं सुनो.................

मानव- सुनी तौ है पै कविराज तुमने कभऊं हमाई जरूरत को ख्याल करो-हमें चूले खौ लकईयां चाने जी सै रोटी-भाजी बनत, घरन कै लाने कुरैयां-बड़ेरे, छान छप्पर किवार ईट-खपरन के अवा खो ईधन, खेती के उपकरण-हल-बखर, बैलगाड़ी, उड़ावनी खौं तिवाओ पचा, औ जाने किते कामन में लकईयां की जरूरत परत। हम औद्योगीकरण की तांई सोऊ बढ़ रये-रेल, मोटर और भांत-भांत के प्रयोजनन खौ लकईयां चाने-अब तुमई बताओं ई कै बिना हमाये देश कौ विकास न रुक जेहे।

कवि- तुमाओ कैवो सई है मानव-हम मानत ई बात खों। पै विकास कौ मतलब जौ तौ नई होत कै वन औं वन सम्पदा के फल-फूल रये भण्डारन कौ विनाश करकै विकास और विनाश की दुधारी तरवार पै ठांड़े हो जायें। देखो-ई सै हो रये नुकसान, दुष्परिणाम तुमाये सांमू हैं कभऊं सूका-कभऊं बाढ़, ओरे, फसलन की बरबादी, अकाल, आव-हवा जी खौ पर्यावरण कात बिगरवे से तरा-तरां के रोग- बीमारी- जादां-बरषा-सैं-खेंतन में कटाव-उपजाऊ मृदा बैकै नदियन-नरवन में चली जात-जी सै पज कम हू है और फिर का, एक दिना अन्न की कमीं से पेट की आग ज्वालामुखी बनकै सब नाश कर देहें।

मानव- परनाम तौ सांचऊ भौतई बुरये हैं कवि।

कल्पना- हां मानव। इत्तोई नई, डगांई के जानवरन के विनाश सै दुर्लभ नस्लें अब कऊं देखवे लौ नई मिलतीं, बन की बिलैयां, ऊद बिलाव, बन्न-बन्न के हिन्ना, बारासिंगा, रोज, वन गऊवें मोर-पपीरा, गिलईयां डोंका, परेवा, सोन चिरैयां-उनके घेसुवां जो लटकत ते पेड़न पै बन की शोभा हते कैं नई-अब कऊ दिखात तुमें? सब उड़ गये, पशुअन खौं चरवे खो चारौं नई दिखत, चरौखरै नई बर्चीं-दूध देवे वारे पशु-गैयां-भैंसें-छिरिया बुकरियां गाड़रै सब भूकू-प्यासे तड़फ रऐ, परिनाम हमाये हल्के-हल्के दूध पियत बच्चन खौ दूध के लाले पर गये।

कवि- अपनो विवेक लगाओ मानव। बनोपज के रूप में हमें, चिरोंजी, बैर, महुआ, गाद, मैंपर, कत्था, आम, इतलीं, आंवला, करौंदा-मकुईयां, तेदूपत्ता, औ लाखन बनस्पतियां, जिनसैं जीवन खौ रोग-बीमारी सै बचावे के लाने दवाई बनाई जातीं मिलती है। इनसैं अकेली हमाई जरूरतई पूरी नई होत-कमाई कौ साधन सोऊ है।

मानव- मोंई आंखें खोल दईं अपुन ने कविवर-सांचऊ हम

अनर्थ कर रये-चेता दओ मो हां भौत ऐसान करो अपुन ने-स्वारथ में हम अपनौ भलो-बुरओ सब भूल गये ते।

कवि- चलो कछू नई-गिरो भोर को-भटको संजा कै घर आजाये तो ऊ खौ भूलों नई कओ जात।

मानव- हम राजी हैं अपुन की बात तानवे खौ-पै कवि जा तौ बताओ के हमाई जरूरतन खौ पूरौ करबै को कौनऊ दूसरो ओठपाव है।

कवि- है-ई के केऊ उपाय औ विकल्प हैं। उत्पादन और उपभोग में हमें संतुलन बना कै रखने परहे। बनन सैं जित्ते पेड़ काटे जाये ऊ सैं दस गुने नये पेड़ लगा कै-जंगल खौ जैसे फल-फूल रयते-ऊसई बना कै सुरक्षित रख सकत। जब लौ पुराने पेड़न की लकरियां इस्तेमाल कर है तब तक नेय बिरछा जवान पेड़ हो जे है ओ आगे की पीढ़ी खौ बनन के विनाश के कारन पैदा भई परेशानी सैं मुक्ति मिलै-उनकी जरूरतें पूरी होत रहें।

मानव- तौ ई कै लाने हमें कछू संकल्प लेने परै-तबई ---

कवि- हां संकल्प तौ लेनेई परहे-पैलें तौ भैया-रोजई रोज बढ़ रई आबादी पै अंकुश लगावने पर हे जो सबरी विपत्तियन की जर है, ई जर को काटो-फिर विकास की रस्ता न रुकै हमें वन-क्रांति ल्यावे की जरूरत हैं युद्ध स्तर पै वृक्षारोपण करने परहे-जी सै अज्ञानता में हमने जित्तो नुकसान कर डारौ ऊ की पूर्ति जल्दी सैं जल्दी हो जाये-एक बात और, आगे हमें सोच-समज कै ई वन-सम्पत्ति कौ उपयोग करने पर है-अति करी तौ फिर पचतेहो-समजे।

कल्पना- और एक खास बात - बन कै पशु-पक्षी हमाई दया प्रेम और सहानुभूति सै जंगल में मंगल, सदां बसंत की बहारैं फैलाउत रात-सौं उनकी हत्या न कर उनै राष्ट्रीय संपत्ति की तरां बनाये राखै-उनकी रक्षा करै जो मानव जाति कौ करतव्य है।

कवि- देखो भैया-ध्यान दियो-विकास और पर्यावरन के बीच में कौनऊ टकराव जैसी अड़चन नैइयां। टकराव तौ प्राकृतिक सम्पदा को निर्दईता सैं दोहन औ विकास के बीच में आय है, ई सेहमें पर्यावरन औ विकास के बीच सावधानी सैं संतुलन बनाकें रखने पर हैं नई तौ एक दिना प्रदूषण नाव को दानों पूरी मानवता खौ खा जे है।

मानव- मैं धन्य हो गओ कवि, अपुन ने हमें काल के गाल में जावै कै पैलें चेता दओ, नईतर ई भूलन कै लाने हमाई सन्ताने हमें कभऊँ माफ न करतीं, कोसतीं रातीं-कातीं हमाये पुरखन खां ऐसें आंदू चढ़ेते कै सब नाश करकै हमाये लानें, बीमारी, अकाल, सूका, औ प्रदूषण जैसी बपौती दे गये। कविराज हम संकल्प लेत कैं अब हमाये पांव विनाश की गली छोड़कै विकास की दिशा में आंगू बढ़ हैं।

कवि- तुमाओ संकल्प सुनकें हमे खुशी भई मानव-[illegible] तुमें सदबुद्धि दे। (मानव का प्रस्थान)

कल्पना- अब विसराम करवे अपने ठोर-ठिकाने पौंचों [illegible] देव।

कवि- (थके से स्वर में) हां देवि चलौ-झुली पर [illegible] लौलईया लगन लगी- (आह भरके) पै .... हमाओ काम तौ [illegible] भओअय नइयां अबै।

कल्पना- नई महाकवि-काम तौ पूरौ हो गओ-अपुन [illegible] लेखनी खों एक नई दिशा मिल गई। अब प्रकृति चित्रण की [illegible] जन-जागरण के गीत लिखने परहे अपुन खौ।

'वन संवर्धन'- 'जन कल्याण' को संदेशो घर-घर में पौंचाउने पर है।

कवि- अवश्य-अवश्य प्रिय कल्पना-सई दिशा तौ अब मिली मो हां। आज जरूरत प्रकृति चित्रण की नई समाज खौं अपनी काव्य कला सैं मानव की आदत बदलवे उनमें नई चेतना जगावे, [illegible] के सोच खौं नई-नई तरकीबे, बतावे, पुरखन सैं चलें आ रये रीत-रिवाजन खौ बदलवे की है। कल्पना! हमाये गीत अब वन महोत्सव की गुहार औ वृक्षारोपण करवे कौ नैवतो दे हैं घर घर, पुरा परोस में बुलऊआ दें हैं।

कल्पना- जै होय स्वामी! एक कवि की उद्देश्य पूर्ण जुम्मेदारी निभावे को संकल्प-मोव मन फूलों नई समां रओ-मैं तौ धन्य हो गई-शब्द, भाव औ विचार बन कै समुन्दर कीं मचलतीं लहरेंन घांई समा जे हों अपुन के अंतस में-मन में प्रेरणा की एक धार तौ अबई बऊन लगी स्वामी-महाकवि तुलसी ने श्रीराम के वनवास काल में जो चौपाई लिखी ती ऐसे कल्यानकारी उद्देश्य के लाने वा मन में उतरान लगी 'तुलसी तरुवर विविध सुहाये। कहुं-कहुं सिय कहुं लखन लगाये।' और 'फूलहिं फरहिं सदां तरु कानन, रहहिं एक संग गज पंचानन।'

कवि- वा भौत अच्छी बात कई देवि, धन्य हो तम धन्य हो, डूबत खौ सहारो मिल गओ। हमें आगे कदम बढ़ावे खौ गली दिखान लगी। शिव पुरान के एक 'लोक को भाव-अर्थ मो खां सोऊ याद आ गओ-के जो आदमी अपने घर, बगैचा, अथाई, मंदिर, गऊशाला, स्कूल, पंचयात भवन औ खेत की मेंड़न पै पेड़ो लगाउत ऊ सै उनके पुरखन की आत्मा खों शान्ति मिलत औ उद्धार होत। जो काम करये दिनन (पितरपक्ष) में करे सैं पुरखन के पिण्डदान, तरपन औ पटा सैं जादां मोक्ष देवे बारो हैं ई सैं पेड़े लगावे को काम सब खोकरो चईऐ।

कल्पना- पुराननकी कथा सैं जोर के अपनी कल्पना खौं ओरई बलवती बना दओ अपुन नै स्वामी। अब कौनऊ शक-सुवा

यां मोरे मन में-अपनु की मेंत अखरत न जैहे-मानव के मन-सोच विचार, खोटी करतूतें बदलबे के लाने पूरी तरां सैं सक्षम हो गई पुन की कलम।

कवि- कल्पना-तुम जो हो हमाये संगे-लिखवे की तागत तुमई सैं मिलत सो हम संकल्प लेत कैं हमाई लेखनी तब लौ बसराम न लेहे जव लौ उजरे इन वनन में फिर सैं वसंत ऐड़ाई न लेन लगे।

कल्पना- देव अपुन कौ संकल्प अवश्य पूरौ हुये-अवश्य-।

कवि- (आत्म विभोर होकर) कल्पना---हृदय निवासनी---प्यारी कल्पना। मोहा एक बहवती याद आ गई जो एक जरूरी संदेशो देत-वन संवर्द्धन को, कओ तो सुनाए?

कल्पना----दे---व---स्वामी---। अवश्य सुनाओ

कवि- (वहतवी)

कवि - गांव-गेंवड़े में घेरां हरी डांग हो
वरसैं कारे बदरवा झला के झला
नये विरछा लगा खेत की मेंड़ पै
रोको भरका कटा औं सिलट की वला
भैया सुख सैं जो चाहो कटै जिन्दगी
मनने परहे तुमखों जा नौनी सला
ख्वरे दुक्खन की जर जादां सन्तान है
खेलें ओली में बस एक लली और लला

कल्पना- भौतऊ नौनी रचना स्वामी।

(सुखद अन्तराल ध्वनि)

कवि- जन जागरण को एक और संदेशों चलत-चलत दोई जनै एक संगे गाउत भये घरे चलें कल्पना जो सब खौं सुना परें, कओ ठीक रे है कैं नई?

कल्पना- हां देव सई है।

संकेत- (कवि और कल्पना के मिश्रित संवेत स्वर में गीत गान)

-गीत-

वृक्षारोपण महा पर्व है, वन संवर्द्धन जन-कल्याण,
शुद्ध वायु मानव जीनव में, फूंका करती है नव प्राण
मेघ बुझाते तृपा मही की, मन में फूले-फले किसान
पर्यावरण शुद्धि का व्रत लें, हरा-भरा हो हिन्दुस्तान
हरा भरा हो हिन्दुस्तान, हरा भरा हो हिन्दुस्तान।।
(धीरे-धीरे गीत के स्वर लोप होना)
(समापन ध्वनि के साथ यवनिका का गिरना)
पटाक्षेप

बजरंग नगर, वेयर हाउस की बगल में
गली नं.1, पन्ना रोड, छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9479482980

<Tb-E> e:\Stand07\Hata2023\bund23.pmd

खिड़की

खिड़की चाये लोहे की होवे चाये लकड़ी की होवे चाये कछू की होवे दीवार के बीचोबीच लग जात है। ईमें सीकचा रेत है ई पे परदा सोई डरो जात है। खिड़की मतलब केवल बेहर ज्जेरे आवो नइयाँ ईको मतलब जो सोई है के खिड़की से झांकवे वारे खों बायरे को आदमी देख ले और बायरे वारो भीतर को भी देख लेवे। पे अब परदा डरन लगे है सो भीतर को कछू नई दिख भले ने दिखावे पे भीतर की बाते तो बाहर आजती है। खिड़की को रूप सरूप अलग-अलग है है घर की जे आंख आये सो ई खिड़की में आप पढ़हो कैयक वरन के लेख, निबंध और इनमें देखहो अपनों इतिहास अपनी अपनी संस्कृति, अपनों भूगोल और अपनों साहित्य सोई।

बुन्देली वीरकाव्यों में सांस्कृतिक संदर्भ

– डॉ. श्यामबिहारी श्रीवास्तव

संस्कृति सामाजिक जीवन का प्राणतत्व होती है। सांस्कृतिक गतिविधियों के सतत् संचालित होते रहने से समाज जीवंत प्रतीत होता है। विद्वानों ने जीवन रूपी विटप का पुष्प संस्कृति को कहा है। इस प्रकार सांसारिक जीवन में आदि से अंत तक संस्कृत का सौन्दर्य बिखरा रहता है। लोक के सवरूप का ज्ञान संस्कृति सहज रूप में करवाती रहती है। चाहे युद्ध का समय हो या शांति का, सांस्कृतिक गतिविधियाँ अबाध रूप से चलती है। बुन्देलखण्ड के लोक साहित्य को पढ़ने से इस तथ्य का ज्ञान भलीभाँति हो जाता है।

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सामाजिक जीवन में सोलह संस्कार घटित होते हैं। ये संस्कार हमारी सामाजिक संस्कृति की पहचान होते हैं। बुन्देलखण्ड में बुन्देली बोली में लिखे गये वीरकाव्यो में विवाह संस्कार, मेले और सामाजिक व्रत, उत्सव, त्यौहारों आदि का गरिमामय चित्रण पाया जाता है। जगनिक कवि के आल्हा काव्य में आल्हा, ऊदल, मलखान, सुलखे, इन्दल, ब्रह्मा आदि अनेक वीरों के विवाह संस्कारों का वर्णन किया गया है। प्रत्येक विवाह में युद्ध, महत्वपूर्ण पर्व त्यौहार पर युद्ध इन वीरकाव्यों का विशिष्ट सौन्दर्य है। घोड़े खरीदने के बहाने काबुल जाना और नरवर में नेत्र खरीदने का श्रृंगार पूर्ण प्रसंग आल्हा गायकों को रोमांचित कर देता है-

'काबुल गए ते घोड़ा खरीदन नरवर नैन खरीदे जाय।'

ऊदल जब यात्रा से अपने दलबल के साथ महोबा लौटे थे तो धीरे-धीरे सारी घटना सामने आई और महोबा के राज परिवार में ऊदल के विवाह की तैयारियाँ शुरू हो गई। आल्हा की पत्नी सुनवाँ ने ऊदल से नरवर की राजकुमारी फुलवा के बारे में पूरी प्रणय कथा मालूम कर ली थी। आल्हा ने मित्र राजाओं को नरवर चलने का न्यौता भी भेज दिया। आल्हाखण्ड में इस घटना का सांस्कृतिक वर्णन इस प्रकार दिया हुआ है-

'न्यौता पाकें सब राजा जे जुरगे सरकीरत की पार।
कीन्हों स्यागतनुन आल्हा ने डंका तुरत दीन बजवाय।
आम तरे तो उबटन हुइगे, नीम तरें हुइगे असनान।
सपरखोर के पुन ठाँड़े भय, देवता सूरज कों जल दैंय।
सूरज देवता तुमकों सुमिरों, तुमसें बड़ौ न होवे कोय।
चार पहर नित धरती तप रये, पारियक लगो हमारे साथ।
धोती पहनी पीताम्बर की, जो भुरियन पै लोकर खाय।
गंगा जमुनी चूरा पहिरे, पूजन लेंय दाहिने हाथ।
कनक जनेऊ नन्दनवन के, हिरदे पड़ी पुहुप की माल।
गरे विजंता भाला सोहत कुण्डल चमक चमक रहि जाय।
पाग भैरवी बाँधी सो है जीमें खिड़की करैं अनेक।
खिड़िकिन खिड़किन नग धरवादये जो मानिक से दयें उजार।
भीतर धँस गये वा कोठा मा रच्छा की बानी पहिरी जाय।
जी के ऊपर व्याव को बागौ, सिर को मौर लीन धरवाय।
नैचे कवच साम्हरौ पहिरें, जी सें साँग बिलौआ खाय।
काजर आँजौ तौ सुनवाँ नें एक आँख माँ दओ लगाय।
बोलौ ऊदल फिर सुनवाँ सें भौजी नेग बता देव आय।
सुनवाँ बोली तब ऊदल सें सुनलेव लहुरे देवर बात।
मरजइयो चयें नरवरगढ़ माँ फुलवा लै अइयो कर ब्याव।
डार सिरोही तुम भाग्यो ना पानी रख्यौ किरतबा क्यार।'
(आल्हाखण्ड, भोपाल संस्करण पृष्ठ 219)
जगनिक अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद', पृष्ठ 65-66)

विवाह भारतीय संस्कृति में सर्व प्रमुख संस्कार है। विवाह में वर-दुलहिन के गाँव बारात लेकर जाता है। कुछ नेगाचार होते हैं। फिर विवाह होता है। परन्तु युद्ध संस्कृति में विवाह संस्कार का स्वरूप ही अनोखा हो जाता है। उपर्युक्त पंक्तियों में ऊदल एक योद्धा वर है। ऊदल का श्रृंगार एक योद्धा वर के रूप में किया गया है जिसे युद्ध लड़कर विवाह कराना है। सभी बाराती भी सैनिकों की भाँति सजकर जाते हैं। सांस्कृतिक सौन्दर्य का अनोखापन सुनवाँ के द्वारा नेग माँगे जाने में दिखलाई पड़ता है। जब भाभी सुनवाँ काजल आँजती है तो ऊदल कहते है कि भाभी नेग माँग लो। नेग माँगने में सुनवाँ पीछे नहीं है। एक योद्धा से बड़ी सहज वक्रता के साथ वर माँगती हैं कि नरवरगढ़ की लड़ाई में चाहे मर जाना, पर फुलवा को विवाह कर ही घर लौटना। युद्ध में तलवार फेंककर मत भागना। अपने कीरत सागर का मान रखना। इस प्रकार युद्ध संस्कृति का सौन्दर्य शूरवीरों की आन-बान के लिए उत्सर्ग और बलिदान की प्रबल भावना है। जैसा कि आल्हखण्ड के उपर्युक्त उदाहरण में दर्शाया गया है।

बुन्देलखण्ड अंचल में आल्हाखण्ड से प्रारम्भ हुई इस प्रकार की बलिदानी युद्ध संस्कृति का सौन्दर्य मध्यकाल में लिखे गये रासोकाव्यों में पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलता है। हालाँकि वर्णन परम्परा में कुछ अन्तर है। पहले जहाँ विवाह में युद्ध अनिवार्य थे, वहाँ बाद में जय पराजय, राज्याधिकार की वृद्धि, परस्पर शत्रुता आदि कारण देखने को मिले परन्तु सांस्कृतिक संदर्भ लोक जीवन

<1th-E> e:\stand07 Hata2023\bund23.pm5

की अंतरंग छवियों से ही जुड़े हुए हैं। बुन्देली रासोकाव्यों में वर्णित कुछ संदर्भ इस प्रकार हैं।

सोलह संस्कारों में विवाह के पश्चात् संतान जन्म एक महत्वपूर्ण संस्कार है। जोगीदास कवि द्वारा रचित दलपत राव रासों में पुत्रजन्म और दानपुण्य के सहज स्वाभाविक सांस्कृतिक संदर्भ आये हैं। एक बार सन् 1706 में जब दतिया नरेश दलपतराव मुगल बादशाह औरंगजेब के पक्ष में दक्षिण भारत में मराठों से युद्ध कर रहे थे। उसी समय दतिया में उनके पुत्र राव रामचन्द्र को पुत्र प्राप्ति हुई। नाती रामसिंह के जन्म का शुभ समाचार दलपत राव के पास दक्षिण भारत में पहुँचाया गया। समाचार ले जाने वाले कवि जोगीदास के वंशज ब्रजराज को दलपत राव बुन्देला ने दान देकर प्रसन्न किया। दलपत राव रासों में इस घटना का वर्णन इस प्रकार हुआ है-

'तहं युद्दल्लपत राउ रह देत सदा नितदान।
कवि कोविद जाचकन के राखत बहुविध मान।।157।।
तिन कवि जोगीदास सुत पंचम दलपत राय।
घर बैठे अति हेत सह इह विधि विदा पठाय।।158।।
हाथी रन सोभा बड़ी एक सहस हय वेस।
सिरोपाव जर बख्तर हुय पठये रीझ नरेस।।159।।
दक्खिन गे ब्रजराजकवि मुजरा कर सुखपाय।
कर पोंहची अरु धुकधुकी अपने कर पहिराय।।160।।
खेरी तो चरि हुए विथै पादारख लिखवाय।
अपने मुख दलपत धनी खेरीभाट धराय।।161।।
इक खेरी भये में दई, राय सुभकरन सिंह।
जुध्धजीत इक और दिय, दलपत रा रनरिंघ।।162।।
तुम भाँडेरी गाँउ दुय, घर ही बैठे खाउ।
हमें छाँड़ि औरे नृपत, माँगन कहुँ न जाउ।।163।।

उपर्युक्त दोहों में दतिया नरेश दलपतराव बुन्देला की दानशीलता का सुन्दर वर्णन किया गया है। नाती के जन्म का समाचार लेकर दक्षिण गये कवि जोगीदास के पुत्र ब्रजराज को हाथी रन शोभा, एक हजार सुसज्जित घोड़ों के साथ आभूषण, वस्त्र और दो गाँव राजा दलपत राव ने दान में दे दिये। उनाव (दतिया) के निकट स्थित एक गाँव आज भी खेरीभाट के नाम से प्रसिद्ध है।

मध्यकालीन राजपूत राजघरानों में एक दिल दहला देने वाली कुल रीति 'जौहर' प्रचलित थी। यह परम्परा प्रायः राजपूताना के क्षेत्र से अन्य स्थानों पर भी फैल गई थी। जब युद्ध क्षेत्र में शक्तिशाली शत्रु से विजय पाना असंभव हो जाता था तो क्षत्रिय योद्धा केसरिया बाना पहिन नंगी तलवारें हाथ में लिए बलिदान के लिए युद्ध के मैदान में चले जाते थे और राजमहल में क्षत्राणियाँ जौहर कुण्ड की अग्नि में कूद कर अपने प्राण देकर अपनी कुल मर्यादा की रक्षा करती थीं। पति स्वयं अपनी पत्नियों को 'जौहर' करने, अग्नि की ... कूदकर स्वयं को शत्रुओं के अपवित्र हाथों में जाने से ब... प्रेरणा देते थे। ऐसा ही एक रोमांचक घटनाक्रम 'करहिया का... में वर्णित हुआ है। करहिया के पमार राजा जब शक्तिशाली सरदार जवाहरसिंह के अचानक आक्रमण से असहाय हुए तो राजमहल की स्त्रियों को जौहर करने की नौबत आ गई थी। उ... इस प्रकार है-

'शर्म काज मर है जे नारी। ते अंबा के अंश निहारी।।
पुनपति जाते ते नहिं मरि हैं। निहचै नर्क वास ते करि...
या विधि वचन सकल समझाये। ते सुभ्रत मुनि कहत अ...
मरीं कुमरि औ राजकुँवारीं अपने कुल की लाज सम्हा...
गई विहँसि वैकुंठहि धन्या। निज पति के अनुरागहि मन...
जौहर करि जौहरिहा वीरह। निकसे बहुरि विहँसि रन धीरा...
(करहिया का रासो-गुलाब कवि, छंद क्र. 40)

रणभूमि में पति की वीरगति प्राप्ति के उपरान्त क्षत्राणी ... के सती हो जाने की सांस्कृतिक परम्परा बुन्देलखण्ड के समाज... आगे भी बनी रही। रीतिकालीन रासो काव्यों में इस प्रकार ... घटनाओं के वर्णन पाये जाते हैं। ओरछा तथा दतिया राज्य के सी... सम्बन्धी विवाद के कारण घटित हुए तरीचर-पुतली खेरा के युद्ध ... मारे गये एक ठकुर की ठकुरानी के सती होने की घटना का विवरण इस प्रकार दिया हुआ है-

'जानी अंमर देह सो, कंथ गयो उड़ि माथ।
ठकुराइन लौओ तहीं, छोड़ि सबन कौ साथ।।
करी खेलु सिर मेलि कैं, सती सती अभिराम।
लये कंथ कौं साथ सो, गई सत्त के धाम।।
(बाघाट कौ समय- बाजूराय द्विजरास, छन्द क्र. 113, 114)

बाघाट में ओरछा की ओर से गंधर्वसिंह दीवान नियुक्त थे। उन्होंने दतिया रियासत के सीमावर्ती गाँव पुतरी खेरा पर कब्जा कर लिया था और दूसरे गाँव तरीचर को भी अतिक्रमित करना चाह रहे थे। इतनी सी बात पर दोनों रियासतों में झड़प हो गई और ओरछा की ओर से नियुक्त गंधर्वसिंह को हानि उठानी पड़ी थी। इस घटना के ऊपर तीन कवियों ने रचनाएँ लिखीं। प्रधान बाजूराय द्विजदास ने 'बाघाट कौ समय', श्रीधर कवि ने 'पारीछत रायसा' तथा प्रधान आनन्दसिंह कुड़रा ने 'बाघाट रासो' लिखा।

वीर काव्यों में वर्णित सांस्कृतिक संदर्भ युद्ध काल के हैं। मध्यकालीन बुन्देलखण्ड में स्थित देशी रियासतें परस्पर वैमनस्य से ग्रस्त होकर एक दूसरे पर चढ़ाई करके युद्ध करती करातीं रहतीं थीं। इसी काल में मुगलों की गतिविधियाँ इस क्षेत्र में बढ़ गई थीं।

लखण्ड के अधिकांश राजा मुगल बादशाह के अधीन उनके सूबदार के रूप में राज्य कर रहे थे और बादशाह की आज्ञानुसार राजा दक्षिण भारत में मराठों के विरुद्ध युद्धरत रहते थे। मराठे क्ति शाली थे। ग्वालियर रियासत उस समय सिंधिया राजा महादजी र फिर उनके उत्तराधिकारी दौलतराव सिंधिया के अधिकार में आ ई थी। सन् 1801 ई. में दौलतराव सिंधया ने दतिया रियासत के ई ठिकानों पर आक्रमण किए। इसी घटनाक्रम में अंतिम आक्रमण वढ़ा पर किया गया था। सेंवढ़ा का यह युद्ध निकटवर्ती ग्राम बरहा खांद पर हुआ था। युद्ध क्षेत्र में युद्ध से पहले दतिया नरेश शत्रुजीत बुन्देला को विधिवत् पूजा पाठ की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करते हुए कवि ने चित्रित किया है। कवि किशुनेश ने शत्रुजीत रासो ने इस सांस्कृतिक घटना का वर्णन इस प्रकार किया है-

'पृथ्वी कुसासन डारि ऊपर बैठकी सुचि ऊन की।
तहं दिपति आभा इंद्र तैं बढ़ि इन्द्र त्रप के सून की।
जहँ पाटऊ पीताम्बरी, कटि मध्धि धोती धारियौ।
बैठ्यौ कुसासन भूप तब गुर गरुअ तंत्र उचारियौ।
जपि इष्ट मंत्र अरिष्ट नासक ध्यान त्रपुटि कीजियौ।
रिषि पितृ रवि के हेत भूप जलांजुली तहं दीजियौ।
तरवार पूजी प्रेम सों हरनाम राम उचारि कै।
करि दीपदान सहोम दीने नित्तदान सम्हारि कै।
गरवाइ चंदन चारु गरुये अंग-अंग चढ़ाइयौ।
हर भाँति तज कुसलात तन की जंग उमंग बढ़ाइयौ।
किय भाल मधुकर साहि साही तिलकु केसरि गारिकै।
तिहि मध्धि बिन्दु विसाल दीन्हौं गऊअरोचन धारि कैं।
करि दंडवत सतभानु कौं भुवभान आसन छौंड़ियौ।
तहं जंग काज उमंग दूपन रहित भूपन मंडियौ।।

(शत्रुजीत रासो- किशुनेश भाट, छनद क्र. 165 से छनद क्र. 171 तक)

उपर्युक्त छन्दों में युद्ध क्षेत्र में योद्धा द्वारा सम्पन्न की जा रही सांस्कृतिक परम्पराओं का सुन्दर वर्णन किया गया है। राजा निर्भय होकर रणक्षेत्र में भी अपनी सांस्कृतिक धार्मिक पद्धतियां का निर्वाह विधि-विधान के साथ करते थे। पृथ्वी पर कुश नामक घास से बनी आसन डालकर उसके ऊपर ऊन से बनी एक और बैठकी बिछाना, पीले रंग का रेशमी वस्त्र धारण करके गुरु द्वारा निर्देशित मंत्रों का उच्चारण करना, ऋषि, पितर तथा सूर्य को जलांजलि देना, तलवार आदि शस्त्रों का पूजन, दीपदान, दक्षिणा दान, चन्दन केसर का तिलक लगाने की सांस्कृतिक विधि का उल्लेख उक्त छन्दों में किया गया है। उस समय बुन्देलखण्ड के राजा मधुकर शाही तिलक लगाया करते थे। ओरछा नरेश महाराजा मधुकर शाह बुन्देला ने सम्राट अकबर के तिलक न लगाने के आदेश का उल्लंघन करके बुन्देली संस्कृति की पहचान मधुकर शाही तिलक की रक्षा की थी। उनकी दृढ़ सांस्कृतिक आस्था ने सम्राट अकबर को भी शांत कर दिया था और तभी से मधुकर शाही तकल को बुन्देलखण्ड के राजाओं ने सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्वीकार कर लिया था। दतिया नरेश शत्रुजीत बुन्देला के द्वारा भी मधुकर शाही तिलक लगाने की गौरवपूर्ण आस्था का वर्णन कवि ने सांस्कृतिक संदर्भ के रूप में किया है।

युद्ध संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण परम्परा यह थी कि योद्धा शरीर की कुशलता त्याग कर युद्ध के लिए जाते थे। महाराजा शत्रुजत बुन्देला भी शरीर की कुशलता को छोड़कर जंग की उमंग धारण कर युद्ध के लिए गये थे। परन्तु युद्ध क्षेत्र में भी अपनी धार्मिक सांस्कृतिक गतिविधियों को अनदेखा नहीं किया। बुन्देलखण्ड की वीरगाथाओं में योद्धाओं, सरदारों, राजाओं की वेश सज्जा के सांस्कृतिक चित्रण भी यथा स्थान किये गये हैं। शत्रुजीत रासो में युद्ध से पूर्व स्नान, पूजा पाठ, दान पुण्य आदि के उपरान्त राजा शत्रुजीत की वेश सज्जा का बहुत अच्छा वर्णन कवि किशुनेश ने किया है। कुछ छंद उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

'सज सीस पाठ सुपेल कस सिर पैंज जर्व जवाहरी।
क्लंगी जराऊ जगमगै सबरंग सोभा डार हो।।
जरगोट हीरा जटित बंधव तुरत तोरातौर कौ।
मन मुक्त मोल विसाल तुर्रा मौर सुभ सिरमौर को।।
सन सोम मन मुक्तावली बड़मोल की गल मेलियौ।
रव ओप आनन बढ़िय कानन चौकड़ा चड़ खेलियौ।।
भुजदंड बाजूबंद बंध कौंचान गजरा हेम कौ।
भुज साह दलपत राइ तैं सज जंग नकसो नैम कौं।।
दुपटा कतैया मूंगिया सज रामचंदरि धारियौ।
पुरपान की करवान पै वीरादिवीर विहारियौ।।
तहँ सावरी सज सूतना कसवाय बांधी फैंट कौ।
करवाह वार करौ चहै नर नाह अर को भेंट को।।'

(शत्रुजीत रासो-किशुनेश भाट, छंद क्र. 172 से छंद क्र. 177 तक)

उपर्युक्त छंदों में राजा शत्रुजीत बुंदेला द्वारा धारण किये गये वस्त्र-आभूषणों का अच्छा वर्णन प्रस्तुत किया गया है। कवि ने संकेत किया है कि वस्त्र तथा आभूषणों को धारण करने की यह सांस्कृतिक परम्परा महाराजा दलपतराय बुंदेला के समय से ही चली आ रही है। सिर पर रेशमी पगड़ी जिसकी जरीदार गोटों वाली पेंच में कीमती रत्न जड़े हुए थे। जड़ाऊ कलंगी और तुर्रा कीमती मणियों और मोतियों से जड़े थे। गले में मणियों और मोतियों का हार, कानों

में चौकड़ा नामक आभूषण, भुजाओं में बाजूबंद और कलाइयों में स्वर्ण निर्मित गजरा धारण किये थे। दुपट्टा, मूंगिया रंग की कतैया (कुर्ता जैसा वस्त्र), सूथना (पजामा) और उसके ऊपर फेंटा कस कर बांधा गया था।

बुन्देलखण्ड में रचे गये सभी वीर काव्यों में सांस्कृतिक संदर्भों का समोवश यथोचित रूप से किया गया है परन्तु मदनमोहन द्विवेदी 'मदनेश' द्वारा प्रणीत लक्ष्मीबाई रासों में झांसी में लगने वाले मेले, भुंजरियों के सांस्कृतिक पर्व-उत्सव, छेंकुर पूजा, वस्त्र आभूषण आदि के रूप में बुन्देली संस्कृति के संदर्भों का अनूठा वर्णन किया गया है।

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय झांसी में आंतिया तालाब के किनारे लगने वाले सावन माह के भुंजरियों के मेले में सजधज कर आईं सुंदरी नारियों की वेश सज्जा और आभूषणों का अनुपम चित्रण कवि 'मदनेश' ने इस प्रकार किया है। उदाहरणार्थ कुछ छनद प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

'संवत सहस्त्र नौ सत विचार। ताके ऊपर चौदह निहार।।
संउन कौ मास झांसी मझार। मेला लागे तहं तला पार।।
सिर धरे भुंजरियां नार वृंद। कोकल बैनी गत चले मंद।।
तन कुंदन चंपक सौ मुलाम। मृगनयनी सुकनासिकी बाम।।
दुर दिव्य डुलत झूमकादार। बंदियां दिपत बेंदा ललार।।
बहु कर्णफूल सांकर समेत। अरु पान झुकत झालर सहेत।।
गलटुसी बिचौली गुलीबंद। मुहरें माला बाजू के बंद।
दुलरी तिलरी चंपो रसाल। पुन चिंचिपिटी नग जटिल लाल।।
सतलरी लल्लरी चंद्रहार। मणि मुक्ता केरिन की बहार।।
ककना दौरी बंगलियां हैं। गुंजें नवनीवर चुरियां हैं।।
पुन छ्ला छाप अरु हाथ फूल। कट किंकिन बेनी शीशमूल।।
बहु तार तोर बेंदिन मझार। गुच्छा विलंद बीरा बहार।।
पायजे अरु गूजरी, जेहर पायल कोय।
पांव पैजना बीछिया, अजब अनोंटा सोय।।
जावक मेंहदी मसक मुख, बीरी अंजन रेख।
सुचिता शील सनेह दृग, मृदु मुस्क्यान विसेख।।
मंदीरी लहंगा लसत, जरकस कोर विशाल।
कुच सरोज पर कंचुकी, सोहत शीश दुशाल।।'

(लक्ष्मीबाई रासो-मदनमोहन द्विवेदी 'मदनेश' प्रथमभाग, पृष्ठ 4)

उदाहरण में दिये गये छंदों में संवत् 1914 विक्रमी तदनुसार सन् 1857 ई. में श्रावण के महीने में झांसी में लगने वाले भुंजरियों के मेले का भव्य वर्णन किया गया है। सन् 1857 ई. में झांसी के मराठा साम्राज्य की बागडोर वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के हाथों में थी। भुंजरियों के मेले में भाग लेने झांसी नगर की स्त्रियां स[illegible] कर गईं। नारियों की वेशभूषा, आभूषणों और सौंदर्य का वर्णन [illegible] ने बुन्देलखण्ड की संस्कृति के अनुरूप किया है। आंतिया ताला[illegible] तट बंध पर सजने वाल इस मेले में झांसी की नारियां अपने सि[illegible] भुंजरियां रखकर आईं। वे सुंदरी नारियां कोयल की तरह मीठी [illegible] बोल रही थीं। उनकी मंद मंद चाल भुंजरियों के उत्सव की शो[illegible] बढ़ा रही थी। वे मृग नयनियां तोता जैसी सुंदर नाक वाली [illegible] कुंदन, चंपक पुष्पों की भांति कोमल शरीर वाली हैं।

कवि 'मदनेश' ने स्त्रियों के द्वारा पहने जाने वाले बुन्देलख[illegible] आभूषणों का विस्तृत वर्णन किया है। 'दुर' नाक का गहना, 'बंदि[illegible] माथे का आभूषण, 'बेंदा' ललाट का गहना, 'कर्णफूल' कान [illegible] पहना जाने वाला गहना, गलटुसी', 'बिचौली', 'गुलीबंद' 'मुहरमाला', 'दुलरी', 'तिलरी', 'गुंज', 'चंपो', 'चिंचपिटी' 'सतलरी', 'लल्लरी' तथा चंद्रहार' आदि गले के विशिष्ट आभूष[illegible] 'ककना, दौरी, बंगलियां, बाजूबंद' आदि कलाई और भुजा में पह[illegible] जाने वाले गहने, हाथ की उंगलियों में 'छला', 'छाप', 'हाथफूल' कमर में 'किंकनीं' (करधनी), माथे का एक विशिष्ट गहना 'तो[illegible] बंदिया', पावों में पायजेब', 'गूजरी जेहर', 'पायल', 'विछिया', 'अजब अनौटा' आदि आभूषण सुशोभित होते हैं। मेंहदी और महावर से सौभाग्यवती नारियों का सौंदर्य और अधिक बढ़ जाता है। गोरे मुख पर काला तिल बनाने की परंपरा बुंदेली श्रृंगार साधनों में रही है। नेत्रों में काजल और ओंठों पर लाली नारी श्रृंगार में सदा से सम्मिलित हैं। कवि ने बुन्देलखण्ड की नारियों द्वारा जरीदार रेशमी लंहगा, वक्षस्थल पर कंचुकी तथा सिरर पर 'दुशाला' धारण करने का सुन्दर चित्रण किया है।

बुन्देलखण्ड में विविध सांस्कृतिक क्रिया कलापों और लोकरीतियों का समागम देखने को मिलता है। बुन्देला, मुगल, मराठा, अंग्रेज आदि शासको की गतिविधिों के चलते, इस क्षेत्र में सांस्कृतिक विविधता का सौंदर्य देखने को मिलता है। 'मदनेश' कृत लक्ष्मीबाई रासों में महारानी लक्ष्मीबाई के द्वारा महाराष्ट्रियन पूजा पद्धति और छेंकुर पूजा के कार्यक्रमों का अच्छा वर्णन किया गया है। साथ ही शकुन-अपशकुन की भारतीय विश्वास परम्परा का उल्लेख भी कवि ने विस्तार पूर्वक किया है।

महाराष्ट्रियन समाज में छेंकुर पूजा की सांस्कृतिक परम्परा के प्रति गहरी आस्था के दर्शन लक्ष्मीबाई रासों में होते हैं। जब टीकमगढ़ राज्य की सेनाओं द्वारा प्रधान नत्थे खां के नेतृत्व में झांसी पर आक्रमण किया गया उस समय युद्ध की भयावह परिस्थिति में भी महारानी लक्ष्मीबाई छेंकुर पूजा करने के लिए प्रमुख सैनिकों के साथ किले के बाहर गईं। लक्ष्मीबाई रासों में छेंकुर पूजा का वर्णन निम्नानुसार

ा गया है-

'तब पाढ़े ने जल्दी पूजा सामान मँगाय।
करा आचमन पैलें फिर हात दिये जुरवाय।
फेर प्रतिज्ञा करकें, फिर कलस गनेस पुजाय।
पृथ्वी की कर पूजा, छेंकुर कों जल चढ़वाय।
फेर दूद सपरायौ, गंगाजल नीर मँगाय।
पंचामृत चड़ाकें, सुरनदी नीर चड़वाय।
वस्त्र लपेटौ ताकों, पीछें जनेउ पैरांय।
फिर केसरिया चंदन, चाँउर फिर हार चड़ाय।
धूपदीप कों करकें, फिर दीनों भोग लगाय।
पान सुपारी संगै, फिर भेंट चड़ाई ताय।
करी आरती पीछें, परकम्मा लई दिवाय।
फेल दंडवत कीनी, श्रीफल की बल दिबवाय।
खंडेरा के दरसन, फिर बाई लीन्हे जाय।।'

उपर्युक्त उदाहरण से विदित होता है कि महाराष्ट्रियन पू पद्धति और लोकाचार बुन्देली सांस्कृतिक मान्यताओं से भी प्रभावित हुए हैं।

लोक मानस में शकुन-अपशकुन की मान्यता बहुत प्राचीन समय से ही चली आ रही है। कवि 'मदनेश' ने लक्ष्मीबाई रासो में महारानी लक्ष्मीबाई की सेना के लिए शुभ शकुनों और टीकमगढ़ की सेना के लिए अशुभ अपशकुनां का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। जव नत्थे खाँ की सेना ने टीकमगढ़ से झाँसी के लिए प्रस्थान किया तो उसके समक्ष अनेक अपशकुन हुए। अपशकुन सेना के मनोबल को कमजोर करने वाले होते है।। प्राय: ऐसे अपशकुन किसी सामान्य व्यक्ति को भी दिखाई देते है तो असफलता की आशंका उसके मन में निराशा के भाव उत्पु कर देती है। 'मदनेश' कृत लक्ष्मीबाई रासों में अपशकुनों के वर्णन का एक उदाहरण इस प्रकार है-

'जव तनक ठैर पुन करौ चाल। तब गैल काट कड़ गउ श्रृगाल।।
हिरनी विलोक गई वाम ओर। कौअन नें चहुँ दिस करौ सोर।।
फड़फड़ा कान जब स्वान चलौ। फिर बामन बासे आंग मिलौ।।
नव तरुणी विधवा मिली बाल। फिर देखौ काटत गैल ब्याल।।
इक वृद्धा रोवत मिली आय। रोगी गाड़ी पै लदौ जाय।।
उड़ बैठे भुज पर गृद्ध कहूँ। नहिं मानत नत्था संक तहूँ।।
घट रीते आवत सीस धरें। इक आवत मुंडन मुच्छ करें।।
फिर देखे दो मर्जार लरें। तरु पै उलूक दो केल करें।।
लवन सब्द श्रवनन सुनौ, फिर बोलौ खर आय।
पौन चलै कर घोर रव, रई धुंध मँडराय।।

(लक्ष्मीबाई रासो- 'मदनेश' भाग 2, पृष्ठ 14)

जव नत्थे खाँ की सेना चली तो सियार रास्ता काट गया। हिरणीं बाँयी ओर गई, चारों दिशाओं में कौआ पक्षी शोर करने लगें कुत्ता का कान फड़फड़ा कर चलना, बिना स्नान किए ब्राह्मण, तरुणी स्त्री का विधवा रूप, साँप का रास्ता काट जाना, रोती हुई वृद्धा स्त्री मिलना, गाड़ी के ऊपर एक बीमार दिखाई देना, भुजा पर गिद्ध पक्षी का आ बैठना, सिर पर खाली घड़े रखकर आना, मूँछ मुँड़वा कर किसी का आना, दो बिल्लियों को लड़ते देखना, पेड़ पर क्रीड़ारत दो उल्लू पक्षी दिखाई देना, लवा पक्षी का बोलना, गधे का रेंकना, जोर की आँधी वाली हवा चलना, आकाश में धुंध का छा जाना आदि अनेक अपशकुनों का वर्णन नत्थे खाँ की सेना के प्रयाण के समय किया गया है। कवि ने अपशकुनों की पूरी सूची ही प्रस्तुत कर दी है। इसी प्रकार जहाँ पर झाँसी की सेना के शुभ शकुनों का वर्णन कवि ने किया है, वहाँ पर सभी प्रकार के शकुनों की एक सूची जैसी ही प्रतीत होती है। इस प्रकार की वर्णन शैली को मध्यकालीन काव्य में नाम परिगणनात्मक शैली कहा गया है। 'मदनेश' ने लक्ष्मीवाई रासो में शुभ शकुनों का वर्णन इस प्रकार किया है-

'सुन सोचन लागी बाई जबै। ताकी भुज फरकी बाम तवै।।
फिर नीलकंट के दरस भये। लखबाई के सब सोच गये।।
फिर देखी नारी नीर भरें सुंदर तन बिंद ललाल धरें।।
वेदध्वनि विप्रन की सुनकें। तब बाई कहें हिरदे गुनकें।।
भये सकुन हमें बरने न जात। अब ईश्वर तेरे हात बात।।
तब चील गुर्ज बैठी सुझाय। बहु खेलत कन्या लखी जाय।।
फल सुंदर बेचत कोउ फिरै। इक धूप दीप नैवेध करै।।
सुरभी पय बच्छ पियावत है। कोऊ गावत मंगल आवत है।।
कलश धरें सिर क्षीर को, आवत है नर कोय।
संख दुंदुभी झालरें, शब्द चहूँ दिस होय।।
तुरत मीन इक ढीमर ल्यायौ। धोबी वस्त्र धरें सिर पायौ।।
देखा सब इक मारग माहीं। मदिरा के घट जात पराही।।
कनिक थार भर बिरी सुहावन। लै आई दुज कन्या पावन।।
देखत बाई बाम पल फरकौ। लेत मनौ टीकमगढ़ करकौ।।
लेत क्रपान बाई कर जबही। बिल्ली टूट गई है तबही।।'

(लक्ष्मीबाई रासो- 'मदनेश', भाग 2, पृष्ठ 14-15)

बुन्देल खण्ड अंचल में स्त्री की बाम भुजा का फड़कना, नीलकंठ पक्षी का दर्शन, सुन्दरी, सौभाग्यवती नारी का सिर पर पानी का भरा घड़ा रखकर आना, विद्वान ब्राह्मणों द्वारा वेदमंत्रों का उच्चारण, गुर्ज पर चील का बैठना, कन्याओं का खेलती हुई अवस्था में दर्शन, सुन्दर फल बेचता व्यक्ति, धूप, दीप, नैवेद्य, बछड़े को दुग्धपान कराती गाय, मंगल गीत गाते हुए किसी का आना, सिर पर दुग्ध से भरा घड़ा रखकर आता आदमी, शंख, दुंदुभी, झालर का शब्द, मछली लेकर ढीमर का आना, सिर पर वस्त्र रखकर धोबी का आना,

ब्राह्मण कन्या के द्वारा स्वर्ण के थाल में पान के बीड़े तम्बाकू आदि रखकर लाना, स्त्री की बाँयीं आँख का पलक फड़कना आदि शुभ शकुनों में गिनाये गये है। लक्ष्मीबाई युद्ध के लिए जा रही थी। जैसे ही उन्होंने तलवार उठाई तो उसकी म्यान अपने आप खुल गई। एक योद्धा के लिए यह भी शुभ शकुन माना गया है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड की संस्कृति में प्रचलित शुभ और अशुभ शकुनों का वर्णन प्रायः सभी वीर काव्यों में पाया जाता है।

बुन्देलखण्ड में वीरकाव्य-रासोकाव्य या युद्ध काव्य लिखे जाने का काल युद्ध संस्कृति वाला काल था। निरंतर युद्धों को झेलते रहने वाले जनजीवन में घटित होने वाले उत्सव समारोह, संस्कार आदि पर उस युद्ध संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगोचर होता था। जैसा जन-जीवन था, उसी के अनुरूप कवि वर्णन भी करते थे। युद्ध के समय देवी देवताओं का स्मरण करने की परम्परा मान्यता में थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्ध के लिए जाते समय महिषासुर मर्दिनी देवी की आराधना करतीं हैं कवि 'मदनेश' ने लक्ष्मीबाई रासो में लिखा है-

'जै हे महिषासुर मर्दिनि। शैलसुते जै रंभ कपर्दिनि।।
जै सुर असुर चराचर स्वामिनि। जै महेश मन रंजन भामिनि।।
वेग शु सब करहु विनाशी। हम पर कृपा कोर सुख राशी।।
वेग कह कर क्रपान सोइ लीनी। तुरतहिं ताय एक बल दीनी।।
रक्त चढ़ाय म्यान धर तबहीं। भये सकुन सुन्दर पुन

(लक्ष्मीबाई रासो- 'मदनेश', भाग 2, पृष्ठ 15)

उपर्युक्त उदाहरण से ज्ञात होता है कि युद्ध के लिए पूर्व योद्धा शक्ति की देवी की आराधना करते थे और देवी को करने के लिए देवी को किसी जीव की बलि भी चढ़ाते थे बलि के रक्त को अपनी तलवार में लगाने का सांस्कृतिक वि भी था।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते बुन्देलखण्ड में जगनिक के आल्हाखण्ड से लेकर मदनमोहन द्वि 'मदनेश' प्रणीत लक्ष्मीबाई रासो तक वीर काव्यों की एक ल श्रृंखला पाई जाती है। लगभग सातसौ वर्ष के इस दीर्घ कालख हजारों युद्ध हुए होंगे। युद्ध जनित आशंकाओं के बीच चलने सांस्कृतिक क्रिया कलापो का स्वरूप भी युद्धों के अनुसार निर्धारित किया जाता रहा होगा। शत्रुओं की सेनाओं से आतं रहने वाली जनता अपने सांस्कृतिक उत्सवों को फिर भी आयोजि करती रही, यह विचार आश्चर्य चकित करने देने वाला है। जो जैसा भी स्वरूप रहा हो, पर बुन्दली वीर काव्यों में सांस्कृति संदर्भो का चित्रण यथा अवसर किया गया है।

अनन्य कालोनी, सेंवढ़ा
जिला दतिया (म.प्र.)
मो. 982781576

बुंदेली कौ ब्याकरणिक स्वरूप

– डॉ. कामिनी

बुंदेली के स्वरूप कों समझवे के लाने ध्वनि ग्रामिक स्वरूप, ध्वनिग्रामिक संगठन, सुर, बलाघात सुरलहर और शब्द संपत्ति कौ महत्वपूर्ण स्थान है। ध्वनि कों स्वर और व्यंजनदो भागन में बाँटो गओ है। बुंदेली में मूल स्वरदस है अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ। इनमें इ,ई,ए,ऐ, चार अग्र स्वर, आ,उ,ऊ,ओ,औ पाँच पश्चस्वर और अ एक मध्य स्वर है। बुंदेली में स्वरन कौ सानुनासिक प्रयोग उपलब्ध होत है। स्वर संयोग बुंदेली शब्दावली के आदि, मध्य तथा अंत तीनऊ स्थितियन में मिल जात है। डॉ. कृष्णाल हंस के अनुसार ध्वनि ग्रामिक दृष्टि सें य और व अर्द्धस्वर हैं। इन अर्द्धस्वरन कौ संयोग भी बुंदेलखंड में सर्वत्र देखौ जा सकत।

बुंदेली में अट्ठाइस व्यंजन ब्यौहार में है। बुंदेली में ङ., ञ, ड़ ब्यौहार में नइयाँ। नासिक्य ब्यंजनन कौ ब्यौहार सब जंगां मिल जात है।

ब्याकरण के लानें वर्ण, शब्द और वाक्य मुख्य आधार होत हैं। वर्ण कौ मूल रूप ध्वनि है। सार्थक ध्वनियन सें शब्द कौ निर्माण होत और शब्द ब्याकरणिक स्वरूप कों व्यवस्थित करत हैं। शब्द संपदा में संज्ञा रूप सबसें अधिक है। संज्ञन कौ स्थान सर्बनाम लै लेत और क्रियापद वाक्य कों पूर्णता प्रदान करत। इन शब्द रूपन में कछू विकारी और कछू अविकारी है। विकारी में संज्ञा, सर्वनाम विशेषण और क्रिया रूप आउत है।

संज्ञा- संज्ञा कौ सामान्य अर्थ नाम है। इन्हें जाति वाचक, व्यक्तिवाचक और भाव वाचक भेदन में बाँटा गओ।

सर्वनाम- संज्ञा की जगा पै आबे वो शब्दन कों सर्वनाम कओ जात। नाम कों बेर-बेर दौहराबे से बचबे के लाने इनकौ ब्योंहार करौ जात है। बुंदेली भार्षी भू-भाग में- में, तें, जौ, बौ, ई, ऊ, इन, विन, अपुन, तुपुन आदि सर्वनाम ब्यौहार में है।

विशेषण- बोली में विशेषण रूपन कौ ब्यौहार भाव प्रखरता औरा संवेदनशीलता में वृद्धि करत हैं। सुपेत, करौ, भूरौ, बारा, तेरा, पीनें, तनक,मुलक, सबरौ खोबाभर, जौ, बौ, इतांय, उतांय सब जगा ब्यौहार में है। थोरौ-मौत, तातौ-सीयै जैसे बिपरीत अर्थ दैबे बारे युग्म विशेषण रूपक ब्यौहार में हैं।

क्रिया- काऊ काम के करवे या होबे की सूचना दैबे बारे शब्दन कों क्रियापद कओ जात है। बुंदेलखंड में क्षेत्रीय उच्चारण की विविधता कौ प्रभाव है। सहायक क्रियापद सबसे जादा प्रयोग में आउत हैं। जैसें- सपरबौ, खाबौ, लीलबौ, अराँबौ, हते, हतुऐ, हतवें, क्रियापदों की बहुलता है।

अविकारी शब्दरूप

क्रिया विशेषण- अविकारी शब्दन कों अव्यय कओ जात है। क्रिया विशेषण, क्रिया के सम्पन्न होबे की विशेषतायें बताउत हैं। कछू क्रिया विशेषण - विशेषण की विशेषता प्रदर्शित करत हैं और कछू क्रिया विशेषण की विशेषता प्रदर्शित करत हैं। जैसे- मरें-मरें, हरें-हरें, बड़ौ-नीच, खूब-तेज, इतै-उतै, नोंने-बुरे, घने-बंगरे, अथयें-दुफरै, अबेर-सौकारे जैसे क्रिया विशेषण ब्यौहार में है। भाव, अभिव्यक्त करबे में इनकी महत्वपूर्ण स्थान है।

सम्मुचय बोधक- संयोजक, विभाजक, प्रतिभेदक, निर्देशक और हेतुक सम्मुचय बोधक की कोटियाँ हैं। जैसें- और, अकेलें, कै, तौ और तईं।

विस्मयादि बोधक- आश्चर्य, तिरस्कार, हर्ष, शोक आदि मनोदशन कों अभिव्यक्ति दैबे बारे अविकारी शब्द विस्मयादि बोधक की कोटि में आउत। जैसें- ओ मताई, अरे लल्ला रे, भौत ठीक, अहा, बाभा, हट्ट, हओ ऐन, बुंदेली भाषी क्षेत्र में प्रचलित हैं।

सकारात्मक और नकारात्मक शब्द- ऐसे शब्दरूप सहमति और असहमति कौ बोध कराउत। हओ, नईं, ऊहूँ, नायनें, मति शब्द रूप ब्यौहार में हैं। कछू क्षेत्रीय रूपन में हओ के साथ 'जू' जोड़ो जात।

परसर्गीय शब्दावली- ऐसे शब्द वाक्यांशन की रचना में सहयोग देते हैं। के संगै, के बीचां, पीठ पिछाई जैसे ब्यौहस में कारकीय परसर्ग रहित ब्यौहार है।

निपात- ऐसे शब्द रूपन कौ कछू अर्थ नईं होत। वे तौ केवल वाक्य के भाव कों प्रखर बनाउत हैं। जैसें- ही, भी, भर, तक, तौ, सौ इनके उदाहरण हैं। लट्ठ, गाजर भूरा, बोरका, छोलन और चमचा जैसे स्लांग शब्द क्षेत्रीय बोली रूपन कों सजीव बनाये हैं। गारीं दुर्बचन और सौगन्धन कौऊ अपनों महत्व है।

शब्द-संपदा- विस्तृत-भू-भाग में व्यवहृत होवे के कारण बुंदेली की शब्द संपदा में स्थानीय रूपन कौ विशेष महत्व है। बदलत भइं सतन के फल स्वरूप अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रेंच और अंग्रेजी भाषा के शब्दन कौ समावेश बुंदेली की शब्द-संपदा में भओ है। ब्रज और कन्नौजी के शब्द कैई गांउन में मिल जात। पूर्वी सीमा पै बघेली और छत्तीसगढ़ी कौ प्रभाव है। पश्चिमी सीमा के जिलन में राजस्थानी, मालबी और निमाड़ी के शब्द उपलब्ध हैं। दक्षिणी सीमा मराठी के निकट है। मराठी नें बुंदेली के बोली रूपन कों प्रभावित नईं करौ। शब्द संपदा में तत्सम, तदभव, देशज, ध्वन्यात्मक, विदेशी, स्थानीय और दूसरी भाषन सें गृहीत तथा संकर शब्द सामिल हैं। जैसें- अकौआ, केंचुआ, किंछा, घिनोंचो, फदर-फदर, भदभदा, आफत, लालटेन, झकूटा, भब्बड़, गोठ, खापा आदि हैं। बुंदेली कौ ब्याकरणिक स्वरूप और बुंदेली भाषा कौ विकास बिना काऊ रूकावट के होत रओ है। स्वर और ब्यंजनन की समानता शब्द संरचना के रूप बिकास तक मिलत है। ब्याकरण बुंदेली कौ भौत समृद्ध है।

बुन्देली लोकगीत और दोहा

– डॉ. वीरेन्द्र 'नि...

बुंदेलखंड मे नृत्य और गायन का सदैव महत्व रहा है। सभी पर्व-उत्सव, संस्कार लोकसंगीत से सराबोर उर की उदात्तता की अभिव्यक्ति करते हैं। इस संगीत में लय और ताल का बहुत महत्व है। नृत्य-गायन में चतुर्मात्रिक गुणों का प्रयो समत्व की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। इसीलिए लोक में सममात्रिक चतुष्पदी छन्दों में 16 मात्रा के पाद वाले छन्द अधिक लोकप्रिय रहे हैं। इनकी ताल सांगीतिक उपयुक्तता इसका कारण रही है। दोहा का उद्भव इन्हीं अष्टमात्रिक तालगणों से हुआ है। मस्ती और उल्लास से अभिभूत आनंदोत्सवों में गाए जाने वाले गीतों में इसीलिए दोहे को अलग-अलग लय तालों मं निबद्धकर गाने की परम्परा बुंदेलखंड में देखी जाती है।

यहाँ के लोक गीतों में दिवारी, लमटेरा, राई, देवीगीत, सावन, राछरे आदि प्रमुख हैं। ये सभी लोकगीत समाष्टक लय प्रवाही तालगणों से उदभूत हैं। डॉ. नर्मदा गुप्त ने दिवारी, साखी, लमटेरा आदि गीतों को तो दोहे पर केंद्रित माना है पर देवीगीत, आल्हा आदि को गाहा परक अर्थात गाहा छन्द से निष्पत्त बताया है। गाहा छन्द प्राकृत का छनद है। संस्कृत काव्यों में इसे आर्या छन्द कहा गया है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत वर्णवृत्त अनुष्टुप के मात्रिक रूप से हुई है। इसकी विषम प्रकृति और ताल संगीतिकता के अभाव के चलते इससे आल्हा या देवीगीत आदि के उद्भव की कल्पना मात्र कल्पना ही है। आल्हा और देवीगीत आदि सभी समाष्टक ताल गणों से दोहा के आदि रूप से संबद्ध हैं।

इन लोक गीतों के दोनों ही चरण विषम और सम अष्टताल मात्रिक रूप में 88, 88, की ताल मात्राओं में निबद्ध होते हैं। यदि उनमें कुछ मात्राएँ कम या अधिक होती हैं तो गायक उन्हें प्लुत या विराम आदि के सहारे पूरी कर लेता है। इस प्रकार के लोकगीतों में आल्हा (गाथा गीत) प्रमुख है। वर्तमान आल्हा छनद 16-15 की यति पर स्थित है, जिसकी एक मात्रा की पूर्ति गायक गाते समय पूरी कर लेता है।

सब्जी घोड़ी थी रूपन की, सो तौ लाल बरन हुइ जाय।
रकत में बूड़ो रुपन आवै, कपड़न रही लालरी छाय।।
एड़ लगाय दई घोड़ी के, फाटक निकर गई वा पार।
चार घड़ी को अरसा गुजरो, जहु बरात में पहुँची जाय।।
सैरा की साखियों की पद रचना भी कुछ ऐसी ही है-
खात में निबिया करई लागै, बैठें लगै शीतली छाँह।
चाँट में भैया बैरी लागै, रन में लगै दाहिनी बाँह।।

देवी गीत में 88, 88 की ताल मात्राएँ ही होती हैं। कालमात्रा की पूर्ति हो माँ शब्दों की आवृत्ति से होती हैं। यह आवृत्ति पूरे गीत में आनुप्रासिक सौन्दर्य की भी अभिवृद्धि करती है। उदाहरण देखें-

दिन की ऊँगन किरन की फूटन, सुरहिन बनखों जाय हो माँ।
इक बन चाली दो बन चाली, तिज बन पहुँची जाय हो माँ।
कजली बन में चंदन हरे बिरछा, उत सुरहिन मों डारो हो माँ।
एक मों घालो दुज मों घालो, तिज मों सिंघा गुंजार हो माँ।।

'लाल' के टेक की गारियों में भी 'मोरे लाल' शब्द की आवृत्ति बार बार होती है, जो ताल मात्राओं की संपूर्ति करती है।

भागीरथ ने करी तपस्या, गंगा आन बुलाइ मोरे लाल।
भागीरथ के पुरखा तरगए, तर गओ सब संसार मोरे लाल।।
सरग लोग से गंगा निकरी, संकर जटा समानी मोरे लाल।
संकर जटा सें निकसी गंगा, जमुन मिलन खों धाई मोरे लाल।।

ऐसे ही विवाह की गारियों में 'भले जू' की अवृत्ति हुई है-

इनके एक बाम जग जानत, उनके हैं त्रइ बाम भलें जू।
बे सब गोरीं दसरथ गोरे, कुँवर काये भये स्याम भलें जू।।
कारन कौन बताओ गुइयाँ, देहौं तुम्हें इनाम भलें जू।
कहा बतावें लीला प्रभु की, जग में भई सरनाम भलें जू।।

दिवारी गीत में कालमात्रा की पूर्ति अरे, सो, काए आदि शब्द से की जाती है और अंत में 'रे' की टेर रहती है। यथा-

अरी ये काजर के काँटे लगे, बिंदिया की सालै कोर रे।
बारे बलम छौवा लगें, सो सालत आदी रात रे।।

वास्तव में बुंदेली के ये गीत अष्टमात्रिक तालगणों से विकसित दोहे के प्रारंभिक रूप हैं और गायन में 'हो माँ', 'मोरे लाल', 'भलें जू' अथवा कोई अन्य शब्द जोड़कर या प्लुत और विराम के सहारे तालमात्रिकता की पूर्ति करके गाए जाते हैं। बुंदेली के एक देवीगीत से हम इसे समझ सकते हैं, जहाँ कालगत असमानता की पूर्ति कुछ शब्दों में परिवर्तन कर तथा 'हो माँ' को जोड़कर की गई है।

बन कजरी से सजइ हथिनिया, आल्हा भये असवार हो माँ।
8+8 8+8
इक पर लादे धुजा नारियल, इक पर लादे निसान हो माँ।।
8+8 8+8

उक्त पंक्ति में सम चरणां में 'हो माँ' शब्द की आवृत्ति है, जो कालमात्रा की पूर्ति करती है। यह आवृत्ति पूरे गीत में है। यदि हम

हो माँ को छन्द से निकाल दें तो छन्द की स्थिति 16.12 (4) बनती है, और यदि सम चरणों के आल्हा को आल्ह तथा लादे लदे में परिवर्तित कर दिया जाए तो छन्द में 16-11 मात्राएँ रह गी। यथा-

कजरी से सजइ हथिनिया, आल्ह भये असवार।
पर लादे धुजा नारियल, इक पर लदे निसान।।

दोहे का यह पुराना रूप है। मुल्ला दाउद के चंदायन या रिकहा में भी दोहा की स्थिति कुछ ऐसी ही है। लोक के निकट र परिनिष्ठित प्रभाव से अपेक्षाकृत मुक्त होने के कारण इस ग्रंथ में हा का प्रयोग पूर्ववर्ती लोकसाहित्य में प्रयुक्त दोहे के रूप को भिव्यक्त करता है। इनमें चरणगत वर्णमात्राओं में भिन्नता होते हुए ी यदि-गति दोहे की है। डॉ. शिवनंदन प्रसाद ने 'मात्रिक छंदों का वकास' शोध ग्रंथ में दोहा की उत्पत्ति को अष्टमात्रिक ताल संगीत से संभूत मानते हुए, दोहा के विकास क्रम में विषम चरणों में वर्णमात्रा संख्या 16 (तालमात्रा) मानी है। तथा समपादों में वर्ण मात्रा संख्या 16 से 11 होना माना है। तालबद्ध दोहा गायन में गायक 5 मात्राओं की क्षतिपूर्ति स्वयं प्लुत आदि के सहोर पूरी कर लेता है। दिवारी गीत की पंक्तियाँ भी दोहा से सायुज्य रखती हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने जिस अहीर छन्द से दोहा का विकास बताया है, वह ग्यारह मात्रिक अंत में गुरू लघु युक्त छन्द है। इसके विषम चरणों में 'रे' की टेर मात्र लगा देने से दोहा छन्द बन जाता है। डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने दिवारी से ही दोहा का उद्भव कहा है, किन्तु दिवारी गीत भी समाष्टक लय प्रवाही ताल छन्छ से उद्भूत दोहा का प्राचीन रूप है। एक उदाहरण देखें-

कठिन तौ चराई जौ गाय की, काए ठाढें चरत पहार रे।
17 17
चलतन टूटी जे पनइयाँ, अरे ललकारत टूटी भाँस रे।।
15 18

इस गीत की वर्णमात्रिक स्थितियों पर विचार करें तो पहले दूसरे और चौथे चरण में 16 से अधिक मात्राएँ हैं तथा तीसरे चरण में 15 मात्राएँ हैं। गायक विराम और प्लुत के सहारे इसे तालमात्रिक गण के अनुकूल बना लेता है। परन्तु उक्त दिवारी गीत से यदि अतिरिक्त शब्द ध्वनियों को अलग कर दें तथा टूटी शब्द को चौथे चरण में 'में' शब्द में परिवर्तित कर दें तो गीत दोहा बन जाता है। इस उदाहरण में तुकान्तता नहीं है। तुकान्तता का आगमन सांगीतिकता के कारण बाद में हुआ है। दोहा देखें-

कठिन चराई गाय की, ठाढ़े चरत पहार।
चलतन टूटीं पइयाँ, ललकारत में भाँस।।

जहाँ पूर्ववर्ती काल में दोहा का उद्भव और विकास लोक प्रचलित ताल छन्छों के मात्रिक संस्कार से हुआ है, वहीं परवर्ती काल में दोहा के शास्त्रीय रूप को लोक गायकों ने अपने गायन के अनुकूल तालबद्ध रूप में रूपांतरित किया है। जैसे निम्न दोहे को गायकों ने अलग-अलग अवसर पर अलग-अलग रंग में गाया है।

दोहा - सदा तुरैया न फरै, सदा न साउन होय।
सदा न राजा रन चढ़ै, सदा न जीवै कोय।।

फागों की साखी -
सदा तुरैया फूलै नई, सदा न साउन होय।
सदा न सूरा रन में जूझै, सदा न जीवै कोय।।

आल्हा की साखी -
सदा न फूलै रंग तोरइ हाँ, सदा न सावन होय।
सदा न राजा रन पै चढ़ै, सदा न जीवन होय।

राछरे की साखी -
सदा न तुरैया फूलै अमाना जू, सदा न सावन होय।
सदा न राजा रन चढ़ै, सदा न जीवन होय।।

उक्त साखियों के विषम चरणों में वर्णमात्राएँ क्रमशः 15-16, 17-18 तथा 20-13 हैं और सम चरणों में 11 मात्रायें हैं। इनसे स्पष्ट है कि गायन के कारण दोहा का प्रारंभिक रूप 16-11 का रहा है। बुंदेली के अनेक लोकगीत इसी छन्द से जुड़े हैं। राछरा गीत तो इस दोहा रूप का उपयुक्त उदाहरण है।

कहाँ तो धरो मैया जीन पलेंचा, कहाँ धरे हथियार।
घुल्लो टँगे हैं जीन पलेंचा, उतई धरे हथियार।।
घोड़ी बँधी घुड़सार में बेटा, कसले हो जा सवार।
छींकत घोड़ा पलानियो बेटा, बरजत भये असवार।।

दोहा की अगली स्थिति 13-11 मात्रा वाले दोहा के शास्त्रीय रूप की है जिसे लोक रागनी में ढालने या गायन के लिए प्रयोग में लाने हेतु कभी विषम पंक्ति में तो कभी समपंक्ति में और कभी दोनों में ताल मात्राओं के संयोजन के लिए शब्द जोड़े जाते हैं। यथा सुअटा गीत में -

1. ऊँची डगर की पीपरी, नारे सुअटा, जिन तरें लगे हैं बजार। बिरजी गोरा (बेटी) बाप सें, ना रेसुअटा, (राजा) बाबुल चुनरी रँगाव।।
2. ढिंग ढिंग लिखियो (मोरो) मायको, नारे सुअटा, अँचरन माइ के बोल।
माई बैठी मझघरा, बाबुल पौर दुआर।।
3. चौकन चौकी चौखुटी, नारे सुअटा, चौकी (क) चारउ खूँट। चौकन बैठे भैया डेढ़ सौ नारे सुअटा, तिन में भैया (चंदा सूरज मोरे) कौन।।

दोहा का यह रूप बरात आगमन के गीत, भाँवरगीत और

भोले के गीतों में उपस्थित है-

बरात आगमन का गीत-

कहँ बसाऊँ (अराती) बराती, कहँ तौ घुड़ला पचास।
कहाँ बसाहौ बाबुल गरये से साजन, कहँ ना दुलहा दमाद।।

भाँवर गीत-

बिच गंगा बिच जमुना, तीरथ बड़े हैं पिराग
जहँ बिच बैठे बाबुल मोरे, देत कुँवारन दान

भोला के गीत - भोला के गीतों में किसी भी दोहे के पहले और तीसरे पाद में 'मोरे प्यारे' या 'मोर भइया' जोड़कर गीत को गायन के अनुकूल कर लिया जाता है।

श्राम नाम कहबू करे- मोरे प्यारे, जब लौं घट में प्रान।
कबहूँ दीन दयाल के रे मोर भइया झनक परेगी कान।।

कहीं कहीं इनमें टेक या पूछ भी लगाई जाती है -

पीसत छोड़े पीसने - रे मोरे भइया, चुरत चनन की दार।
बारे छोड़े पालने - रे मोरे भइया, और कुटुम परवार।।
---चले चलो हो...

क्हीं कहीं निकर आई दे टटिया अथवा स्वामी तोरी कठिन है महूम चले चलौ हो...

दिवारी गीत में भी कुछ ऐसा ही है-

वृन्दावन बसबो तजो (अरे) होन लगी अनरीत।
तनक दही के कारने (फिर) बहियाँ गहत अहीर...रे।।

संचत गीत - मानव जीवन की सबसे बड़ी लालसा संतान की प्राप्ति है। स्त्री में यह भावना पुरुष से अधिक प्रबल होत है। नारी हृदय की इस विकलता और अधीरता का यह गीत भी - दोहा में ही व्यक्त हुआ है-

लीपत ती धन ओबरी, पोतत पौंर दुआर।
हंसत खेलत राजा आगए, बात कहौ धन एक।।
इतनी (तौ) सुनधन अनमनी, हन लये बजर किवार।
आई ननद बाई पाहुनी, खोलौ बजर किवार।।

सोहर गीत - जन्मसमय तथा इससे संबंधित उत्सवों में सोहर गीत गाये जाते हैं। इनमें विविध भावों का प्रवाह मन को आनंद से भर देता है। इन गीतों में भी दोहा रूप देखा जा सकता हैं-

सुनो राजा रे महाराजा रे ल्याओ सोंठ बिसवार।
लडुआ तो बँधवाय तुम, तुम बाँधौ हम खाँय।।

दोहा की अगली स्थिति दोहा का सीधे-सीधे प्रयोग है। जैसे फागों की साखी तथा छंदयाऊ फाग में दोहा से ही फाग उठाई जाती है। श्री भुजबल सिंह की छन्दयाऊ फाग का एक नमूना देखिए-

दोहा- नयन चपल चंचल अनी, समसर ना तलवार।
राधा मन मुसक्याय के, दई मोहनी डार।।

टेक - राधे तिरछे नैन करे हैं, बिहबल स्याम परे हैं।

छन्द- चल चपल चाल, मुसक्याय बाल
दई सैन घाल, जैसे गाँसी
गिरे नंदलाल, गये बिसर ख्याल
पर गये जाल, तन में आँसी

दोहा - ई नैनन में जब में जादू जादूगरिन भरे हैं।
ठटा लेब इन धाय कोटरी, बिहबल स्याम परे है।।

यहाँ नीचे वाला दोहा 16-12 की यति पर है। फाग के सभी दोहे 16-12 की यति से युक्त हैं। सूरस्याम की फा दोहा 13-11 की यति पर ही पूर्ण होते है। और वे फागके भी प्रयुक्त हुए हैं-

दोहा - वाहन साजे विविध वर, सुरन अनेकन भाँत।
संकर बनरा बन गए लागी चन बरात।।

टेक - सुरन सुमन बरसाये, आज बना बन आए लाल।।

दोहा - भसम लगाए अंग में, गर मुंडन की माल।
भूषण व्यालन के किए, चन्द्र विराजत भाल।।

शैर - सोहत है भाल निसपत, है सोभा भारी।
कर बिच्छू के कंकन, दिये अंबरधारी।।

टेक - ब्रहमा विष्णु आदि दै सुर सब, है गजरथ चढ़ आर

दोहा - आए शिव के सकल गन, कर कर अपनी सान।
भूत पिसाच अनेक हैं, करत न बनत बखान।।

चौकड़िया फागों में भी कुछ कवियों ने पहले दोहे में जो बात सूत्र रूप में कहीं है उसी बात को फाग में विस्तार से व्यक्त किया है-

दोहा - कामादिक खल मार कें, मोह फाँस कर अंत।
जग की केतिक बात है, कालहु डरत न संत।।

फाग : जग में सन्त सिपाही लरते, बरबस जाय उभरते।
वस्तु विचार कृपान बाँध कटि, काम सीस पट धरते।
वक्तर क्षमा अभेद तन, क्रोधै पकर पछरते।
सर-संतोष लोभ उर मारत, इनसों नेक न डरते।
खूबचन्द हन मोह विकट भट, राज अंकटक करते।।

राई गायन में भी दोहा का प्रयोग कथ्य को एक ठवन प्रदान करता है। किन्तु यहाँ राई के साथ अंतरे के रूप में दोहा राई का अनुसरण करता है। यथा -

बजरई आधीरात, बजरई आधीरात
बैरिन मुरलिया जा सौत भई।

दोहा - बन से तू काटी गई, छेदी तोय लुहार।
हरे बाँस की बाँसुरी, मनो निकरो नई सार।। ।।बैरिन।।
पोर पोर सब तनकटे, हटे न आँगुन तोर
हरे बाँस की बाँसुरी, लो गई चित्त बटोर। बैरिन।।

सखयाऊ फागों में दुमदार दोहों की तरह अंत में एक कड़ी रहती हैं। दोहे की चौथी कडी में सो पद अपनी ओर से लगा हैं। जैसे

दोहा - अँगना सूखै सूकनो,
बन सूखै कचनार।
गोरी सूखै मायकें,
हीन पुरुष की नार।।
राई/दुम - हमें सुख नइयाँ सासरे आए को।

कुछ साखें, साखी या कबीर सखियाऊ फागों के रूप में पाए ते हैं-

इस प्रकार दोहा छन्द को लेकर बुन्देलखण्ड में अलग-अलग ल और तर्जों पर बुन्देली लोक गीत का उन्मेष देने को मिलता है।

-एम.बी-120 पार्ट बी (पानी की टंकी के पास)
न्यू इंदिरा कालोनी, बुरहानपुर 410331 म.प्र.

<1tb-E> c:\stand07\Hata2023\bund23.pm5 ....

बुन्देलखण्ड के लोकगीतों में स्वतंत्रता संग्राम

इंग्लैण्ड से आये इन अंग्रेजों का व्यापार इस देश में कलकत्ता से प्रारम्भ हुआ था। व्यापार का क्षेत्र शनैःशनैः व्यापक होता रहा, व्यापार भी बढ़ता रहा। अपनी तथा अपने व्यापार की सुरक्षा के नाम पर धीमे धीमे सेना का गठन होता रहा और फिर समूचे भारतवर्ष में 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' नाम की विशाल भव्य व्यापारिक इकाई का बोलबाला हो गया। इस कम्पनी की अपनी क्षमतायें भी अत्यन्त व्यापक होती गई। प्रलोभन तथा 'बांटो और राज्य करो' की नीति का सहारा लेकर इन अंग्रेजों का इस देश में सामाजिक व राजनैतिक हस्तक्षेप बढ़ता गया और अन्ततः सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह भारत देश इन अंग्रेजों के चंगुल में बुरी तरह से फंस गया। अंग्रेजों की क्रूरता, बूटों, हंटरों की मार के आगे भारतवासी घुटने टेकने लगे और अंग्रेजों की दासता की बेड़ियां बढ़ने लगीं। इन बेड़ियों के भार के नीचे भारतवासी कराहने लगे।

यमुना, नर्मदा, चम्बल और टौंस नदियों के मध्य घिरा बुन्देलखण्ड भी अंग्रेजों के दमन से अछूता नहीं रहा। यहां का लोकजीवन भी अभावग्रस्त हो गया। भूख के मारे यहां का जन जीवन क्षत विक्षत हो गया। जन जीवन का यही कारुणिक दृश्य इस गीत में सजीव हो उठता है–

जियरा सूख गये खटका में
अरे मौड़ा मौड़ी रोटी मांगे, नाज नहीं मटका में
जिनके घर के नाज बढ़ा गये, मठा पियें अटका में
उन्ना फट गये, कपरा फट गये, दिन काटें फड़का में
मांगे उधार देत कोऊ नइयां, दिल न सटें अटका में 1

जीवन जीने के लिये पेट का भरना जरूरी होता है परन्तु हालात तो ये हैं कि लड़के लड़कियों को खिलाने के लिये भी कुछ नहीं बचता। फिर सरकारी लगान यहां का किसान कैसे दे पाये। अतः लगान वसूली के लिये मुंशी, पटवारी, तहसीलदार आदि आने लगे और घर की कुर्की होने लगी। कुर्की में घर की पोता लगाकर सफाई हो गई। यही मार्मिक व्यथा इस गीत में दृष्टव्य है–

पोता लाग रहा महाराज
जुनरिया हो गई मन भर की
मुन्शी आये पटवारी आये
आये तहसीलदार होन लगी कुरकी
लहंगा बिक गओ, लुगरा बिक गओ
बिक गई अंगिया तन की
राजा के बांधत को रौला बिक गओ
फजियत है गई घर घर की 2

इस देश के घर घर की हालत बद से बदतर होती थी। यहां के लोग जहां भूख से तड़प रहे थे वहीं ये अंग्रे मस्ती में झूम रहे थे।

भारत के लोग आजु दाना बिनु तरसें
लन्दन के कुत्ता उड़ावै मौज
माल हो विदेशी तारे राज में 3

इस देश को उजाड़ कर अपना भला कर रहे थे ये अ यहां पर आपस में जहां राम रहीम एक थे वहीं अंग्रेजों ने आ फूट डाल डाल कर हम हिन्दू मुस्लिम भाइयों को अलग अ करके हम सबको भिखारी बना दिया।

हरे हरे खेत उजड़ गये सिगरे
रे लूटी है सम्पत सारी विदिसिया
बय बय बीज फूट के तूने
रे कर दओ देश भिखारी 4

अंग्रेजी हुकूमत से सभी त्रस्त थे। लोक जीवन तो बुरी त से टूट चुका था। उसके मुंह से बस कराह ही निकल रही थी। अ जहां कहीं भी कोई गोरी चमड़ी वाला अंग्रेज दिखाई पड़ता तो ज मानस कह ही उठता था–

जे आ गये अंग्रेज विदिसिया हमें चूस के खाने
इनके लाने इज्जत नइयां, करत रहत मनमाने
बहू बेटियन जे ना छोड़े, बनत बहुत सयाने
चापलूसन की कमी नइयां, काहे को गिनवाने
करें हजूरी अंगरेजन की, अपने में भरमाने 5

उक्त लोकगीत में जहां अंग्रेजों की ज्यादतियों को वर्णन है, वहीं हम में से उन चापलूसों के विषय में भी बतलाया गया है, जो अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु अंग्रेजों के तलुये चाट चाट कर अपेन आप को गौरवान्वित समझ रहे थे। अब जन मानस की अंग्रेजों के अत्याचारों को सहने की सहनशक्ति समाप्त होती जा रही थी। यहां की जवानी अंगडाईयां ले रही थी। यहां का खून खौल रहा था। यहां की मांशपेशियां मछलियां बन कर कल्लोल कर रहीं थी और मन कुछ न कुछ कर गुजरने के लिये छटपटा रहा था। एक युवक अपनी मां से कहता है–

देख देख ज्यादती गोरन की, बाह बहुत फरकावै
क्रान्तिकारिन ने लरी लराई, गोरन को खूब छकावै
घर घर पानी सांग पै अपनी, मौका तलसवै जावै
अम्मा मों से रहो न जावै। 6

अंग्रेजों की लूट पाट का शिकार यहां का आम आदमी भी

। यह भी इन की बन्दर बांट नीति को समझ रहा था तभी वह
ध के मारे भभक रहा था और अपनी भकभकाहट को शान्त करने
तु आवाह्न करते हुये कह रहा था-

विदिसयन खूब मचाई लूट
भइया भइया लड़ा दये, डार बीच में फूट
बंदर बांट के खा गये सब कुछ बची न एकउ खूंट
पकर के मारो इन गोरन को, देओ न कोऊ छूट
विदिसियन खूब मचाई लूट। 7

जहां पुरुष वर्ग आजादी का मतवाला बनकर आत्मोत्सर्ग को तत्पार हो रहा था वहीं यहां की मातृशक्ति भी प्रेरणा के मार्ग प्रशस्त कर रही थी। माता के मन्दिरों में वीर रस से ओत प्रोत गीत मातृशक्ति का अवाह्न कर रहे थे-

जय हो मात भवानी मैया जय हो मात भवानी
महिसासुर को तुमने मारो, कहत पुरान की बानी
राक्षसरूपी इन गोरन की हो रई खूब मनमानी
अब मैया तुम फिर से प्रगटो, रहे न कोऊ निसानी
जय हो मात भवानी 8

हमारे पथ प्रदर्शक वेदों के अनुसार देश में अत्याचारी गोरों के खिलाफ एक वातावरण बन चुका था।

पिशंग भृष्टि मस्भृणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण।
संर्व रक्षो निबर्हय। 9

अर्थात् जिस प्रकार से शरीर के कण कण में व्याप्त पीड़दायी रक्त को चूसने वाले पीतवर्णी कीटाणुओं को सूर्य का प्रखर ताप नष्ट कर देता है उसी भांति निरन्तर दुख देने वाले तथा प्रजा को पीसने वालों को उसी प्रकार से आप दण्डित करें। उन दुष्ट जनों को मारें और उन्हें राष्ट्र से बहिष्कृत कर दें।

यहां के लोक जीवन ने अपनी सांस्कृतिक चेतना को जीवन में जीने का संकल्प ले लिया था। उसे ऋग्वेद का उक्त मंत्र पुकार रहा था और उसके कर्तव्यों का बोध कराते हुये दुष्ट अंग्रेजों के दमन हेतु प्रेरित कर रहा था। सारा देश क्रान्तिकारियों का कार्यस्थल बन गया था। रोटी और कमल की भाषा से देशवासी आगे बढ़ रहे थे एवं अंग्रेजों के विरुद्ध सशक्त अभियान का सूत्रपात हो रहा था।

सारे देश में धूम मची है रोटी और कमल की
अब तो बेरा आ गई भैय्या, कर लेओ अपने मन की
ना अब डरने ना अब झुकने, सीना ताने सनकी
जहां पकर में आवें पकरो, काट नाक देओ इनकी
धिधियायें पतयायें चाहे जितनो, सुनौ न एकऊ इनकी
गुपचुप गुपचुप करौ सफाई, तुम नासुकरे गोरन की। 10

अपनी संस्कृति को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करने वाले भारतीय जन अब अपने वेदों की पुकार को सुन रहे थे। उनकी आवाज को मानकर उस पर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे थे। और अपने मन में अपने पूर्वजों के निर्देशानुसार कृत्य करने का उद्धत हो रहे थे-

अग्निर्न शुष्कं वनमिंद्र हेती रक्षो निधच्यशनिर्न भीमा।
गम्भीरय ऋष्वया यो रूरोजाध्वानयद् दुरिता दम्भयच्च।। 11

अर्थात् जिस प्रकार से सूखे वनों को अग्नि जलाती है, भयंकर बिजली वृक्ष आदि को नष्ट कर देती है, उसी भांति आप दुष्ट जनों को जलाते रहिये, दुष्टाचारियों को दण्डित करते रहिये और दुष्ट पुरुषों को भस्म कर डालिये।

यहां के लोग भी दुष्ट अंग्रेजहों का हनन करने को मतवाले हो रहे थे। सन् 1857 की क्रान्ति में धूम मचाने वाली, अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाली खूब लड़ने वाली झांसी की मर्दानी रानी अपने किले के द्वारा अपनी प्रजा का उत्साहवर्धन पर रही थी। उनहें अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा लेने के लिये प्रेरित कर रही थी। यहां झांसी का किला अपने बुर्ज से अपनी स्वातन्त्रप्रियता का ध्वज लहरा रहा था। इसी किले के विषय में बुन्देलखण्ड में प्रचलित था-

सहर झांसी है जहां आला, किला बना बुन्देलखण्ड वाला
नगर के आसपास है कोट, तोप लगी किले में ओट
मारता तीन कोस तक चोट, प व्यापै दुस्मन की कोई चोट
लड़ी लक्ष्मी रानी की गोट, करी अंग्रेजन पै चोट
डिवीजन रेल का निराला, किला बना बुन्देलखण्ड वाला 12

झांसी की रानीके निराले किले ने अंग्रेजों का ललकारा। युद्ध के बादल छा गये। सब तरफ जोरों की लड़ाई की तैय्यारी होने लगी। झांसी के किले में भी तैय्यारी चल रही है-

गुरजन गुरजन तोपे चढ़ गई, ऊंची गुरज पै ठाड़ी सागरवाली रानी

मार मार तोपन के धुंआ उड़ा दये, बांकी लड़ी मरदानी खूबई झांसी रानी 13

रानी ने लड़ाई लड़ी। परन्तु जिनके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था, उन अंग्रेजों के सामने उसकी छोटी सेना ठहर नहीं सकी और रानी झांसी को अपना किला छोड़ने को विवश होना पड़ा। रानी के किला छोड़ते ही अंग्रेजी फौज द्वारा झांसी पर कब्जा कर लिया गया और पूरी झांसी में इन दुष्ट अंग्रेजों ने जो उत्पात मचाया, उसकी बानगी निम्न गीत में देखी जा सकती है-

कट गई झांसी वाली रानी, चौतरफा से आफत आ गई
झांसी भई बिरानी
घर घर पिड़न लगे अंगरेजवा, लूटत है रजधानी
झांसी भई बिरानी

बहुयें बेटी पकर लेत हैं, करत रहत मनमानी
झांसी भई बिरानी 14

सन् 1857 की क्रान्ति चल रही थी। क्रान्तिकारी पूरे खरोश के साथ अंग्रेजों से लोहा ले रहे थे। समूचे देश में अलग अलग स्थानों पर क्रान्तिकारी अपेने अपने हिसाब से अंग्रेजों के दांत खट्टे करने में लगे थे। इन क्रान्तिकारियों के पास सूचना प्रसारण तंत्र का अभाव था जिसके कारण एक निश्चित योजना के अन्तर्गत योजनाबद्ध तरीके से कोई कार्य नहीं हो पा रहा था। हमारे अपने क्रान्तिकारी अपनी भारतमाता की स्वतंत्रता हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग किये जा रहे थे और 90 वर्षों की अथक उपासना रंग लायी। स्वतंत्रता देवी प्रसन्न हुयीं ओर हम भारतवासी अंग्रेजों की दासता की बेड़ियों से मुक्त हो गये। सन् 1857 की क्रान्ति में जन जन की भागीदारी रही और इसी कारण लोकगीतों की भी क्रांति की ज्वाला को और भड़काने में अद्वितीय भूमिका रही।

पहले जो लोकगीत जन जन में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अ... जगाते थे, लोगों के हृदयों को झंकृत कर उनमें आजादी का ... भरते थे, उन्हें अपना बलिदान तक देने के लिये प्रेरित करते थे, ... लोकगीत आज आजादी के बाद अपने भाव कदल चुके हैं। एक ... अपनी सहेली से कहती है-

अब सारो पलट गओ राज,
देस में आजादी आई बहिना।
मिट गई कारी रात,
सबेरो हंसत दिखा रओ बहिना। 15

-जवाहर गंज, उरई 285...
मो. 0941515955...

लित निबंध)

अकथ कथा

– डॉ. शुभा श्रीवास्तव

जिस प्रकार भोजन पानीं और वायु किसी भी प्राणी को वित रखने के लिए परम आवश्यक तत्त्व हैं। उसी प्रकार मनुष्य जीवंत रखने के लिए विभिन्न कलाओं का जीवन में होना बहुत आवश्यक है। जिस प्रकार 'सांस लेने के लिए कोई प्रयास नहीं करना ड़ता, वह एक सहज और स्वाभाविक क्रिया है जो प्रत्येक प्राणी बना किसी ज्ञान के स्वाभाविक रूप से करता है। उसी प्रकार मनुष्य वभाविक दिखने के लिए विभिन्न कलाओं को किसी न किसी रूप में अपनाता ही है।

इस जगत में ऐसा एक भी प्राणी नहीं है जिसके पास स्वयं की कोई न हो, कोई विशेष गुण न हो। चाहे वह पशु-पक्षी अथवा जीव-जन्तु की श्रेणी से ही क्यों न आता हो। किसी के पास मधुर कण्ठ है तो किसी के पास सुन्दर घर बनाने की प्राकृत कला। स्वाभाविकता विशेष गुण होता है। मानव तो फिर भी अनुकरण से सीखता रहता है। पीढ़ियों पुराने गुण आगे की पीढ़ियों तक जाते रहते हैं। इसी तरह जीव जगत हो और भी विशेष होता है वे आश्चर्यचकित करने वाले गुणों से समृद्ध होते है।

मुझे अपने बचपन की कुछ स्मृतियाँ हो आई, जब हम बालक ही थे पिताजी, माताजी के साथ गांव जाते थे प्रत्येक छुट्टियों में। तब मुझे ग्रामीण अंचल की कुछ विशेषताएँ बहुत आकर्षित करतीं थीं। प्रत्येक घर की दीवारें, दरवाजों, चबूतरों और देहरियों पर बने हुए सुन्दर-सुन्दर चित्र। जो आनंद जो सुख उन सहज चित्रों को देखकर मिलता था वह आज के पक्के मकानों में लगे हुए संगमरमर, टाइल्स और प्लाटर ऑफ पेरिस से बने हुए अत्याधुनिक डिजाइन्स में भी नहीं मिलता। गाँव को घर कितना सुकून और आत्मिक सुख प्रदान करते थे। हर घर कुछ विशेष कहता हुआ सा लगता था। हर मौसम हर त्योहार और विभिन्न अवसरों की चित्रकारी कुछ विशेष भिन्नता लिए हुए होती थी। यही भिन्नता एक सहज नवीनता का अहसास कराती थी। होली पर पिचकारियों के चित्र दीवारों पर सजते थे, तो दीपावली पर दियां और ग्वालिनो के। बसंत पर सरस्वती मैया, गेंदा के फूल और पतंगों के चित्रों से दीवारें भर जातीं थीं। तो क्वांर में मामुलिया, सुअटा से अलग ही छटा बिखरी होती थी। प्रत्येक घर प्रत्येक मुहल्ला नाचता, गाता, सांस लेता दिखाई देता था। घर के आंगन में पान के पत्ते, चिड़ी, ईंट, आठकली को फूल और सुरेंती सजतों थीं तो दरवाजों पर स्वास्तिक ऊँ और शुभलाभ मंगलकामना करते हुए दिख जाते थे। दादियाँ, नानियाँ, बड़ी अम्मा, ताई, चाची, दीदियां। इस हुनर को सीखने की न तो कभी कोई क्लास चलती थी न कोई किसी से ट्यूशन लेने जाता था। जैसे बच्चे बोलना, चलना सीखते हैं उसी तरह विविध प्रकार की सजीव कलाएँ विरासत में सहत ज्ञान के रूप में प्रत्येक बिटिया सीख लेती थी। कैसे मोरनी और तोते को बनाना है। मोरनी की कलगी और तोते की कण्ठी बनानी है। मोरनी के सुन्दर पंख किस तरह बनेंगे और तोते की चोंच कैसे बनेगी कभी किसी बिटिया को हाथ पकड़कर नहीं सिखाना पड़ता था। जैसे रोटी का कौर मुंह तक पहुंच ही जाता है उसी तरह 'ढिंग' देकर लीपना सहज हा ही जाता था।

गाँव के प्रत्येक क्रिया कलाप में एक विशेष 'रिदम' विशेष कला होती थी जो अम्मा की जरा सी झिड़की से सीखती जाती थी। चूल्हे में कण्डा रखने की कला, कुँए से पानी खींचने की कला। कमर में और सर पर एक साथ घड़ा रखकर सावधानी पूर्वक चलने की कला कितना कलापूर्ण जीवन होता था। अब सोचो तो लगता है जैसे वह कोई अलग ही दुनियां होती थी। जो यंत्रवत जीवन आज हम सुख सुविधाओं के गुलाम बनकर जी रहे हैं, लगता है जैसे अपने ही घर में पराए हो गए हों। सुबह से रात तक भाग दौड़ की होड़ ने हमें मुस्कुराना भुला दिया।

उमंग और प्रफुल्लता से जीवन जीना, चुहलबाजी करना, आँखों में बतियाना, ग्रामीण परिवेश के प्रत्येक क्रिया कलाप सहज लयबद्धता देखने को मिलती थी। चाहे वह दिया बत्ती करने वाली ढिबरी हो वह भी एकदम रंगी-चुंगी लहरियादार किनारी और मिट्टी की उभरी हुई आकृति से सजी संवरी होती थी। चूल्हा जिस पर भोजन बनता था, जिसका काम सिर्फ तपना और जलना भर नहीं होता बल्कि घर को प्रत्येक प्राणी चाटे वे परिवार के सदस्य हों, गाय, बैल, बकरी या भैंस का दलिया पकना हो प्रत्येक प्राणी को उदर की आग को ठण्डा करने का काम करता है। उस चूल्हे को भी माटी की थपियों, स्वास्तिक और फूलपतियों की उभरी हुई आकृतियों से भर दिया जाता था। गुरसी या बरोसी 'जो ठण्ड के मौसम में प्रत्येक जन को जाड़े से बचाने के काम आती थी गर्मियों में कच्ची अभियां, प्यास, और आलू भटा भूनने के काम आती थी। वर्ष भर आने वाले तीज त्यौहारों पर हवन करने के काम भी आती थी वह भी अम्मा और दीदी का कलाकारी से बची नहीं रह पाती थी। कितना कलापूर्ण जीवन जीतीं थीं सब। गोबर से उपले बनाने के लिए दीवरों पर गोल गोल करके फेंका गया गोबर भी अपने आप में एक अनुपम कृति ही दीख पड़त था। उसके अलवा सूखे हुए उपलों को संग्रह करने के लिए जगह जगह लगाए गए 'बिठा' भी किसी तपस्वी की आकृति की तरह उकेरे हुए से मालूम होते थे जो सर्दी, गर्मी और

बरसात से विरक्त हुए से जान पड़ते थे। अभावों का अहसास इतने जल्दी कभी किसी के हृदय में आता ही नहीं था। जो भी साधन उपलब्ध हो जाएँ उसे मिल बांटकर उपयोग करके काम चल ही जाता था। यह भी एक प्रकार का हुनर ही था। गाँव का प्रत्येक घर भावनात्मक रूप से एक दूसरे से जुड़ा होता था। घर में माचिस खत्म हो गई तो यह कोई चिंता का विषय नहीं था, बगल वाली आजी के घर से आग तो मिल ही जाती है कोई फिक्र नहीं है। जब साप्ताहिक हाट लगेगी माचिस खरीद ली जाएगी।

गाँव में किसी के घर कोई आगंतुक आ गया तो क्या हुआ डरने की क्या बात, किसी के घर से दूध आ गया तो किसी ने मेहमान के लिए गु के रस से बनी हुई राब का हांडी भिजवादी। किसी के घर से सुन्दर कटावदार पावों वाली खटिया आ गई, तो किसी ने अपेन सबसे सुन्दर हाथों की कलाकारी से सजे संवरे डिजाइनदार बिछौनी, दरी और पल्ली ओढ़ने बिछाने को बिना मांगे पठवादी। ये जीवन या एकदम सरल सहज लाग-लपेट, छल-कपट से दूर।

और आज का आधुनिक जीवन अगर देखा जाए तो शहरो की प्रत्येक वस्तु मात्र व्यक्तिगत है। चाहे सुख हो या दुखं गाँवों में तो मैंने दु:ख मनाने और थोक के वक्त भी एक तरह कि रिदम महसूस की है वह भी एक तरह से कलाकारी ही थी। लोग अनायास ही समझ लेते थे किस घर में कोई अनहोनी हुई है। अगर किसी के घर से चकिया पीसने की आवाज न सुनाई दी हो, मट्ठा बिलोने का मधुर संगीत न सुनाई दिया हो, अथवा आंगन से ऊपर चूल्हे का धुँआ उठता न दिखा हो। बिना बताए ही सारे गाँव को पता चल जाता था जरूर कुछ तो हुआ है। बस फिर जिससे जो भी बन पड़ता था उस प्रकार अधिक सेअधिक सहायता करने का प्रयास होने लगता था। ज्यादा क्या कहें अगर गाँव में किसी परिवार में कोई मृत्यु हो जाती थी तो पूरे गाँव में गम का माहौल हो जाता था। और फिर जब महिलाएँ, बड़ी उम्र की दादियाँ एकत्र होकर जो रोना धुरन करतीं थीं, बीच बीच में मृतआत्मा की स्मृतियाँ कर कर के जो धीमी बातचीत होती थी वह भी एक लयबद्ध तरीके से चलती थी। लसपूर्ण था। कलापूर्ण था परिस्थिति कैसी भी हो। यह लय कला ग्रामीण स्त्रियों की सहज सीखने की प्रकृति के कारण ही

धीरे-धीरे हम बड़े होते गए बड़ा क्लास, बड़े सपने, जिम्मेदारियाँ, धीरे-धीरे पलायन होता गया। गाँव घर पीछे गए। आधुनिकता की होड़ के मकानों में तब्दील होते गए। मन हृदय सब कंक्रीट में बदल गया ये केवल मेरे या किसी एक घर की स्मृतियाँ नहीं बल्कि प्रत्येक घर और भारत के प्रत्येक की कहानी बनती चली गई। हम अपनी सहज ज्ञान वाली, जीन जीने की कला से दूर होते चले गए। आजकी आधुनिक सम जाने वाली जीवन शैली में हमें सांस भी किस तरह से लेनी है भी योगा संस्थानों में जाकर सीखना पड़ता है। जबकि दादी नानी समय में सुबह चार बजे से प्रत्येक घर में चकिया पीसेन से लेक परनी भरने, घर बुहारने और धान कूटने से ही सांसों के उतार चढ़ के प्राणायाम हो जाया करते थे। न तो हमें किस तरह से चल सीखना है इसकी फिक्र करनी होती थी। जब सर पर दो घड़े औ हाथों में बाल्टी अथवा सर पर गट्ठे का बोझ उठाए हुए मतालो औ सधी हुई चाल स्वत: ही आज कैटवॉक करने वाली युवतियों की चाल को फीकी करती हुई लगती थी। कितना कलापूर्ण जीवन हमारे जनमानस का था जो विश्व का मोभंग करने के लिए पर्याप्त था। समय परिवर्तनशील होता है। आज जब हम बहुत कुछ खो चुके हैं फिर भी सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से आज भी अपनी टूटती सांसों का जिन्दा रखने की कवायद कर ही रहे हैं कहते हैं न कि सहजता फिर सहजता होती है और हमें किसी न किसी प्रकार नकली और बनावटीपन से बाहर आकर अपने असली और शाश्वत रूप में कलाकारी के बीच लौटना ही होता है। और वापस लौटने की यह कला हमारी दादी नानियाँ हमें विरासत में सिखा ही जातीं हैं।

बंदा (उ.प्र.)
मो. 954250617

संचार साधनो से संत्रस्त बाल साहित्य

-डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी

बच्चे किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि होते है। वे उस देश का वर्तमान ही नहीं, भविष्य भी होते हैं उनसे ही राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र उन्नति एवं राष्ट्र समृद्धि की संभावना होती है। अत: आवष्यक है कि उज्जवल और समृद्ध भविष्य के आधार इस बाल समाज को संस्कार संपु बनाया जाये उनमें राष्ट्र प्रेम, सहयोग, सद्भाव, सेवा एवं मान सम्मान जैसे सुंदर गुणों का विकास किया जाय और यह तभी संभव है जब हम बच्चों के कोमल मन, असीमित कल्पनाओं और अपरिमित जिज्ञासाओं को सच्चे दिल से जानने तथा समझने की कोशिश करें। बाल मनोविज्ञान के समझते हुए उनके ही अनुरूप सरल, सहज एवं आनंदमयी भाषा में बाल साहित्य के सृजन को प्रश्रय दें तथा लोक में प्रचलित बालसाहित्य का संरक्षण संवर्धन एवं प्रचार प्रसार करें।

वर्तमान समय में संचार साधनों और इलेक्ट्रानिक उपकरणों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है लोक प्रचलित बालसाहित्य से अनजान आज का बच्चा कार्टून फिल्म, कम्प्यूटर गेम, विडियोगेम, मोबाइल गेम व कामिक्स आदि में सिमह कर रह गया है। कार्टून चौनल पर दिखाये जा रहे पात्रो के संवाद उसके आचार व्यवहार पर बहुत गहरा प्रभाव डालते है वह उनके अनुसार चलता है उनके मुस्कराने पर मुस्कराता है; खिलखिलाने पर खिलखिलाता है तथा उछलने पर उछल भी पड़ता है लेकिन बालमन को विस्मय विमुग्ध कर देने वाले ये समग्र कृत्य कमरे के भीतर ही होते है घर का आंगन आज सूना-सूना सा हो गया है बच्चों का अपने भाई बहिनों और संगी साथियों के साथ उन्मुक्त खिलखिलाना, हंसना, खेलना, रूठना और मनाना जैसे कहीं खो-सा गया हैं ऐसी स्थिति में अति आवश्यक है कि हम अपने वचचों को लोकप्रचलित बाल साहित्य से परिचित कराएँ उसमें निहित भाव को समझाये ताकि बच्चों का अपरपिक्व मस्तिष्क और कोमल मन प्रभावित हो उनमें सद्विचार और सद्भाव। पल्लवित हो जिससे वेहतर तरीके से उनका शारीरिक और मानसिक विकास हो।

बुन्देलखण्ड अंचल में वाल लोक साहित्य की एक समृद्धशाली परम्परा विद्यमान है। यहाँ के लोकसाहित्य सर्जकों ने बालमनोविज्ञान के अनुरूप अनेक ऐसे गीतों की रचना की है जो बाल जीवन की सरलता, सहजता, उन्मुकतता, चपलता, निर्मलता व निरछलता को तो ध्वनित करते की हैं उन्हें खेल-खेल में ही मानवीय मूल्यें, जीवन की जटिलताओं एवं प्रकृति के साथ साहचर्य भाव की सहज शिक्षा भी देते हैं। बुन्देली और उसकी प्रमुख उपयोगिता बनाफरी, लोधान्ती, भदावरी, तिरहारी, तोमरी, कुन्डरी, कोष्टी निभट्टा, जादौभाओ एवं खटोला आदि में बालसाहित्य की प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती है। जो प्राय: लोरी गीतों तथा खेलगीतों के रूप में प्राप्त होती है।

बुन्देलखण्ड में छोटे बच्चों को रिझाने, खिलाने एवं सुलाने के लिए गाये जाने वाले गीतों को लोरी कहते हैं। लोरी गीतों में एक विशिष्ट प्रकार की सम्मोहन शक्ति होती है। बालक चाहे कितना भी रुठा हो, मचल रहा हो अपनी दादी, नानी एवं माँ की मधुर वाणी में नि:सृत लोरी को सुन किलकारी भरेन लगता है या फिर सो जाता है। लोरी गते के बोल अत्यन्त सुहावने होते हैं बच्चे को बहलाने का प्रयास होता है एक लोरी गीत प्रस्तुत है इस गीत में माँ अपने रुठे हुये नटखट बाल कको मनाने, समझाने एवं रिझारे का प्रयत्न कर रही है। गीत के बोल दृष्टव्य हैं-

सोजा सोजा बारे वीर,
वीर की बलैयां लेहों जमना के तीर।
सोजा सोजा बारे वीर।
वर से बाधों पालना पीपर से बांधी डोर।
आउत जाउत झोका देऊँ कबहूँ न टूटे डोर।
ताती ताती खीर बनाई ऊ में डोरो घी।
दो कौर खाले मोरे भैया ठंडो पर जा जी। 1

माँ अथवा घर की अन्य बड़ी बूढ़ी महिलाएँ अक्सर अपने इठी बालकों को मनाने हेतु चाद्द, तारे, फूल एवं अन्यान्य प्राकृतिक उपादानों का उल्लेख कर गीत गाती हैं जिनमें अक्षर मात्रा एवं स्वर आदि का महत्व नहीं रहता वरन एक ही ध्येय प्रमुख होता है कि बालक का मनोरंजन हो, वह हँसे व खेले। घर आँगन उनकी किलकारियों से गूँज उठे। यथा-

झूल भैया झूल तोरी टोपी में फूल।
चम्पा तोरी कलियाँ चमेली तारे फूल।
जो लो आ गयो मूलिया को पूत।
भैया की छुड़ा लई झंगा झूल।
फट गई टोपी बगर गये फूल।
झूल भैया झूल तोरी टोपी में फूल। 2

प्राय: बच्चे सोने से पूर्व किसी न किसी बात को लेकर हठ करने लगते हैं समझाने, डराने एवं धमकाने आदिसे भी नहीं माते तब दादा-दादी, नाना-नानी एवं माता-पिता जमीन या पलंग पर लेटकर उसे अपने पैरो के तलवों पर बैठाकर लोरी गीत गाते हैं उनके ऐसा करने पर रुठा या रोता हुआ बालक हँसने खिल खिलाने लगता है। लोरी गीत दृष्टव्य है-

कौड़ी केरे कौड़ी के,
पाँच पसेरी के।
उड़ गये तीतुर बस गये मोर,
सरी डुकरियाँ लै गये चोर।
चोरन के घर खेती भई,
सरी डुकरियां मोटी भई।
मन मन पीसे मन मन खाय,
बड़े गुरू से जूझन जाय।
बड़े गुरू की छप्पन छुरी,
तासें काँपे मदनपुरी।
मदनपुरी के आए वीर,
कर में बाँधे सौ सौ तीर।
एक तीर मोय मारो तो,
दिल्ली जाय पुकारो तो।
दिल्ली के घर अंशा,
गैलन में संग दान-सा।
कारे हैं करमान से,
गोरे हैं गुरमान से।
राजा के कुँवरा आउत हैं,
न कोउ छींकियो न पादियो।
धूतू--धूतू--धूतू।। 3

साधारणत: देखा जाय तो यह लोरी गीत बालमनोविनोद हेतु रखा गया है लेकिन सूक्ष्मता से चिंतन मनन करने पर इसमें जिस व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है, वह अद्भुत है उसमें दर्शन का गूढ़तम रहस्य छिपा हुआ है। वस्तुत: मनुष्य देह पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पंचतत्वों (पाँच पसेरी) से निर्मित है। परन्तु नाशवान होने के कारण इसका मूल्य कौड़ी के बराबर भी नहीं है। मनुष्य जीवन में बाल्यावस्था, यौवनावस्था, एवं वृद्धावस्था तीन अवस्थाऐं मुख्य हैं जो परिवर्तन सूचक हैं। बाल अवस्था हँसते खेलते बीतती है। यौवनावस्था में प्रवेश करते ही मनुष्य का ज्ञान (तीतुर) उड़ जाता है वह सांसारिक आकर्षण में फँस जाता है फलत: उसके हृदय में भावुकता (मोर) का वास हो जाता है। वह चंचल मन के अधीन हो जाता है तब माया (सरी डुकरिया) के वशीभूत हो वह 'षट विकार' (चोर) से ग्रस्त हो जाता है और माया (सरी डुकरिया) ऐन्द्रिय सुख (खेती) को प्राप्त कर सशक्त (मोटी) हो जाती हैं। वे इतनी बलशाली हो जाती है कि ब्रहम (बड़े गुरु) से लड़ने को तत्पर हो उठती हैं। लेकिन ब्रहम (बड़े गुरु) की शक्ति (छपन छुरी) अपरिमित है उससे काम (मदनपुरी) भी भय खाता है लेकिन काम के सैनिक (वीर) तीव्र इच्छाओं के तीक्ष्ण शर चलाते है जिससे घायल मन परमात्मा के मूल निवास (दिल्ली) की ओर भागता है लेकि[न] वहाँ तभी मदद मिल पाती है जब दान आदि पुण्य कर्म उसके [साथ] हो। ईश्वर के यहाँ उसके पाप कर्म (कारे) और पुण्यकर्म (गो[रे]) खड़े रहते हैं। पुण्यादि कर्म के फलस्वरूप उसे ब्रहम (राजा) प्र[ाप्ति] के असीम आनंद (धूतू--धूतू--धूतू) की प्राप्ति होती है। [इस] परमानंद की अवस्था में किसी प्रकार की कोई बाधा या व्यव[धान] (छींकना पादना) बांछनीय नहीं है।

बुंदेली बोली में एक और बालगीत बालकों को रिझा[ने] दुलराने के लिए गाया जाता है जिसके स्थान भेद से कई प्रारू[प] होते हैं। सर्वाधिक प्रचलित ओर लोकमान्य गीत यहाँ प्रस्तुत है-

थाई थाई थप्पी
गैया ब्यानी बच्छी।
बच्छा भयो सेर,
नाउँ धराओ गनेश।
(शुरू की कोई ऊंगली पकड़ कर)
ज बाई की जा दादा की
जा जिज्जी की जा नन्ना की,
जा बूढ़े बच्चा की;
(हथेली पर घेरा बनाकर)
बीच में चंदा मोरो
येई में खाओ भेइ में पिओ,
येई में सब कछु करो।
डूंडा बैल पात की भई
चल मोरो डूंडा रात भई।
चलत पारिया टूटे सींग
बारा बरसे लादी हींग
चल मोरो डूंडा रात भई
गुलू--गुलू--गुलू। 4

इस बालगीत पर भी यदि गम्भीरता से विचार किया जाय तो इसमें भी लोक रचनाकार की गहन चिंतन शीलता मुखरित होती है। लोक कवि इस गीत के माहपम से कहना चाहता है कि प्रत्येक जीव का जन्म माता (गाय) से होता है। माता की कुक्षि से उत्पन्न इस जीव को एक सुन्दर नाम (गनेश) प्राप्त होता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है उसे सांसारिक संबंधो दादा, दादी, भाई-बहिन आदि का ज्ञान होने लगता है। सांसारिक संबंधों में बंधा जीवमाया के वशीभूत होता जाता है। इन्द्रियों के तुष्टिकरण में लगा वह असहाय (डूंडे बैल) हो जाता है और इस जीव (डूंडा बैल) को यह भान ही नहीं हो पाता कि उसके जीवन की अवसान बेला (रातभई) आ गई है। जीवन के उत्तरार्द्ध अर्थात वृद्धावस्था में उसकी इन्द्रियां अशक्त (टूटे सींग) हो

ती है। जीवन भर (बारो बरसें) सांसारिक सूखो के लिए भागदौड़ नादीहींग) करता रहता है, इस कारण ईश्वराधना के लिए समय नहीं निकाल पाता है। लोककवि परामर्श देता है कि अब मृत्यु ला (राज भई) आ गई है अत: अब उसे संसार से विरक्त हो खरोन्मुख हो, मुक्तिमार्ग की तलाश में जुट जाना चाहिए क्योंकि ही परमानंद (गुलू--गुलू--गुलू) की अवस्था है।

बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है उसकी समझ का विस्तार ता जाता है वह घर से बाहर अन्य बालकों के सम्पर्क में आता है नका एक समूह बनता है जो आपस में मिल जुल कर तरह-तरह के खेल खेलते है। ये खेल बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक विकास में तो सहायक होते ही है, उनमं आपसी प्रेम, सहयोग और सौहाद्र भी दा करते हैं बच्चों द्वारा खेत जाने वोल इन खेलों में गीतों का प्रयोग किया जाता है। खेल प्रमुख रूप से दो तरह से खेलें जाते हैं एक घर के भीतर और दूसरे घर के बाहर मैदान आदि में सामूहिक रूप से। बच्चों के जीवन में उल्लास तथा उमंग का संचार करने वाले ये खेल तथा खेलगीत वाल रंजन के साथ-साथ उन्हें बड़ी सहजता से व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान कर देते हैं। जैसे 'अ्टटा बिट्टा' खेलते समय गाया जाने वाला यह गीत खेल-खेल में ही बच्चे को ग्रामीण परिवेश की जानकारी, कृषि कार्य के उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री की भी जानकारी करा देता है। गीत प्रस्तुत है-

अट्टा बिट्टा,
मोर का चिट्टा।
करई गाजर,
मीठो मूरा।
एक चना की,
कैलह रोटी।
गेहूँ की बत्तीस,
जो गैया को खूंटा।
जो बच्छ्र की,
जो भैया की।
जो कक्का की
ढूंढ़ा बैल आत्त है,
कुत-कुत-कुत-। 5

इस गीत में कुत-कुत-कुत कहता हुआ खेल खिलाने वाला व्यक्ति बच्चे की गदेली पर अपनी अँगुली धीरे-धीरे चलाते हुये कांखरी तक ले जाता है। ऐसा करने पर बच्चे को गुदगुदी लगती है और वह हँसता खिलखिलाता है तथा प्रसन्न होता है। ऐसा ही एक और खेल बच्चों द्वारा खेला जाता है जिसमें कम से कम दो बच्चे होते हैं। खिलाड़ी बच्चे अपने दोनों हाथों की गदेलियों को क्रमश: जमीन पर पलट कर रखे हैं तथा खेत खिलाने वाला व्यक्ति क्रम से एक-एक बच्चे का कौंचा उठाता जाता है और गीत गाता है-

अटकन चटकन,
दही चटोकन,
बग फूले बगवारी के,
आवरे गावरे,
बाबा लाये सात कटोरी।
एक कटोरी फूटी,
बबा की टाँग टूटी।
ममा की बह रुठी
कौन बात पै रुठी।
मुंस कै बैठी,
कैसी बैठी
ठाई ठका। ठाई ठका
चिन्टी के चिन्टा। 6

गीत में प्रयुक्त शब्दावली हास्य एवं व्यंग्य से आपूरित है। 'बाबा की टांग टूटी' ठाई ठका ठाई उका एवं चिन्टी कै चिन्टा जैसी पंक्तियाँ मनोविनोद की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इस खेल से बच्चों में सामुहिकता की भावना, न्याय प्रियता एवं निर्णय लेने की सूझ बूझ जैसे गुणों का विकास होता है। इसी प्रकार समूह भावना का विकास करने वाला एक खेल पोसंपा नाम से बचचें द्वारा खेला जाता है इस खेल में बालक-बालिकाएँ दो-दो की जोड़ी बनाकर परस्पर आमने-सामे खड़े होकर हथेलियों पर थाप देते हुए हथेलियाँ मिलाते है तथा घेरे से चक्कर लगाते हुए कोई न कोई बारी-बारी से घेरे में फँसता है। इस खेल में बच्चों द्वारा जो गीत गाया जाता है वह अत्यन्त रोचक एवं हासपरिहास से भरा हुआ होता है। गीत इस प्रकार है-

पौसंपा भई पौसंपा,
चाय की पत्ती पौसंपा।
डाकुओं ने क्या किया,
ब्याल का ताला तोड़ दिया।
से रुपये की खड़ी चुराई,
अब तो जेल में फंसना होगा। 7

इस गीत का लक्ष्यार्थ यह है कि दूसरे की वस्तु (घड़ी चुराई) चुराना दण्डनीय अपराध है इसके लिए अपराधी को सजा (जेल में फंसना) भुगतनी पड़ती हैं गीत में व्यक्त यह भाव बच्चों में ईमानदारी सच्चाई एवं अस्तेय आदि सद्विचार पैदा करने में सहायक होता है। खेल-खेल में ही बच्चे यह जान लेते हैं कि दूसरे की वस्तु चुरा लेना बुरी बात है।

भारतीय संस्कृति का मूलाधार आश्रम व्यवस्था है। औसतन

मनुष्य की आयु 100 वर्ष आँकी गई है और उसे 25-25 वर्ष के अनुसार चार आश्रम में विभाजित किया गया है। वे आश्रम ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास हैं। मानव जीने में गृहस्थ आश्रम का विशिष्ट महत्व है। पुरुषार्थ चतुष्टम की प्राप्ति का साधन यही आश्रम माना गया है। इसी आश्रम में मनुष्य घर गृहस्थी बसाता है अपने एवं परिवार जनों के लिए सुखसाधन एकत्रित करता है तथा सदापरिवार की सुख समृद्धि की कामना करता है। बच्चे माता-पिता को जैसा कार्य व्यवहार करते देखते हैं, वैसा ही वे खेल खेलते हुए करते हैं। बुन्देलखण्ड में बच्चे प्रायः मिट्टी या रेत का घर बनाते हैं तथा घर गृहस्थी के लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित करते हैं बाजारा जाना, सामान लाना, भोजन पकाना, गुड़िया गुड्डा का ब्याह रचाना आदि कार्य बच्चे खेल खेलते हुए करते हैं। ऐसा करते हुए वे विभिन्न प्रकार के गीत भी गातें हैं। ये गीत अत्यन्त ही रोचक एंव भावों से भरे हुए होते है प्रकार के गीत भी गातें हैं। ये गीत अत्यन्त ही रोचक एंव भावों से भरे हुए होते है इनमें कोई न कोई विशिष्ट संदेश निहित होता है। एक गीत दृष्टव्य है जिसमें एक दूसरे को चिढ़ाने और हँसने-हँसाने का भाव निहित है-

कहानी-सी झूठी,
बतों-सी मीठी।
हरी हरी घास कौ बिसराम,
जाने सीताराम
शकर पारे की लगामं
ने घोड़ा घास खों खाय,
नें घास घोड़ा खो खाय।
एक हतौ खस खस कौ दानौ,
आठ बेर पीसो, नौ बेर छानो।
जे खें खाय,
मोरो पेट पिरानो। 8

इसी प्रकार बच्चों द्वारा खेल खेलते हुए गुड्डा गुडिया का ब्याह रचाया जाता है जिसमें बालक-बालिकाएँ दो पक्षों में बँट जाते हैं। वर पक्ष और कन्या पक्ष में बँहे ये बालक-बालिकाएँ विवाह के विविध रस्मां रिवाज निभाते हैं, हँसते खेलते और गाते हैं। इस खेल में बालिकाओं द्वारा एक हास-परिहास भरा गीत गाया जाता है-

बाबू लाल बाबू लाल
तेल की मिठाई।
सागर की गैल में कुतिया नचाई।
कुतियाँ मर गई,
कर लई लुगाई।
हल्कू हल्कू तीन चना,
मताई मलंगू बाप घिना।
नथू नथोले नग-नग पोले,
हुल्का सी तौंद चिलम के गोले।
पँचू पाँच रोटी खाय,
आधी हारे लै जाँय।
कौआ चोट खोंट खांय,
पंच लोट पोट जांय। 9

बालकों द्वारा भी एक गीत गाया जाता है जो इस प्र

अल्ल में गई,
दल्ल में गई।
दल्ल में से लाकड़ लाई,
लाकड मैंने डुक्कों दीनी,
डुक्को मोय खों मुचिया दीनी।
कुचिया मैंने कुमारा दीनी।
कुमारा मोय मटकी दीनी।
मटकी मैंने अहीरै दीनी।
अहीर मोय भैंस दीनी।
भैंस मैंने राजा दई।
राजा ने मोय रानी दई।
रानी मैंने बसोरे दई।
बसोर ने मोय ढुलकिा दई
बाज मोरी ढुतकिया टम्मक टूँ
रानी बदले में आई तू। 10

इस बालगीत में हास परिहास का भाव तो प्रमुख है है लेकिन यदि गीत का गूढ़ार्थ भी ग्रहण किया जाये तो इसमें सामाजिक समरसता का भाव भी निहित हैं। गीत में कुम्हार राजा, अहीर और बसोर आदि का जिक्र और क्रमशः सामग्री आदान-प्रदान करने का उल्लेख समन्वय संस्कृति का प्रतीक है।

भारत कृषि प्रधान देश है यहाँ प्रत्येक व्यक्ति वर्षाकाल आने पर इन्द्रदेव की आराधना करने लगता है। भारतके नन्हे मुन्ने ग्राम्य संस्कृति में पले बढ़े बच्चे भी इस तथ्य से भलीभाँति वाकिफ हैं। वे इस बात को जानते हैं कि घर परिवार की समृद्धि व खुशहाली कृषि पर निर्भर है और कृषि का उत्पादन वर्षा पर निर्भर है इसीलिए वह आसमान में घिर आये मेघों को देखकर गा उठता है-

बादर पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे।

अथवा

अल्लामेघ दे पानी दे गुड़धानी दे। 11

वर्षाऋतु में सावन का माह सर्वाधिक मनोरम हर्ष-उल्लास एवं आनंद से भरा होता है इस माह में बालक-बालिकाएँ मिलजुलकर

-तरह के खेल खेलते हैं सावन की रिमझिम फुहारों के साथ भरे पेड़ों की डाली पर झूले पड़ जाते है। मेंहदी रचे हाथों में चपेटा जाते है। बालकों के हाथों में गुल्ली डण्डा आ जाता है। चपेटा खेलते समय बालिकाओं के होठ सहज ही गुनगुनाने लगते हैं-

चार चपेटा ले लियो माई साहुन आये।
साहुन के दिन चार री माई साहुन आये।
एक चना दो देवलरी माई साहुन आये। 12

गीत की अंतिम पंक्तियाँ प्रतीकात्मक हैं इनमें एक बालिका के द्विपक्षीय जीवन का संकेत हे। जिस तरह चना एक होता है लेकिन देवल के रूप में वह दो भागों में बटँ जाता है, उसी प्रकार एक बालिका का जीवन भी दो हिस्सों में विभक्त होता है। एक विवाह से पूर्व का और दूसरा विवाह के बाद का जीवन। दो भागों में विभक्त बालिका का जीवन अनेक चुनौतियों से भरा होता है। उसका मातपक्ष जहाँ वह जन्मी पली एवं बढ़ी, वह घर जिसे अपना मानती थी एक पल में पराया हो जाता है और एक अपरिचित घर परिवार उसका अपना हो जाता है। अपनी व्यावहारिक निपुणता और समन्वयशीलता से वह नये लोगों को बीच तालमेल स्थापित करती है। तथा दोनों कुल की मान मर्यादा की रक्षा करती है।

बुंदेलखण्ड में बालिकाओं द्वारा आश्विनमास के कृष्णपक्ष में खेला, जाने वाला सामुहिक खेल मामुलिया सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस खेल में बालिकाएँ बेरी के काँटेदार झाड़ को लीती हैं और उसे एक लिपीपुती जगह में खोंसकर विभिन्न प्रकार के रंग बिरंगे पुष्पों से सजाती है। मामुलिया का विधि विधान के साथ पूजन अर्चन करते हुए बालिकाएँ एक भावगर्भित गीत गाती है। गीत के बोल इस प्रकार हैं-

चीकनी सामुतियो के चीकने पतौआ।
वरा तरै लागी अथइया,
कै वारी भौजी वरा तरै लांगी अथैया।
मीठी कचरिया के मीठे तजो बीजा मीठे ससुर जू के बोल।
कै वारी भौंजी मीठे ससुर जू के बोल,
करई कचरिया के करए जो बीजा करए सासुजू बोल।
कै वारी भौजी करए सासु जू के बोल। 13

गीत की इन पंक्तियों में भारतीय परिवारों में व्याप्त विसंगतिपूर्ण स्थिति का संकेत दिया गया है। बालिका का यह कथन की चिकनी मामुलिया के पत्ते चिकने होते हैं अर्थात एक बालिका जब वधु बनकर ससुराल जाती है तो उसका व्यवहार सास-ससुर के प्रति आदर सम्मान एवं खुशामद भरा होता है लेकिन उनका व्यवहार उसके प्रति समान नहीं होता है। बालिका कहती है कि हे भौजी! जैसे मीठी कचरिया के बीज मीठे होते है, उी तरह ससुर जी के बोल मीठे हो हैं, लेकिन जैसे कड़वी कचरिया की बीज कड़वे होते हैं वैसे ही सासु जी के बोल कड़वे होते हैं। एक नवपरिणिता वधु के लिए ससुराल के इस विषमता भरे वातावरण में रहना अत्यन्त दुःखद होता हे। सास के समय असमय बोले गये कटु वचन उसके उल्लास व उत्साह भरे हृदय को पल-पल आहत करते रहे हैं उसका हंसता खेलता जीवन करूणा से भर जाता है।

वस्तुत: बालिकाओं द्वारा खेला जाने वाला यह गीतायक खेल संकेतात्मक है। मामुलिया जीवन की क्षण भंगुरता का संकेत देती है। जीवन में सुख (मामुलिया में सजे फूल) और दुःख (बेरी का कूटीला झाड़) दोनों है। मामुलिया खेत के प्रतीकात्मक पक्ष को उद्घाटित करते हुए डॉ. के.एल. वर्मा 'बिन्दु' लिखते हैं- 'मामुलिया आत्मा की पिरतीक बनी दिखात है। ई की दसा बिल्कुल कन्मन घई रात, काम कै कन्या रुप सोऊ आत्मन घई पुनीत पावन होत है। कैबे को मतलब जौ आम कै मामुलिया अनुष्ठान कन्यन सें जुर-जुरु कै बिटिमन और आतमन की बिसिता दरसानें में खूबई सच्छम होत है।'

इसी प्रकार आश्विनमास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाला नौरता या सुअटा खेल है। यह एक अनुष्ठानिक खेल है जो नौ दिन चलता है। इस खेल को बालिकाएँ बड़े उत्साह से खेलती हैं उनके अन्तःकरण का हर्ष, उल्लास व आनन्द देखते ही बनता है। उनकी मनोभावनाएँ गीत के माध्यम से प्रकट होती हैं-

हिमाचल की कुँवरि लडाँपती, नारे सुअटा,
गौरा बाई न्योरा त्योरा नाँम।
काँय तोनइयौ बेटी नौ दिना नारे सुअटा,
दसरपे खों परब परै।
परब परै मैढ़ा लड़ै नारे सुअटा,
लड़ गये बंदिया भोर।
बंदिया भोर झड़ाझड़ी नारे सुअटा,
समद हिलौरे लेय।
सूरज की मइया जौ कहै नारे सुअटा,
मोरे सूरज कांखाँ जायँ।
ओड़े कारी कामरी नारे सुअटा,
उन बिन भोर न होय। 14

बुंदेली लोकांचल में मकरन्दो रानी का खेल भी बालक बालिकाओं का प्रिय खेल है। इस खेल में एक प्रतिभागी को मकरन्दो रानी बनाया जाता है, सभी खिलाड़ी उसको एक स्थान पर बैठा कर उसके सिर पर गदेली रखकर चक्कर लगाते हैं और गीत गाते हैं-

चढ़ी चढ़ी मकरन्दो रानी,
सेरक दूध पसेरक पानी।

कोरो करबा ठंडो पानी,
घम्मर घम्मर होय मथानी। 15

इसके अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में छुआ छुउअल, कबड्डी, गुलेल, गपई समुन्दर या इक्की दुक्की आदि अनेक खेल खेले जाते है। जिनका नामोल्लेख लोक संस्कृति के प्रखर अहयेता श्रीरामचरण ह्यारण मित्र ने अपनी इन पंक्तियों में किया है-

चंदा पौआ पत्थर कोरा, उर रोटी पथा की।
घर धूला सुअटा की, थाव करन बुी बु की।
अटकन चटकन दई चटोकन, खेलत मुसकावे की।
झूलादार मिचकियाँ लैलै कै, मलार गावै की।
डार गरै गलबइयां नदिया में, हेडा लेवे की।
छुआ छुअउअल धार पर करवे डोड़ा खेवे की।
रुठी गुंइमन मना लैन की हारी जितंबावे की।
किस्सा और कानियाँ संगें कैवे की क्वावै की। 16

इन सभी खलो के अपने गीत भी लोकाचंल में प्रचलित है। यथा-

छुआ छुउअत खेलगीत-
अब्बक दब्बक दायं दीन,
गोल चउवर पाय पीन।
रंग रुप राम रैया,
बुन्देलखण्ड पैया। 17

गुलेलगीत-
तुआ तुतकार गुलेल फटकार।
गुलेल गई दूर भेलसा लूट। 18

इक्की दूक्की खेल-
एक डगा दो डग तीन तितंगा,
सरिमा डोले सरक बूटैइमा।
शूरवीर से पाँच बुलाये हते,
डनपे बैठे लाल परेबा।
वे करै भगवान की सेवा,
हिन्नी हिन्नी बगरे तो।
साहब को मोड़ा गेरे तो,
बेडनी बुलाई ती।
तार पै नचाई ती,
चट्ट गुरियापट्ट। 19

समग्रता कहा जा सकता है कि बुन्देली लोकांचल में [illegible] साहित्य के रूप में प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती है, आवश्य[illegible] उसके संरक्षण एवं संवर्धन की है। सुधी मनीषियो, चिंतकों [illegible] अनुसंधायको का दायित्व है कि वे इस अमूल्य साहित्य को वि[illegible] होने से बचाने में पूर्ण मनोयोग से सहयोग दें ताकि हमारी [illegible] संस्कृति व लोक परम्पराओं को जीवित रखा सके। हम [illegible] बालक बालिकाओं को भी इनसे परिचित कराएँ जिससे उनमें [illegible] लोकप्रचलित खेलो के प्रति आकर्षण पैदा हो। तथा लोक[illegible] को सुनने सीखने की ललक जाग्रत हो। अन्यथा आधुनिकता [illegible] अंधा दौड़व इलैक्ट्रानि उपकरणों के मध्य हमारे नन्हें नन्हें [illegible] गोपालों की उन्मुक्त हँसी कहीं खो जायेगी।यंत्रों के मध्य रहते [illegible] यांत्रिकता उनके जीवन का अंग बन जायेगी। जिसका भयाव[illegible] परिणाम यह होगा कि बात सुलभ मन में प्रेम, सौहार्द, करु[illegible] सहयोग एवं बंधुत्व जैसे सात्विक भाव लुप्त हो जायेंगे। जो [illegible] सभी के लिए घातक होगा।

- श्रीकृपानिकेत आदर्श नगर
छतरपुर म.प्र.
मो. 9425189487

परम्परायें व कहावतें (लोक ज्योतिष की)

डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

बुन्देलखण्ड की संस्कृति की अपनी अलग विशेषतायें है। एक विस्तृत भू भाग है जिसमें उ.प्र. तथा म.प्र. के लगभग 21 ने मान गये है। प्रत्येक देश की प्रत्येक प्रान्त की भी संस्कृति ग-अलग होती है। संस्कृति जीवन जीने की अनिवार्य पद्धति संस्कृत से ही निवासी जुड़े रहते है। संस्कृति में परम्पराऐं, रीतिरिवाज, मर्यादायें, देवी देवता, खान पान, पहनरव, वेशभूषा, नेग तूर, धार्मिक सामाजिक क्रियाकलाप आदि समग्र बातों का योग ता है। लोक जीवन में अनेक बातों पर विचार करके जीना पड़ता । लोक ज्योतिष का संबंध पग-पग पर देखने को मिलता है। यह लोक ज्योतिष पूर्वजों ने अनुभव तथ्य हिन्दू धर्म ग्रन्थों पर आधारित । समाज में सर्वत्र प्रचलन में व्यवहृत होता है। पढ़े लिखे तथा अनपढ़ सभी लोक ज्योतिष में विश्वास रखते है। वृहत रुप में इसे लोक विश्वास भी कह सकते है। बुन्देलखण्ड में पग-पग पर लोक ज्योतिष किसी न किसी रूप में दिखाई दे जाता है। उदाहरण के लिये कुछ लोक ज्योतिष की बानगी प्रस्तुत है।

छींक विचार- यदि कहीं प्रस्थान कर रहे है और अगल-बगल में सामने या पीछे किसी ने छींक दिया तो इसे प्रायः अशुभ मानते है और तुरन्त रुक जाते है। छींक मनाने के उपरान्त चलते है।

गऊ की छींक- कहीं जाते समय यदि आपके समीप गाय छींक दे तो फिर प्रस्थान नहीं करना चाहिये क्योंकि गाय की छींक मरण प्रद कही गई है।

कुत्ते के द्वारा कान फड़फड़ाना- किसी जगह प्रस्थान करते समय कुत्ता कान फड़फड़ाये तो यह अशुभ माना गया है। लोग कान फड़फड़ाने पर प्रायः थूकते है और फिर अपना कार्य जारी रखते है।

शव का मिलना- प्रस्थान करने के समय या मार्ग में कोई शव मिले तो उसे शुभ सूचक माना गया है कि कार्य पूर्ण होगा।

काना व्यक्ति मिलना- विचार कर देखा जाये तो काने व्यक्ति भी परम पिता परमात्मा की संतान है और दोनों नेत्रों वाले भी है। परन्तु समाज में काने व्यक्ति का यात्रा में मिलना बुरा माना गया है। शास्त्रों में उल्लेख है कि यदि प्रस्थान के समय एक काना मिले तो उसी स्थान पर रुककर दो प्राणायाम करने से अशुभ की संभावना नहीं रहती। पुनः यदि दूसरा काना मिलें तो उसी स्थान पर रुककर चार प्राणायाम कर लेने से संभावित अनिष्ट का परिहार माना गया है। उल्लेख है कि यदि तीसरा काना भी पुनः मिलता है तो यात्रा स्थगित ही कर देना चाहिये तथा फिर गन्तव्य स्थान पर जाना ही नहीं चाहिये।

घड़ो का विचार- खाली घड़े घर पर रखें हो तो अपनी संस्कृति में बहुत अशुभ माने गये है और यदि घड़े भरने जा रहे है तो शुभ माने जाते है और यदि भरे खड़े आ रहे हों तो शुभ का ही अनुमान लगाया जाता है। प्रायः भरे घड़े देखकर लोग प्रसन्नता का अनुभव करते है। भरे घड़े में रूपय पैसा भी रूकवाकर डाल देते है।

काला सर्प मिलना- यात्रा के समय या यात्रा के दौरान मार्ग में यदि का सर्प मिलें तो अशुभ सूचक माना गया हैं।

गाय का दूध पिलाना- प्रस्थान के समय यदि गाय बछड़े को दूध पिलाती दिखें तो अनुभूत है कि कार्य बनता है और शुभ मानी गई हैं।

स्यार आदि का मिलना- यात्रा के समय मार्ग में स्यार रास्ता काट दें तो महान अशुभ सूचक माना गया है।

बिल्ली के द्वारा रास्ता काटना- किसी कार्यवश प्रस्थान करते समय या यात्रा के दौरान बिल्ली रास्ता काटे तो महान अशुभ सूचक होती है।

किन्नर मिलना- प्रस्थान के समय किन्नर का मिल जाना एक संयोग है। यदि किन्नर मिलें तो यह बड़ा अशुभ माना गया है।

कौआ का सिर पर बैठ जाना- लोक जीवन में कौआ का सिर पर बैठना अत्यन्त खराब मानते है। यहां तक देखा गया है कि जिसके सिर पर कागा बैठ जाता है उसे मृतकवत् मानते है और सगे संबंधियों को उसके मरने की खबर तक पहुंचा देते है। रिश्तेदार आने लगते हैं तो आशकुन का निराकरण मानकर खबर दे देते है कि कागा बैठ गया था सिर पर।

काक मैथुन देखना- वैसे लोक जीवन यत्र तत्र कौअे सभी जगह रहते व देखे जाते हैं परन्तु शायद ही कभी कौये को मैथुन करते किसी ने देखा हो। यदि संयोगवश कभी काक मैथुन कोई देख ले तो इसे अत्यधिक अनिष्ट सूचक बताया गया है।

बिल्ली व कुत्ते का रोना- यह जानवर वैसे कम रोते है और रात्रि पर में बिल्ली रोवे तो यह विचार करते हैं कोई अनिष्ट होगा और प्रायः समाज में होता भी है। कुछ लोग इन बातों को अंध विश्वास भी कहते है परन्तु इनमें सत्यता भी है।

इसी प्रकार कुत्ता रोये तो घर पडौस अनिष्ट की आशंका का विचार लगाते है और कुत्ते के रोने के दुष्परिणाम देखे भी गये हैं।

स्याउ (पागल स्यार) का बोलना- सामान्य रूप से ग्रामीण अंचलों में गांवों के आस पास सामान्य स्यारों का बोलना ठीक मानते है और पागल स्यार जिसे (स्याउ) कहते है, यदि गांवों में बोलता चिल्लाता सुन पड़े और उसकी बोली के बाद प्रायः कुत्ते भौंकते हैं,

न भौके तो यह भी बहुत अनिष्टकारी मानते है। वैसे 'होता तो ही है जो मंजूरे खुदा होता है' परन्तु शकुन अप शकुना या लोक ज्योतिष के रूप में बुन्देलखण्ड की संस्कृति में इनका अस्तित्व कायम हैं।

परमा को व मंगल को प्रस्थान न करे- प्रत्येक माह में शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष की तिथि परमा अवश्य आती है और यदि कहीं जाना हो तो इस तिथि न जाने की बात मना की गई है। इसी प्रकार मंगल के दिन को भी मानते है।

नौवे दिन घर वापिस न आवे- यदि कहीं बाहर यात्रा करना हो और वहां कुछ दिन रूकना पड़ें तो यह हिसाब लोकजीवन में अब भी लगाते है कि नौवें दिन घर पर लौटना न हो या तो नौ दिन के पूर्व या पश्चात् घर लौटना चाहिये। आज की विज्ञान व शिक्षा की दुनिया में ये बातें अस्तित्व खो रही हैं।

पौष माह में फेरे न करे- यदि किसी संबंधी की गमी हो जाती है तो पूस के महीने में उसके यहां नहीं जाने की परम्परा लोक संस्कृति में आज भी प्रचलित है। परन्तु यदि त्रयोदशी इस माह में हो तो मना नहीं है।

जेठ मास में जेष्ठ संतान का विवाह न करें- जेष्ठ माह में प्रथम पुत्र या पुत्री की शादी करना वर्जित बताते है। प्राय: देखने सुनने में यह लोक जीवन में चूम्न प्रसिद्ध है और लोग किसी हद तक मानते भी हैं।

सूखे डीलों पर ओले गिरना शुभ सूचक- जब खेतों की फसल कट जाय और खेत खाली पड़े होते है तब अधिकांश ग्रीष्म का अवकाश का समय होता है। उस समय यदि कहीं ओले पड़ जाते है तो वह अगली आने वाली साल व फसल के लिये शुभ माना जाता है।

नकुल दर्शन व नीलकंठ आदि के दर्शन- यात्रा के अवसर पर या सहज भले में नकुल (नेवला) जिसे लोक जीवन की भाषा में नौरा कहते हैं। इसके दर्शन शुभ सूचक होते हैं। इसी प्रकार दशहरा के दिन मछली व नीलकंठ तथा नागपंचमी को सांप के दर्शन माने गये हैं। बुन्देली संस्कृति इस प्रकार की पर्याप्त विचार धारओं से भरी पड़ी हैं।

घर के आगे पीछे कांटेदार पेड़ न लगायें- घर के सामने या घर के पीछे बेरी, बबूल या कांटेदार पेड़ लगाना अशुभ मानते है। परन्तु वर्तमान समय में मनुष्यों ने इन नियमों का मानना छोड़ दिया है। बबूल की लकड़ी घरों लगाने लगे हैं तथा पीपल की लकड़ी भी हिन्दू लोग जलाने लगे हैं, इसी प्रकार बांस का जलाना भी हिन्दू धर्म में मना है। बांस जलाने का संबंध अपने वंश की क्षति करने से जोड़ा गया है।

धूम केतु का उदय हानिकारक- जब कभी आकाश मण्डल में धूम केतु का उदय होता है तो जिन-जिन देशों में यह दिखाई देता है वहां के लोगों को ज्योतिषीय विचार से बहुत अशुभ सूचक माना गया है। इसे लोक भाषा में बारिया कहते हैं आकाश में तारा गणों का समूह झाडके ढंग का बनावट में होता है।

डेरे हिरन दायने जावें, लंका जीत राम घर आवें- यदि मृग बायीं तरफ से मार्ग में दाहिनी ओर जाते दिखाई देते हैं इनको महान शुभ सूचक मानते हैं।

पूस तुआ बैशाख दिया- यदि पूस के माह में वर्षा हो तो प्राय: प्रतिमाह पानी बरसता ही रहता है औरा फसल काटने के माह तक वैशाख तक वर्षा जब चाहे होती रहती हैं।

कहावतो में कृषि संबंधी लोक ज्योतिष

सावन चलै पुरवाई, तालन तिली बुआई- सावन का महीना वर्षा का माह होता है। पूर्वी हवा चलने से आसमान में मेघ छा जाते हैं। परन्तु सावन के माह में यदि पुरवाई हवा चलती है तो बादल तो निश्चित होते है परन्तु वह वर्षा नहीं करती। यह लोक जीवन में देखा भी गया हे और किसानों ने अनुभव किया है।

शुक्रवार खां बदरई होय, रंहे शनीचर छाय।

घाघ कहें सुन घाघनी, बिन बरषैं ना जाय।। यह कहावत दोहे के रूप में प्रचलित हैं आशह फलित ज्योतिष मय हैं। यदि शुक्रवार को बदली बनें व शनिवार तक भी छाई रहे तो अधिकांश में वह बरस कर ही जाती हैं। कृषि तथा पशुओं से संबंधिता बहुत सी कहावतें ज्योतिषीय भाव लिये हुये हैं।

तेतुर पंखी बदरई होय, विधवा काजर देय।

वे बरसें, वे घर करें, इनमें तनक न फेर।। यदि आसमान में तीतुर के पंखों के समान बदली छाई हो और यदि कोई विधवा काजल लगावें तो कवि का कथन है कि तीतुर पंखों बदली अवश्य बरसती हैं। तथा काजर लगाने वाली विधवा दूसरे पति का वरण करती है ऐसा लोक ज्योतिष का मत हैं।

शैल कटाकट बाजै, जब चना चकाचक गाजै- हल चलाते समय खेत में जब डोला (ढेला) उखड़ रहे हों तो बैलों के चलने में कुछ असुविधा होती है वे शैलों से टकराते हैं। भाव है कि ढेला-भले ही खेत में उखड़ रहे हों और उस खेत में चना बो दिये जाये वह चने की फसल बड़ी अनहोनी बनती है।

माघ पूष जो दखिना चले, तो सावन के लक्षन भले- यदि पूष माह व माघ के महीने में दक्षिणी हवा चलती है तो सावन के महीना में अच्छी वर्षा होना ज्योतिषीय हिसाब में बताया गया है।

अगनियां पूत भादरिया कूकर- यदि अगहन के महीने में कोई पुत्र होता है तो उसे सब प्रकार से उत्तम माना गया है तथा भाद

के महीने में पैदा हुआ कुत्ता अच्छा निकलता हैं।

पशु पक्षियों संबंधी लोक ज्योतिष

बैल लैन जात कत-वंदरां के ना देखौ दत- पत्नी पति से कह रही है कि हे कंट! टाप बैल लेने जा रहे हो। बंदरा बैल (भूरे सुनहरे रोम वाला) के दांत भी न देखना। अर्थात इसे न खरीदना।

बैल लेव कजरा-दाग देव अगरा- काजल लगी सी आंखों वाला बैल बहुत अच्छा चलने वाला माना गया है।

बैल देखौ चौरिया उड़ेल देव थैलिया- चौरिया अर्थात जिस बैल की पूछ सफेद हो उसे मनमाने पैसे देकर ले लेना श्रेयस्कर है क्योंकि वह चोखा माना गया हैं।

बंदरा बैल और जेठौ पूत-जोइबाजी कड़ै सपूत-बंदरा के रंग वाला/भूरे चमकीले वाला बैल तथा जेष्ठ पुत्र शायद ही कोई सर्वगुण वाला निकलता हैं। अधिकांश में उक्त खराब देखे जाते हैं।

नीला कंधा बेंगन खुरा-कभी न निकले कंता बुरा।
छोटें सींग उर छोटी पूछ-ऐसा बरघा लो वे पूंछ।
छोटा मुंह उर ऐंठा कान, यही बैल की है पहचान।।

यह लोक ज्योतिषीय अधिकांश कहावतें काव्यात्मक रूप लिये हैं। नीला कंधा बाल बैगनी रंग के खुरों वाला छोटे सींग व छोटी पूंछ वाला, छोटे मुंह और झूठे से कानों वाला बैल बहुत श्रेष्ठ बताया गया है।

सावन थोड़ी भादों शाम-भाव मांस में भेंस वियाय।
घाघ कहें जा सांसी बात-अपुन मेरे के धनी खां खात।।

गाय भादों के माह में बच्चा दें, घोड़ी सावन में बच्चा दें भैंस, गाय के महीने में बच्चा दें तो या तो वह स्वयं मर जाती हैं या उसका पालन हारा मृत्यु को प्राप्त करना बताया गया है।

सेत पूछ जो कारौ-हंड़िया वचौ न पारौ- कुत्ता प[...] के लिये इस ज्योतिपीय उक्ति में कहा गया है कि सेत रं[...] वाला तथा कारे मुंह वाला कुत्ता अत्यन्त खराव लक्षणों व[...] गया हैं।

हिल पेटिया लगे मुतान-जे काटें घोड़न के कान- [...] बनावट यदि हिरन कैसे पेट की हो तथा उसकी गुतान पेट से[...] हो तो वह बैल बड़ा शुभ और तेज दौड़ने वाला माना गया [...]

बैल न मिलै कैसू तौ बैल ल्याइयो- ऐसूं इस कहाव[...] शब्द का अर्थ स्त्री पति को अपने हाथ की दो उंगलियों [...] कहती हैं कि जिसके सींग आगे को हों अर्थात् बुन्देली भाषा[...] खौंड़ा कहते हैं अर्थात खौंड़ा बैल ल्याना यह कभी खरा[...] निकलता।

पंचकों में व गुरूवार मंगलवार को शुद्धता न करें- [...] परिवारों में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो नों [...] बनवाने की परम्परा है। उसका विचार भी है कि पंचक जब [...] तक तथा मंगल व गुरूवार को यह कर्म नहीं किये जाते है।

इस प्रकार बहुत सी बातें परम्परागत रूप से चली आ र[ही] जो अच्छी या बुरी मानी जाती हैं व समाज में उनका प्रचलन [...] भी है। आज के वैज्ञानिक युग में संस्कृति की उक्त बातें मिटती [...] रही है जो एक विचाणीय बात है।

निवास- ग्राम व पोस्ट स्याव[...]
मऊरानीपुर (झांसी)
मो. 979441911[...]

सुअटा/नौरता : एक विवेचना

–डॉ. एम.एल. प्रभाकर

नामकरण

1. सुअटा का शाब्दिक अर्थ सुन्दर भवन - सुत्र सुन्दर, अटा-भवन दूसरा अर्थ यह है – सुभ्र सुन्दर, आटात्र धान्य - परिश्रम से कमाया हुआ धान्य। जुझौति प्रदेश की कुमारियाह यह वर माँगती हैं कि हमें दाम्पत्य जीवन में सुन्दर भवन तथ सुधान्य प्राप्त हो। सुअटा का यह शाब्दिक अर्थ है।

(संदर्भ- जुझौति प्रदेश की प्रणम राजधानी गढ़ कुड़ार पृ. 12-)

लेखक रामरजन पाठक

2. बुंदेलखण्ड में किवदन्ती है कि प्राचीना काल में सुअटा नामक दैत्य कन्याओं का अपहरण किया करता था। उससे रक्षा हेतु कन्याओं ने दुर्गा की आराधना की। दुर्गा ने प्रसन्न होकर उस दैत्य का बध किया और तभी से बालिकाओं भी यह आराधना खेल के रूप में प्रथा बनकर चली आ रही है। क्वांर मास की नव दुर्गा प्रारंभ होने के प्रथम दिन से अंतिम नौवें दिन तक यह खेल खेला जाता है।

संदर्भ- बुंदेलखण्डी एवं बघेलखण्डी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन पृ.54

लेखिका- डॉ. श्रीमती विनोद तिवारी

3. सुअटा के लोकगीतों का भावार्थ समझने का प्रयास करते हैं तो जुझौति प्रदेश की सामयिक समस्या की तरफ मुड़ जाते है- सुअटा के लोकगीत में जुझौति प्रदेश की लड़कियों के लिए कुँअर लड़ आयतीं शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसका आशय यह है कि यह वुरे वैरी से लड़ कर आई है अर्थात् बैरी को पराजित कर दिया है। उन दिनों लड़की मर्दानी युद्ध की वर्दी पहनकर युद्ध में जाती थी। युद्ध की वर्दी लाल थी, लाल जोरौ, लाल रेजा यह पहन कर वीरांगनाओं ने युद्ध लड़ा था।

संदर्भ- जुझौति प्रदेश की राजधानी गढ़कुड़ार

लेखक- श्री रामरतन पाठक

4. स्वरूप- ग्राम/वस्ती के मध्य में किसी के मकान जिसका दरवाजा पूर्व दिशा में हो उनके चबूतरे पर सुअटा। नौरता निम्न प्रकार बनाया जाता है- सुअटा को हिमालय का रूप देकर उसमें सीढ़ियाँ लगाई जाती हैं। जिन सीढ़ियों पर खेलने वाली लड़कियाँ मिट्टी की अपनी-अपनी नौ गौरेया रखतीं हैं। तदुपरान्त सुअटा पर मिट्टी निर्मित गौरा रानी की कलापूर्ण मूर्ति स्थापित करके सुअटा के सम्मुख दुदी के रंग बिरंगे कलापूर्ण चौक पूरतीं हैं।

संदर्भ- बुंदेलखण्ड की संस्कृति और साहित्य श्री रामचरण हयारण मित्र पृ.316

5. ग्राम की समस्त कुँवारी लड़कियाँ किसी एक घर या दालान में नौरता बनाती हैं। मिट्टी के चौरे की विविध रंगों से रंगकर और हाथ पैर बनाकर दैत्य का आकाार देती है। दोनों ओर सूर्य चन्द्र तथा नीचे दूध कुण्ड बनाये जाते है।

संदर्भ- बुंदेलखण्डी एवं बघेलखण्डी लोक गीतों का तुलनात्मक अध्ययन

लेखिका- डॉ. श्रीमती विनोद तिवारी पृ. 54

शुभारम्भ- क्वाँर कृष्ण पक्ष एकादशी को नियत स्थान पर कुँवारी लड़कियाँ मिट्टी डालकर अमावश्या के पूर्ण की चबूतरा पर सुअटा निर्मित कर क्वाँर शुक्ल पक्ष की प्रथमा को ब्रह्ममुहूर्त में लिपाई-पुताई कर लेती है। इसके बाद विभिन्न रंग सफेद कत्थई लाल के चौक पूरती है तत्पश्चात् दूवी अक्षत, पुष्प लेकर सुअटा के सम्मुख खड़ी होकर दूध, जल द्वारा अर्घ देकर सामूहिक रूप से लोकगीत गाती है।

काँच डालना- हिमालय की कुँअर लड़ायतीं नारे सुआअा।
मोई गौरा बेटी नेवा तोवा नइयो बेटी नौ दिना नारे सुआटा-
दशय दिन करहु श्रृंगार।
चंदा, सूरज की कुँअर लड़ायती नारे सुआटा।
मोई चंदा बेटी, नेवा तोवा नइयो बेटी नौ दिना नारे सुअटा। दशय.
बाबुल जू की कुँअर लड़ायतीं नारे सुअटा।
मोई---बेटी नेवा तोवा नइो बेटी नौ दिना नारे सुअआ। दशय.

आरती- इसमें हिमांचल की पुत्री गिरिजा की स्तुति कर निम्न प्रकार आरती उतारती हुई गातीं हैं-

'झिलमिल हो झिलमिल तोरी आरती।
महादेवी तोरी आरती, को बहू नौनी।
चन्दा बहू नौनी, सूरज बहु नौनी।
नौने सलौने भौजी कन्त तुमाये, विरन हमाये। झिलमिल.
झिलमिल हो झिलमिल तोरी आरती, महादेव तोरी आरती।
को बहू नौनी, ... बहू नौनी, नौने सलौने भौजी कन्त तुमाये बिरन हमाये - झिलमिल.

इस प्रकार लड़कियाँ अपने-अपने भाइयों के नाम लेकर गातीं है। इसके बाद निम्न गीत गाती हैं-

'बम्मन, बम्मन जात के, जनेऊ पहने घात के, चाबुक चलाकै

घोड़ी के, घोड़ी ने मारी लात, जा गई गुजरात, गौरा रानी कहाँ चली, मउआ के पेड़े, मउआ सियरौ, पानी पियरौ, बेल की पाती ध्वजा नारियल, अकरे चावल' के बाद सभी लड़किया निम्न गीत गाती है-

'तिल के फूल तिली के दानें, चंदा उगें बड़े भिनुसारे ऊँगईन होय वारे चंदा। सव घर होय लिपना पुतना, माई घर होय चौका-वर्तन, बाबुल घर होय बड़े कसैया। तिल के फूल.

पनी की सेज न धरहौं, चकिया कौ डढ़ा न छीहौं, वासीकौ कौरन दैहों, ताती खौं लक-लक खैहौं। तिल के फूल-

बाढ़ी तौ सरगै जैहों, बैठी तौ गढ़-गढ़ जैहौं, आगी खौ अग्गासैं जै हों, पानी खौं पाताल जैहौं। तिल के फूल.

गहना चढ़ानर-

आरती के बाद गौरा रानी को गहने चढ़ाती हुई निम्न गीत गाती है-

'गौरा माँगै ऐंहदी, हम चढ़ावैं बैंहदी।
गौरा माँगै आले, हम चढ़ावै वाले।
गौरा माँगै ईल, हम चढ़ावै कील।
गौरा माँगै अरवा, हम चढ़ावै हरवा।
गौरा माँगै अंगना, हम चढ़ावै कंगना।
गौरा माँगै ऐटी, हम चढ़ावै पेटी।
गौरा माँगै आयल हम चढ़ावै पायल।
गौरा माँगै इछिया, हम चढ़ावै बिछिया।
गौरा माँगै आड़ी, हम चढ़ावै साड़ी।
गौरा माँगै आया, हम चढ़ावै साया।
गौरा माँगै इलाउज, हम चढ़ायै ब्लाउज।

गौरकी झाँई देखना- गहने चढ़ानो के बाद सभी लड़कियाँ अपनी गौर की झाँई दिखाकर गाती है। 'हमाई गौर की झाँई देखो, झाँई देखो, का पैरें देखो, माये वैदी देखो, नाक में नथनी देखो, मान में झुमका देखो। हमाई गौर....

गले में हरवा देखो, हाथ में कंगना देखो, कमर में पेटी देखो। हमाई....

पाँव में पायल देखो, पाँव में चप्पल देखो, पाँव में बिछिया देखो। हमाई...

अपनी गौर के बाद पराई गौर की झाँई निम्न गीत द्वारा दिखाती है-

'पराई गौर की झाँई देखो, झाँई देखो।

क पैरें देखो, नाम नकली देखो, कान बूची देखो, कम्मर लचकी देखो, हाथ टूटी देखो, पाँव टूटी देखो, नाली झारत देखो, घूरे लोटत देखो, गदा पै बैठी देखो, कंड़ा पै मौंगत देखो। पराई गौर.'

याचना- लड़कियाँ गौरा ने याचना इस प्रकार करती 'अपनौ सौ गहनौ गौरा हमको दियौ। अपनी ... हमको दियो। अपनी सी कील-हरवा हमको दियौ। अ... पायल बिछिया हमको दियौ।

कुर्रू- याचना के बाद कुर्रू गीत गाती है इस प्रकार-

कुर्रू-कुर्रू पानी दे, बेला ऊपर भात दे, भात ऊपर दूध ऊपर भैया दे। भइया ऊपर भतीजौ दे। वेला ऊपर इलायची पड़ी गुजरायती, साड़े गाड़े फूल चढ़ाय, गौरा रानी नाम रख... रानी कहाँ चलीं, मरूँआं के पेड़े, मरूंआं सियरौ, पानी पियरौ, ... नारियल, बेल की पाती, अकरे चावल, पाँचौ भइया ... तिलक लगावै चंदन के' उपरोक्त कुर्रू गीत प्रतिदिन लीपने के सूर्य के सामने लम्बी रास्ता लीपकार बनाती है। लिये रास्ते के ... पर एकत्रित होकर हाथ मिलाकर दूध द्वारा कुर्रू गीत गाती है। रास्ता प्रतिदिन बढ़ता जाता है।

घुल्ला छूटे- इसमें सभी लड़किया सुअटा को घेरकर ... हैं-

'सूरजमल के घुल्ला छूटे, चन्दामल के घुल्ला छूटे।
.... घुल्ला छूटे, ... के घुल्ला छूटे।

इस प्रकार लड़कियाँ अपने-अपने भाइयों के नाम लेकर ... गीत गाती है तत्पश्चात निम्न गीत गाती हैं-

'मेरी पिठी के सूरजमल भैया, चन्दामल भइया, जे दोई भैया भाई के जाये, बहन के खिलाये, लुआउन जै हैं, बुलाउन जैहैं। ... से घुड़ला कुंदाउत जैहैं, लाल छड़ी चमकाउत जैहैं, अंध कुआ उघराउत जैहैं, उजरे से वाग लगाउत जैहैं, वनको चिरैयां चुनाउत जैहैं बूढ़ी डुकरियाँ जुँआउत जैहैं। लुआ लै आहैं मोय। मोरी पिठी.'

को-को सी बिटियां दूरा बसत हैं, को-को से भइया लुआउन जैहैं, बुलाउन जैहै। गौरा सी बिटियाँ दूरा बसत है। सूरज से भइया चन्दा से भइया लुवावन जैहै, बुलावन जैहै। नीले घुड़ला कुंदावत जैहै..... क्वाँरी सी कन्या बियाउत जैहैं।

लुवा लै आहैं मोय। मोरी पिठी......

इस गीत में सभी लड़कियाँ अपने-अपने नाम लेती जाती है। बादमे भाइयों के नाम जोड़कर गाती जातीं हैं।

स्नान- सुबह गीत समाप्त होते ही सभी लड़कियाँ नहाने के लिए नदी, तालाब, कुँआ पर जाती है। अपनी कपड़ा किसी लड़के को देती हैं, इसे दूध पिलाकर पड़ा कहकर बुलाती है। अज्जाझारे की दातुन का नहाते समय अपनपे ऊपर से फैंक कर कहती हैं अज्जाझारी झारिये भोरी कार्यं उतारिये। बुडकी ले निम्न गीत गाती है।

स्नान करते समय का गीत

1. कौन बेटी ने रातो अन्हाल तो नारे सुआटा, तो रातो न्हैयो बेटी नौदिना नारे सुआटा सीता ने रातो अन्हावतो नारे आटा तो रातो अन्हैयो बेटी नौ दिनानारे सुआटा दसय दिने करो ंगार, दसय दसेरी भइया जीतियो नारे सुआटा...

(इस प्रकार गाते हुए अपने-अपने नाम जोड़ते हुई गातीं हैं।)

2. अंसट काटौ वेसट काटौ जे मउआ जिन काटौ लाल।

जे मउआ मोरे बाबुल लगाये उन तरैं खेलन जैबू लाल।

खेलत-खेलत घँघरा फट गव, फरिया फूट गई, कौन विरत र जैबूं लाल।

ओम से भइया नीरे बसंत हैं, उनई बिरन घर जैबू लाल।

उनई के घर में गुबरा करबूँ, पनिया भरबूँ, उनई के लाल झुलैबूँ लाल।

वेई जौ लैदें घघरा फरिया और गुजरायती चोली लाल।

(इस प्रकार अपने-अपने भाइयों के नाम जोड़ कर गाती हैं।)

स्नान करने के बाद देवी/शंकर भगवान के मंदिर जाकर जल अर्पित कर अपने घर वापस लौटतीं रास्ते में निम्न गीत बाती हैं-

'लहरा लेवै खैर बमूरा, झौंका लेत खजूरा लाल।
ऐसे बागीश से भइया, बैला लिवाउन जैबी लाल।
ढुर-ढुर पूँछें उनकी मइया, बैंदोली कां छोड़ी लाल।
हाथ लयें बारा अँगना में कूरा, झास करतन छोड़ी लाल।
लहरा लेवै खैर बमूरा, झौंका....'

(इस प्रकार अपने-अपने भाइयो का नाम जोड़ती हुई गातीं हैं।)

रात्रिकालीन गीत- सभी लड़कियाँ रात में सुआटा के चबूतरे पर जाकर दीपक जलाती हैं। ढोलक बजाकर निम्न गीत गाती हैं-

1. भाई जू ने डारे अँगना सूकने तारे सुआटा, चिरहई चुन-चुन जायँ।

भाई भगावैं चिरहई न भगै नारे सुआटा, बाबुल भगायें भग जायँ।

भाभी भगावैं चिरहई न भगैं नारे सुआटा, बीरन भगा यें भग जायँ।

काकी भगावै चिरहई त भगैं लारे सुआटा, काकुल भगायें भग जायँ।

2. लीपा पोती करै गुजरिया, चंदन चौका पारै लाल।

उन चौकन बैठे सूरज चंदा से भइया, पाग रिया लटकावै लाल।

उन पागन के फूला झरत हैं, बेड़लिया नचवा रये लाल।

कौना शहर की राय वेड़नियां, कौन शहर के दुम्मा लाल।

छतरपुर शहर की रराय वेड़लियां, दतिया शहर के दुम्मा लाल।

उन चौकन बैठे गुरुकुल से भइया, पागरिया लटकायें लाल।

उन पागल से फूलं झरत है, वेड़लियां नचवा रये लाल।

कौन शहर की राय वेड़लिया, कौन शहर के दुम्मा लाल।

सागर शहर की राय वेड़लिया, पन्ना शहर के दुम्मा लाल।।

(इस प्रकार अपने-अपने भाइयों के नाम जोड़कर गाती हैं।)

3. कौना के घर पै छिटक जुँदइया, चलौ चकोटन खेलिये लाल।

चंदा सूरज के घर पै छिटक जुँदइया, चलौ चकोटल खेलिये लाल।

परमार भइया के घर पै छिटक जुँदइया ,, ,,
राजा भइया के घर पै छिटक जुँदइया ,, ,,
कौशल भइया के घर पै छिटक जुँदइया ,, ,,

(सभी लड़कियाँ अपने-अपने भाइयों के नाम क्रमशः जोड़कर गातीं हैं)

रात्रिकालीन खेल- गीतों के पश्चात् सभी लड़कियाँ निम्न खेल खेलती हैं।

1. नौनियाँ रे नौनियाँ खटा मिठौनियाँ- इसमें दो लड़कियाँ आमने सामने खड़ी होकर एक दूसरे की दौनों हाथों की अंगुलियों को मोड़कर आपस में फँसा लेती हैं, फिर परस्पर गोल चक्र में घूमती हैं।

2. को टोरैं मोई डँगा सिलाई- इसमें दो लड़कियाँ एक दूसरे का दायाँ-बायाँ हाथ कस कर पकड़कर चक्कर काटती हैं और कहती हैं कि 'को होरैं मोई डँगा सिलोई'। अन्य लड़कियाँ क्रमशः एक-एक करके उनके बँधे हाथों पर पूरा वजन देकर तुल (टँग) जाती हैं और उनके हाथों को अलग-अलग करने की कोशिश करती हैं।

3. घम्माँ छइयाँ- इसमें कुछ लड़कियाँ गोल चक्कर में खड़ी हो जाती है फिर किसी एक लड़की से क्रमशः यह कथन करती हैं-

'अकड़ बकड़ वम्बे वो, अस्सी नब्बें, पूरे सौ, सौ में लागा धागा, चोर निकल कर भागा। राजा की बेटी ऐसी हती, फूलों की मार पड़त हती, रोवे सो मोती झरे, उनके हँस तन फूल झरे।' शुरू करते जिस लड़की पर अंतिम शब्द पड़ता है वह निकल जाती है अंत में जो लड़की सबसे बाद में बचती है उसी पर धाई मानी जाती है फिर दूसरी लड़की उस धाई वाली लड़की के दौनों हाथ पकड़कर निम्न कथन करती है-

'ऊपर क्या सोन चिरइया, नीचे क्या धरती भइया, हाथ में क्या दूध का वेला, मुँह में क्या पान का बीरा, छइयाँ लैकै घम्माँ' -

उत्तर में वह घम्माँ या छइयाँ माँगती है। माँगने वाले स्थान पर आने वाली लड़की को छूती है। जिस पर धाई पड़ती है उसके दोनो हाथ पकड़कर उपरोक्त कथन की पुरावृत्ति की जाती है, इस प्रकार खेल का तारतम्य चलता रहता है।

इस प्रकार इन छोटे-छोटे खेलों के साथ-साथ लड़की के बचपन से लेकर उसके ससुराल में जोन तक के खेल खेले जाते हैं। बच्ची जब छोटी होती है तो खेलने जाती है तो उसकी माँ संबोधित करती है-

'खेल लो बेटी भोरी खेल लो नारे सुआटा भाई बाबुल के राज।

जब दूर जइयो बेटी सासरे नारेसुआटा, सासन खेलन देय।

रात मिसाबे पीसनो नारे सुआटा, दिवस गोबर की हेल।।'

(बेटी कुछ स्थानी हो जाती है तो बाबुल से कहती है-)

बेटी- बाबुल दूर जुनरिया ना बइयो, कौना रखावन जाय।

बाबुल- कै बेटी तुमाई हमारैं लाड़ली सो तुमई रखावन जाव।

बेटी- कै बाबुल किनको लिखे जे घर उर अँगना किमै लिखे परदेश।

बाबुल- कै बेटी वीरन लिखे जे घर उर आँगना, तुमे लिखे परदेश।

बेटी- कै बाबुल काटौ कुरइयाँ डारौ भढ़इया भाभी रखावन जाय।

बेटी जब शादी लायक हो जाती है तो माता पिता को उसके पीले हाथ करने की चिन्ता सताती है जिसका समाधान निम्न खेल के रूप में होता है-

बरा-बरी कौ ब्याव

इस खेल में लड़कियाँ दो समूह में बँट जाती है जिसमें एक समूह कन्या पक्ष का एवं दूसरा समूह वर पक्ष का होता हैं सर्वप्रथम कन्या पक्ष से वर ढूँढ़ने का प्रयास निम्न प्रकार है-

कन्या पक्ष- आय बरी मैं, जाय बरी मैं, सेरक नौन चबाय भरी मैं, हाँत की लठिया टोर भरी मैं, पाँव पंनइयाँ टोर भरी मैं, काय बाई तुमाय 'बरा' कित्ती बढ़ौ हो गओ।

वर पक्ष- बाई-बाई ओ-हमाय 'बरा' अबै गौड़न में खेल रओ।

वर पक्ष- आय बरी मै, जाय बरी मैं, सेरक नौन चबाय भरी मैं हाँत की लठिया टोर भरी मैं, पाँव पनइयाँ टोर भरी मैं।

काय बाई - तुमाई बरी कित्ती बड़ी हो गई।

कन्या पक्ष- अरी ओ बाई - हमाई बरी तौ अबै बोलई नई पाउत, घुटइयत फिरत।

(इस प्रकार धीरे-धीरे बरा-बरी बड़े हो जाते हैं पक्ष गरीबी के कारण असमर्थता प्रकट करता है-)

कन्या पक्ष- हमाये घर में तेल जौ नइयां, नौन जौ न[illegible] रचैं बरी कौ बियाव।

वर पक्ष- तुमाये घर में तेल जौ नइयां, नौन जौ नइयां, लैलै जाव कै समदिन रचै बरी कौ बियाव।

(इस प्रकार से वर पक्ष हर चीज देने को तैयार हो जा[illegible] कन्या पक्ष अपनी माँग वर पक्ष के समक्ष निम्न प्रकार रखता

कन्या पक्ष- अपनी बरी खौं बहीं पठै हौं, जहाँ राह[illegible] दरबार मिलै, जहाँ मिलै बैंदिन के जोड़ा।

वर पक्ष- सबरे बैंदिन पुर हम फिर आये, बरा घर आये धर आये, कहुँ न मिले बैंदिन के जोड़ा।

(इस वार्तालाप के माध्यम से कन्या पक्ष सभी आभूषण[illegible] वर पक्ष से माँगता हैं उसके प्रत्युत्तर में वर पक्ष अपना मत [illegible] समाधान करता जाता है। अन्त में कन्या पक्ष शादी के लिए तैयार[illegible] जाता है। विभिन्न गीतों के माध्यम से सभी रस्में नेगाचार स[illegible] बराबरी का विवाह हो जाता है। बेटी ससुराल जाने के पहले मा[illegible] कुछ पूँछ्ती है इसे बुंदेलखण्ड में झुलमा कहते है।

झुलमा

इस खेल में मातृ पक्ष की कन्यायें ऊँचे स्थान पर बैठ जाती[illegible] तथा कन्यायें नीचे खड़ी होकर मातृ पक्ष से शिक्षा रूप में प्रश्न नि[illegible] प्रकार करती हैं-

कन्या- बाई-बाई री झुलमा कैसे कें खेलौं।

बाई-बाई री ससुरा खौं रोटी कैसे कें वरसौं।

माता- बाई-बाई री ससुरा खौं घुँघटा दै परसौं।

कन्या- बाई-बाई री जेठा खौं रोटी कैसे कें परसौं।

माता- बाई-बाई री जेठा खौं घूँघट दै परसौं।

कन्या- बाई-बाई री देवरा खौं रोटी कैसे कें परसौं।

माता- बाई-बाई री देवरा खौं इज्जत दै परसौं।

(ससुराल जाने से पहले लड़की चुनरी रंगवाने के लिए मचलती है जिसमं उसका नैहर प्रेम अभिव्यक्त होता है- देखिए-)

'ऊँची डगर की पीपरी नारे सुआटा, जिन तरैं लगे हैं बाजार।

बिरझीं है गौरा बेटी बाबुल सें नारे सुआटा, राजा बाबुल चुंदरी रंगाव।

ढिक-ढिक लिखियो मोरौ मायकौ नारे सुआटा।

अंचरन भाई के बोल।

झँझधर लिखियो मोरे बीरना नारे सुआटा।

बाबुल पौर दुआर।।

गइया-बछिया का खेल

इस खेल में खेलने वाली समस्त लड़कियाँ एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल चक्र बनाकर खड़ी हो जाती है। इसके बाद दो योग्य लड़कियाँ एक दूसरे के दोनों हाथों को पकड़कर खड़ी हो जाती हैं फिर दोनों परस्पर तालियाँ बजाती हुई प्रत्येक लड़की के सामने खड़ी होकर कहती है-

'बैठो-बैठो मोई गौंहअन की रास मोरैं तोरै का घैरास, घैरा है घेराई सैं, हारी-हारी पोत सैं, पियारे लढ़ारे सैं भइया के दरवाजे सैं भौजी के सिंगारे सैं। भइया की पगड़ी सैं, भौजी के अंचरा सैं।'

इस प्रकार से कहती हुई दोनों लड़कियाँ हाथ बजाती हुई सभी लड़कियों के पास जाकर केवल अनाज जैसे गौहंअन की जगह चनन, जुनई, जवन, फिकार, कोदन इत्यादि का नाम बदलकर बैठा देती है। इसके पश्चात सभी को निम्न कथन कर खड़ा करती है-

'उठो-उठो मोई बिर्रा की रास, मो सैं तो सैं का घैरास, घैरा है घेराई सैं, हारी-हारी पोत सैं, पिआरे लढ़ारे सैं भइया के दरवाजे सैं, भौजी के सिंगारे सैं।'

यह रूपक केवल सास बहू के वार्तालाप के माध्यम से अयोग्य बहू को योग्य बनाया जाता है। इन्हीं में से एक लड़की बहू बनती है दूसरी बहू बनती है। अन्य लड़कियां गइयां बछियां बनती है। सास अपनी बहू को गायों की गोसली, दूध दुहना, मठा भाना, आदि सिखाती है। बहू बेचारी परेशान रहती है। काम न करने से बहाना बाती है। अन्त में बहू को मठा बेचने भेजती है-

बहू- (सिर पर मठा की मटकी रख गाँव में टेर लगाती है-
)

'घर में सास लटी, घर में ननद लटी, जिन सैं नई मोई तनक पटी'- बाई-बाई री मठा लै लो।

ग्राम-मालिन- अरी भिण्डू तोई सास तौ कतई कै तै मठा मौंठत में दई खात। अब जौ जूँठौ मठा बेचवे लियाई, भग जा तोय मठा कोऊ नई लै सकत।

बहू- बिना उत्तर दिये दूसरे घर जाकर कहती है-

'घर में सास लटी घर में ननद लटी, बारे है मोये
अबै पती, बाई-बाई री मठा लै लो।।

सेठानी- मइला भर सै तौ सुपरी नइयां तोय उन्नत में चीलर उर मूँड़ में जुआँ किल बिला रये। तोप मठा लैकै काठयै बीमार हौनें का।

इस प्रकार बहू पूरे ग्राम में चक्कर लगाकर वापस घर आती है तो 'सास भी कभी बहू थी' की बातें याद कर उसे नाना प्रकार से आतंकित/प्रताड़ित करती है। बहू विलाप करती हुई भगवान को पुकारती है। उसी समय उसका भाई उसे लिवाने हेतु आता है तो वह भाई से विश्राम करने का आग्रह करती है-

'चन्दा सूरज दोउ भइया ठाढ़े नारे सुआटा,
पकड़े लौंग की डार।
लीला जौ बाँदी भइया लौंग सैं नारे सुआटा,
घरियक लो विश्राम।।
(भाई स्नेह पूर्वक कहता है-)
हम कैसैं बिलमायें हो नारे सुआटा,
जिनकी बहन परदेश।
घौंसैं बिलमावें मोर बाबुला नारे सुआटा।
जिन बेटी दई परदेश।।

इस तरह से दिन और रात के सुआटा के गीत और खेल अंतिम चरण में पहुँचता है।

सारे गुइयां हापूँ

अष्टमी के दिन सभी लड़कियाँ व्रत रखती है। सुबह से प्रतिदिन के कार्य एवं गीत गाती हैं। रात्रि में सभी लड़कियाँ अपने-अपने घर से कौंई (उबले हुए चना/गेहूँ) लेकर चबूतरे पर आकर गौर पूजन कर के कौंई का प्रसाद चढ़ाकर साथ बैठकर खातीं हुई कहती है-

लड़कियां- (एक स्वर में)- मोई गौर कौ पेट पिरातौं सारे गुइां हापूँ।

लड़कियां- (एक स्वर में)- हमाई गौर कैं लरका भव सारे गुइयां हापूँ।।

(इसके बाद किसी मुहल्ला का नाम लेकर-)

लड़कियां- उनकी गौर कैं कनवा लटका भव-सारे गुइयां हापूँ।।

इस प्रकार से दूसरे की गौर की आलोचना एवं स्वयं की गौर की प्रशंसा करतीं हुई कौंई खाती हैं। इसके बाद अगले कार्यक्रम की तैयारी करती है।

झिरिया/ढिड़या

दुर्गाष्टमी के दिन सभी लड़कियां एक घड़ा लेकर उसमें हँसिया वगैरह से छोटे-छोटे कई छेद करती हैं। रात्रि में इसी में एक जलता हुआ दीपक रखकर घड़े के मुंह पर ढक्कन पर एक जलता हुआ दीपक (चौमुखी) रखती हैं। एक लड़की इस सजे हुए घड़े को अपने सिर पर रखती है, अन्य लड़कियां उसके चारों तरफ साथ-साथ चलती है। ग्राम के प्रत्येक घट के दरवाजे पर जाकर के निम्न गीत गाती हैं-

गीत

पूँछ्त-पूँछ्त आये हैं नारे सुआटा, कौन हिमांचल तोरी पौंर।
बड़ी अटारी बड़े दवायरि नारे सुआटा, बड़े तुमारे नाव।।
पौंरन के सो गये पौंरिया नारे सुआटा, खिरकिन के कोटवार।।
काये की कइये तोरी आँकड़ी नारे सुआटा, कामे के वजर किवार।
लोहे की कइये तोरी आँकड़ी नारे सुआटा, चंदन के वजर किवार।।
कै दिन खोलें तोरी आँकड़ी नारे सुआटा, कै दिन वजर किवार।
नौ दिन खोलौं तोरी आँकड़ी नारे सुआटा, दस दिन वजर किवार।।
निकरौं दुलइया रानी वायरें नारे सुआटा, बिहियन अक्षत देव।
कैसे कै निकरौं बेटी वायरें नारे सुआटा, उलिया झडूले पूत।।
पूतन पारौ भौजी पालना नारे सुआटा, बिटियन अक्षत देव।
औनन कौनन भौजी जिन फिरौ नारे सुआटा, डारौ कुठीलन हाथ।
तुम जिन जानौं बिटियां माँगती नारे सुआटा, घर-घर देत असीष।
ऐसी हॉंत गपाइयौ नारे सुआटा, आवै पसेरी दो चार।
भर कोपर रानी लै चली नारे सुआटा, बिटियन द
जितने अक्षत भौजी तुम दये जारे सुआटा, इतने
पूत।
दूदन पूतन घर भरै नारे सुआटा, बउअन भरै चित
गज मुतियन के झूमका नारे सुआटा, लट कें पौर
पूँछ्त-पूँछ्त आये हैं नारे सुआटा, कौन.....तोरी पौ

झिरिया गीत गाती हुई लड़कियां गाँव के प्रत्येक द कर भाइयों का अलग-अलग नाम लेकन उक्त गीत की करती है। पूरे ग्राम से भेंट स्वरूप जो कुछ अनाज वगैरह/पैस है। सभी आपस में बाँटती हैं अथवा सामूहिक प्रसाद लेक हैं।

सुआटा (सुआरे) नौ दिन-रात खेलेन के कारण नौरता कहा गया लड़की की शादी होती है। वह अंतिम (लौरता) खेलकर विधिवल पूजन समापन करती है जिसे नौरता उजरना ...... जाता है।

पूर्व प्राचार्य (उच्च शि
प्रभाकर - धाम, पृ
मो. 998194

वृंदावन भई चरखारी....

– डॉ. राहुल मिश्र

बुंदेलखंड की पहचान चंबल, नर्मदा, केन, धसान, बेतवा आदि विविध नदियाँ और इनके साथ प्रवाहित अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों-मात्र से नहीं है। बुंदेलखंड की एक पहचान यहाँ की धार्मिक मान्यताओं की विविधता से भी गढ़ी जाती है। बुंदेले-चंदेले शासकों की कुलदेवी, आद्यशक्ति हैं, तो दूसरी ओर समरांगण में अपने औहर दिखाती मातृदेवियाँ हैं। शक्ति के उपासक बुंदेलखंडियो की शिव में भी गहरी आस्था है। चित्रकूट के मत्तगयेंद्रनाथ स्वामी के दर्शन के लिए हर मास हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण एकत्रित हो जाते हैं। बुंदेलखंड के दो तीर्थ- चित्रकूट और ओरछा की बात ही निराली है। एक जगह वनवासी राम हैं, तो दूसरी जगह राम राजा के रूप में विराजते हैं। अपनी प्रजा पर शासन करते हैं। प्रतिदिन उनका दरबार विधिवत् राजसी विधान के साथ लगता है। जब चित्रकूट में राम, लक्ष्मण, सीता का वनवासी रूप में आगमन होता ह, तो रास्ते में पड़ने वाले गाँवों की महिलाएँ वनवासी वेश धीरे राजकुमारों से हँसी-ठिठोली भी करता हैं, और राजा दशरथ पर रोष को रामराज्य का रहवासी मानता है। बुंदेलखंड के लोकदेवताओं में दिमान हरदौल बड़ी आस्था से पूजे जाते हैं। गाँव-गाँव म हरदौल चौंतरा बने हैं, जो पारिवारिक संबंधों की मर्यादा की सीख देते हैं। रहेलिया (महोबा) का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर बुंदेलखंड में आदित्योपासना का गान करता है।

ब्रज क्षेत्र जिस तरह लीलाधारी कृष्ण कन्हैया की भक्ति-उपासना के लिए जाना जाता है, जैसे अवध श्रीराम का है, जैसे ब्रज श्रीकृष्ण का है, वैसी एकरसता बुंदेलखंड में नहीं है। यहाँ विविधता है। शैव, शाक्त, वैष्णव, सूर्य, गणेश की उपासना का यह समग्र क्षेत्र धनी रहा है। वर्तमान में भी इस परंपरा को देखा जा सकता है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में भी बुंदेलखंड के लोगों की धार्मिक आस्था का बड़ा योगदान रहा है। एक बहुत प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ है- पारीक्षत कौ कटक। इस ग्रंथ की निम्न पंक्तियाँ यहाँ उल्लेखनीय हैं-

पंती प्रबल पहारं के, सब राजन रिसताज।
जाहिर जंबुद्वीप में, पारीक्षत महाराज।।
बुड़वा मंगल कीन्ह, श्री रनेश ने।
जुड़े सकल परवीन, कौल भगौती, सीस पै।।
बुड़वा मंगल में जुरे, राजन सहित नवाब।
रह ना जावे देस में, कलकत्ते कौ साब।।

सन् 1836 में जैतपुर के राजा पारीक्षत ने बुड़वा मंगल का उत्सव किया था। इस उत्सव में बुंदेलखंड की लगभग 42 रियासतों के राजा एकत्र हुए थे। माता भगवती की, बुंदेलों की आद्यशक्ति-कुलदेवी की शपथ लेकर सबने कलकत्ते के साब, अंग्रेजों से बुंदेलखंड को खाली कराने की शपथ ली थी। बाद में जैतपुर नरेश राजा पारीक्षत के नेतृत्व में यहाँ से पहला स्वाधीनता संग्राम अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा गया। इस प्रसंग को लेकर चरखारी के आसपास एक लोकगीत खूब गाया जाता है-

सबरे राजा जुड़े चरखारी, बुड़वा मंगल कीन्ह।
पुनि सब जाय बैठ गढ़ियन में, पारीछत को मुहरा दीन्ह।।

बुंदेलखंड की चरखारी रियासत अपने समय में न केवल सुख-समृद्धि से पूर्ण थी, स्रन् अपनी ऐतिहासिक गौरवशाली परंपरा का संवहन भी करती रही है। चरखारी में हुआ यह बुड़वा मंगल का उत्सव अपनी ऐतिहासिकता को उपरोक्त प्रसंग के माध्यम से स्पष्ट तो करता ही है, साथ ही दूसरी तरफ आस्था से जुड़कर देश के लिए संलग्न होने की भावना को भी बखानता है। जैसा कि अतीत की अनेक घटनाओं और प्रसंगों में भेदियों के कारण शूरवीरों के छले जाने के प्रसंग मिलते हैं, इसी तरह चरखारी के बुड़वा मंगल उत्सव की दुःखद परिणति हुई थी। यदि कुछ राजाओं-नवाबों ने गद्दारी न की होती, तो अंग्रेजो का सन् सत्तावन से पहले ही बुंदेलखंड से सफाया हो गया होता।

चरखारी की प्रसिद्धि का अक्षय त्रेत गोवर्धन नाथ जू का मेला भी है। गोवर्धन जू की भक्ति के साथ ही इस मेले की अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी हे। बुंदेलखंड के सबसे बड़े मेलो में से एक चरखारी का गोवर्धन नाथ जू का मेला यद्यपि बहुत पुराना नहीं है, फिर भी अपनी ऐतिहासिकता के साथ ही जन-जुड़ाव के संदर्भो में अन्यतम् स्थान रखता है। महाराजा छत्रसाल के वंशज महाराजा जय सिंह आध्यात्मिक प्रवृत्ति के साथ ही बहुत स्वाभिमानी थे। कहा जाता है, कि एक बार उन्हें दिल्ली दरबार का बुलावा मिला। वे दरबार में गए, किंतु उन्हें पहुँचने में थोड़ा विलंब हो गया। इस कारण उन्हें बहुत पीछे बैठना पड़ा। इस बात से वे कुपित हो गए। दरबार में उनका स्थान पन्ना के राजा के बगल में होता था, किंतु ऐसा नहीं होने के कारण वे स्वयं को अपमानित अनुभूत करते हुए वहाँ से चले आए। उन्हें राजकार्य से विरक्ति होने लगी और वे वृंदावन में जाकर रहने लगे। वहीं से वे अपना राजपाट चलाते और सत्संग-प्रवचन करते थे। बाद में उन्होंने अपना प्राणांत भी वृंदावन में ही किया। कहा जाता है, कि उन्होंने वृंदावन के एक मंदिर में धतूरा खाकर जान दे दी थी। सच्चाई कुछ भी हो, लेकिन उनका आध्यात्मक की ओर झुकाव और विशेष रूप से लीलाधारी कन्हैया की लीलास्थली वृंदावन

जाकर एकदम कृष्णमय हो जाना बुंदेलखंड के लिए एक अलग ही दिशा को लेकर आया। बुंदेलखंड में कृष्णोपासना इससे पहले शायद ही रही हो। रामलीलाएँ तो खूब हुआ करती थीं....कृष्णलीलाओं का, रासलीलाओं का चलन बुंदेलखंड में पहले नहीं रहा। मेलों के बारे में भी यही कहा जा सकता है।

महाराजा जयसिंह की कृष्णोपासना और गोवर्धनजी के प्रति भक्ति के भाव को बुंदेलखंड में साकार करने का काम उनके उत्तराधिकारी महाराजा मलखान सिंह ने किा। महाराजा मलखान सिंह साहित्यिक प्रवृत्ति के थे, और रानी रूप कुँवरि धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। इस कारण महाराजा मलखान सिंह ने कई भक्तितपरक गीतों व भजनों की रचना भी की थी, जो बुंदेलखंड में आज भी गाए जाते हैं। महाराजा मलखान सिंह ने सन् 1883 ई. में चरखारी में गोवर्धन जू के मेले का श्रीगणेश किया था। अपने प्रारंभ के साथ ही यह मेला बुंदेलखंड के लोगों के लिए आकर्षण और आस्था का केंद्र रहा है। इसी कारण मेले की ख्याति और वैशिष्ट्य को लोकगीतों में पिरोकर आज भी गाया जाता हैं-

> कार्तिक मास धरम का महीना,/मेला लगत उतै भारी
> जहाँ भीर भई भारी,/वृंदावन भई चरखारी।।

दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा (अन्नकूट) से गोवर्धन नाथ जू के मेले का प्रारंभ होता है। इसी दिन से कार्तिक मास प्रारंभ होता है। कार्तिक मास का विष्णु-उपासना में बड़ा महत्व है। इस मास में किए गए धार्मिक कार्य बहुत शुभ और लाभकारी होते हैं। बुंदेलखंड में कार्तिक स्नान का पुरातन विधान रहा है। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा के साथ गोवर्धन नाथ जू मेले का प्रारंभ होता है, तो पंचमी तिथि को मेला स्थल पर चरखारी के 108 मंदिरों के सभी देवी-देवता मेला प्रांगण में पहुँचते हैं। चरखारी के गोवर्धन नाथ जू मेले का यह बड़ा आकर्षण होता है। विभिन्न मंदिरों की अपनी-अपनी सजी-धजी पालकियों में विराजमान देवी-देवताओं की सवारियाँ भक्तजनों को अपरिमित उत्साह और उल्लास से भर देती हैं।

दक्षिण भारत के विभिन्न मंदिरों में देवताओं के प्रवास की परंपरा दिखती है। अपने भक्तजनों को दर्शन देने के लिए, उनके सुख-दुःख जानने के लिए देवता अपने मंदिरों से निकलकर आते हैं। जगन्नाथ जी की रथयात्रा इस हेतु सर्वाधिक प्रसिद्ध कही जा सकती है। इसी तरह उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में भी देखा जा सकता है। बुंदेलखंड में ओरछाधिराज रामराजा सरकार का प्रवास भी होता है। किंतु चरखारी में गोवर्धन नाथ जू के मेले की यह परंपरा एकदम अनूठी है। बुंदेलखंड जिस तरह से धार्मिक समन्वय और समभाव की भूमि है, उसी का भव्य स्वरूप चरखारी मेले में प्रवास करती 108 पालकियों में दिखाई देता है।

गोवर्धन नाथ जू के मेले में होने वाला यह दैव सम[illegible] में विशिष्ट है, अन्यतम् है। शिव, शक्ति, राम, कृष्ण, सूर्य, [illegible] गणेश, लक्ष्मी, आदि के उपासक आपसी भेद भूलकर ए[illegible] हैं। विविधता में एकता का भाव साकार हो उठता है। [illegible] की पंक्तियाँ- 'सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं [illegible] बुध वेदा।।' साकार-साक्षात् दिखती हैं। यह दैव-समागम [illegible] की अपनी अनेकला में एकता की पहचान का झलकाता है।

यदि ऐतिहासिक संदर्भों के साथ बात कहें, तो कहन[illegible] कि उस समय एकता की भावना बहुत आवश्यक थी। दे[illegible] आक्रांताओं से मुक्त होने के लिए छटपटा रहा था। स्थानीय [illegible] की आपसी फूट का लाभ ईस्ट इंडिया कंपनी उठा रही थी। [illegible] की कुटिल नीति का शिकार बुंदेलखंड भी था। ऐसी दशा में [illegible] नाथ जू का मेला एकता का संदेश देते हुए लोगों को मिल-जु[illegible] रहने के लिए प्रेरित कर रहा था।

गोवर्धन नाथ जू का मेला बुंदेलखंड की लोकसंस्कृ[illegible] संरक्षण और संवर्धन के लिए भी जाना जाता है। यहाँ महीने भ[illegible] विभिन्न आयोजन होते हैं। इनमें रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्र[illegible] बुंदेलखंड के लोकनृत्यों का प्रदर्शन होता है। विभिन्न प्रतियो[illegible] ग्राम्यांचल की प्रतिभाओं को आगे लाने और उन्हें मंच प्रदान क[illegible] का काम करती हैं। सके साथ ही कवि सम्मेलनों और मुशायरों [illegible] दौर भी चलते रहते हैं। चरखारी को बुंदेलखंड में पारसी रंगमंच [illegible] लिए भी जाना जाता है। चरखारी नरेश राजा अरिमर्दन सिं[illegible] कलकत्ता की कोरथियन नाट्य कंपनी को खरीदा था। इस नाट[illegible] कंपनी में आगा हश्र कश्मीरी के लिए नाटक खेले जाते थे। चरखा[illegible] में विधिवत् रंगमंचशाला बनवाई गई थी। मेले के समय भी रंगमंच[illegible] का बड़ा रोमांच लोगों के लिए हुआ करता था। चरखारी नरे[illegible] अरिमर्दन सिंह स्वयं नाट्यप्रेमी और लेखक थे। उनके लिखे नाटकों का मंचन भी यहाँ पर होता था।

चरखारी को बुंदेलखंड का कश्मीर कहा जाता है। यहाँ के राजपरिवारों ने चरखारी को अपनी साहित्यिक प्रतिभा के साथ ही अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से सँवारा है। सुंदर-सुरम्य प्राकृतिक परिवेश में विस्तृत मंदिर, महल, बावड़ियाँ, ताल, सरोवर आदि स्थापत्य कला के शीर्ष को छूती निर्मितियाँ यहाँ के शासकों की गौरवगाथा बखानती हैं। धर्म, अध्यात्म, साहित्य की त्रिवेणी यहाँ अपने अतीत से ही अविरल प्रवाहित होती दिखती है। प्राचीनकाल में वेदाध्ययन के लिए प्रसिद्ध वेदव्यास चक्रधारी जी का मंदिर बनने के बाद चरखारी कहा जाने लगा। काल के चक्र ने बुंदेलखंड में कृष्णोपासना का बड़ा केंद्र चरखारी को बनाया। यह चरखारी की अपनी गति है।

अपनी नियति है। इसी कारण चरखारी बुंदेलखंड का काश्मीर मात्र नहीं है... चरखारी बुंदेलखंड का ब्रज भी है। चरखारी को छोटा ब्रज भी कहा जाता है। गोवर्धन नाथ जू के मेले भर, पूरे कातिक मास चरखारी वृंदावन ही बन जाता है। अपने कन्हैया जी के प्रति भक्ति के भाव में रचे-पगे श्रद्धालुगण मेला परिसर में विराजमान 108 देवी देवताओं की पूजा-अर्चना करते हैं। देवी-देवताओं के साथ मानों पूरा चरखारी क्षेत्र ही मेला भूमि में सिमटकर आ जाता है। और गोवर्धन नाथ जू... । उनके तो कहने ही क्या... । बुंदेलखंड की धरती तो संघर्षों की रही है, जीवन के लिए जुझते जन की कहानी कभी अन्न के लिए, तो कभी जल के लिए तरसते कही जाती रही है। ऐसे जटिल जीवन को जीते लोकरंजक गोवर्धन नाथ जू एक ऊर्जा दे जाते हैं। इंद्र की मनमानी तो बुंदेलखंड भी देख लेता है। श्रीकृष्ण इसी मनमानी का सबक सिखाते हैं। गोवर्धन जी को अपनी कनिष्ठिका में उठाकर वे गोवर्धन नाथ जी बन जाते हैं। लोक का मन एकाकार हो जाता है। सप्तमी तिथि को इंद्र स्वयं करबद्ध होकर क्षमा-याचना करने गोवर्धन नाथ जी के मंदिर में आते हैं। इससे पहले 108 देवी देवताओं की पालकियाँ मंदिर परिसर में पहुँचती हैं। पंचमी तिथि को सभी देवगण उनसे गोवर्धन जी को उतारने की विनती करते हैं। सप्तमी को इंद्र के आने, और फिर विनती करने के बाद गोवर्धन नाथ जी का कोप शांत होता है। बुंदेलखंड का लोकजीवन इस लीला के सहारे अपने दु:खों-कष्टों के निवारण को अनुभूत कर लेता है। आस्था का भाव हिलोरें मारने लगता हैं। पूरे कार्तिक मास लीलाधारी कन्हैया की लीलाओं का स्मरण करते, गोवर्धन नाथ जी की पूजा आराधना करते बीतता है। ग्राम्यांचल में शीत की विषमता के बीच मेला जन-जन में उमंग भर देता है, उल्लास भर देता है। सारा वृंदावन मानों चरखारी में ही उतर आता है। चरखारी वृंदावन बन जाती है।

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (सम विश्वविद्यालय) लेह- 194104
(लदाख केंद्रशासित प्रांत)
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (भारत सरकार)

बुंदेलखंड की युद्धभूमि में मल्हार राव की भूमिका

- डॉ. संध्या

भारत का इतिहास अनेक युद्ध वर्णनों से भरा हुआ है। तराइन, चंदावर, पानीपत, खानवा, हल्दी घाटी, प्लासी, बक्सर, आंग्ल-मैसूर, भारत -चीन, भारत-पाक जैसे युद्ध आधिपत्य जमाने और मुक्ति की छटपटाहट से भरे युद्ध रहे हैं। इन युद्धों की विशेष बात यह रही है कि इनमें से अधिकांश तो जातीय पहचान पर लड़े गए थे यथा- मुगल बनाम लोधी, राजपूत, मराठा और कुछ राज्य या राष्ट्रीय पहचान पर लड़े गए थे यथा - आंग्ल बनाम मुगल, मैसूर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और भारत बनाम चीन, पाकिस्तान। जातीयता और राष्ट्रीयता की प्रमुखता के चलते ऐसे अनेक योद्धाओं की महत्वपूर्ण भूमिका की चर्चा इतिहास के पन्नों में आने से रह गई, जिन्होंने युद्ध के दौरान, युद्ध कौशल की गहरी समझ और अपनी सूझ-बूझ से शत्रु का या तो सिर कलम किया था या उसे मैदान छोड़ने को विवश किया था और युद्ध को निर्णायक भूमिका तक पहुंचाकर, इतिहास में विजय दर्ज करवाई थी। इतिहास प्राय: तारीखों और परिणामों के इर्दगिर्द घूमता रहता है। सैनिकों या योद्धाओं के गुणों, भावनाओं को व्यक्त होने का अवकाश साहित्य में ही संभव होता है। इस दृष्टि से लेख में बुंदेलखंड की धरती पर हुए युद्धों के उन दो प्रसंगों को लिया जा रहा है, जिसे एक सिपाही योद्धा मल्हार राव होल्कर ने महाराजा छत्रसाल के पक्ष में, निर्णायक युद्ध बना दिया था।

इतिहास में मल्हार राव का नाम मध्य-भारत के, इंदौर की होल्करशाही के संस्थापक के रूप में अंकित है। 16 मार्च सन् 1693 को जन्में तथा 20 मई 1766 को मृत्यु को प्राप्त मल्हार राव ने अपने 73 वर्ष के जीवन के 50 से अधिक वर्ष युद्ध भूमि में गुजारें थे। पेशवाओं के प्रति निष्ठावान इस योद्धा के बिना पेशवाओं का इतिहास अधूरा हैं। ये मराठी पेशवाओं की चार पीढ़ियों के साक्षीदार थे। पहले पेशवा बालाजी विश्वनाथ से ले कर पेशवा माधव राव तक के कालखंड में अर्थात लगभग चार पीढ़ियों तक मल्हार राव ने अपनी कर्तव्य निष्ठा से पेशवाओं की पत रखते हुए जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसी से वे एक सिपाही योद्धा से सूबेदर, मालवा शासक के विशेष पद के अधिकारी बने थे। पेशवाओं के दिलों में मल्हार राव के लिएविशेष स्थान हमेशा बना रहा। इसी तरह छत्रपति साहू महाराज ने भी उन्हें, उनकी अखंड निष्ठा और कर्तव्य दक्षता के लिए सम्मानित किया था। मालवा संभालते हुए मल्हार राव ने राजपूतों के इतिहास को एक नया मोड़ दिया। दिल्ली का तखत भी मल्हार राव के नाम से भयवश चौंकता अवश्य था। खुद अहमद दुरानी अ 'काले सांप' की तरह देखते थे।

मालवांचल के जन - जन में लोकप्रिय शासक प्रसिद्ध देवी अहिल्या बाई, मल्हार राव की पुत्र वधू थीं। सं अहिल्याबाई में आम जन के सुख-दुख को समझने का जो गुण था, उसे मल्हार राव ने समझा था और संस्कारित मल्हार राव के योद्धा के भीतर वह सूझ-बूझ छिपी हुई थी बार अनुचित निर्णय का भ्रम पैदा करती थी किन्तु परिणा आने पर पेशवा भी मल्हार राव की प्रत्युत्पन्नमति और अनो बूझ पर प्रसन्नता से खिल उठते थे। बुंदेलखंड क्षेत्र में दयाब सिर कलम करने के लिए और किलीजखान बंगश को ज लिए भी मल्हार ने कुद ऐसी ही अनोखी योजना का सहार था।

बुंदेलखंड में अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित कर चुके म छत्रसाल के जीवन में, वृद्धावस्था में एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें अपने साम्राज्य तथा स्वयं की रक्षा के लिए दो किलोमीटर दूर के अपूने गुरू और शिवाजी महाराज के पंत बाजीराव पेशवा को मदद के लिए बुलाना पड़ा था। हुआ यह इलाहाबाद का सूबेदार किलीजखान बंगश, आगरा के नवाब के मिलकर छत्रसाल के साम्राज्य पर आक्रमण करेंते की योजना चुका था। इसका पता चलते ही छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा अपनी मदद के लिए, कवि भूषण के माध्यम से ये पंक्तियां लिख बुलवाया था कि- 'जो गत भई गजराज की, सो गत जानियो आ बाजी जात बुंदेल की, राखो बाजी लाज।' -1 तब बारीराव पेशवा छत्रसाल के इस आमंत्रण को स्वीका कर अपने पूरे लाव लश्कर के साथ बुंदेलखंड की ओर कूच किया था।

बुंदेलखंड के बीहड़ में मल्हार राव की पहली मुठभेड़ दयाबहादुर के साथ हुई थी। अमझरा घाटी और उसके आसपास के घने जंगल, मराठी फौज के लिए बिल्कुल अनजाना क्षेत्र था। घने वृक्ष, ऊंचे पर्वतों के बीच उन्हें दिखाई देता था तो केवल आकाश ही आकाश। फिर भी घाटी के उस पार दयाबहादुर तोपों के साथ, मराठी फौज को घाट पार ही रोक कर मारने, परास्त करने के लिए बैठा है, यह पता लगते ही मराठी फौज के उदाजी पवार, चिमाजी पेशवे, यदाबहादुर पर तत्काल आक्रमण करने के लिए लगभग उतावले से हो उठे थे। पर फोज का नेतृत्व करने वाले और शत्रु की

तियों को सूंघने की क्षमता रखने वाले मल्हार राव ने उन्हें ऐसा करने से रोका। मल्हार राव की इस प्रतिक्रिया से वे दोनों योद्धा नाराज हो उठे, इसे उन्होंने अपना अपमान समझा। तब मल्हार राव ने अपनी दूर दृष्टि का खुलासा करते हुए बताया था कि मुगल दयाबहादुर की बड़ी भारी फौज, घाटी के उस पार इसी ताक में बैठी है कि मराठे इस मार्ग से निकलें और वह उन्हें धर दबोचे। हम यदि कुछ दिन उस पर आक्रमण न करें तो दयाबहादुर अनुमान कर सकता है कि मराठे घबराकर भाग गए हैं या घने जंगल में रास्ता भूलकर कहीं भटक गए हैं। इससे उनके युद्ध का उत्साह भी कुछ कम हो जाएगा और वे इस भरी गर्मी में, अपने डेरे में भोग विलास में व्यस्त हो जाएंगे। दयाबहादुर की फोज जब नाच-गाने-शराब में व्यस्त हो जाएगी तभी उन पर आक्रमण करना उचित होगा, तभी हम दयाबहादुर के कुचल सकेंगे। हुआ भी यही कि बैसाख माह की एक भरी दोपहरी में जब दयाबहादुर नदी किनारे सुस्ता रहा था, मराठी फौज ने धावा बोलकर यवनों के उस डेरे पर आग लगा दी। चूंकि मुगल फौज सावधान नहीं थी, घबराहट में फौजी पानी पानी चिल्लाते हुए इधर उधर भागने लगें इधर दयाबहादुर सावधान हो कर हाथी परप चढ़ता तब तक मल्हार राव, राणेजी और उदाजी ने उसे तीनो ओर से घेर कर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। तब दयाबहादुर की बची हुई फौज अपनी जान बचाकर जंगल की ओर भाग गई थी।

मल्हार राव की दूसरी मुठभेड बंगश से हुई थी। किलीजखान बंगश ने अपना डेरा जैतपुर के किले में जमा रखा था। बाजीराव ने भी वंगश को किले से निकालने के लिए और उसे कब्जे में करने के लिए अपनी फौज को जैतपुर की दिशा में एकत्रित कर लिया था। बाजीराव ने इस पूरे अभियान की जिम्मेदारी मल्हार राव को सौंप रखी थी। वंगश जैतपुर के किले में बीते दो माह से था। बाजीराव जानते थे कि वंगश को दिल्ली से मिलने वाली रसद यदि बंद नहीं की गई तो बंगश को कब्जे में करना कठिन होगा। तब मलहार राव अपने सैनिक साथी मारोशकर, मल्हार गोपाल, बाजी गोविंद, विठोजी बुले, शिवाही नरसिंह, हरि केशव आदि के साथ जैतपुर से बारा कोस दूर के जंगल में छिपकर बैठे रहे।

दिल्ली से आने वाला अनाज, दस हजारी फौजों के साथ हाथी, ऊंट, घोड़ों पर लद कर जैतपुर के लिए रवाना हो चुका था। काफिला जैसे ही मराठी फौजों की नजर में आया, उन्होंने धावा बोल दिया। अचानक हुए हमले से हड़बड़ाए सैनिक, जिधर रास्ता मिला, भाग खड़े हुए। जो भाग न पाए उन्हें मराठी फौजों ने काट डाला और हाथ आए लूट के अनाज, हाथी, घोड़ो, अस्त्रों-शस्त्रों को मल्हार राव ने बाजीराव को सौंप दिया। अगले दिन से जैतपुर के किले पर चढ़ाई कर, गोलों, तोफों से उस अभेद्य किले की बाहरी सीमाओं को तोड़ डाला। इस दौरान किले की भीतरी सुरंग से बंगश भागने में सफल रहा पर किला मराठी फौजों के आधीन हो गया। कुछ समय पश्चात बंगश ने मराठा सैनिक दाभडे की मदद से मराठी फौज पर फिर आक्रमण का इरादा बनाया किन्त बाजीरव पेशवा द्वारा दाभाडे को तबाह किए जान की खबर पाते ही बंगश वापस दिल्ली की ओर कूच कर गया। कहा जाता है कि अपना लक्ष्य पूर्ण कर जब मराठी फौजें बुंदेलखंड से बाहर निकलीं, तब उन्हें विदा देने के लिए कोस भर तक, स्वयं महाराजा छत्रसाल आए थे।

भारत के इतिहास मल्हार राव की भांति अने ऐसे वीर सिपाही होंगे, जिन्होंने युद्धों के अपेक्षित परिणामों में निर्णायक भूमिका निभाई होगी। इस संदर्भ में शोध की अनेक संभावनाएं जुड़ी हुई हैं। विचारक य.न. केलकर के शब्दों में 'शोध एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है क्योंकि 'पूरा सत्य प्राप्त हो चुका है' ऐसा कहने का अवसर इतिहास कभी भी नहीं देता।'

कानूनगो वार्ड, बीना
मो. 9165568009

बुंदेली कहावतों में जीवन-सत्य : एक अनुशीलन

-डॉ. अवधेशकुमार चंसौ

प्रत्येक देश के विभिन्न समाजों एवं क्षेत्रों की अपनी लोकोक्तियाँ या कहावतें होती हैं। ये कहावतें यों ही नहीं गढ़ ली जाती हैं। इन कहावतों में एक ही प्रकार की घटना को बार-बार घटित होते देखकर अनुभवी लोगों ने निष्कर्ष निकाल कर, उसे लय में बाँधकर कम से कम शब्दों मे कवित्व मय रूप में प्रकट कर कहावत का रूप दिया।'सर्वसाधारण जनता के द्वारा प्रयुक्त होने के कारण इसे लोकोक्ति (लोक त्र जनता , उक्तित्र कथन) कहा जाता है- 'लोकोक्तियां अनुभव सिद्ध ज्ञान की निधि है।' ये कहावतें मनुष्य के हृदय पर स्थायी प्रभव डालती हैं।

कहावतें हमारी पुरानी धरोहरें हैं। ये कहावतें पुरानी होकर भी उपयोगी हैं। यही कारण है कि कहावतें आज भी प्रचलित हैं। आधुनिक युग में यद्यपि इनका प्रचलन कुछ कम जरुर हुआ है लेकिन बन्द नहीं हुआ। 'वेदों में भी इनकी सत्ता उपलब्ध है। उपनिषदों में भी लोकोक्तियां प्रचुर परिणाम में पाई जाती है।' लौकिक संस्कृत में इनका प्रयोग बहुत अधिक हुआ है।

लोक साहित्य में लोकोक्तियां या कहावतों का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा कथन को तीव्रता और गति देकर प्रभावोत्पादक बनाया जाता है। ये चिरकालीन अनुभूत ज्ञान के सूत्र और निधि हैं। समास रूप में चिर संचित अनुभूत ज्ञान राशि का प्रकाशन इनका प्रधान उद्देश्य है। किसी भी जाति या समाज के सामाजिक अध्ययन की जानकारी में इनका विशेष महत्व है। संस्कृत से लेकर आधुनिक भाषाओं तक इनकी अविच्छिन्न धारा प्रवाहित हो रही है। ये सुन्दर रीति से कही गयी उक्तियां हैं। इसलिए दीर्घ जीवी हैं।

संस्कृत की एक लोकोक्ति बहुत प्रसिद्ध है। वह है 'शठे शाठ्यं समाचरेत।' महाकवि राजशेखर ने प्राकृत भाषा में लिखे गये 'कर्पूर मंजरी' में - 'हत्थ कंकण किं दप्पणेण पेक्खी' का उल्लेख किया हैं यही कहावत हिन्दी में 'हाथ कंगन को आरसी क्या' रूप में जीवित है।

हिन्दी की कहावतों का अभी विधिवत कोई संकलन प्रकाश में नही आ पाया है। 'सन् 1886 ई. में फेनल ने हिन्दी कहावतों के संबंध में अपना प्रसिद्ध ग्रंथ डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी प्रोवर्ब्स' लिखा।' उसमें मारवाड़ी, पंजाबी, भोजपुरी, एवं मैथिली कहावतों को संकलित किया गया है। जे.एस. नोवल्स ने कश्मीरी लोकोक्तियों पर, शालिग्राम वैष्णव ने गढ़वाली कहावतों पर अच्छा कार्य किया है। डॉ. कन्हेया लाल सहल ने राजस्थानों कहावतों पर अनुसंधानात्मक दृष्टि डाली है।

बुंदेली कहावतों पर अभी कोई विशेष उल्लेखनीय अनु नहीं हुआ।

बुंदेली कहावतों में जीवन का सार देखने को मिलता है कहावतों के माध्यम से हम बुंदेलखण्ड और उस अंचल में वास वाली की जीवन-शैली का बखूबी अध्ययन कर सकते हैं। कहावतों में उनके विश्वास, आस्थाएँ, रीति-रिवाज, खान- रहन-सहन, लोक पर्व और उनकी संस्ति स्पष्टत: झलकती बुंदेली कहावतों में बुंदेली लोक जीवन का सत्य पूरी सिद्दत के उद्घाटित होने लगता है। समाज में ऐसे भी लोग होते हैं, जो चरित्र के होते हैं; उनकी कथनी-करनी में अंतर होता है; वे दिख करते हैं। ऐसे लोगों के लिए कहावत बनी है- 'गुड़ खाँय-पुआ नेम करें।' अर्थात जो लोग दिखावटी परहेज करते हैं, उनके लि यह कहावत बिल्कुल फिट बैठती है। नुक्ता चीनी निकालने वालों लिए कहा गया है कि- 'चेरी अपनेजी से गयी, राजा कहत अलौनी खीर।' दूसरों में दोष निकालने वाले व्यक्ति की आदत को 'कानी अपनों टैंट तो निहारत नइयां, दूसरे की फुली पर पर देखत।' में बहुत ही सुंदर अभिव्यक्ति दी गयी है। ऐसे लोग ह समाज में बहुतायत से मिल जाते हैं जो अपने सैंकड़ों दोषों को नहीं देखेंगे, लेकिन दूसरों के दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करते हैं। यही बात इस कहावत में सूत्र रूप में सन्निहित है।

बुंदेलखण्ड अभी भी आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। यहाँ की ऊबड़-खाबड़ जमीन, पानी के अभाव में बंजर और अनुपजाऊ है। लगीग 90 प्रतिशत लोग कृषि पर आधारित है। इसलिए उनके पास धन का अभाव है। अत: वे मेलों-ठेलों का आनंद नहीं उठा पाते। ऐसे लोगों पर - 'जिनके पइसा नइयां पास, उनको मेला रहे उदास।' कहावत सही रूप में चरितार्थ और सिद्ध बैठती है। बुंदेलखण्ड में सामंती प्रथा का अभी भी बोलबाला है। लोगों में पड़े-पड़े खाने की आदत है। लेकिन इन आलसियों को यदि उनकी शक्तियों का एहसास करा दिया जाए, उन्हें उत्प्रेरित कर दिया जाए तो वे कठिनतम कार्य भी कर डालते हैं। ऐसे लोगों के कारनामें देखकर कहावत बनी- 'गर्रा चलै तो बाँजर टोरे।' दूसरों के दर्द का अहसास लोगों को नहीं होता जब तक कि उन्हें स्वयं दर्द न हो। ऐसी स्थिति में कहावत है - 'जाके पैर न फटी बिंबाई, सो क्या जाने पीर पराई।' दिखावे का प्रेम करने वालों को ध्यान में रखकर कार्य नहीं करते और केवल तात्कालिकता को देखकर आवेश में निर्णय ले लेते हैं; उन्हें बाद में पाश्चाताप करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में कहावत बनी 'बादर

ब पुतलिया फोर दई।' संयुक्त परिवारों के टूटने पर पारिवारिक प्रेम र सद्भाव में भी कमी आ जाती है। आज यह प्रवृति बहुत तेजी से ढ़ रही है। व्यक्ति अकेला ओर असहाय हो गया है। पुत्र भी अलग ने पर अपने पारिवारिक कर्तव्यों से च्युत हो जाता है। तभी तो कहा या है कि न्यारो पूत पड़ोसी-दाखिल। जो व्यक्ति सीधा-साधा ता है उसे कोई महत्व नहीं देता। हर कोई उसका मजाक उड़ाता है। से लोगों को इंगित कर- 'सीधे को मुँह कुत्ता चाटत।' लोकोक्ति का अविर्भाव हुआ। आलसी लोग कार्य न करने के लिए किसी न कसी व्यवधान की अपेक्षा करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिये बुंदेली जानकारों ने एक कहावत गढ़ी - 'आलसी चिरैया असगुन की वाय ठेरे।' एक लोकोक्ति है - 'गधन कें मौर, बाँध दई।' इसका तात्पर्य - 'वेवकूफ को ताज पहनाना है। आज की राजनीति में ऐसे उल्टे कार्य खूब हो रहे हैं। आज अयोग्य लोग चापलूसी और धन के प्रभाव में ऊँची कुर्सी पर बैठकर मौज कर रहे हैं और सम्मानित हो रहे है तथा योग्य लोग मारे-मारे फिर रहे हैं। कुछ ऐसे ठसियल लोग भी हैं जो जवरदस्ती अपने को सम्मानित करा लेते हैं। ऐसे लोग 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' वाली कहावत को बखूबी चरितार्थ करते हैं। समाज में ऐसे भी लोग हैं जो दो पक्षों में लड़ाई कराकर अलग हो जाते हैं। जब ऐसे लोगों को सुधी जनों ने देखा तो एक सूक्ति के माध्यम से अपनी बात कहीं वह सूक्ति है- 'डार-गंज(आग महावदे दूर भये।' समाज में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो - 'मागै तेल गुलगुला करत।' अर्थात् वे स्वयं का खर्च नहीं करते बल्कि दूसरों से माँगकर अपना काम चलाना चाहते हैं। यह उक्ति कंजूसों के लिए ठीक बैठती है। समाज में तरह-तरह के लोग रहते हैं। कहा भी गया है - 'तुलसी या संसार में भाँति-भाँति के लोग।' ऐसे लोगों में अविवेकी और निरी कल्पनाओं में जीने वाले भी होते हैं। वे विना किसी कारण या योजना के लड़ाई-दंगा करने लगते है। ऐसे लोगों के लिए कितनी अच्छी और अनुभव सिद्ध बात कही गयी है- वह है- 'सूत न पौनी, कोरी से लठियाव।' इस तरह की सैकड़ों नहीं हजारों सूक्तियां, कहावतें या लोकोक्तियाँ जिन्हें हम लोक सुभाषित भी कह सकते हैं- 'बुंदेली समाज में अलिखित अर्थातृ मौखिक रूप में भरी पड़ी हैं, जिनमें बुंदेली समाज पूर्ण रूप से मुखरित हुआ है। इन कहावतों का वाक्चातुर्य, अनुभव और वाग् विदग्धता देखते ही बनती है। इनकी भाषा अत्यंत सरल और प्रभावी होती है। इसलिए इन्हें अनपढ़ भी समझ लेते हैं। आवश्यकता है इनके संकलन और अध्ययन की। इनके अध्यन से हम-बुंदेली समाज को और अधिक अच्छे प्रकार से समझसकेंगे। इन कहावतों में बुंदेली समाज चलचित्र की तरह सुरक्षित है। ये कहावतें सिनेमा की फिल्म (रील) के समान है, जिनमें समाज की सच्ची तस्वीर देखने को मिलती है।

डीएम- 242, दीन दयाल नगर,
ग्वालियर
मो. 09425187203

रानी लक्ष्मी बाई

(समकालीन आलेखों, पत्राचार और दस्तावेजों के माध्यम से)

– राकेश

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, पर जिज्ञासु पाठक को प्रायः इतिहास, लोक-प्रचलित कथानकों, और उपन्यासों व कविताओं का मिला-जुला रूप पढ़ने को मिलती है। इसलिये प्रयास किया गया है कि जिन व्यक्तियों ने रानी का प्रथम-दृष्टया विवरण लिखा है, या जो तथ्य तत्कालीन अंग्रेज प्रशासनिक व सेनाधिकारियों द्वारा सरकारीं या गैर सरकारी रूप से लिखे गये हैं, उन्हीं पर ध्यान केन्द्रित कर के आलेख लिखा सेनाधिकारियों द्वारा सरकारी या गैर सरकारी रूप से लिखे गये है, उन्हीं पर ध्यान केन्द्रित कर के आलेख लिखा जाये। आस्ट्रेलियाई लेखक जान लैंग, पंडित विष्णु भट्ट गोडसे, लार्ड डलहोजी, जनरल ह्यू रोज, कर्नल स्लीमन, ब्रिगेडियर एम, डब्ल्यू, स्मिथ, मेजर माल्कम, कैप्टेन स्काट, मेजर एलिस, मेजर एर्सकिन से रानी का पत्र व्यवहार, वायसराय की कौंसिल का पत्र, श्रीमती मटली, साहिबुद्दीन, क्रान्तिकारी अमान खान, मिस्टर थोर्न्टन, गुलाम मुहम्मद, और बंगाली क्लर्क की गवाही के दस्तावेज झांसी के घटनाक्रम और रानी लक्ष्मी बाई के दृष्टिकोण को समझने में बहुत सहायक हैं। रानी लक्ष्मी बाई के वायसराय लार्ड डलहौजी, राबर्ट हेमिल्टर और कीन विक्टोरिया को लिखे गये पत्रों से भी अंग्रेजों की कुटिल नीति के प्रति रानी के विरोध पता चलता है।

रानी लक्ष्मी बाई का जन्म काशी में मोरोपंत ताम्बे के घर में 18 नवम्बर सन् 1829 को हुआ था। इनके जन्म का वर्ष कुछ लोग 1835 भी मानते है, पर 1829 अधिक सही प्रतीत होता है। सन् 1829 मानने पर विवाह के समय उनकी आयु 12 वर्ष, और पुत्र जन्म के समय 22 वर्ष बैठती है। सन् 1835 मानने पर पुत्र जन्म की आयु 16 वर्ष और विवाह के समय की आयु 7 वर्ष संदेहास्पद लगती है। (सन् 1918 की पुस्तक 'झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के प्रथम हिन्दी अनुवादित संस्करण में दत्तात्रेय बलवंत पारसनीस ने रानी लक्ष्मी बाई के जन्म की तिथि कार्तिक वदी चतुर्दशी सम्वत 1891 और अंग्रेजी तारीख 16 नवम्बर 1835 लिखी है। दृकपंचांग से मिलान करने पर न तो तारीख सही है, और न ही उससे मिलती-जुलती तिथि ठीक है। सम्वत 1891 के कार्तिक मास की वदी चतुर्दशी को तारीख 31 अक्तूबर 1834 पड़ती है। इसलिये श्री पारसनीस द्वारा दी गई जन्मतिथि संदेहास्पद है। पंडित गोडसे भी विवाह के समय लक्ष्मी बाई की आयु 12 वर्ष मानते हैं। आस्ट्रेलियासी लेखक जान लैंग भी जब रानी साहिब से सन् 1854 में मिला था, तब उनकी आयु 26 वर्ष के लगभग लिखता है) इनक भागीरथी बाई का देहान्त बचपन में ही हो गया था। माता-पि दिया गया इनका नाम मणिकार्णिका था, पर प्यार से सभी बुलाते थे। मोरोपंत ताम्बे बिठूर में पेशवा के दरबार में नि अतः अपनी बेटी मन को वे काशी से बिठुर ले आये थे। यहां नाना साहब पेशवा और तात्या टोपे के साथ अश्वारोहण औ कला की शिक्षा ली थी, और अभ्यास किया था। तात्या इन स बड़े होने के कारण, एक तरह से इनके गुरु थे।

मणिकर्णिका का विवाह सन् 1842 (सम्वत 1899) वेशाख सुदी दशमी को झांसी के राजा पंडित गंगाधर राव नेव से हुआ था, और विवाहोपरान्त इनका नाम लक्ष्मी बाई रखा गया पंडित विष्णु भट्ट गोडसे ने विवाह के समय लक्ष्मी बाई की बारह वर्ष लिखी है, जो कि सन् 1829 की जन्म तिथि से मेल है। राज्यारोहण के बाद राजा गंगाधर ने राज्य की आर्थिक स्थि सुधार कर के सारे कर्जे चुका दिये थे, और राज्य के कोष में ल तीस लाख रुपये इकट्ठे कर लिये थे। बेहतर प्रशासन के का अंग्रेजों ने इन्हें राज्य का पूर्ण अधिकार दे दिया था। विवाह के नौ बाद सन् 1815 में रानी लक्ष्मी बाई को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हु पर अल्पायु में ही वह काल-कवलित हो गया। इस घटना से रा गंगाधार को बहुत धक्का लगा, और वे बीमार रहने लगे। लगा अस्वस्थ रहने के कारण गंगाधर राव ने अपनी पत्नी की सलाह से अपने ही परिवार के एक चार वर्षीय बालक को अंग्रे अफसरों मेज एलिस और केऐन मार्टिन की उपस्थिति में आधिकारिक रूप से गोद ले लिया। इसकी सूचना झांसी में नियुक्त अंग्रेज अफसरों व स्वयं राजा द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों को भेज दी गई थी।

झांसी के राजा रघुनाथ राव तृतीय के सन् 1838 में देहान्त के बाद से सन् 1843 तक झांसी के सिंहासन पर अधिकार की दुविधा चलती रही। चूंकि गद्दी पर हक जताने वाले कई थे, अतः अंग्रेजों ने वस्तुस्थिति की जानकारी, स्थानीय अफसरों से मंगवाई। उनकी सिफारिश पर ग्वालियर के रेसीडेंट स्पीयर्स ने गंगाधर राव को गद्दी का उपयुक्त वारिस माना, और सन् 1843 में उन्हें पूर्ण राजा का पद दे दिया गया। उनसे की गई सन्धि में अंग्रेजों ने उनहें राजा मानते हुए, स्वयं का पुत्र न होने की स्थिति में, उत्तराधिकार के लिये किसी बालक को गोद लेने की भी छूट दी थी। राजा गंगाधर राव के

ामयिक निधन के कुछ समय बाद अंग्रेज अफसर मेजर एलिस ने ई डलहोजी की राज्य हथियाने की नीति के अंतर्गत, अपनी ्रशंसा को बदलते हुए, दूसरा ही पत्र वायसराय के पास भेज ा। इसमें झांसी के राजकोष पर अधिकार करने, रानी को महल ड़ने, और उन्हें मात्र 60000 रुपये सालना की पेंशन का प्रावधान । उसी समय अंग्रेजों ने राजकोष पर चौकीदार बैठा दिये, गोला-रूद और बन्दूकों पर अधिकार कर लिया, और रानी लक्ष्मी बाई ो महल छोड़ने के लिये कह दिया। उनकी बात न मानते हुए रानी क्ष्मी बाई ने अपने दत्तक पुत्र के संरक्षक के रूप में झांसी पर राज्य करना आरंभ कर दिया, और विधि अनुसार अंग्रेजों के पास इस यवस्था को सुचारु करने का आवेदन पत्र भेज दिया। इस बीच वे रानी महल नामक कदाचित छोटे से महल में रहती रही। रानी लक्ष्मी बाई ने राजकोष में रखे हुए 7 लाख रुपये मांगे, तब अंग्रेजों की तरफ से कहा गया कि यह राजकुमार दामोदर राव के वयस्क होने पर उन्हें दिये जायेंगे, पर वह धन उन्हें भी कभी नहीं मिला। असमंजस की यह स्थिति लगभग दो वर्ष तक बनी रही, और इसकी व इस जैसी अन्य घटनाओं की परिणति 1857 की क्रान्ति के रूप में हुई।

भारतीय राज्यों के अपहरण का सिद्धांत नया नहीं था। अंग्रेजों द्वारा यह सिद्धांत सनृ 1824 में ही लागू कर दिया गया था, आर इसके पहले शिकार बने थे – कुनूर और कितूर। इसके बाद मांडवी, कोलाबा, जालौन, और सूरत को भी सन् 1834 से 1842 के बीच हड़प लिया गया था। परन्तु इसका सर्वाधिक दुरुपयोग लार्ड डलहौजी के शासनकाल में सन् 1948 से 1856 के बीच हुआ था। जब सतारा, जेतपुर, सम्बलपुर, उदयपुर (छत्तीसगढ़), झांसी, नागपुर, आर्कोट, तंजावुर, और अवध जैसे लगभग 30 राज्यों को अंगेंजों ने कुटिल नीति से हस्तगत कर लिया। इन राज्यों के अनेक देशभक्त और साहसी शासकों ने इस क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया था, जिनमें रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल, रानी अवन्ती बाई के साथ उदा देवी और मुजफ्फरनगर की क्रांतिकारी महिलाओ जैसी अनेक वीरांगनायें भी सम्मिलित थीं। ऐसा नहीं कि इस नीति को ब्रिटेन में सभी का सहयोग या समर्थन मिला हो, वहां के अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों ने इसका विरोध किया था, जिसके फलस्वरूप लार्ड डलहोजी को भी 1856 में असम्माननीय तरीके से वापस बुला लिया गया था। यह बात उसने स्वयं अपने एक पत्र में लिखी है। पर इस दुराचरण का प्रतिफल अंग्रेजों को खूब मिला, और अनेक अंग्रेज अफसर, उनके परिवारों के सदस्य व सिपाही इस क्रांति के मारे गये। यही कारण है कि सन् 1861 के बाद, अपनी नीति में परिवर्तन करते हुए अंग्रेजों ने अनेक गोद लिये गये बालकों को नियमित राजा मान लिया गया था।

रानी लक्ष्मी बाई को राज्याधिकार न देकर, जो भूल की गई थी, उसमें अंग्रेज सेना द्वारा झांसी में गौवध और महालक्ष्मी मन्दिर के माफी के दो गांवों को खालसा करने के निर्णय ने आग में घी का काम किया था। विष्णु भट्ट गोडसे ने लिखा है कि रानी लक्ष्मी बाई असाधारण महिला थीं, उन्हें ये बातें अच्छी नहीं लगीं, अत: उन्होंने अपने बाल्यकाल के साथी नाना साहेब से पत्राचार आरंभ किया। नाना साहेब के भतीजे राव साहब, तात्या टोपे, और बानपुर के राजा मर्दन सिंह, 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम के समय रानी के प्रमुख सलाहकार व साथी बने रहे।

संग्राम के आरंभ होने से ठीक पहले घबराया हुआ ब्रिटिश अधिकारी गार्डन रानी लक्ष्मी बाई के पास आया, और बोला कि किसी अनहोनी की अपेक्षा हैं, अत: इक्कीस लाख के इस प्रान्त को अंग्रेजी अमला आने तक आप की सम्हाल लें, और हमें आश्रय देकर उपकार करें। अंग्रेजों को आश्रय दिया भी गया, पर विद्रोह के आरंभ हो जाने के बाद रानी उन्हें बचा नहीं पाईं। माल्सन ने स्वयं लिखा है कि इसमें रानी का कोई दोष नहीं था, अंग्रेज अफसरों और उनके परिवार के सदस्यों को हमारे ही विद्रोहीं सैनिकों ने मारा था, जिसमें हमारी जेल का दरोगा सबसे आगे था। इसके पहले गार्डन के आग्रह पर किले का गोमूत्र से शुद्धिकरण करवा कर रानी शुभमुहुर्त में किले में रहने को आ गई थीं।

सन् 1929 में पंडित सुंदरलाल की पुस्तक 'ब्रिटिश रूल इन इंडिया' या 'भारत में अंग्रेजी राज' को अंग्रेजों ने उस समय प्रतिबंधित कर दिया था, पर आज यह पुस्तक रानी लक्ष्मी बाई व अन्य वीरांगनाओं की बहादुरी का प्रमाणित दस्तावेज है। इस पुस्तक में हमें रानी के कुशल सैन्य संचालन, सेनापतित्व, वीरता, और राजनीतिक इच्छाशक्ति के दर्शन होते हैं। यमुना के दक्षिण से विध्यांचल के उत्तर के क्षेत्र में लगभग ग्यारह माह तक स्वतंत्रता सेनानियों का अधिकार रहा, जिसका प्रमुख श्रेय रानी लक्ष्मी बाई को जाता है। सन् 1858 के जनवरी माह में ह्यूरोज महू से एक विशाल सेना लेकर रवाना हुआ, जिसमें निजाम, बेगम भोपाल, गायकवाड़, होल्कर, घोरपडे आदि सरदारों के सैनिक भी सम्मिलित थे। जब तक यह सेना बानपुर, सागर आदि स्थानों पर अधिकार करती हुई झांसी पहुंची, तब तक रानी ने इनके मार्ग के सारे अ भंडार, फसल, घास, दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं को नष्ट करवा दिया था। इस नीति का आंग्ल भाषा में 'स्कार्च्ड अर्थ टेक्टिक' कहते हैं। पर टेहरी (टीकमगढ़) के राजा और सिंधिया ने ह्यूरोज के सैन्स दल को रसद और घोड़ों के लिये घासकी व्यवस्थ कर दी।

20 मार्च 1858 के आसपास अंग्रेजी सेना ने झांसी की घेराबंदी कर ली। रानी ने अपनी निगरानी में तोपों को बुर्जों और

किले की प्राचीर पर चढ़वा दिया, और 24 मार्च को उन्होंने ह्यूरोज की सेना पर गोले बरसाने आरंभ कर दिये। ह्यूरोज ने स्वयं लिखा है कि रानी के साथ सैकड़ों स्त्रियाँ किले की प्राचीर पर सैनिकों की सहायता के लिये तोपों तक गोला-बारूद पहुचाती, और अन्य सेवा कार्य करती दिख रही थीं। 26 मार्च को किले के दक्षिणी भाग पर अंग्रेजों की भारी गोलाबारी ने झांसी की तोपों को शांत कर दिया। तभी पश्चिमी फाटक के तोपची ने अपनी तोप का मुंह मोड़ कर, तीसरे ही गोले से अंग्रेज तोपची के परखच्चे उड़ा दिये। रानी ने उसी समय तोपची गुलाम गौस खां को सोने का कड़ा इनाम में दे दिया। पांचवें और छटे दिन रानी के निर्देशन में झांसी की तोपों ने तमाम अंग्रेज सिपाहियों को मार डाला, और उनकी तोपें शांत कर दीं। सातवें दिन की गोलाबारी में किले की बाईं दीवार ढह गई, पर रानी ने शत्रु सैनिकों को उस ओर आने भी नहीं दिया, और रात को ग्यारह कारीगरों ने दीवार फिर से चुन दी। आठवें-नवें दिन भयंकर युद्ध हुआ, कभी रानी का पलड़ा भारी होता, तो कभी अंग्रेजी फौज का। अगले दिन झांसी के बारूद के भंडार पर एक गोला गिरा, जिसके विस्फोट में 30 आदमी और 8 महिलायें मारे गये। अपने सैनिकों के मनोबल को बढ़ाने के लिये रानी स्वयं प्राचीर पर उपस्थित रह कर, युद्ध का संचालन करती थीं।

तात्या टोपे झांसी पहुंचने में प्रयासरत थे, पर टेहरी की लड़ई सरकार का सेनापति नत्थे खां उन्हें रोकने के लिये सेना सहित रास्ते में खड़ा था। तात्या ने इस बीच अनेक देस राजाओं को हरा कर या डरा-धमका कर, उनसे बहुत सारा गोला-बारूद और पैसा वसूला था। अनेक अंग्रेजों के पिट्ठू राजाओं की सेनायें भी तात्या का साथ देने के लिये तैयार हो गई थीं। 3 अप्रैल को अंग्रेजों की सेना ने झांसी पर निर्णायक आक्रमण किया। रानी अपनी सेना का उत्साह बढ़ाते हुए, प्राचीर पर नियंत्रण बनाये हुए थीं। उधर अंग्रेज अफसरों ने किले की प्राचीर पर सीढ़ियां लगा कर, किले में प्रवेश का प्रयास किया। इस प्रयास में उनके दो अफसर डिक और मिचेल जान मारे गये। बोनस और फॉक्स ने उनका स्थान लिया, और वे भी मारे गयें रानी ने अपने बंदूकचियों को उन्नाी दरवाजे और सदर पर इस प्रकार के तैनात किया था कि उनकी भारी गोलीबारी के सामने अंग्रेज फौज को पीछे हटना पड़ा। लेकिन तभी एक विश्वासघाती ने अंग्रेजों को दक्षिणी द्वार का रास्ता दिखा दिया, और यहीं से झांसी के पतन का आरंभ हो गया। रानी ने जब अपनी निरसहाय प्रजा का अंग्रेजी सेना के हाथों संहार देखा, तो वे अपने एक हजार सैनिकों को लेकर शत्रु सेना को रोकने के लिये आगे बढ़ी। अब बंदूकों के स्थान पर तलवार से आमने-सामने की लड़ाई होने लगी, जिसमें दोनों ओर के सैकड़ों सिपाही मारे गये। इधर सदर दरवाजे का रक्षक खुदाबख्श और उसका तोपची गुलाम गौस खां भी मारे गये, जिससे उ... अंग्रेजी सेना को किले में घुसने का रास्ता मिल गया।

जब पराजय निश्चित हो गई, तो रानी ने पहले तो ब... ढेर में आग लगा कर आत्मदाह का विचार किया, पर कि... सलाह मिली कि स्वातंत्र्य संग्राम में अभी उनका बड़ा योगदा... है। वे उसी रात को अपने पुत्र दामोदर राव और विश्वासपात्र ... की टुकड़ी के साथ किले से निकल गई। उस रात और अग... के कत्ले-आम और लूटपाट का विस्तृत विवरण पंडित वि... गोडसे ने अपनी पुस्तक में किया है। अंग्रेज अफसर और ... लूटपाट और निहत्थे नागरिकों व स्त्रियों की हत्या में बराबरी ... ले रहे थे। अंतर मात्र इतना थ कि स्वर्ण, रजत, और बहुमूल्य र... अंग्रेजों का अधिकार था, और उनके भारतीय मूल के सैनिकों ... तांबा, पीतल, और पैसा लूटने की आजादी थीं। लूटेरों ने महाराष्ट्... ब्राह्मणों के इस दल के सदस्यों को भी नहीं छोड़ा, और उन... सारा सामान लूट लिया। पंडित गोडसे की अंटी में बंधे 250 र... बच गये, जो उन्हें दान-दक्षिणा में मिले थे।

प्रातःकाल की लालिमा आने से ठीक पहले रानी लक्ष्मी बा... पायजामा, स्टाकिंग, बूट (गोडसे के अनुसार) धारण कर के, पु... वेश में किले से बाहर निकल गई। उन्होंने अपने लगभग नौ-द... वर्षीय दत्तक पुत्र को एक फेंटे से अपने पीछे बाँध रखा था। काल... की ओर जाती हुई रानी का लैफ्टीलेंट बोकर ने पीछा किया। ... में कुछ देर रुकनेके बाद भी रानी उससे आगे ही थीं, लेकिन दो... से पहले ही बोकर ने रानी पर हमला बोल दिया। रानी ने तलवार ... एक ही वार से बोकर को घायल कर दिया, जिससे वह अपने घो... से नीचे गिर गया। बोकर की टोली पीछे हट गई, और रानी फुर्ती ... कालपी की ओर बढ़ चलीं। रानी की सैन्य टुकड़ी को रात पड़ने त... आराम का एक भी अवसर प्राप्त नहीं हुआ। दिन भर में लगभग 160 किलोमीटर का रास्ता तय करके, अर्ध रात्रि को रानी ने काल... में प्रवेश किया। कालपी में इस समय राव साहब, तात्या टोपे, बां... नवाब, मर्दन सिंह बानपुर, और शाहगढ़ के राजा पहले से ही मौजूद थे। इन सभी के बीच तालमेल की कमी दिख रही थी, इसलिये रानी ने कोंचगांव के समीप ह्यूरोज की सेना का सामना किया, जिसमें उन्हें पीछे हटना पड़ा। इस हार के बाद इन सभी के बीच कुछ सामंजस्य बना, और कालपी पर ह्यूरोज के प्रथम आक्रमण का प्रत्युत्तर देने में ये लोग सफल हुए। लेकिन 24 मई को ह्यूरोज कालपी पर अधिकार करने में सफल रहा, और राव साहब, रानी लक्ष्मी बाई, और बांदा नवाब अपनी सैन्य टुकड़ियों के साथ कालपी से निकल गये।

इस बीच तात्या टोपे कालपी से निकल कर ग्वालियर पहुंच गये थे, और उन्होंने सिंधिया की सेना और प्रजा को अपनी ओर कर

था। गोपालपुर में तात्या की भेंट रानी व अन्य साथियों से हुई, उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर के, उसे क्रांति का केन्द्र बनाने की सलाह दी। 28 मई को रानी ने सिंधिया को पत्र लिख कर सहायता मांगी, पर 1 जून को जयाजी राव सिंधिया ने क्रांतिकारियों पर आक्रमण कर दिया। रानी लक्ष्मी वाई ने अपने तीन सैनिकों के साथ इनका सामना किया, पर तात्या की नीति काम आ गई, और ग्वालियर के सैनिकों ने पाला बदल लिया। जयाजी राव और उनका मंत्री दिनकर राव आगरा भाग गये। ग्वालियर की प्रजा ने क्रांतिकारियों का स्वागत किया। सेना ने पेशवा के प्रतिनिधि के रूप में राव साहब को सलामी दी, और ग्वालियर के खजांची अमरचंद बांठिया ने राज्यकोष उनके हवाले कर दिया। 3 जून 1858 को फूलबाग में बहुत बड़ा दरबार हुआ, जिसमें तात्या को प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया, और 20 लाख रुपये सैनिकों में बांटे गये। ग्वालियर में क्रांतिकारियों की सफलता में देशभक्त राजमाता बैजा बाई के सहयोग को कम करके नहीं आंका जाना चाहिये।

कहते हैं कि रानी लक्ष्मी वाई के बहुत समझाने के बाद भी कि यह समय समय से काम लेने का है, न कि अपनी जीत का समारोह मनाने का, ग्वालियर में उत्सव का वातावरण रहा। इस ढील का लाभ उठा कर ह्यूरोज का सैन्य दल ग्वालियर पर पुनः सिंधिया को स्थापित करने के लिये पूरी तैयारी के साथ आ गया। तात्या टोपे ने सेना का नेतृत्व किया, पर उनकी सेना में शीघ्र की उथल-पुथल मच गई। तब रानी लक्ष्मी वाई ने पूर्वी छोर से सेना की कमान सम्हाली। यहां पर उनके साथ झांसी की दो वीरांगनायें मंदर और काशी थीं। उन दोनो को युद्ध कला की अच्छी जानकारी थी, और वे स्वयं तलवारबाजी की उस्ताद थीं। इन्होंने मिल कर जनरल स्मिथ की प्रशिक्षित सेना को कई बार पूर्वी द्वार से पीछे धकेल दिया। इन्होंने दरवाजे से बाहर निकल कर युद्ध किया, और लौट कर पुनः द्वार की रक्षा का भार सम्हाल लिया। 17 जून तक युद्ध रानी के पक्ष में रहा, पर 18 जून को ह्यूरोज भी स्मिथ के साथ पूर्वी द्वार पर देखा गया। उस दिन के युद्ध का वर्णन एक अंग्रेज प्रत्यक्षदर्शी ने किया है। उसने लिखा है कि रानी अपनी दोनों साथियों के साथ अंग्रेजों के सैन्य बल का सामना कर रहीं थीं, पर उनके सैनिक लगातार मारे जा रहे थे। ह्यूरोज ने ऊंटनी सवार सैन्य दल के साथ आक्रमण किया, पर रानी की किलेबंदी को तोड़ना कठिन था। लेकिन तभी अंग्रेजी फौज ने पीछे से आकर हमला कर दिया। रानी स्वयं इस दो-तरफा आक्रमण के बीच उलझ गई।

रानी लक्ष्मी वाई के साथ अब केवल उनकी दोनों वीर संगनियां और 15-20 सिपाही थे। रानी बहादुरी से तलवार चलाते हुए, शत्रु सेना के बीच से रास्ता बना कर क्रांतिकारियों तक पहुंचना चाहती थी। तभी मंदर को एक गोली लगी, और वह वीरगति को प्राप्त हुई। अंग्रेजों की सेना के बीच से बच कर निकलती हुई रानी के मार्ग में एक नाले का व्यवधान बन गया, जिसे उनका नया घोड़ा पार नहीं कर पाया। रानी पर पीछे से तलवार का एक वार हुआ, जो उनके सिर पर लगा। एक ओर वार उनकी छाती पर हुआ, जो प्राण घातक सिद्ध हुआ। इस प्रकार भारत की इस महानतम वीरांगना ने युद्ध के मैदान में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की। शत्रु सेनापतियों, अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारियों, और विदेशी लेखकों ने भी रानी लक्ष्मी वाई के युद्ध कौशल, सैन्य संचालन, और वीरता की भरपूर सराहना की है।

दो लेखक जिन्होंने रानी को प्रत्यक्ष देखा था- रानी लक्ष्मी वाई के संक्षिप्त जीवन वृतान्त के साथ येदो बहुधा अप्रचलित पर महत्वपूर्ण प्रसंग दिये जा रहे है, क्योंकि इन दोनों व्यक्तियों ने रानी को प्रत्यक्ष देखा था, और उनसे बातचीत की थी। इनमें पहला था, एक आस्ट्रेलियाई यात्री - जान लैंग, और दूसरा था महाराष्ट्र का एक ब्राह्मण - विष्णु भट्ट गोडसे। लैंग सन् 1854 में झांसी आया था, और पंडित विष्णु भट्ट ठीक भारतय प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय झांसी में उपस्थित था।

इनके लेखन से हमें रानी लक्ष्मी वाई के रूप-रंग, शारीरिक सौष्ठव, आयु, और विभिन्न अवसरों पर उनके द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों की जानकारी मिलती है। उनके प्रतिदिन के कार्यक्रम, पूजा-पाठ, और प्रशासनिक एवं न्यायिक कार्य के समय का पता चलता है। रानी का अपनी प्रजा से जो मातृवत संबंध था, वह इनके आलेखों में स्पष्ट झलकता है। व्यायाम, घुड़सवारी, और शस्त्र संचालन के दैनिक प्रशिक्षण के प्रति उनका समर्पण दृष्टिगोचर होता है। पाठकों के लिये लैंग और पंडित गोडसे के आंग्ल और मराठी भाषा में लिखे गये वृतान्त का संक्षिप्त हिंदी अनुवाद नीचे दिया जा रहा है।

जान लैंग का झांसी प्रवास और रानी लक्ष्मी बाई से भेंट (सन् 1854)- अपने झांसी प्रवास के आरंभ में लैंग ने उन परिस्थितियों का वर्णन किया है, जिनके कारण रानी लक्ष्मी बाई ने अपने दो प्रमुख व्यक्तियों को उसे ससम्मान झांसी लाने के लिये आगरा भेजा था। इनमें से एक था रानी का वित्त मंत्री और दूसरा था झांसी राज्य का प्रधान वकील। यह घटना 1854 के आरंभ की है जब कंपनी ने रानी के दत्तक पुत्र को मान्यता न देनेका निर्णय लेकर झांसी को अपने अधिकार में ले लिया था और 13वीं नेटिव इन्फेन्ट्री को झांसी में तैनात कर दिया था। लैंग के अनुसार रानी द्वारा भेजा गया पत्र सुनहरे कागज पर फारसी में लिखा गया था और इसमें उसे रानी के प्रतिनिधियों के साथ ही झांसी आने का निमंत्रण दिया गया था। झांसी राज्य की वार्षिक आय लगभग 6 लाख रुपये थी जिसमें से

राज्य के खर्चे निकाल कर करीब ढाई लाख रुपये बचते थे। राज्य के अधिग्रहण के बाद रानी को मात्र 60000 रुपये सालाना देन का प्रस्ताव था, जिसे रानी ने स्वीकार नहीं किया था और लैंग की सलाह के बाद भी उन्होंने कभी अंग्रेजी खजाने से पैसा नहीं लिया।

(इस संदर्भ में कर्नल स्लीमन (जो कि उस समय लखनऊ मे रेसीडेंट था) का मेजर मार्शल को लिखा गया एक पत्र महत्वपूर्ण है, जिसमें स्लीमन ने जबलपुर, झांसी और सागर के अपने अनुभवों के आधार पर रानी को बेहतर पेंशन देने की अनुशंसा की थीं। स्लीमन ने अवध के नवाब को हटाये जाने का भी विरोध किया था, पर तत्कालीन गवर्नर जनरल डलहौजी की नीतियों के चलते उसकी बात नहीं मानी गई थी, और अन्ततः इस नीति का दुष्परिणाम अंग्रेजों को भुगतना पड़ा था। उसने लिखा था कि हिन्दुस्तान में राजाओं के ऊपर निर्भर परिवारों की संख्या बहुत अधिक होती है, और इन लोगों के पास अन्य कोई कार्य करने का न तो अनुभव होता है न ही धन, अतः या तो इन सभी लोगों को अपने संरक्षण में नौकरी दी जाये या फिर उनकी वेतन भी रानी पेंशन में जोड़ कर दी जाये। झांसी राज्य के बड़े जमींदारों को भी उनकी भूमि के लिये उदार क्षतिपूर्ति दी जानी चाहिये। एक उदाहरण देकर स्लीमन ने लिखा था कि सागर में उसने 8 हजार रुपये प्रति माह की पेंशन वहां की रानी बाई जी को दिलवाई थीं, जबकि वहां उन पर निर्भर एक भी व्यक्ति नहीं था।)

लैंग के अनुसार रानी ने उसको एक ब्रिटिश प्रशासनिक सेवा के अफसर की सिफारिश पर गवर्नर जनरल के राज्य-अधिग्रहण के आदेश को निरस्त करवाने के उद्देश्य से बुलवाया था। उस समय अधिकांश प्रशासनिक अधिकारी राज्यों के इस प्रकार छोटी-छोटी बातों पर अधिग्रहण के विरोधी थे। विशेष रूप से झांसी के मामले में उन लोगों का मत था कि यह निर्णय अराजनीतिक, निस्सार और अन्यायपूर्ण है। राजा गंगाधर राव ने मृत्यु से एक दिन पहले ही सभी महत्वपूर्ण राज्यकर्मियों और अंग्रेज अफसरां की उपस्थिति में तात्कालिक विधिसम्मत प्रक्रिया के अनुरूप गोद लेने की कार्यवाही को संपन्न किया था। राजा ने पूरे होश में गवर्नर जनरल के स्थानीय प्रतिनिधियों की गवाही में आनंद राव बनाम दामोदर राव को गोद लिया था। इस संदर्भ में अन्य महत्वपूर्ण बात यह भी है कि लौर्ड विलियम बेन्टिंक ने रानी के पति गंगाधर राव के बड़े भाई को राजा की पदवी और राज्य के उत्तराधिकारी के चयन का अधिकार दिया था। गंगाधर राव ने मृत्यु पूर्व के आदेश में दामोदर राव के 18 वर्ष के होने तक राज्य कार्य रानी द्वारा सम्हाले जाने, और तत्पश्चात उसे सौंप दिये जाने का विधिसम्मत आदेश किया था। इस पृष्ठभूमि में लैंग की सहानुभूति रानी के साथ पहले से ही थी। एक कुलीन भारतीय रानी के लिये 5000 रुपये प्रति माह की पेंशन के बदले [illegible] को छोड़ देना कदापि संभव नहीं था।

लैंग ने लिखा है कि रानी ने अपने ज्योतिषी की [illegible] हमारे मिलने का समय सायं 5.30 से 6.30 के बीच [illegible] किया था। ज्योतिषी के अनुसार रानी को यह मुलाकात दिन [illegible] के संधि काल में करनी चाहिये। लैंग को रानी से मुलाकात [illegible] समय सूचित कर दिया गया, और इसके बाद बहुत हिचकते हु[illegible] ने इस मुलाकात के शिष्टाचार के नियमों की बात उसे बताई। [illegible] कहा कि लैंग को अपने जूते उतार कर कमरे में जाना होगा, [illegible] उसे आश्चर्य हुआ, और उसने पूछा कि क्या यही नियम [illegible] अफसरों पर भी लागू होते हैं। अन्त में निर्णय हुआ कि मैं जूते [illegible] कर ही कमरे में प्रवेश करूंगा, पर सारे समय सर पर हैट लगा [illegible] सकता हूं। लैंग के लिये यह विस्मयकारी था क्योंकि उसकी [illegible] सम्माननीय व्यक्ति के सामने हैट लगा कर जाना असभ्यता [illegible] और यह इंगलैंड के दरबार में कभी भी स्वीकार्य नहीं होता। [illegible] भरपेट भोजन कर आराम किया। रानी लक्ष्मी बाई से उसकी भेंट [illegible] विवरण का अनुवाद उसी की शैली में इस प्रकार है-

'समय पर मुझे लेने के लिये एक सफेद हाथी लाया [illegible] जिस पर चाँदी का हौदा, मखमली झूलों और सजावटों के साथ [illegible] हुआ था। महावत की पोशाक अति सुंदर थी। हाथी के साथ-[illegible] मंत्री एक घोड़े पर चल रहे थे और सारे रास्ते पर सुसज्जित सैनि[illegible] खड़े थे। मेरे रहने के स्थान से महल करीब आधे मील (लगभग [illegible] कि.मी.) की दूरी पर था।'

'महल के दरवाजे पर कुछ विलम्ब हुआ। रानी की आज्ञा आने के बाद दरवाजा खोला दिया गया। हाथी को एक आँगन में रोक कर मुझे स्थानीय लोगों के बीच उतारा गया, जो शाही मेहमान को देखने के लिये वहां उपस्थित थे। मेरी परेशानी को भांप कर मंत्री ने लोगों को दूर खड़े रहने को कहा। कुछ समय पश्चात रानी के किसी संबंधी द्वारा मुझे एक कमरे का रास्ता दिखाया गया। उसके बाद 6-7 और कमरों को पार कर हम लोग उस स्थान पर पहुंचे जहां मुझे जूते उतारने थे। कठिनाई से जूते उतार कर मैंने एक सुसज्जित कमरे में प्रवेश किया, जिसमें मुलायम और अति सुंदर गलीचे बिछे हुए थे और मध्य में एक यूरोपीय शैली की कुर्सी रखी हुई थी। कुर्सी को सुगन्धित फूलों की मालाओं से सजाया गया था। झांसी के सुगन्धित फूल प्रसिद्ध हैं। कमरे के दूसरे छोर पर एक पर्दा था जिसके पीछे से लोगों के बातें करने की आवाज आ रही थी। मैं कुर्सी पर बैठ गया और आदतन हैट उतार कर गोदी में रख लिया, पर उसी समय भेंट की शर्तें याद आने पर मैंने अपना हैट पुनः पहन लिया। मेरे हैट ने पंखे की हवा को करीब-करीब रोक लिया जिससे

मेरे माथे पर पसीना चुचुआने लगा, और मैंने अपने आप को कोसा कि मैंने मुलाकात की ऐसी विचित्र शर्तों को क्यों माना।

तभी अंदर से अनेक स्त्री स्वर सुनाई दिये जो किसी बालक को 'साहब के पास जाओ' कह कर मेरे पास आने के लिये उकसा रहे थे। कुछ समय उपरान्त एक शर्मीले, लगभग 6 वर्ष के बालक ने सकुचाते हुए कमरे में प्रवेश किया। मैंने जब उसे प्यार से अपने पास बुलाया तो वह कुछ सामान्य हुआ और मेरे पास आया। उसकी पोशाक और आभूषण देख कर मुझे यह अन्दाजा लगाने में देर नहीं लगी कि यह वहीं बालक है जिसे दिवंगत राजा ने गोद लिया था, और अब जिससे झांसी का राज्य अंग्रेज गवर्नर जनरल की कूटनीति ने छीन लिया है। बालक सुंदर और सामान्य मराठों की तरह गठीले बदन का था। मैं स्नेह पूर्वक बालक से कुछ कह ही रहा था कि पर्दे के पीछे से उभरे एक कर्ण कटु स्वर ने मुझे सूचित किया कि यह ही वर्तमान 'महाराज' हैं। आवाज की कर्कशता के कारण मुझे लगा कि यह सूचना किसी वृद्ध दासी ने मुझे दी है, पर तभी बालक ने उसके उसे ही 'महारानी' कहा, तो मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ। रानी ने मुझे पर्दे के समीप आने को कहा, और मेरे अपनी कुर्सी में व्यवस्थित हो जाने के बाद वे अंग्रेजों के अन्याय की गाथा सुनाने लगीं। जब-जब रानी वार्ता के बीच में रुकतीं तो उनके साथ बैठी हुई औरतें समवेत स्वर में विषाद व्यक्त करतीं- 'अन्याय-अन्याय', 'कैसा उत्पीड़न'। यह दृश्य मुझे किसी ग्रीक 'कारुणिक-हास्य' नाटक की याद दिला रहा था।'

'मुझे वकील ने सूचित किया था कि रानी साहिबा 26-27 वर्ष की एक सुंदर स्त्री है और मैं उनकी एक झलक पाने को उत्सुक था, और दैवयोग से ऐसा अवसर उपस्थित हो गया, जब बालक ने वापस जाते हुए परदे को जरा सा हटा दिया। एक क्षण के दर्शन ने मेरी उत्कंठा को शांत किया, और मैं यह लिखने में सक्षम हुआ कि रानी लक्ष्मी बाई एक मझोले कद की छरहरी स्त्री थीं। उनका मुखमंडल सुंदर था, जो किशोरावस्था में कहीं और अधिक आकर्षक रहा होगा, पर किसी यूरोपीय व्यक्ति द्वारा सुंदरता के आंकलन की दृष्टि से लम्बोतरा न होकर गोलाकार था। उनके चेहरे के हावभाव श्रद्धापूर्ण और बुद्धिशाली थे। बड़ी-बड़ी आंखे आकर्षक और भावपूर्ण तथा नासिका कोमल और सुगठित थी। न तो वह गौरवर्ण थीं और न ही श्यामवर्ण। आश्चर्यजनक रूप से उनके शरीर पर कर्णफूलों को छोड़ कर आभूषणों का पूर्ण अभाव था। उनके शरीर पर सफेद मलमल की अत्यन्त महीन साड़ी कस कर बांधी हुई थी। जिससे उनका शारीरिक सौष्ठव दृष्टिगोचर हो रहा था। चन्द्रमा के कलंक की भांति उनमें मात्र आवाज की कर्कशता का दोष था। पर्दे के इस प्रकार अचानक हट जाने से वे क्रुद्ध नहीं दिखीं वरन मुस्करा कर बोलीं कि हमारे इस प्रकार एक दूसरे को देख लेने से मेरी उनके प्रति सहानुभूति कम नहीं होगी और मैं उनके वाद को बिना पूर्वाग्रह अंग्रेजों तक पहुंचाऊंगा। जिसके उत्तर में मैंने कहा कि ठीक इसके विपरीत यदि गवर्नर जनरल भी मेरी तरह भाग्यशाली होता तो वह अवश्य ही झांसी आपको वापस दे देता। इसके बाद हमारे बीच परस्पर समादर सूचक संवाद का आदान-प्रदान हुआ'।

'झांसी के वाद के विषय में हमारे बीच गहराई से विचार-विमर्श हुआ और मैंने रानी को सूचित किया कि वैधानिक रूप से अब यह निर्णय गवर्नर जनरल के हाथ से निकल गया है, और रानी को एक याचिका के द्वारा दामोदर राव की गोद लेने की प्रक्रिया की वैधता को इंगलैंड की महारानी के सामने प्रस्तुत करना चाहिये। प्रतिवाद देने के बाद रानी को पेंशन लेना शुरू कर दें चाहिये, और इंग्लैंड की महारानी के निर्णय का इंतजार करना चाहिये। रानी ने मेरी यह बात स्वीकार नहीं की, और जोर देकर कहा कि 'मैं अपनी झंसी नहीं दूंगी'। मैंने रानी को स्थिति की गम्भीरता से अवगत कराया, और बताया कि कंपनी की फौज झांसी के पास ही डेरा जमाये बैठी है, जिसमें स्थानीय पैदल सेना और तोपची सम्मिलित हैं। वे कुछ ही समय में रानी की सेना को ध्वस्त कर सकते हैं, और यह संघर्ष उनके वाद को भी कमजोर कर देगा। साथ ही यह कदम उनकी स्वयं की स्वतन्त्रता के लिये भी घातक होगा। जैसा कि झांसी का वकील मुझे पहले ही बता चुका था। कि झांसी का आम नागरिक किसी भी परिस्थिति में अंग्रेजों की सत्ता स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, वही बात रानी ने भी दुहरायी।'

रात लगभग दो बजे रानी के साथ लैंग की भेंट समाप्त हुई, और वह वापस अपने डेरे पर आया। लैंग को तसल्ली थी कि वह रानी को अपनी विचार धारा के अनुसार काम करने को समझा सका पर रानी पेंशन लेने को तैयार नहीं हुई। लैंग के झांसी से विदा लेने से पहले रानी ने उसे एक हाथी, एक ऊँट, एक अरबी घोड़ा, शिकारी कुत्तों का एक जोड़ा, दो दुसाले और ढेर सारा रेशमी कपड़ा उपहार स्वरूप दिया।

1859 में इंगलैंड से वापस आकर जब लैंग ने यह वृत्तान्त लिखा है, तब उसने लिखा है कि 1857 तक रानी को झांसी तो प्राप्त नहीं हुई, पर कालान्तर में वे नाना साहब के साथ प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व करते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं।

यहां यह बताना भी आवश्यक है कि लैंग के वापस आगरा जाने के बाद ही अंग्रेजों ने उसे कोलकाता में दो माह के लिये जेल भेज दिया था, और जेल काटने के बाद वह इंगलैंड चला गया था। इस घटनाक्रम से स्पष्ट है कि लैंग से इस भेंट का रानी को कोई लाभ नहीं हुआ और वह उनका परिवाद भी महारानी विक्टोरिया

तक नहीं पहुंचा पाया।

विष्णु भट्ट गोडसे का झांसी प्रवास और रानी लक्ष्मी बाई से भेंट- विष्णु भट्ट गोडसे के सन् 1856-57 के झांसी के अनुभव, घटनाओं के लगभग पचास वर्ष बाद सन् 1907 में 'माझा प्रवास' नाम से चितामण विनायक वैद्य द्वारा छपवाये गये थे। विष्णु भट्ट और उनके साथी ब्राह्मणों का थाणे से उत्तर की ओर प्रवास का कारण, अपने यजमानों के दर्शन कर उनसे दक्षिणा आदि प्राप्त करना था। उन्हें आशा थी कि चूंकि मध्य भारत के अनेक रजवाड़े अब महाराष्ट्र निवासियों के हाथ में हैं, सो इन राज्यों में अच्छा स्वागत होगा, व दक्षिणा मिलेगी। इनके दल ने कार्तिक मास में मालवा से झांसी की ओर प्रस्थान किया था।

झांसी प्रवास की भूमिका में विष्णु भट्ट ने मोरोपंत ताम्बे की पुत्री 'मनु' या मणिकर्णिका की बारह वर्ष की आयु में झांसी के राजा गंगाधर राव से विवाह की बात लिखी है। इसके अतिरिक्त उन्होंने रानी को गौरवर्ण, छरहरे शरीर वाली कमनीय व आकर्षक युवती लिखा है। रानी से मिलने से पहिले उन्होंने झांसी का वर्णन, वहां के ब्राह्मण परिवारों का विवरण, और रानी के प्रात:कालीन पूजा-पाठ का विवरण लिखा है। विष्णु भट्ट ने लिखा है कि रानी लक्ष्मीबाई ने शत्रुक्षय यज्ञ व अनुष्ठान करवाया था, झांसी में प्रतिदिन शतचंडी पाठ होता था, गणपति मंदिर में अथर्वशीर्ष की सहस्त्र आवृतियां होती थीं, और ग्रह-नक्षत्र बदलने पर जप व दान का कार्यक्रम होता था। प्रतिदिन काशी के बड़े-बड़े पंडित होम-अनुष्ठान करते थे। उनके अनुसार मुहूर्त समय में रानी स्वयं 'श्वेत वस्त्र धारण कर के, अपने दत्तक पुत्र के साथ शत-कुंडीय अनुष्ठान में बैठी थी, और उनके पिता मोरोपंत भी वहां उपस्थित थे। कार्यक्रम की देख-देख कुलोपाध्याय लालू भाऊ ढेंकरे के हाथ में थी।

रानी लक्ष्मी बाई के प्रात:कालीन कार्यक्रम के बारे में विष्णु भट्ट ने लिखा है कि वे प्रतिदिन व्यायाम ओर मलखम्ब करती थीं, अश्वारोहण करने के बाद घोड़ों की कसरत करवाती थीं, जिसमें उनको गोल-गोल घुमाना, खंदक कुदाना, बिना सवार के दौड़ाना आदि प्रमुख अभ्यास थे। कभी-कभी हाथी की सवारी भी करती थीं। इसके बाद वे सुवासित गरम पानी से स्नान करती थीं। स्नान के बाद चंदेरी के परिधान धारण के, भस्म राग लगा कर, आसन पर बैठ कर तुलसी और पार्थिव शिवलिंग की पूजा करती थीं। पति के देहान्त के बाद वे अपने केश कटा लेना चाहती थी, पर वह संभव न हो सकने के कारण उन्होंने व्रत लिया था कि वे स्नान के बाद भस्म राग लगायेंगी, और तीन ब्राहमणों को तीन-तीन रुपये प्रतिदिन दान करेंगी। पूजा के बाद सरदारों व आश्रितों का मुजरा होता था। दोपहर लगभग बारह बजे देवार्चन के बाद भोजन का कार्यक्रम होता था।

तीन बजे रानी साहिबा पुरुष वेशभूषा में कचहरी जातीं थीं। पाजामा, शरीर पर बंडी, टोपी के ऊपर बंधा हुआ साफा, कमर पर जरी का दुपट्टा, और उससे लटकती हुई तलवार, उनका प्रतिदिन का सामान्य परिधान होता था। पतिं के देहान्त के बाद उन्होंने आभूषण पहनना करीब-करीब छोड़ दिया था, केवल बाजुओं में सोने की चूड़ियां पहनती थीं। गले में एक मोतियों की माला, और अनामिका में एक हीरे की अंगूठी अवश्य होती थीं। स्त्री वेश में उनके केश हमेशा जूड़े के रूप में बंधे होते थे, और शरीर पांढरीं शालू व चोली होती थीं।

रानी साहिबा के दरबार के द्वार पर सोने की मेहराब थी, जिसके अंदर वे मसनद लगा कर गद्दी पर बैठती थीं। द्वार पर दो पहरेदार भाले लेकर खड़े रहते थे। दींवान राजश्री लक्ष्मणराव आवश्यक दस्तावेज, आवेदन आदि लेकर बैठते थे, और उनके साथ सात-आठ कारकून या लिखा-पढ़ी करने वाले बैठे होते थे। कचहरी में दीवानी, फौजदारी, मुल्की, सभी प्रकार के मामलों पर विचार होता था। रानी लक्ष्मीबाई अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि की थीं, अत: वे कोई भी मामला पूरा सुन लेने के बाद, उस पर ताबड़तोड़ निर्णय सुना देती थीं। बाई साहेब का न्याय दक्ष और कठोर होता था। शुक्रवार और मंगलवार को पूरी तैयारी के साथ महालक्ष्मी मंदिर के दर्शन को जाने का दिन होता था।

विष्णु भट्ट ने लिखा है कि इस के बाद रानी साहिबा से वार्तालाप का अवसर नहीं मिला, केवल मार्ग में आते-जाते दर्शन हो जाते थे। विष्णु भट्ट गोडसे ने महालक्ष्मी दर्शन के लिये जाने वाली सवारी का विशद वर्णन किया है।

रानी के आश्रितों के बारे में विष्णु भट्ट ने लिखा है कि इन लोगों की खाने-पीने, कपड़े-लत्ते की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति रानी द्वारा की जाती थी, अत: इन लोगों की रानी पर पूर्ण श्रद्धा थी। बड़े-बड़े शास्त्री, विद्वान, वैदिक, याज्ञिक, झांसी में रहते थे, और पुस्तकों का बहुमूल्य संग्रह रानी के पास था। अच्छे पुराणिक, गायक, वादक, लोक कलाकार, और कारीगर झांसी में रहते थे। अनेक स्थानों से नाटक मंडलियां आकर अपने कलात्मक प्रदर्शन किया करती थी। बाई साहेब अत्यन्त निर्मल ओर निष्कपट वृति की थीं।

रानी लक्ष्मी बाई को घोड़ो की नस्लों की बहुत अच्छी पहचान थी। उत्तर भारत में घोड़ो की पहचान के लिये तीन लोग ही प्रसिद्ध थे, एक तो नाना साहेब पेशवा, दूसरे बाबा साहेब आप्टे ग्वालेरीकर, और तीसरे झांसी वाली लक्ष्मी बाई। रानी लक्ष्मी बाई के शौर्य और उनकी न्यायप्रियता का उदाहरण देते हुए विष्णु भट्ट ने लिखा है कि एक बार बरुआसागर में चोरों का बहुत आतंक हो गया था। ऐसी स्थिति में रानी स्वयं घुड़सवारी कर के वहाँ गई, और वहां

ह दिन रह कर, चोरी की समस्या का सदा के लिये निदान कर या। कुछ चोरों को फांसी दी गई, और कुछ को कैद में डाल या।

रानी के द्वार से कोई भी दरिद्र भिक्षुक खाली हाथ वापस नहीं ाता था। एक बार महालक्ष्मी के दर्शन के लिये जाते समय, दक्षिणी द्वार पर उन्हें सैकड़ों भिक्षुक मिले, जो कि ठंड से परेशान थे। उन्होंने तत्काल दीवान लक्ष्मण राव को आज्ञा दी कि सभी भिक्षुकों को एक-एक कम्बल, रुईदार टोपी, और रुईदार बंडी दी जोय। बाद में गिनती करने पर पता चला कि भिक्षुकों को लगभग चार हजार जोड़े बांटे गये थें इसके आगे पंडित विष्णु भट्ट ने झांसी के उत्तराधिकारी की समस्या और अंग्रेजों से रानी के मतभेद के बारे में लिखा है।

विश्व पर्यन्त रानी लक्ष्मी बाई की ऐसी ख्याति थी कि अमरीकी लेखक माइकल व्हाइट ने सन् 1901 में उनकी वीरता पर केन्द्रित एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा था, जिसका शीप्रक था- 'लक्ष्मीबाई - रानी आफ झांसी - दि जीन डि-आर्क आफ इंडिया'। उपन्यास के आरंभ में व्हाइट ने जो प्रशस्ति लिखी है, उसका हिंदी भावानुवाद, इस प्रकार है-

अद्वितीय ताजमहल में नहीं हैं उनके प्राण सुरक्षित,
न है स्वर्ण गुम्बद, न हैं नीलाकाश भेदती मायावी मीनार,,
महिमामय स्थल है वह, जहां सोई है, शत्रु वंदित 'वीरों में परम वीर',
श्रद्धालु हाथों ने सजाई उसकी अंत्येष्टि स्थली,
यह है वीर शिरोमणि, वीरांगना की शाश्वत पुण्य स्थली,
नदियों में पवित्र पद, पवित्र माता गंगा की इच्छित गोदी,
जिसमें बहा दिये उसके नश्वर फूल, वही बन गये उसकी समाधी,
क्या कम है कि जनमानस में चिरस्थायी है, उसकी स्मृति,
अमर जगमगाती ज्योति जैसी सर्वप्रिय वह रानी,
सौम्य-मनोहर, रण विक्रान्त, भारत की वह वीरांगना रानी।

इस उपन्यास में इतिहास और कल्पनाशीलता का अनोखा संगम देखने को मिलता है। ऐतिहासिक तथ्यों पर न जाते हुए, हमें यह देखना चाहिये कि सुदूर पश्चिम के एक देश में रानी लक्ष्मी बाई की वीरता की चर्चा थी, और उनके बारे में शोध और लेखन किया जा रहा था।

व्यास भवन
नरसिंह पुखा, छतरपुर

आजादी की आहुतियाँ वीरांगनायें

– श्रवणसिंह

विश्व विख्यात वीरांना महारानी लक्ष्मीबाई झाँसी के द्वारा स्वतंत्रता हेतु दीवानें महाराज मरदन सिंहजूदेव बानपुर को चैत सुदी 9 संवत 1914 को कछ महत्वपूर्ण पत्र प्रेषित किया गया था। महारानी ने इस पत्र में भारत से अंग्रेजों को भगा देने का महान संकल्प स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया था-

'हमारी राय है कै विदेसियों का सासंन'
भारत पर न भओ चाहिजें!!

महारानी ने इस पत्र में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' वाले नारे की अभिव्यक्ति 90 वर्ष पूर्व कर दी थी अपने इसी पत्र में उन्होंने लिखा था- 'हम फौज की तैयारी कर रहे है, अंग्रेजन से लड़बौ वहुत जरूरी है। चैतसुदी 9 भौम संवत 1914 अर्थात 1857 ई. मुकाम झाँसी (मुहर)

वर्तमान जन समुदाय, नव पीढ़ियाँ तथा भविष्य की पीढ़ियों को यह अनुमान करना सम्भवतया कठिन प्रतीत होगा कि जिन अंग्रेजों को महारानी ने भारत छोड़ने के अपने संकल्प से अवगत कराते हुये बानपुर नरेश को तदनुसार फौज तैयार करने हेतु संदेश दिया था, उन अंग्रेजों का इतना वृहत साम्राज्य था कि उनके राज में सूर्यास्त नहीं होता था। महारानी की आयु मात्र 22 वर्ष थी। इस अल्पायु में वे दृढ़तापूर्वक निःशंक अपने अनुयायियों को अंग्रेजों से युद्ध करने हेतु प्रोत्साहित कर रही थीं।

उनके सेनान्नयों में वीराग्ड.नायें सुंदर, मुंदर, जूही तथा काशी थीं। इन सेनानायकों के साथ प्रतिदिन तीन घंटे तक अश्वारोहण, भाला तलवार धनुषबाण तथा बंदूक आदिक अनेक अस्त्रो शस्त्रों का अभ्यास पुरुष वेषभूषा में किया जाता था। समस्त वीराग्ड.नायें उसमें भाग लेती थीं। मोती बाई के अंग प्रत्यंग यद्यपि मोती समान ही थे, किन्तु कार्य कठोर था, ये गुलाम गौसखान की शिष्या तथा सहायक तोप संचालिका थी। महिलाओं के साथ पुरुष सैन्य सहायक भी थे।

मुहम्मद जमाँ खाँ को कमाण्डर पद से अंग्रेजों ने हटा दिया था। महारानी के प्रति आश्वासन था। उसने ड्योढ़ीदार से आग्रह किया श्रीमंत सरकार को सूचित करो, मुंदर कुंवर ने आकर स्पष्ट किया- 'श्रीमत सरकार पूजा पर व्यस्त है।' कर्नल ने एक छाया मूर्ति की ओर संकेत कि, मुंदर ने देखा और ले आने का निर्देश दिया। मुंदर के साथ आकर वह छाया मूर्ति 'तेजस्वी तौंत्या' गुहताकार सुव्यवस्थित कक्ष में विराजमान हो गई।

महारानी अपनी तीन सहेलियों सुंदर, मुंदर और काशी के साथ आई। प्रतयक्षता दामोदर राव के यज्ञोपवीतहेतु गायन वादन हो रहा था। गुप्त रूप से विचार विमर्श और युद्ध की सामरिक संकल्पों पर मंत्रणा हो रही थी। कक्ष में नाना सा., राव सा. तात्या [illegible] सिंह तथा रघुनाथसिंह विद्यमान थे। महारानी ने विवाह के [illegible] उन्हें नौकरानी नहीं अपितु सखी सहेलियाँ पद प्रदान कर दिये [illegible] सभी महिलाओं ने जीवन पर्यन्त सखी, सहेली, सहयामी [illegible] मे सह-नार्यत्व की भूमिका प्राण पण से निभाई। जूही ने [illegible] और सिपाहियों अंग्रेजों से सम्पर्क करके जासूसी का कार्य [illegible] पूर्वक किया।

महारानी ने अपने गुरु वाला साहब को झाँसी बुलाकर [illegible] तथा मुंदर को विभिन्न सामरिक एवं यौद्धिक रणनीति अस्त्र शस्त्र सर्त्चालन आदि युद्ध कलाओं के विशेष प्रशिक्षण की व्यव[illegible] की। मुंदर, मुंदर, जूदी तथा काशी चारो महिलाये अश्वारोह[illegible] निपुण थीं। सुंदर तथा मुंदर सामरिक कलाओं में निपुण होने [illegible] कारण महारानी लक्ष्मीबाई के साथ युद्ध के समय सदैव परछा[illegible] समान साथ रहा करती थीं।

एक समीपस्थ राज परिवार के द्वारा विश्वासघात किया [illegible] और पर कोटे की दीवाल का फाटक खोल दिया गया। इस [illegible] अंग्रेजी सेना का प्रवेश किले के अंदर हो गया। भयानक युद्ध हो [illegible] था। तात्या की 20 हजार सेना और 18 तोपे बेतवा किनारे तथा [illegible] समीप मात्र 1500 अंग्रेज सिपाहियों ने खुर्राट कमाण्डर ह्यूरोज [illegible] रणनीति से तितर बितर होकर भाग खड़ी थी। अंग्रेजों की सेना [illegible] की ओर से आई थी, यदि रानी की सेना भी लगभग 2000 [illegible] आकर पीछे से अंग्रेज सिपाहियों पर आक्रमण कर देते तो विजय निश्चित थी। अंग्रेज सेना तात्या के 20000 और रानी के 200[illegible] सैनिकों में पिस जाती और अप्रैल के प्रथम/द्वितीय दिवस 1858 को ही विजय प्राप्त हो जाती।

महारानी ने झाँसी दुर्ग को छोड़ देना ही उचित समझा और सुंदर मुंदर के अतिरिक्त दीवान रघुनाथ सिंह जवाहर सिंह [illegible] कटीली तथा पठान सैनिको के साथ उन्होंने झाँसी 4 अप्रैल 1858 को छोड़ दी। भाण्डेरी गेट झाँसी पर पूर्व योजनानुसार कोरियों की सेना अंग्रेजों को युद्ध में उलझाये थी। युद्ध भी अपने चरम पर था। इसी समय भाऊबख्शी ने भाण्डेरी गेट खोल दिया इसी गेट से महारानी का काफिला किले से बाहर आ गया। पहूज नदी के समीप प्रातः कालीन बेला में अंग्रेज लेफ्टि. बोकर से आमना सामना हो गया। युद्ध प्रारंभ हो गया। यहाँ महारानी ने बोकर को घायल कर दिया, उसके सैनिक भी हताहत हुये और मारे गये - इसलिये बोकर विवश होकर झाँसी की ओर वापिस लौट गया।

इस युद्ध में महारानी का अश्व आहत हो गया। आगे चलकर
न के समीप सहसा खड़ा हो गया। और अपनी महारानी की
कातर दृष्टि से इक टक उनकी छव निहारता रहा, महारानी ने
आकर उसे प्रेम से थपथपाया। वह गिर पड़ा, उसका शरीरान्त
या। मुंदर ने भी अश्व को अंतिम विदाई दी, और समीपस्थ
से एक अश्व तुरंत महारानी को अर्पण किया गया। मुंदर ने
की परीक्षा ली। काफिला कालपी की ओर अग्रसर हुआ।

कालपी में आकर महारानी ने सामरिक व्यवस्थाओं का जायजा
या, मुंदर और सुंदर दोनों साथ रही। सैनिकों में कुछ सुधार किये।
लपी में महारानी तथा उनके काफिले का आश्रय स्थल अत्यन्त
सुदृढ़ चन्देल कालीन भव्य दुर्ग रहा। यहाँ पर उन्हें ज्ञात हुआ कि
राव साहब की अज्ञानता पूर्ण उदासीनता के कारण ताँत्या जो सेना
और 18 तोपें चरखारी नरेश से ले आया था, उसे झाँसी महारानी की
सहायतार्थ भेजने का आदेश देने में उन्हें लगभग 2 माह का समय
लग गया था। यह सहायता झाँसी यदि समय से पहुँच जाती तो
अंग्रेज को परास्त किया जा सकता था।

कालपी में भी 16 मई से 23 मई तक अंग्रेजों से भीषण
संग्राम हुआ, अति विश्वसनीय सटीक युद्ध रणनीति बनाई गई थी।
अंग्रेजों की तीन छावनी तीन नायकों के अधिनायकत्व में यमुना
किनारे गुलौली के समीप आवासित रहीं। घमासान युद्ध होता रहा।
किसी विश्वासघाती ने अंतिम दिवस की सटीक रणनीति की सूचना
अंग्रेजों को दे दी, परिणाम स्वरूप कालपी में पराजित होना पड़ा।
अंग्रेजों की निश्चित पराजय को विश्वासघात ने विजय में परिवर्तित
कर दिया।

अपनी सखी सहेलियों के पश्चात् महारानी जी गोपालपुरा
होते ग्वालियर आई। ग्वालियर में उन्होंने सुंदर मुंदर जूही आदि के
साथ तथा अन्य अनुचरों को भी साथ में लेकर ग्वालियर के आस-
पास के क्षेत्र का भलीभाँति सर्वेक्षण पूर्णरूपेण किया। महारानी के
मस्तिष्क में सदैव अंग्रेजों को पराजित करने विषयक योजनाएँ
निर्मित होती रहतीं थी।

राव साहब अपने रास रंग आदि में मस्त रहते थे। महारानी
साब ने राव साहब को विलासितापूर्ण दिनचर्या त्याग कर अंग्रेजों से
युद्ध करने की तैयारी करने हेतु परामर्श दिया। भ्रमण के समय रानी
साहब की भेंट एक अवधूत संत बाबा जी से हुई। वार्ताक्रम में बाबा
ने कर्मण्ये वाधिका रस्ते का उपदेश दिया। महारानी सा ने कहा- युद्ध
के समय आपको यहाँ निवास करने में कठिनाई आ सकती है।' बाबा
जी ने शाँत भाव से उत्तर दिया- 'यथा नियोक्ति अस्मि करोमि।'

17 जून को युद्ध प्रारंभ हो गया। अंग्रेजों से घमासान युद्ध
हुआ। सुंदर मुंदर आदि सभी लड़ रहे थे। जुही भी युद्ध कर रही
थी। अंग्रेजों ने आज का युद्ध शीघ्र समाप्त कर दिया। आज मुख्य
तोपची गुलाम गौस खान ने सराहनीय युद्ध किा गुलमुहम्मद ने भी
घमासान युद्ध किया। उन्हें महारानी ने कुँवर की उपाधि प्रदान की।

18 जून 1858 को सामरिक संसाधनों की कमी हो गई थी।
ग्वालियर राज्य की सेना का अधिकांश भाग अंग्रेजी सेना के प्रति
सहयोग भाव से युद्ध कर रहा था। महारानी झाँसी के प्रमुख सहयोग
सुंदर, मुंदर जूही, मोतीवाई दिमान रामचन्द्र सिंह देशमुख, दिमान
रघुनाथ सिंह तथा गुलमुहम्मद आदि विशेष थे। प्रमुख तोपचालक
गुलाम गौस खान तथा गुल मुहम्मद के साथ-साथ अद्वितीय योद्धा
500 पठान थे।

रानी के आदेश देने पर मुंदर ग्वालियर नरेश की अश्वशाला
से अश्व लाई, महारानी ने कहा- 'यह अश्व देखने में तो अच्छा है,
किन्तु यह अश्व अस्तवल प्रेमी है, अडियल रुख अपना सकता है,
किंतु विवशता है, अब कोई विकल्प भी तो नहीं है काम तो इसी
घोड़े से लेना है। महारानी ने रामचन्द्रख से कहा- 'आज तुम दामोदर
राव को अपनी पीठ पर सावधानी से रखना। यदि मेरा शरीर शांत हो
जाये, तो इसे किसी तरह दक्षिण भेज आना। और विधर्मी मेरे शरीर
को न छूने पाये। मुंदर की आखें अश्रुपूरित हो गई। युद्ध प्रारंभ हो
गया।

घमासान युद्ध हो रहा था। ग्वालियर की सेना ने विश्वासघात
किया। ताँत्या आदि समस्त सरदार युद्ध कर रहे थे। पठान जी जान से
युद्धरत थे। महारानी का रौद्ररुप अवलोकनीय था। अश्व की लगाम
मुँह में दोनों में तलवारें चलाती हुई, वे अंग्रेज सेना की काटन करती
हुई, काटती चीरती हुई युद्धरत थीं। जूही घिर गई थी, वीरगति को
प्राप्त हुई। मारा मारी मची हुई थी, महारानी के पास 20-25 पठान
सैनिक ही शेष रह गये थे। अंग्रेजी सेना तथा ग्वालियर राज्य की सेना
दोनों विरोध में हो गयी थीं। रघुनाथसिंह और गुलमुहम्मद भी
अंग्रेजों की सेना की काटन कर रहे थे।

रानी ने मुंदर को संकेत किया कि वे रामचन्द्र राव की पीठ
पर बैठे दामोदर राव की सुरक्षा में रहें। श्रीमंत दामोदराव को जी भर
के देखा, महारानी के सीने के नीचे एक वार हुआ, पलट के तत्काल
रानी ने उस संगीन धारक सैनिक के दो टुकड़े कर दिये। महारानी के
घाव से खून बहने लगा। इसी समय पिस्तौल की एक गोली मुंदर के
सीने में लगी।

महारानी ने एक ही वार से पिस्तौल वाले सैनिक को काट
दिया, और दिमान रघुनाथ सिंह से कहा- 'मुंदर को सम्हालो।
दिमान रघुनाथ सिंह ने अपना साका उतारा और मुंदर के घाव पर
भलीभाँति बन्ध लगा दिया। और आगे बढ़ गये। सोन रेखा वाले के
समीप महारानी का अंग्रेजों से आहत अवस्था में भी युद्ध हो रहा था।

रानी ने नाला पार करना चाहा, अश्व को संकेत किया, एड़ लगाई थपथपया पुचकारा किन्तु सब व्यर्थ--- अश्व दो पैरों पर खड़ा हो गया, कल्पनातीत स्थिति रही होगी--- महारानी घायल हैं, अंग्रेज सैनिकों से युद्ध भी कर रही हैं, और अश्व साथ नहीं दे रहा है। महारानी को एक गोली जाँघ में लगती है, उसके भी उन्होंने दो टुकड़े कर दिये। एक तीव्र वार महारानी के सिर पर लगा, सिर का एक भाग कट गया, दाहिनी आँख बाहर निकल आई। गुल मुहम्मद को गुस्सा आया उसने समीपस्थ सभी अंग्रेज सैनिक मार दिये, यह स्थिति भयानक समझकर वहाँसे सभी अंग्रेज भगा गये।

रामचन्द्र ख देशमुख ने अश्व से गिरने के पूर्व ही महारानी लक्ष्मीवाई देवी महान को सादर सम्हाल कर नीचे उतारा॥ गंगदास बाबा की कुटिया के समीप अन्तिम संस्कार का उत्तम प्रबंध किया। महारानी का अंतिम संस्कार करते समय श्रीमंत बालक दामोदर राव विलाप करने लगे। उन्हें समझाया- 'अभी आराम कर रही है, जाग जायेंगी। दामोदर राव को दिमान रघुनाथ सिंह समीप ही अं लिटा गये लेकिन वह रोता ही रहा। उससे कहा- 'वे अ बैठेंगी।'

महारानी का अंतिम संस्कार करने के पश्चात ही मुंदर क अंतिम संस्कार कर दिया गया।

1857 की क्रांति का जज्वल्यमान सितारा तो अस्त हो किन्तु उसकी आया से 90 वर्षों में ही स्वतंत्रता प्राप्ति से भा जनता के मन मस्तिक पर महारानी की महानता की महक आ अस्तित्व में है।

क्रमशः

श्रवण सिंह सेंगर पी.सं
गुरसराँय (झां
मो. 8318162
9415589

अजयगढ़ का किला

-एम.एन. [illegible]

बुंदेलखण्ड के अंतर्गत पन्ना जिले की तहसील अजयगढ़ में [illegible] 'अजयगढ़ का किला' प्रसद्धि है।

जिला मुख्यालय पन्ना से अजयगढ़ 38 किमी. दूर स्थित है। [अज]यगढ़ का किला कालिंजर दुर्ग के समकालीन है। इसका निर्माण [नव]वीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के मध्य किया गया था। [विं]ध्याचल पर्वतीय शिखर समूहों से कटए शिखर पर निर्मित यह [कि]ला अपने गौरव को प्रदर्शित कर रहा है। इस किले का निर्माण [चं]देल राजाओं के समय किया गया था। कला की दृष्टि से अजयगढ़ [कि]ला अद्भुत है। शिल्पकारों ने इस किले पर अपनी विलक्षण छैनी [च]लाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया है। पुराने समय में यह 'जय [दु]र्ग' के नाम से जाना जाता था।

ऐतिहासिक दृष्टि से ज्ञात होता है कि इस किले का नाम [किसी] चन्देल राजा के नाम पर पड़ा था। वुभाई के बुंदेलखण्ड राज [गजे]टियर सन् 1907 में उल्लेख है कि अजयगढ़ का किला विजयपाल [नामक] चन्देल राजा के समय बना और उसके नाम पर चला। [महाराजा] छत्रसाल ने अपने राज्य को तीन हिस्सों में बांटा था। [अज]यगढ़ उनके पुत्र जगतराज के अधीन आया। इसके पश्चात् अराजकता [का वि]स्तार हुआ, अनेक अवसरवादियों ने लाभ उठाया। बुंदेलखण्ड [में हि]म्मत बहादुर और अली बहादुर भाईयों के अनेक हमले हुए। [ज]हां-तहां छोटे-छोटे शासक बन बैठे। इसी हलचल के मध्य अजयगढ़ [तथा] उसके आसपास का क्षेत्र एक लुटेरे लछमन दौआ के हाथ आ [ग]या, किन्तु सन् 1803 में जब अंग्रेजों ने बुंदेलखण्ड पर अपना [अ]धिकार स्थापित किया, तब राजा बखत सिंह ने अपना अधिकार [प्र]स्तुत कियां अजयगढ़ लछमन दौआ के अधीन था, बखत सिंह को [दे]ना चाहा, परन्तु लछमन दौआ ने सन् 1809 में अंग्रेजों से युद्ध किया, जिसमें हार हुई और अंग्रेजों ने अजयगढ़ को बखत सिंह को दे दिया।

अजयगढ़ से लगभग एक किमी. दूर किला स्थित है। विशाल शिलाओं को काटकर दो जल कुण्ड बनाए गए हैं। दोनों कुण्ड एक दीवार से विभाजित हैं। इनमें एक गंगा कुण्ड और दूसरा जुमना कुन्ड कहलाता है। यहां से लगभग 150 सीढ़ियां चढ़ने के बाद किले का मुख्य द्वार मिलता है। रास्ते में अनेकों पुरातत्वीय मूर्तियां शिलालेख आदि पड़े हुए हैं। किल के भीतर द्वार में एक लोहे की विशाल तोप पड़ी है। जिस पर निम्न दोहा लिखा हुआ है :-

> गाढ़े गड़ दाहन दहन दाहन पर पुर याम।
> माधौ नृप की तोप यह अरिदल गंजन नाम।।

पास ही एक बुर्ज बना है जहां से यह तोप चलाई जाती थी। बुर्ज के स्थल से लगे भवनों के खंडहर एवं भग्नावशेष फैले पड़े हैं। एक आहते में अष्ट भुजी गणेश जी की मूर्ती तथा हनुमान जी की मूर्ती दर्शनीय है। समीप ही विशाल जैन मूर्तियां महत्वपूर्ण हैं। सरोवर के दूसरे किनारे पर अजयपाल का मंदिर स्थित है। सम्भवतः इन्हीं के नाम पर जय किला नाम पड़ा है। यहां महादेव जी का पंचमुखी लिंग तथा वराह की मूर्ति देखने योग्य है।

यहां से कुछ ही दूरी पर रंगमहल पहुंचा जा सकता है। यहां चार खजुराहो शैली के बड़े मंदिर बने हुये हैं। इन मंदिरों के बाहरी हिस्से गिर चुके हैं। जिनमें अनेक कलापूर्ण मूर्तियां बनी हुई हैं। रंगमहल का तोरण द्वार कलात्मक ढंग से निर्मित किया गया है। इससे कुछ ही दूरी पर तरौनी जाने का द्वार है, जिसमें अनेक मूर्तियां तथा शिलालेख दर्शनीय हैं। तरौनी द्वार से किले की चार दीवारी से नीचे उतरकर नीचे की ओर [illegible] गुफा पहाड़ को काटकर बनाई गई है। यहां भी दो जल कुण्ड बने हुए हैं। गुफा में भगवान [illegible] की मूर्ति स्थापित है।

इस किले में कितनी ही मूर्तियां, शिलालेख खण्डहरों में दबी पड़ी है। जो अपने अंक में इतिहास की कहानी छिपाये हुए है।

अंग्रेजों ने यद्यपि अजयगढ़ के साथ [illegible] राजा बखत सिंह को जागीर में दिये थे, परन्तु किले पर उन्होंने अपना अधिकार बखत सिंह के वंशज रणजीत सिंह को दिया था। कवि गाह का यह छंद पठनीय है-

> पत्थर के महल और दुमहल बने पत्थर के
> पत्थर के नक्श पै बहुत बेलबूट हैं?
> पत्थर के चौक और दालान जहां पत्थर के
> पत्थर परनाल के विशाल बटकूट हैं,
> पत्थर का काम नाम चूने का नेक नहीं
> बाबू कवि गाह भनत पत्थर बेलबूट हैं,
> श्रीमत सवाई श्री भूपत रनजीत सिंह
> तिनके सनाम किला अजयगढ़ मजबूत हैं।

किला को ओबेराय समूह को लीज पर दिया हुआ है। परन्तु आज तक पुरातत्वीय सामग्री से भरपूर अजयगढ़ किला अपनी प्राचीन भव्यता के आंसू बहा रहा है।

अब दरकार है मध्य प्रदेश शासन पर्यटन एवं पुरातत्व विभाग से कि इसका जीर्णोद्धार करवाए ताकि किला (दुर्ग) पुनः अपना पुराना स्वरूप लेकर बुंदेलखण्ड की गौरवशाली धरोहर ताकि प्राचीन पहचान बनी रहने के साथ ही देश-विदेश से पर्यटक आकर धरोहर को देखकर गौरवान्वित हो सके तथा विश्व स्तर पर इसका प्रचार प्रसार हो सके।

श्री गोविंद मंदिर के पीछे
गोविंद वार्ड, पन्ना
मो. 9993806132

यमुना की लहरें

-पं. ओमप्रकाश ति

शरद पूर्णिम की स्वच्छ चॉदनी फैली हुई है और मैं सूर्य तनया और महाराज यमराज की बहन कालिंदी के तट पर वृन्दावन में खड़ा पानी में चंद्रमा की छवि देखकर आनंद विभोर हो रहा था। मन में आ रहा था कि आज मेरे पुण्य फलों से यमुना नहीं अपितु उनकी भक्ति के प्रवाह रूप दिव्य विग्रह का दर्शन हो रहा है। यह सोच ही रहा था कि मन न जाने कब इनके तट पर होने वाले 'महारास' की स्मृतियों में खो गया। अचानक ही यमुना तट से आने वाली दुर्गन्ध ने मेरी तंद्रा को भंग कर दिया और मन इतना व्यथित हुआ कि मेरी आँखें नम हो गई। मुझे अपने पूज्यपा गुरुदेव आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी का सुनाया हुआ संस्मरण उनायास ही याद आ गा। गुरुदेव ने कहा था कि- 'मैं सपत्नी गंगोत्री यमुनौत्री की यात्रा पर गया था। वहाँ से लौटकर जब मथुरा, वृन्दावन के दर्शनों हेतु आया और प्रात: काल के समय समुना जी में स्नान करने गया तो मैंने तो श्रद्धाबस स्नान कर लिए और जैसे ही तुम्हारी माता स्नान हेतु गई तो वह वहाँ से अश्रुधारा बहाते हुए वापिस आई, मैंने पूछा क्या हुआ वह-सुबह यह रोना कैसा? तब उन्होंने बड़े ही दुखी मन से कहा कि- 'कहाँ तो में इनके उदगम हिमालय के यमुनौत्री हिमनद से निकलकर हँसती, इठलाती अपने घर में उछलकूद करती स्वच्छ निर्मल जल से आपूरित इसी यमुना के वचपन की चुलबुलाहट देखकर आयी हूँ किन्तु यहाँ तो मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है। इस जल में स्नान करना तो दूर दो-एक छीटे अपने ऊपर डालने अथवा हस्त प्रक्षालन करने का मन तैयार नहीं है, न ही मुझे विश्वास ही हो रहा है कि यह वही यमुना है।

इस संस्करण के मस्तिष्क पटल पर आते ही मैं भी यमुना मईया के अतीत में खो गया। मैंने आँखें मीचली और मुझे ऐसा लगा मानो मैं स्वप्नलोक में पहुंचा गया। वहां से देखने लगा कि यह तो वही यमुना मईया है जिसे वायु, मत्स्य, कूर्म, ब्राह्मण्ड और वामन पुराणों में यमुना तथा भागवत में कालिंदी कहा हैं स्कन्द पुराण में इसको- भाग्या, सूर्य पुत्री, सूर्य तनया, कालिंदी, कलिन्द तनया, पूर्व वाहिनी आदि नामों से पुकारा जाता है। साथ ही यूनानी विद्वानों ने जोबरेस, ओमनेस, डायमोना आदि नामों का उल्लेख किया हैं।

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के दसवें सूक्त में कहा गया है कि- 'त्वष्टा देवता की दो सन्तानें हुई एक त्रिशिरस नाम का लड़का और दूसरी सरण्यू नाम की लड़की। सरण्यू का विवाह जल के धूरक देवता आदित्य-विश्ववान के साथ हुआ। आगे चलकर इनसे यम और यमी दो जुड़वा सन्तानें हुई। ऋग्वेद में कहा गया है कि- 'पुलुकामोहिमर्त्य:।' अर्थात मनुष्य वासनाओं का पुंज है इसीलिए एक दिन एकान्त में यमी की पशुप्रवृत्तियाँ अपने बड़े भाई के समक्ष सिर उठाती हैं। किन्तु उसका बड़ा भाई यम विवेकशी तथा अपने वड़ो के आशीष तथा देवकृपा से उसने संयमशीलता करके प्राप्त की है। वह इसका पुरजोर विरेध करते हुए यमी समझाता है। वह कहता है कि 'नीति के ज्ञान और संयम के कठिनतम परिस्थितियों को जीता जा सकता है।' साथ ही और अंतर्द्वन्दों से ग्रसित व्यक्ति को एक दृढ़निश्चिय बोल की आवश्यकता होती है जो मैं कर रहा हूँ, इसलिए तुम विवे काम लो इस तरह की शब्दावली की बौछार से यमी को झकझो है तब यमी की अधोगामनी कामनाएँ संयम के स्वरूप अपने यम के शब्दों से प्रताड़ित प्रेरण बन गई और वे अपनी ऊर्ध्व उदात्य अभिलाषाओं की प्राप्ति के लिए 'पूर्ण पुरुष श्री कृष्ण' की अर्धांगिनी बनने हेतु दृढ़निश्चिय कर तपस्या करने लगीं यह वृ भागवत महापुराण में विस्तार से हैं। भगवान ने तपस्या से प्र होकर यमी को आशीर्वाद दिया की अभी तुम नदी रूप में यमुना नाम से अवतरित हो ओ। मैं तुम्हें द्वापर युग में जब श्री कृष्ण के रू में अवतार लूंगा तब तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूँगा तथा तुम्हें मैं अपनी पटरानी बनाऊँगा और यमी कालिंदी के नाम से पटरानी हुई। तभी तो हरगोविन्द गुप्त जी ने लिखा है-

'यमुना है न मात्र पानी की धवलधार।
कण-कण में उसके है युग-युग का कीर्तिमान।
वाणी का विलास या कि कल्पना न कवियों की।
साक्षी है लोक श्रुति, स्मृति पुराण वर्तमान।।
कैसा भी देशकाल स्थिति परस्थिति हो।
पात्र शक्ति अनुरूप देती वह दिव्यदान।।
कूजते करौदी कुंज, जामनी लताएँ झूम।
पाषाणी प्रवाह पुंज करते पौरुष प्रदान।।'

किन्तु जब हम यमुना के भौतिक स्वरूप को देखते हैं तो हम पाते है- श्यामुना का उद्गम हिमालय की खूबसूरत वादियों में स्थित पश्चिम गढ़वाल के बर्फ से ढँके शृंग बंदर पूँछ (सुमेरू) के उत्तर पश्चि में स्थित कालिंद से हुआ है। कालिंद पर्वत से उद्गम होने के कारण इसे 'कालिंदी' कहा जाता है। इसका वास्तविक स्रोत इस पर्वत के ऊपर बर्फ की एक जमी हुई झील और हिमनद चंपासर ग्लेशियर है। यहां कहा जाता है कि महाभारत कालीन भीम ने त्रेतायुग के कपिराज हनुमंत लाल जी की पूँछ को हटाकर उनके बल की परीक्षा लेने का वृथा प्रयत्न किया था। इसलिए भी इसे बंदर पूँछ कहते हैं।

यहाँ से निकलकर ऊँचे नीचे, पथरीले रास्तों पर कल-कल ता प्रवाह देखकर तो लगता है कि एक अल्हड़ बालिका उछलती-ती, दौड़ती चली जा रही है। इस छल-छलाते प्रवाह को देखकर ग भी लगता है कि यह अल्हड़ बालिका की चपल दौड़ ही नहीं वरन एक दुष्कर मार्ग कैसे पार किया जाता है इसका मानो शिक्षण ले रही हो, इस शुद्ध निर्मल जल ओर स्वच्छन्द प्रवाह के र्शन करने लाखों लोग इस यमुनोत्री धाम की यात्रा करते हैं। यात्री हाँ पर स्थित यमुना देवी के मंदिर तक ही आते हैं। इससे ऊपर की चढ़ाई दुरूह है। इस मंदिर तक की यात्रा की चढ़ाई का मार्ग अत्यंत मनोरम है आसपास हिमाच्छादित पहाड़ियों के मनोहारी दृश्य यात्रियों की सारी थकान को हर लेते हैं। यहाँ यमुना नदी के मंदिर के अतिरिक्त सबके आकर्षण का केन्द्र इस बर्फीले स्थान में 'सूर्यकुण्ड' का होना है। यह कुण्ड गर्म पानी का है, जिसका पानी 80 डिग्री सेल्सियस तक हमेशा गर्म रहता है। यहाँ आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु इसके जल में स्नान करता है तथा इस कुण्ड में आलू और चावल पकाकर इसको समीप में स्थित एक शिला जिसे 'दिव्यशिला' या 'ज्योति शिला' भी कहते है कि पूजाकर प्रसाद अर्पित करता है तथा बाद में माँ यमुना को नैवेद्य अर्पित करता है। यहाँ पर यमुना जी का जल बहुत साफ पर कुछ नीला कुछ सांवला है इसलिए इसे यहाँ 'काली गंगा' भी कहते है।

इस पहाडी मार्ग पर चलते हुए इसमें छोटे-छोटे झरने व नदियाँआकर मिलती है। यहाँ से यह देहरादून की घाटी में पहुँच जाती है। यहाँ टौंस (तमसा) नदी से इसका संगम होता है। यहाँ टौंस सर्वस्व अर्पित कर देती है तथा बायी ओर छोटी-छोटी नदी करेन, संगर भी आकर मिलती है। यहाँ से कुछ दूर तक शिवालिक पहाड़ियों में घूमकर अपने पिता के घर आँगन से विदा लेकर पीहर छोड़ देती है और बेटी सयानी और गंभीर हो जाती है। यहाँ से यह पश्चिमी उत्तर-प्रदेश के मैदानी इलाके में प्रवेश करती है। यहाँ से सिंचाई के लिए नहरें निकाली गई हैं। नहरों में जल का दान करने के बाद धीरे-धीरे कल-कल करती चलने लगती है तब कहा भी है-

'कल-कल करत कलिंदजा, कुंज करील कुटुम्ब।
काक कोकिला कूजते, काम कृपाणु कदम्ब।।'

यहाँ से आगे बहुत दूर तक हरियाणा और उत्तर प्रदेश की सीमा बनाते हुए चलती है। जिसके एक ओर पानीपत और रोहतक जिले हैं तो दूसरी ओर मुजफ्फरपुर नगर और मेरठ जिला है। यह वही पानीपत है जहाँ तीन-तीन बार भारत के भाग्य का फैसला हुआ, पास ही कुरूक्षेत्र में महाभारत का युद्ध लड़ा गया, उस समय उसने जो वीरों का सिंहनाद और पराक्रम देखा तो दूसरी ओर छल कपट के साथ तार-तार होती संस्कृति की चीखें तो आज भी सुनाई दे रहीं हैं। इस के साथ-साथ श्री कृष्ण के मुखार्विन्द से नकली गीता को भी तो आत्मसात किया था। फिर अभी-अभी मेरठ में भी 1857 की क्रांति की उठी चिन्गारियों को भी निकट से देखा थ। यह सब करूण दृश्य देखते सुने इस देश की वर्तमान राजधनी दिल्ली की ओर चली यहाँ चलते हुए दोनों ओर सुनहरें पीले रंग के गेहूँ के खेत दूर-दूर तक फैले हुए हैं। आकाश में लुका छुपी चल रही है बादलों को सूरज की किरणों ने झालर पहना दी है इस रमणीक वातावरण का आनंद लेते हुए यमुना चल रही थी जैसे ही वजीरावाद के पास वैराज पहुँची तो इसे रोककर दिल्ली वासियों के जल प्रबंध के नाम पर उसके दुर्दिनों का उदय यहीं से हुआ वह बेचारी किंकर्तव्य विमूढ़ देखती रह गई और यहाँ से आगे काली स्याही से लिखी गई उसकी ऐसी कहानी शुरू हुई कि उसके अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लगने लगे, यमुना की इस दुर्दशा की व्यथा को जल पुरूष के रूप में विख्यात रैमन मैगमेसे पुरस्कार के सम्मानित राजेन्द्र सिंह जी ने व्यक्त करते हु कहा है कि- 'यह यमुना नदी नहीं यमुना नाले की कहानी है क्योंकि यहाँ दिल्ली में ही 22 किलोमीटर के रास्ते में ही 18 बड़े-बड़े गन्दे नालों का जल जबरन इसमें मिलाया जाता है। इसमें सबसे बड़ा योगदान औद्योगिक प्रदूषण, पूजन सामग्री के अपशिष्ट का है।'

सिटिजन फोरम फौर वाटर डेमोक्रेसी के समन्वयक एस.ए. नकवी कहते है कि- 'दिल्ली से चम्बल तक की यात्रा में सबसे ज्यादा प्रदूषण दिल्ली, आगरा और मथुरा से होता है। इस कारण बजीरावाद के बाद के पानी से आक्सीजन तो है ही नहीं।'

पर्यावरण विद् अनुपम मिश्र का कहना है कि- 'हिन्दुस्तान का मौसम चक्र इतना अच्छा है कि इसमें वर्ष में एक बार वर्षा ऋतु में तो नदियों का प्रदूषण दूर होता ही है, वर्षा का जल इसे पूर्ण स्वच्छ बना देता है किन्तु हम तो इसे फिर से गंदा कर लेते है।'

यहाँ दिल्ली में उसने राजाओं के राजसी ठाठबाट भी देखे तथा इसे कितनी ही बार उजड़ते और बसते हुए देखा तथा कितने शूरवीरों को देखा और साहित्य के दीवानों को भी देखा। चन्द्रवरदाई ने यही पर 'रासो' की रचना की, फिर गालिब, मीर, सौदा और मोमिन एक से बढ़कर एक शायर भी देखे। यहीं हिन्दी जन्मी उर्दू परवान चढ़ी और यहाँ की कला में यहाँ का लालकिला, यहाँ के भवन, मस्जिदें, मंदिर, गुरूद्वारे, मीनारें, मकबरे आदि-आदि क्या भूलूं क्या याद करू की स्थिति में रह जाती हूँ।

यहाँ से यमुना 'ब्रज' में प्रवेश करती है। ब्रज अर्थात उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले का यह भू-भाग जहाँ श्री कृष्ण ने पअनी लीलाएँ की। ब्रज में प्रवेश शेरगढ़ नामक स्थान से होता है यहाँ कुछ दूर तक पूर्व दिशा में बहकर मथुरा तक दक्षिण दिशा में बहती है। मार्ग में इसके दोनों ओर पुराण प्रसिद्ध वन-उपवन तथा श्री कृष्ण के

लीला स्थल विद्यमान हैं- महाप्राण निराला जी ने लिखा है।

'यमुने! तेरी इन लहरों में किन अधरों की आकुल तान।
पथिक प्रियासी जगा रही है, उस अतीत के नीरव गान।।
सजनि कहाँ वह अब बंशीवट, कहाँ गये नट नागर श्याम।
चल चरणों का व्याकुल पनघट, कहाँ आज वह वृन्दावन धाम।।'

हाँ! आज न यहाँ वन उपवन हैं न वन में कुलाचे भरते मृग समूह। हाँ यहाँ ही कृष्ण कन्हैया गाये चराते, रास रचाते और अपूर्व आनंद बिखेरते रहे है। यहाँ अकेले गोकुल, वरसाना, वृन्दावन में श्री कृष्ण ने ग्यारह वर्ष और बावन दिनों तक लीलाएँ की जिसे देख-देख आत्म विभोर हो जाते हैं यहाँ मथुरा से आगे यमुना तट पर बायी ओर गोकुल और महावन जैसे धार्मिक स्थल है। यहाँ से चलकर आगरा जिले में प्रवेश कर यहाँ एक झील भी बनाती है जिसे 'कीठम' झील कहते है। जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है। यहाँ से 'रूनकता' के किनारे बनखण्ड है जो 'सूरदास वन' कहलाता है। यह सूरदास जी की तपस्थली रही है। इसके समीप 'गोधात' नाम का प्राचीन धार्मिक स्थल है। यहाँ पहुँचकर विश्व प्रसिद्ध 'ताज महल' का दीदार करती हुई पूर्व की ओर बढ़ जाती है। यहाँ से आगे जा कर इसमें नदियाँ भी आकर मिली है। जिसमें चम्बल, पहुज, कुवारी, सेंध। यह बुंदेलखण्ड का 'पंचनद' कहलाता है। यह प्रसिद्ध तीर्थ उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के जगम्मनपुर से तीन किलोमीटर उत्तर की ओर 'कर्णखेरा' क्षेत्र जो महाभारत के प्रसिद्ध दानवीर कर्ण का स्थल है यहाँ कर्ण दान यज्ञादि पुण्य कर्म किया करता था। यहाँ से आगे यह कहते हुए चली-

'ओ दादुर, मीन मकर, उरग, कर्कट मेरे जीवन श्रृंगार।
तुम सब के बलबूते ही तो, कच्छप' पर हो रही सवार।।'

यह कहते हुए कच्छप पर सवार होकर चली तो हमीरपुर नगर के आगे 'पत्योरा' नामक ग्राम में मछली पर सवार होकर आ अपनी छोटी बहन बेतवा (वेत्रवती) से मिलकर आगे पूर्व की ओर बहते हुए बढ़ी तो इसके परिदृश्य का वर्णन महर्षि बालमिकि जी ने रामायण में करते हुए कहा-

'एसा सा यमुना रम्या दृश्यते चित कानन।'

अर्थात- यह विचित्र कननों से शोभित रमणीक यमुना नदी है। आगे चलकर बाँदा जिले के 'चिल्ला' नामक स्थान पर 'केन' नदी (शुक्तिमती) आकर मिलती है यहाँ एक विशाल संगम स्थल है। इस संगम स्थल पर ऐसा प्रतीत होता है। कि सूर्य भी अपनी पुत्री भानुज की चंचल लहरों को अपनी स्वर्णिम किरणों से चुंबन लेते हुए दुलार रहा है। यहाँ से प्रयागराज की यात्रा पर बढ़ जाती है, उसे व्याकुलता है अपनी बड़ी बहन से मिलने की क्योंकि पीहर में तो वे दोनों आस-पास ही रही है किन्तु आज तो 1376 किलोमीट वसात्रा करके आ रही है, यहाँ आकर वह देख रही है कि 'घड़ि पर सवार होकर गहराई का भाव लिए उसकी बड़ी बहिन दौड़ी आ रही है चूँकि वह तो कच्छप पर सवार है इसलिए वह धीरे-ही चल पा रही थी देखते ही बड़ी बहन 'गंगा' ने उसे हृदय से लिया दोनों एकाकार होने के लिए व्याकुल हो उठी। एक रहस्य बात और है सुनों उसकी जो एक परम प्रिय बहन 'सरस्वती' वैदिक काल के बाद से लुप्त हो चुकी है वह भी नीचे-नीचे पुन से आकर दोनों से अलिंगनबद्ध हो गई हैं इसीलिए इन तीनों क का यह अद्भुत मिलन ऐसा हुआ कि लोगों ने इसे 'त्रिवेणी' क शुरू कर दिया और इस मिलन स्थल को 'संगम' नाम दे दि त्रिवेणी तीर्थ प्रयागराज भी तीर्थ ही नहीं तीर्थों का राजा 'तीर्थरा कहलाता है। तभी तो यहाँ प्रति बारह वर्ष में प्रसिद्ध तथा विश्व क सबसे बड़ा 'कुंभ मेला' लगता है तथा छः वर्ष में अर्द्धकुंभ का मेल लगता है।

इस संगम स्थल पर यमुना जी ने गंगा जी को अपना जल ही नहीं दिया वरन अपना जीवन भी दे दिया जिसे देखकर श्री रामचन्द जी ने वन गमन के समय सीता जी से जो कहा उसका वर्णन रघुवं महाकाव्य में कालिदास जी ने इस प्रकार से किया है-

'देखो, यमुना की सांवली लहरों से मिली हुई उजली लहरों वाली गंगा जी कैसी सुंदर लग रही है। कहीं ऐसा लगता है कि मानों सफेद कमल के हार में नीलकमल गूंथ दिये हों, कहीं छाया में विलीन चाँदनी धूप-छाँव सी छिटकी हुई सी लगती है। कहीं जैसे शरद के आकाश में बादलों की रेखा के भीतर से नील गगन छलक पड़ता हो। जो गंगा-यमुना के संगम में नहाते हैं, वे ज्ञानी न भी हों तो भी संसार से पार हो जाते है।'

तभी तो यजुर्वेद में महर्षि वत्स ने भी कहा है कि-

'उपवर गिरीणाँ सगड.में च नदीनाम।
धिया विप्रो अजायता।।'

अर्थात- पर्वतों की गुफाओं में नदियों के संगम पर निर्मलमन पुरुषों में 'दिव्यज्ञान' उत्पु होता है।

नदियों के बढ़ते प्रदूषण से मन दुखी तो है किन्तु आज भी वह कह रहा है कि-

'आज नहीं तो कल होगा, हर मुश्किल का हल होगा।
विश्वास मुझे है अपनों पर, नदियों का जल 'निर्मल' होगा।।'
शुभमस्तु नित्यम्।

पर्यटक ग्राम- कुण्डेश्वर धाम
जिला- टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9630078557

लोक जीवन का आधार है लोक कथायें

- सुधा रावत शर्मा

साहित्य समाज का दर्पण होता है। इस कथ्य में कहीं भी न्तु, परन्तु जैसे शब्दों की कोई गुन्जाइस नहीं है। यदि ऐसा होता हम युगों पुरानी अपनी संस्कृति के बारे में कैसे जान पाते? और क साहित्य के बारे में जो यह बात सोलह आने चोखी साबित ती है। लोक जीवन का यर्थाथ तो हमें लोक साहित्य से ही प्राप्त ता है। लोक साहित्य की यत्रा अनन्त की यात्रा है। इसका कोई पार हीं है। और सुविधा की बात यह है कि यह यात्रा स्वयं अपने ही र-आँगन से प्रारंभ होती है। सब जानते है सच्चा साहित्य पुस्तकों में नहीं लोकमानस के कण्ठों में विद्यमान है। जो सतत सिध्या पर रमण करता है। यही कारण है कि लोक बोलियों का प्रभाव सीधा अन्तर-मन को छूता है। बोलियों में जो चुटीलापन है, जो कोमल आकर्षण है वह खड़ी बोली या अन्य भाषाओं के नहीं मिलता। भाषा की लटक-कहन, मुहावरों कहावतों का चलने बात-बात पर किस्सा कहानियों का प्रचलन, यही सब तो विशेषता है लोक साहित्य की जो मौखिक य वाचक परंपरा में क्षेत्र विशेष की पहचान बन जाता है। लोक जन जीवन का सही परिचय लोक साहित्य से ही मिलता है। फिर चाहे वह लोक गीतों के माध्यम से हो, मुहावरों-कहावतों, लोक पर्वों अथवा किस्सा-कहानियों य लोक कथाओं के माध्यम से। लोक संस्कृति में लोक कथायें लोक जन-जीवन का आधार रहीं है। इनमें जीवन के हर पहलू हर रंग को विस्तार देने की पूर्ण क्षमता है पहले गाँव-गली, चौपाल, खेत अथवा मुहल्लों में घर के बाहर अलाव को घेर कर बैठे आग तापते लोग या चाँदनी में बैठ कर हवा खाते (मौसम के हिसाब से) हुये लोग इन लोक कथाओं का आनंद लेते थे। और उन्हीं की सीखों से सुसंस्कार ग्रहण करते थे।

लोक कथा कहना और सुनना दोनो प्रमान्चकारी है। अतीत से साक्षात्कार और परम्पराओं का दर्शन करातीं यह लोक कथायें हमने अपनी नानी-दादी से, हमारी नानी-दादी ने अपनी नानी-दादी से और उनकी नानी-दादी ने अपनी नानी-दादी से सुनी। अर्थात पीढ़ी दर पीढ़ी कण्ड-दर कण्ठ जो कथायें हम सुनते आ रहे है वे ही लोक कथाओं के अंतर्गत आती है। इनकी पृष्ठ भूमि चाहे सामाजिक हो, धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक ही क्यों न हो पर ये होती बहुत ही ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद य मनोरंजक है।

बुंदेलखण्ड में लोक कथाओं का बहुत प्रचलन है। यहाँ गाँवों के मुहल्ले में समूहों में बैठ कर लोग लोक कथाओं का आनंद लेते दिखते थे। इन कथाओं को कहने-सुनने का अंदाज भी अलग ही होता है। लोक कथा सुनाना हर किसी के वश की बात नहीं है। हर गली-मुहल्ले में दो-एक लोग ही ऐसे होते हैं जिन्हे कथा-कहानियां सुनाने में महारथ हासिल होती है। जैसे हमारे मुहल्ले में रंजन फुआ जो डूब कर लोक कथायें सुनाती थी वैसे कोई दूसरा नहीं सुना पाता था। उनके इतना कहते ही- ऐसे-ऐसे एक हते राजा-- हम लोग सांसों को रोक कर आश्चर्यचकित हो बस उनके चेहरे के हाव-भाव देखते थे। हंसाने पर आ जायें तो रजन फुआ हंसा-हंसा कर लोटपोट कर दें और रूलाने पर आयें तो सबको भावुक कर दे। सबकी आँखें नम हो जायें तो कहानी में ऐसा डायलॉग चिपका दें की हम लोग आँखों में आँसू भरे-भरे ही ठहाका लगाने लगें।

अधिकांश लोक कथाओं में राजा-रानी, राजकुकार-राजकुमारी को माध्यम बना कर न्याय-अन्याय, तीज-त्योहार, खेलकूद, कूटनीति, लोक-कलाओं आदि का बहुत ही सजीव और मनोहरी चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। राक्षस राक्षसनियों के जादुई कारनामों को दर्शाते हुये अन्त में बहादुर राजकुमार द्वारा राक्षस का अन्त और राक्षस के चंगुल में फंसी राजकुमारी को सुरक्षित उसके राज्य में पहुंचाना जैसी रोमांचक कहानियाँ बालमन पर नैतिक और व्यवहारिकता की छाप छोड़ती है। दूसरी ओर श्री राम सीता, श्री राधा कृष्ण श्री गौरा शिवजी पाण्डव कौरव, नल-दमयन्ती आदि आदि धार्मिक पात्रों को लेकर अनेक धार्मिक ग्रन्थों वेद पुराणों के कथानको पर आधारित लोक कथायें भी लोक जीवन में प्रचलित हैं। जिनका उद्देश्य प्रत्येक वर्ग के लोगों को अपने धर्म, धार्मिक, ग्रन्थों और देवी देवताओं के बारे में सही जानकारी प्रदान करना है।

तीसरा पक्ष है पशु-पक्षियों को मुख्य पात्र बनाकर सुनाई जाने वाली लोक कथायें। इनमें लड़ई दाऊ जू बंदरा मम्मा, लुखरो काकी, चतुर लोमड़ी, बिल्लो मौसी जैसे अनेक पात्रों से सजीं मनोरंजन से भरपूर कहानियाँ होती हैं जिन्हें सुनकर बच्चे-बड़े सब लोटपोट तो होते ही हैं साथ ही शिक्षा और प्रेरणा भी ग्रहण करते हैं।

इसी क्रम में मिट्ठू-मैना, कौआ गोरइया, गलगल, कोयल आदि पक्षि पात्र भी अपने मजेदार कारनामों से बच्चों में सुसंस्कार और सभ्यता के बीजारोपण करते हैं।

और तो और लोक कथाओं में तो काठ का घोड़ा, मिट्टी का हाथी और सोने और पत्थर की (मूर्तियाँ) राजकुमारी जैसे जड़-पात्र भी चलते बोलते है। उड़न खटौल पर बैठ कर राजकुमार दूर देश की यात्रा करने निकल पड़ता है। तो जादूगर दरीय फर्श पर ही लोगों को बिठा कर उड़ जाता है। इसी तरह नाँगरानी अपनी मणी द्वारा और परियाँ जादू की छड़ी घुमाकर चमत्कार करती है और बच्चों को मनचाही और दुर्लभ वस्त्र में भी प्रदान करती है। लोगों के दुःख दर्द

और परेशानियों को पल भर में दूर कर देती है। और यह चमत्कार सिर्फ वाल कथाओं में ही नहीं होते वरन् महिलाओं द्वारा कही गई अनेक कथायें भी ऐसे चमत्कारों से भरी हुई होतीं है। 'वाँड़े भैया' जैसी लोक कथायें इसी क्रम में आतीं है।

बुंदेलखण्ड के लोक जीवन में तो हर दिन तीज-त्योहार होता है यहाँ पूरणमासी से अमावस्या तक। और अमावस्या से पूरणमासी तक हर तिथि में एक पर्व, व्रत य त्योहार होता है। और ध्यान देने वाली वात यह है कि हर पर्व की अपनी एक अलग कथा है।

इसके अलावा बुंदेलखण्ड क्षेत्र में कुछ लोक देवी-देवता भी महत्वपूर्ण स्थान रखते है। जिसमें दशारानी वहुत ही प्रसिद्ध देवी है। इनका व्रत दस दिन तक चलता है। अत: दस दिन वरावर रोज एक कथा कही जाती है। इस कारण दशारानी की ही अनेक कथायें प्रचलित हैं। इन लोककथाओं और अन्य व्रत-उपवासों से जुड़ी लोक कथाओं में लोक जीवन का रहन-सहन, रीति-नीति, संस्कृति-संस्कार, परम्परायें, लोक-व्यवहार और लोकाचार सव कुछ समाहित और प्रतिविंवित होता है। वुंदेली नारी के संसंस्कारों और सुघड़ता के पीछे यही लोक कथायें होतीं हैं। तीज-त्योहारों और व्रत उपवासों से जुड़ी हुई ये कथायें जीवन मग में पग-पग पर उनका मार्ग दर्शन करतीं है। तथा कठिन समय में वड़ी से वड़ी मुसीवत व समस्याओं से निपटने का सम्वल प्रदान हैं। ये लोक कथायें ही हैं जो अनेक जीवनोपयोगी रहस्य और समाधा अपने आप में छुपाये हुये हैं। जिन्हें यथा समय वार-वार दुहराकर महिलायें इनसे ज्ञान प्राप्त करती हैं। इन लोक कथाओं के माध्यम से ही रिस्तों के महत्व को जाना समझा जा सकता है। संवेदनहीन मनुष्य को भी संवेदनशील वनाती हैं ये लोक कथायें। अर्कमण्य को कर्मठ वनाना और कर्तव्यहीन को कर्तव्य वोध कराना भी इन लोक कथाओं का उद्देश्य है।

ये लोक कथायें किसने गढ़ी होंगी, पता नहीं। पर क्यों गढ़ी यह स्पष्ट है। प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन वहुत कम थे। और जो थे वे हर किसी को उपलब्ध नहीं थे। इस कारण ज्ञान वर्धन, स्वस्थ मनोरंजन तथा समय के सदउपयोग की दृष्टि से ही इनका आविर्भाव हुआ होगा। जो वाद में लोक जीवन का एक अंग वनी और अन्ततः लोक जीवन का आधार वन वैठीं।

हर क्षेत्र में हर वर्ग के लोगों का मार्ग दर्शन करती ये लोक कथायें अव लुप्त प्राय: हो गई हैं। आज के भौतिकवादी युग की आपाधापी में लोक साहित्य की कुछ विधायें, खासकर लोक कथायें कहीं गुम हो गईं? पता नहीं। लोक गीत तो आकाशवाणी पर कभी-कभी पारंपरिक रूप में सुनाई दे जाते है। तो ग्रामीण जन-भाषा में लोकोक्तियाँ और मुहावरों का प्रयोग करते हुये लोग भी मिल जाते हैं। पर लोक कथायें सुनने के लिये कान तरसते है। इस विडं[illegible] लोक कथाओं की उपेक्षा माने य लोगों के पास समय का [illegible] कारण कुछ भी हो पर एक जीवंत विद्या का इस तरह विसराया [illegible] शुभ लक्षण नहीं है।

आज के वच्चे टी.वी. और इंटरनेट पर कुछ भी उल्टा-[illegible] देख सकते है पर ज्ञानवर्धक कथायें नहीं सुन सकते। सीधा दो[illegible] पीढ़ी को भी नहीं दिया जा सकता। आज के माँ-वाप [illegible] अभिभावकों के पास समय ही कहाँ है कि वे वच्चों को [illegible] कथायें सुनायें वह तो टी.वी. और मोवाइल का दामन वच्चों [illegible] पकड़ा कर अपना पल्ला झाड़ लेते है। यही कारण है कि [illegible] सुसंस्कार की जगह कुसंस्कार ग्रहण कर रहे हैं।

लोक साहित्य के विलुप्त होने का एक वड़ा कारण सं[illegible] परिवार का विघटन भी है। जब दादा-दादी, नाना-नानी को परि[illegible] में ही नहीं रखा जाता फिर लोक कथायें सुनाये कौन, यही कारण [illegible] कि आज के बच्चों में अपराध वोध वढ़ रहा है। वे रिस्तों के म[illegible] को समझ ही नहीं पा रहे है और वे हिंसक और अनुशासनहीन हो [illegible] है। सुसंस्कारों के अभाव में कुछ बच्चे कब अपराधी वन जाते [illegible] किसी को पता ही नहीं चलता।

यदि हमें अपने आस-पास स्वस्थ वातावरण निर्मित करना [illegible] हिंसा, अपराध, हत्या, स्वार्थ और पतन के गर्त से अपनी भावी पी[illegible] को वचाना है तो लोक संस्कारों को अपनाना होगा। हम अपनी जड़ों से कट कर कभी पनप नहीं सकते, इति तो वहुत देर की वात है।

लोक साहित्य इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। फिर चाहे वह लोग गीत, लोक काव्य, लोक पर्व लोकोक्तियाँ अथवा लोक कथाओं के रूप में ही क्यों न हो। तो आइये आज हम एक संकल्प लें कि हम अपने बच्चों को प्रति दिन कम से कम एक लोक कथा अवश्य सुनायेंगे। क्या कहा- आपको लोक कथायें नहीं आतीं? तो एक काम कीजिये गाँव से अपने माता-पिता यानी बच्चों के दादा-दादी को अपने पास बुला लीजिये वे इस समस्या के साथ-साथ आपके जीवन की अन्य अनेक समस्याओं का समाधान भी चुटकी बजाते कर देंगे।

यदि हम लोक कथाअकों को अपने जीवन में महत्व दें और उनका प्रचलन पुन: प्रारंभ कर सकें तो यह एक सार्थक पहल होगी। हमारा थोड़ा सा प्रयास आने वाली पीढ़ी में लोक साहितय के प्रति अभिरुचि भी बढ़ायेगा और अपनी लोक संस्कृति से वे परिचित भी होंगे।

एफ7 गीत बंगलो, फेस 2
दुर्गेश विहार जे.के. रोड
भोपाल- म.प्र.
मो. 8889114193

भोज परमार कालीन धारा नगरी का जनजीवन क्रम साहित्य कला और संस्कृति

– नरेश कुमार पाठक

भोज परमार कालीन मालवा एक आदर्श हिन्दू राज्य था और धारा नगरी उसकी आदर्श राजधानी थी। लम्बे समय तक भोज परमार ने धार्मिक मान्यताओं के मध्य सहिष्णुता और समन्वय के साथ यहां के जन जीवन को समृद्ध संतुलित और जीवन्त बनाए रखा। भोज परमार शैव था, परन्तु अन्य धर्मो के प्रति समान समादर रहा यू तो धर्म युग की आधार शिला था। जन जीवन के लिए आचरण संहिता व्यवहार शास्त्र और कर्म का क्षेत्र था, लेकिन धारा नगरी के लोग अपने धर्म पालन के लिए स्वतंत्र थे उन पर मान्यताओं को लादा नहीं गया।

1. धार्मिक मान्यताएँ

शैव-शाक्त परंपरा- राजा भोज के समय शैव-शाक्त सिद्धांतों का व्यापक प्रसार हुआ। धारा नगरी में शिव के विभिन्न रूपों की आराधना प्रचलित रही। अनेक शैवाचार्य यहाँ आते रहे। पाशुपताचार्य भाव बृहस्पति को वाराणसी से धारा नगरी बुलाकर राज्याश्रित किया और उसे इस नगर के शैव-साधन केन्द्रो को व्यवस्थित किया गया। भाव बृहस्पति शैव मत का महान ज्ञाता थ। धाराधीश उसको सम्मान देते रहे। प्राचीनकाल से ही मालवा में शैव सम्प्रदाय के अनेक आश्रम और मठ थे। उनके सफल संचालन के लिये धारा नगरी से पर्याप्त सहायता भेजी जाती थी। उज्जयिनी के नूतन और चण्डिकाश्रम नामक मठ अपने तपस्वी शैवाचार्यो और महिला साधिकाओं के लिए विख्यात थे। केदार राशि ओर मल्लिकार्जुन नामक शैवाचार्यो के प्रति जनता में असीम श्रद्धा थी। पांचरात्र, मत्तमयूर कापालिक तथा पाशुपत एवं लकुलीश को मानने वाले अनेक उपसंप्रदाय भी थे। लिम्बार्था और चर्चिका के उपासकों की भी संख्या विशाल थी। शक्ति पूजकों की कमी नहीं थी। उज्जयिनी तो पाशुपती का तीर्थ ही था। महाकालेश्वर मंदिर में ध्वजारोहण महोत्सव मनाया जाता था। धारी नगरी में शिव मूर्तियों के प्रतिष्ठा महोत्सव राजकीय संरक्षण में भी आयोजन होते थे।

वैष्णव सम्प्रदाय- शैव-शाक्तों के समान ही विष्णु के उपासको की धारा नगरी में कमी न थी। लेकिन विरोध की अपेक्षा समन्वय और सहिष्णुता का वातावरण था भोज परमार के ताम्रलेख शिव की स्तुति से आरंभ होते थे वही उनके अन्त में गरूड़ आकृति की मुद्रा अंकित की जाती थी। हरिहर प्रतिमाओं की पूजा का व्यापक प्रसार था। ब्रम्हा व विष्णु के विविध स्वरूपों की भी पूजा की जाती थी। बाध से प्राप्त और ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित वि.स. 1210 (1153 ईस्वी) के पादपीठ लेख वाली ब्रम्हा की दो प्रतिमाओं की भरमार महामण्डलेश्वर यशोदव कीवहन यामिनी ने बनवाया था। धाराधीश भी स्वयं को विष्णु का अवतार कहलाने में अपना गौरव मानते थे। धारा नगरी में वैष्णव संप्रदाय के देवालय थे। भक्ति मार्गी अनेक छोटे-छोटे संप्रदाय भी जन्म ले रहे थे।

जैन धर्म और धारा नगरी- भोज परमार कालीन मालवा में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार की केन्द्र बिन्दु धारानगरी ही रही। जैन धर्म धर्मोपदेशक चतुर्मुख अपरानाम वृषभनदाचार्य का शिष्य प्रमाचन्ड तो धाराधीश भोज परमार का विशेष कृपा पात्र ही रहा है। मेरूतुंगाचार्य ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'प्रबंध चिन्तामणि' में लिखा है कि जैन कवि धनपाल की प्रतिमा से प्रभावित होकर राजा भोज जैन धर्म की ओर विशेपरूप से आकर्पित हुये थे। यद्यपि यह सच है, कि राजा भोज मृत्यु पर्यन्त शैव बने रहे परंतु जैन धर्म के प्रति उन्हें लगाव अवश्य था। जैन धर्म के महान लेखक अभयदेव का जन्म मालवा की धारा नगरी में ही हुआ था। उसका पिता वही का एक सम्पन्न जैन धर्मेतर व्यापारी था।

सोलह वर्ष की अल्प आयु में ही जिन धर्म में दीक्षित होने के पश्चात अभयदेव को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित किया गया और जिनेश्वर सूरि द्वारा वि.स. 1088 (ई.स. 1031 ई.) में उसे सूरिपद भी प्रदान कर दिया गया।

धारानगरी का जन जीवन धार्मिक मान्यताओं की विविधता हो चुका था, और भगवान बुद्ध विष्णु अवतार माने जा चुके थे, किन्तु धर्म के नाम पर सब कुछ पवित्र रहा हो ऐसा बात नहीं थी। शैवो को तांत्रिकता मंदिरों मे देवदासियों की उपस्थिति कामशास्त्र का शिल्पाकन धार्मिक नैतिक के अभिशाप थे। अंधविश्वास अंधवृद्धा, धर्म भीरूता परलोक की चिन्ता और ज्योतिप में अधिक निष्ठा भी सामान्य जन जीवन का अंग थी। सती होने पर स्वर्ग की प्राप्ति एक विश्वास था। स्वप्न विचार शकुन शास्त्र, महूर्त ओर जादू टोनो में जन साधारण को बढ़ी श्रद्धा थी। अनेक प्रकार के देवी देवताओं की मूर्तियां घरो तथो देवालयों में जाती थी।

2. सामाजिक परिस्थितियां

भोज परमार के समय धारा नगरी में भी अन्य स्थानों की भांति वर्ग और जाति प्रथा पर आधारित समाज व्यवस्था थी। लेकिन

सामन्तीय परम्पराओं के अनुरूप समाज व्यवस्था परिवर्तित हो रही थी। डॉ. बुद्धप्रकाश ने लिखा हे कि मध्यकाल में पुरातन आदर्श समाप्त हो चुके थे। शासन वर्ग अपनी मान मर्यादाओं और प्रतिष्ठा के मूल्यों को जन साधारण से अलग मानता था।

अभिजात्य वर्गकी प्रतिष्ठा- अभिजात्व वर्ग समाज का प्रमुख अंग था। उसमे खण्डित संप्रभुता को भावना भरी हुई थी। रनिनास विलासिता की सभी तत्कालीन सुविधाओं से पूर्ण थे। विभिन्न देशो की सुंदरियों से महल सुशोभित रहते थे। धारा नगरी से प्राप्त। वीरही के राउलवेल शिलालेख में कवि रोढ़ा ने अनेक प्रकार की नायिकाओं का नखशिव वर्णन किया है। संभवत: वह किसी के रनिवास की सुंदरियों का वर्णन है, जो धारानगरी में निवास करती है। विलास एवं रति क्रीड़ा के लिए जल क्रीड़ा, मोहन ग्रहों एवं ऐसे भवनों तथा उद्यानों की व्यवस्था थी जो नग्न सौंदर्य और कामों तेजक प्रतिमाओं से पूर्ण रहते थे। वेश्यालयों में जाना सामन्तीय गुण था। राजा भोज ने अपने कथा ग्रन्थ श्रृंगार मंजरी में धारानगरी के ऐसे वेश्यालय का विशुद वर्णन किया है।

राज दरवार में भ्रामक आकर्पक था सोने, चांदी और जवाहरातों की चमक, दमक, नृत्यांगनाओं और कोकिल कण्ठी परिचारिकाओं का लास्य प्रशस्तिकारों के अतिशयोक्ति गान आदि को शान माना जाता था। शरदोत्सवों व मदन महोत्सवो को बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित किया जाता था। धारा नगरी के मदन महोत्सव का सुंदर वर्णन बाल सरस्वती मदन द्वारा लिखित नाटिका 'पारिजात मंजरी' में उपलब्ध है। समाज की वर्ण व्यवस्था कठोर थी धारा नगरी में अनेक जातियों एवं वर्णों के लोग निवास करते थे। पुरोहितो धर्मध्यक्षे एवं राजगुरु परिवार के ब्राह्मण श्रेष्ट माने जाते थे। बाहर से आये हुये अनेक विद्वान ब्राह्मण भी धारानगरी में निवास करते थे। व्यापारियों के निगम एवं श्रेणियां थी। शूद्रों की स्थिति अच्छी नहीं थी।

स्त्रियों की दशा- धारा नगरी में नारियों को सम्मान था। शीला भट्टारिका, विकट नितम्बा, विजयांका प्रभुदेवी समुद्रा और अवन्ति सुंदरी आदि विदुषी महिलाएं रही की थी। नृत्य संगीत और अन्य कलाओं का ज्ञान इनकी विशेषता मानी जाती थी। वेश्याएं भी इन कलाओं में पारंगत होती थी। विभ्रमशीला और श्रृंगार मंजरी धारा नगरी की ऐसी ही सर्वगुण संपन्न वेश्याएँ थी। बहु विवाह की प्रथा थी। फिर भी नारी का सम्मान करना पुरुषों का गौरव था। राज कुमारियों के विवाह कई बार वैवाहिक संधियों के रूप में किये जाते थे। स्त्रियां धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में पुरूषों की भांति अधिकार रखती थी। दास प्रथा प्रचलित थी। सामन्तों के घरों मे दास दासियों का अभाव नहीं था। इस प्रकार धारानगरी का सामान्य जन-जीवन सुखी और समृद्ध था।

3. साहित्य कला और संस्कृति

धारानगरी में मुख्यत: भोज के समय साहित्य-कला और संस्कृति के लिए भारत वर्ष की प्रतीक बन चुकी थी। यहाँ लक्ष्मी श्री सरस्वती दोनों साकार हो उठी थी। प्राचीन समय में उज्जयिनी की विदग्ध-परिषद की भांति भोज परमार के समय धारा में एक 'विद्वदमण्डली' थी। वह उच्चस्तरीय साहित्यकारों को सम्मान व प्रोत्साहन प्रदान करने के साथ-साथ रचनाओं की समीक्षा और उनका शब्दश: परिशीलन भी करती थी।

शिक्षा व्यवस्था- धारानगरी में देश के महान विद्वानों को राज्याश्रय प्राप्त था। जो विद्वान धारा नहीं आए वे पछताते रहे। ऐसे साहित्य-रस सिक्त वातावरण के लिए उच्चस्तरीय शिक्षण व्यवस्था आवश्यक थी। परमार नरेशो ने इसीलिए इस नगरी को शिक्षण केन्द्र बनाने में पर्याप्त उदारता दिखलाई थी। धारानगरी का सरस्वती सदन दूर-दूर तक ख्याति प्राप्त विद्यापीठ का। राज्य में अन्यत्र भी विद्यालय थे जिनमें भट्ट गाविन्द जैसे कुशल शिक्षकों की नियुक्ति की गई थी। शिक्षा के विषय व्यापक थे। विद्यालयों में अध्ययन अध्यापन की सुविधा के लिए बड़ी-बड़ी शिलाओं पर काव्य-ग्रंथ एवं व्याकरण के नियम खुदे हुए थे। भोजशालासे प्राप्त शिलांकित ग्रंथ और नागबंध आदि इसके प्रमाण है।

दर्शन, तर्क शास्त्र, काव्य व नाटक, गणित ज्योतिष, वैद्यक, व्याकरण, अलंकार, शब्दशास्त्र, भाषाशास्त्र, संगीत, शिल्प, राजव्यवहार एवं न्यायशास्त्र की उच्च शिक्षा धारा नगरी की विशेषता थी। इनके अतिरिक्त हस्तिशास्त्र तथाशालिहोत्र जैसे विषयों का भी यहाँ अध्ययन किया जाता था। धारा नगरी में पुस्तकालयों की भी व्यवस्था अवश्य रही होगी, परन्तु उज्जयिनी के अवंति कोण पुस्तकालय के उल्लेख के अतिरिक्त धारानगरी में किसी पुस्तकालय का पता नहीं चलता। भोज परमार स्वयं बड़े अच्छे साहित्यकार ओर कला मर्मज्ञ तथा लेखक रहे हैं। शिक्षण संस्थाओ में छात्रों के निवास की व्यवस्था थी। उससे संबंधित व्यय की पूर्ति हेतु भोज परमार द्वारा भूमिदान अथवा ग्रामदान दिए थे। महाराजा भोज परमारके स्वरचित ग्रंथ व टीकाएं इस बात के प्रमाण है, कि राजकुमारी को भी विविध विषयों की उच्चस्तरीय शिक्षा दी जाती थी।

शासकीय संरक्षण में चलने वाले विद्यालयों के अतिरिक्त भी चौत्यालयों, मंदिरों तथा विद्वानों के घरोंपर पठन पाठन होता था। धनी मानी व्यक्तियों द्वारा छात्रों को अनेक प्रकार से सहायता दी जाती थी, विद्यादान का बहुत बड़ा महत्व था। धारानगरी विविध विषयों पर शास्त्रार्थ, गोष्ठियों एवं परिचर्चाओं के आयोजन किए जाते थे। विद्वत्परिषद या पण्डित सभा के समक्ष प्रतिद्वन्दी विद्वान को पराजित करने पर जय पत्र भी प्रदान किए जाते थे। अनुश्रुतियां तो ऐसी भी है

धारा नगरी का निवासी कुविन्द काव्य रचना करता था और जुलाहे तक व्याकरण की बारीकियों से परिचित थे।

भाषा तथा लिपि- धारानगरी में साहित्य सृजन का माध्यम संस्कृत और प्राकृत भाषाएं थी, लेकिन जब सामान्य की बोली अपभ्रंश थी। प्राकृत में महाराष्ट्री प्राकृत का अधिक उपयोग किया जाता था। जैन मुनियो के प्रवचन प्राय: अपभ्रंश में ही होते थे। लिपि की दृष्टि से देवनगरी का कुठिल रूप ही प्रचलित था। धारानगरी से प्राप्त तत्कालीन अभिलेख इसके प्रमाण है। पृष्ठ मात्रा का प्रयोग किया जाता था। भोज शाला के सर्प वध शिलालेख में जो तंत्र व्याकरण का अंग है, यही क्रम दिया हुआ है। कई अक्षरों के लिखने की शैली आज की देवनागरी से वहुत भिन्न थी।

साहित्य साहित्यकार और राजकीय संरक्षण- धारानगरी अपनी साहित्यिक गतिविधियों की द्रष्टि से पूरे भारत में विख्यात रही है। स्वयं भोज ने साहित्यकारों को उदार संरक्षण दिया। भोज पमार स्वयं उच्च कोटि के साहित्यकार थे। भाषा सौष्ठव, पदलालित्य और सरल किन्तु स्पष्ट भावाभिव्यक्ति उस युग की रचनाओं का प्रमुख गुण था। आगम, दर्शन एवं तर्क शास्त्र, छन्द व श्रव् काव्य, पिगल शास्त्र व अलंकार तथा व्याकरण और कोश रचना में यह नगरी अग्रणी थी। यह नगरी विद्वान सहृदय, कला-कोविदरसिक सुकवियों की लीला स्थली थी। कवि कालिदास जैसे विद्वानो का परिवार धारानगरी का निवासी वन चुका था। उसकी शिष्य परंपरा में अनेक साहित्यकार हुए जिन्होंने अपनी कृतियों से वाग्देवी की अभूतपूर्व सेवा की। राजदरवार साहित्यकारों से भरा रहता था। इन साहित्यकारों की रचना आज भारतीय साहित्य का वहुत वड़ा अंग है। संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रश साहित्य का इतिहास धारानगरी से साहित्यकारों और इस नगरी में रचित साहित्य से भरा हुआ है। वस्तुत यह कहा जाय कि मध्यकालीन साहित्य के इतिहास का सर्वाधिक गौरवशाली अध्याय धारानगरी की देन है तो अतिशयोक्ति न होगी। हजारों ग्रन्थों की रचना इसी नगरी में की गई थी। कोई विषय या शास्त्र ऐसा नहीं है जिसके विद्वान यहां न रहे हो। डॉ. डी.सी. गांगुली काकथन है, कि धारा धीश द्वारा साहित्यकारों को जो उदार संरक्षण प्रदान किया गया उसके कारण ही परमारों का मालवा एक आदर्श राज्य कहलाता है। वस्तुत धारानगरी विद्या और ज्ञान की मध्यकालीन काशी ही थी। यहां का सरस्वती सदन तो मानों सरस्वती का वास्तविक निवास ही था। सारे साहित्यकार उसके कण्ठभरण थे। किन्तु शाहना भवितव्यता।

4. धारी नगरी का वास्तु शिल्प

भोज परमार कालीन धारा नगरी के प्रत्येक ध्वंसावशेष और पुनर्निर्मित स्मारक इस बात के साक्षी है कि समरांगण सूत्रधार के आधार पर परिष्कृत धारानगरी मध्यकाल की एक विशाल नगरी थी। अनेक चौरास्ते, यंत्र धारागृह, राजप्रसार और वाजारो से भरा यह नगरी तत्कालीन स्थापत्य कला का अनूठा उदाहरण थी। अनेक देव प्रासाद इनके गौरव था। नगर को सुंदर सुरक्षित और सुदृढ़ दुर्ग के भीतर बसाय गया था। प्राप्त भग्नावशेष यह बताते हैं कि यहां सान्धार और निरूधार प्राकर के देव प्रसाद बने हुए थे। निरंधार प्रकार के मंदिरों में अर्ध मण्डप, मण्डप और गर्भगृह के अतिरिक्त सान्धार प्रासाद में मण्डप और गर्भगृह के मध्य थोड़े से अन्तर के साथ एक प्रद क्षिणापथ रहता था। इस क्षितिजीय निर्माण के अतिरिक्त पूरे प्रासाद के स्थापत्य को द्रष्टि से अधिष्ठान मण्डोवर तथा शिखर के अंतर्गत समाहित किया जाता था। निर्माण की द्रष्टि से उक्त सरलतम विधान में परिवर्तन भी हुए। रथ और सलिलान्तर के समावेश के साथ शिल्प वैभव व्यापक, विस्तृत और अलंकृत होता गया। चन्द्रशालाएं शिखरों एवक उरूशृंगों से मिलकर सौन्दर्य वृद्धि के उद्देश्य से निर्मित की जाने लगीं। क्षितिज के समानांतर तथा लम्बरूप में निर्मित उक्त प्रकार के देवालय नगर को गरिमा के अनुरूप एक मधुरिम लय को निर्माण कर देते थे। प्राप्त उल्लेख एवं अवशेष इस तथ्य के समर्थक है कि मूल मंजरी के चारों ओर लघु मंजरियों का विधान एक समूह में किन्तु अलग-अलग महत्व लेकर किया जाता था। कुल मिलाकर शिखरों की समग्र रचना इसी लिए आश्चर्यजनक प्रतीत होती थी, क्योंकि मंजरियों का घुमाव उनका उठाव औरसहायक पेदिकाएं सोपानवत होकर दर्शक को द्रष्टि को आमलक तक ले जाती थी, जहां वह मूल मंजरी मेखला को आवृत करता सा प्रतीत होता था। मूल मंजरी एंव उसने प्रतिष्ठित प्रतिमा के अनुरूप होती थी।

नगर द्वार अत्यंत सुदृढ़ और सुरक्षित थे। जयसिंह सिद्धराज उन्हें तोड़ पाने में बहुत दिनों तक असमर्थ रहा था और धारा दुर्ग का नमूना बनवाकर एवं उसे तोड़ कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर लेने को इच्छुक था। नगर के भवन उच्च अट्टालिकाओ, गवाक्षों एवं कपोतालिकाओं से युक्त थे। पदमगुप्त परिमल ने अपने ग्रंथ 'नवसाहसांक' में धारानगरी के भवनों का बहुत हो सुंदर वर्णन लिखा है। कवि मदन इस नगरी के चौरासी चौरास्तो और सुंदर उद्यानों का उल्लेख करना नहीं भूलना। स्वयं धाराधीश भोज ने 'श्रृंगार मंजरी कथा' में इस नगर के तत्कालीन वास्तुशिल्प का विशद विवेचन लिखा है। चन्द्रशाला और घण्टाकूट यहां के देवालयों में प्रकाश के स्वाभाविक आधार थे। अर्धमण्डल के आगे तोरण द्वारों का निर्माण किया जाता था। आधार में क्षुर, कुम्भ, कलश तथा कपोतालि और मण्डोवर में मंचिका जंघा छाज्जिका, भरणी और शिरावर्ती का अभूतपूर्व कला कौशल तथा नायिकाएं, व्याल और कीर्तिमुख व ज्यामितीय आलेखन देव प्रासादों को अलंकृत करने के

मुख्य आधार थे।

मूर्ति शिल्प एवं चित्र कला- भोज परमार के समय धारा नगरी चित्र एवं मूर्तिकला के लिए भी सुप्रसिद्ध रही है। चित्रकला के उदाहरण तो आज देखने को नहीं बचे लेकिन समरांगण सूत्रधार में सुंदर-सुंदर चित्रों से भवनों को सुसज्जित करने की बात अवश्य लिखी है। निश्चय ही धारानगरी के मन भावन भवन लुभावने एवं आकर्षक चित्रों से अलंकृत रहे होंगे। संभवः उनकी शैली अपभ्रंश शैली होगी।

जिला संग्रहालय धार में संरक्षित कलाकृतियां ब्रिटिश म्यूजियम की सरस्वती प्रतिमा एवं विभिन्न स्थानों पर बिखरी पड़ी हुई कलानिधि इस बात की साक्षी है कि भोज परमार के काल में धारा नगरी का मूर्तिशिल्प अपनी एक शैली में निर्मित तथा परिष्कृत व परिवर्धित हुआ। इसे मालवा की परमार शिल्प शैली कहा जाता है इस शैली की कतिपय विशेषताएं निम्न प्रकार है:-

1. प्रतिमाओं के चेहरे गोल है, उनमें मांसलता और भाषांकण का सामंजस् मिलता है। उमडी हुई हुडढी के साथ मौंही पलको और नाक के अंकन में नुकीलापन है।
2. ओठ वक्ष स्थल तथा कटि के अंकन में सूरूचि पूर्ण मृदुता, लावण्य और मांसलता है। तुग उरोजो के अपर लटकते हुए हारों व कुचबंधो के अंकन की परंपरा थी।
3. नारी के रूपांकन में स्थानीय सौंदर्य शिल्पी का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। मालवी नारी उसका आदर्श है। नायक नायिकाओं के अंकन में वड़ी विविधता है।
4. शिव-पार्वती की पुगल प्रतिमाओं में अनुग्रह मूर्ति छोड़कर प्रायः पार्वती के वाहन सिंह को अंकित करने परंपरा का अभाव है। अपवाद स्वरूप उल्लेखों को छोड़ वाहन नन्दी को चलते हुए डमरू का अभाव है।
5. दिक्पालों के रूपांकन में बड़ी विविधता है। अनेक मूर्तियां लक्षण ग्रंथों की रूढिवादी परंपरा से हट कर वनी हैं।
6. देवी प्रतिमाओं में भी बड़ी विविधता एवं सैद्धांतिक मान्यता का समन्वय है।
7. स्वाभाविकता को महत्व दिया गया है। भावांकन में क्षणों को बांधने का प्रयास सराहनीय है। क्रिया ताल, एवं लय को अभिव्यक्त करना शिल्पी का उद्देश्य रहा है।
8. प्रतिमाएँ ताल गान के अनुरूप बनाई गई है। स्थानीय आभूषणों को महत्व दिया गया है।

इस प्रकार धारानगरी की शिल्पकला कलापूर्ण वास्तविकता की अभिव्यक्ति के अधिक समीप है। यहाँ के मूर्ति शिल्प में जन जीवन और लोक मानस मूतिर्तमान हुआ है। राजा भोज द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा लक्षणों को भी आधार मानकार शिल्पांकन किया गया है। धारा नगरी का भोजकालीन शिल्पी और उसकी शिल्पकला दोनों ही महान है।

24 रामनुज नगर रामबाग के पीछे न्यू गोविन्द पुरी के सामने
सिटी सेंटर ग्वालियर (म.प्र.)
मो. 8223915111

बुंदेल खण्ड के लोकगीतों में महारानी लक्ष्मीबाई

– विनोद मिश्र 'सुरमणि'

प्रख्यात कवियित्री समुद्रा कुमारी चौहान की वह पंक्तियाँ ले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मरदानी तो झाँसी वाली रानी थी' आज भी हम सब सुनते हैं अथवा पन से सुनते आ रहे हैं। तब हृदय से रोमांचित हो जाते है। हमारे नस पटल पर स्वतंत्रता की प्रथम चिंगारी वीरांगना लक्ष्मीबाई की गाथा, उनका चरित्र सामने खड़ा हो जाता है। महारानी लक्ष्मीबाई श्व की वह पहली महिला है जिन्हें 'मर्दानी' कहा गया है। अपने श के प्रति जीवन न्यौछावर करने वाली दुर्गा स्वरूपा रानी झाँसी ने पने साहस दृढ़ संकल्प और देश निष्ठा के प्रति उदाहरण प्रस्तु किया था जो जन–जन तक आख्यानी, गाथाओं, लोक कलाओं और लोक सुरों में गूंजा। वह आज भी कण–कण में व्याप्त हैं। समुद्रा कुमारी चौहान ने बुंदेल हरबोलों की गाथा को सुना उनकी अभिव्यक्ति को अपने शब्दों में जीवन दिया। लोक की हरवोला परंपरा भले ही आज विलुप्त हो चुकी है परन्तु अपनी वाचक शैली के आधार पर उसके महत्व को कवियित्रि सुभद्रा कुमारी चौहान ने बड़े ही सम्मान के साथ उल्लेखित किया है। दतिया में गायी जाने वाली कोरी पण्डा गायकी जिसमें कलाकर वीर हरदौल के चरित्र को प्रस्तुत किया करते थे, की तर्ज पर ही बुन्देल हरवोले महारानी लक्ष्मीबाई के चरित्र को गया करते थे। कोरी पण्डा गायिकी में कलाकारों का समूह 5 सदस्यीय होता था मृदंग वादक, मंजीरा वादक, खड़ताल वादक व दो गायक होते थे जिनके हाथ में ढप होती थी। ढप में लगे बाज के तार को वांस की सीक (फंच) से स्वर स्थापना करते हुये रिदम लेते थे। दोनों का गायन एक साथ होता था वह हरदौल चरित्र को दोहा, सवैया, छंद में गायन करते थें पहले गायक अपनी प्रस्तुति देता है और दूसरा उस कथानक को आगे बढ़ाता था। उदाहरणतः हरदौल चरित्र का प्रारंभ–

श्री गनेस खौ सुमिर के, धरो शारदा ध्यान।
बुन्देला हरदौल कौ, करू चरित्र बखान।।

कोरी पण्डा की गायिकी समय एवं आर्थिक कारणों से भिक्षावृति तक आ गई है यह घर घर जाकर अपने परिवार के जीवन यापन हेतु आटा-दाल-चावल व धन राशि मांगने लगे। लोगों के दरवाजों पर खड़े रहकर भिक्षा की मांग करते व अपना गायन करते रहते थे। भारतीय लोक संगीत परंपराओं का यह हर्श होते देखा गया है। कला या कलाकार की उपस्थिति के समय, मान सम्मान नहीं हो पाता। उसकी उपयोगिता सिद्ध नहीं हो पाती परन्तु उसकी अनुपस्थिति अथवा अनुपलब्धता पर संरक्षण संवर्द्धन की चर्चा करना हम सबकी मानसिकता हो गई। हम वॉलीबुड हॉलीवुड के गायों को लाखों रूपये दे देते है, परन्तु लोक कलाकारों की उपेक्षा कर लोकोत्सव, फागोत्सव व बड़े-बड़े महोत्सव मानते हैं।

पारंपरिक गीतों में महारानी लक्ष्मीबाई का यशगान उनके बलिदान व उनके व्यक्तित्व का उल्लेख बड़े ही सम्मान से मिल जाता है। दतिया के कल्याणसिंह कुडरा ने लक्ष्मीबाई रासो की रचना की, जिसे डॉक्टर हरीमोहन लाल श्रीवास्तव ने 1853 में सम्पादित कर प्रकाशित करवाया था। खान फकीरे का गीत 1857 के हालात को उल्लेखित कर उस समय की दशा का वर्णन करता है।

झाँसी वारी रानी कट गई, झाँसी वारी रानी लाल
चौतरफा से आफत आ गई, रानी भई विरानी
घर-घर घुसनलगे अंगरेजा, लूट हैं रजधानी
काटत हात पाँव रजपूतन सुनत न कोई वानी
बहुएँ बिटिया पकर लेत है, करत रात मनमानी
खान फकीरे ऊधम मच रऔ, सबरी बात नसानी

खान फकीरे ने अंग्रेजो के अत्याचार और रानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष का वर्णन उक्त गीत में किया है। बुंदेलखण्ड के पारंपरिम लोकगीतों में रचनाकारों ने महारानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व को प्रमुखता से लिया है। लक्ष्मीबाई रायसे में कल्याण सिंह कुडरा जी ने महारानी लक्ष्मीबाई के पावन चरित्र उनकी गाथा को सरलता से व्यक्त किया है।

मरदन सौ जग माँय, ऐसी करनी ना बनी। अथवा
बाई की लराई की जहान में बड़ाई है।

कल्याणसिंह कुडरा महारानी के समकालीन कवि थे। लक्ष्मीबाई रायसों उन्होंने मिति भादो वदी 4 संवत 1926 को दलीप नगर (दतिया) में लिखा था। लक्ष्मीबाई रासौ में काफी कुडरा ने महारानी लक्ष्मीबाई को राम उपासक होने का संकेत दिया है।

छौड़ तन आसा मोल मुलक निरासा कर
वसा के बिलासा त्याग मन में विचारिये
करियौ त्यारी अस्त्र बाधो रन झारी
चलवे की अब त्यारी तौ तुरंगहू समारिये
जैसे महाकष्ट तै उवारी पंडु नारी प्रभु
मोई अधिकारी जान अरज उर धरिये
धन कौ न छोभ कछु तन कौ न लोभ मोहि

एहो रघुवीर मेरी लाज न विगारिये।

(कवित पृष्ठ 33 ल.बा.रासो)

बुंदेलख्ण्ड के लोकप्रिय कवि अवधेश जी ने अपनी लोक रचना में महारानी झाँसी के अन्तिम संदेश का वर्णन करते हुए लिखा था-

कहै क्रांति जग भले जाए, पै क्रांति वीज में बोरई
भग दुके महाराजन के सिर ताजन की मसि धोरई
आन बुंदेलन की रखियै कौ आज देह में खों रई।
जो सपूत देश के जासें, नींच मौत की सौ रई।।
नहीं आँख में आँसू लाना नहीं भूल यह जाना।
आजादी के खेत खपै जो उनका मूल्य चुकाना
भूल न जाना जौ पेड़ो बलदानन से हरयावें
आजादी को विरछा भैया सूख न पावें
मैं परलोक जा रई सुख से, सीख सीखते जाना
अपने देश धरम के लानें तन कौं मोह न लाना।
कवि अवधेश (बुंदेली महिमा)

झाँसी के जनकवि प्रकाशप सक्सैना ने महारानी लक्ष्मीबाई के अंतिम स्वरूप का वर्णन करते हुये अपनी दो चौकड़ियों में लिखा है-

झाँसी कौं कर ऐन जुहारें रानी कड़ी सकारें
तन कों छुअनन-दव पोरासे रए मोरा सिर मारै।
लसकर पौंची नरूआ लांघो, कैसऊँ लगी किनारें
चारे की प्रकाश के गंजी, जर गई जग उजयारें।
बोलत ई धरती को पानी, जौ तो जग ने मानी
पूरी सब हो जात मन की, जीने जैसी ठानी।
गोरन कौ मौ कारो करके जीते हिन्दुस्तानी
कयँ प्रकाश झाँसी की रानी बन गइ ती मरदानी।।
-ओकप्रकाश सक्सैना प्रकाश'

झाँसी की पहचान झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई से हैं। उक्त आशय को प्रकट करती बुंदेली कवि राराम साहू विक्रम की चौकड़िया

रानी झाँसी सांसी कर गई, गोरन फांसी कर गई
जीवन को तक मोह टसक पै गर यो हाँसी कर गई
गोरन से लड़ दी संग जो, देह अनारी कर गई
विक्रम झाँसी की लक्ष्मी, लक्ष्मी की झाँसी कर गई।

दतिया के ईसुरी कहे जाने वाले जनकवि पं. महेश मिश्र मधुकर लिखते हैं उन्होंने तो झाँसी की रानी को भी भवानी की उपमा से वर्णित किया है-

'सिमरो तोय मात भुवानी, ऐ झाँसी की रानी
तैंने राख लओं वीरन की तलवारन की पानी
तेरे मारे अंगरेजन की चल ना पाई मनमानी
मधुकर साचंहु तेरे भए सैं, माँ की कूक सिरानी'

बुंदेली के अनेकों रचनाकारों ने महारानी लक्ष्मीबाई को ... अपनी अपनी रचनाओं का सृजन किया डॉ. वृंदावन लाल ... लिखित उपन्यास झाँसी की रानी का जन मानस पर ... प्रभाव पड़ा कि उपन्यास के एक काल्पनिक पात्र को वह ... मान आज उसे पूजने लगे हैं। कवि या लेखक की रचना ... प्रभाव होना उसके मूल में जाना है। महारानी लक्ष्मीबाई के ... बुंदेलखण्ड ही नहीं भारत के हर क्षेत्र में सृजन हुआ है। बुंदे... के बुंदेली रचनाकारों ने अपने पारंपरिक गीतों की तर्ज पर ही ... कर रानी को समर्पित की हैं। दतिया की पारंपरिक लेद गायक... रानी लक्ष्मीबाई के युद्ध का जिक्र किया गया है-

लोहा गढ़ कठिन मुकाम फिरंगी, झाँसी भरोसे न रईयो (... लोकेन्द्र सिंह नागर)

रानी झाँसी के प्रति बुंदेलखण्ड के लोगों की श्रद्धा एवं ... अपनी पहचान समझना आस्था के उदाहरण हैं। लेखक ने ... अपनी बुंदेली चौकड़िया से महारानी लक्ष्मीबाई के प्रति श्रद्धा ... की है।

'सुमिरो तोय झाँसी की रानी, रच दई अमर कहानी
मे में ओर हात तलवारें, तुरग सवार भवानी।।
कट कट काटे मरे फिरंगी, रखे बुंदेलों पानी।
सुरमणि कात जासैं जग जानों, नार बनी मरदानी।।

-संगीत गुरूकुल
मधुकर मार्ग, पकोड़िया महादेव दतिया म.प्र.
मो. 9893437616, 9425742748
ई-मेल-पदजंवीकंजपं/हतंपसण्बवउ

संदर्भ-

1. बुंदेली महिला (2017) संपादक डॉ. पुनीत विसारिया-डॉ. संजय सक्सैना
2. लक्ष्मीबाई रासौ (1953) संपादक-डॉ. हरीमोहन लाल वर्मा
3. बुंदेली का नया काव्य (1983) संपादक डॉ. बलभद्र तिवारी
4. बुंदेली के रचनाकार (2011) डॉ. रामनारायण शर्मा

— पकौरिया महादेव दतिया - म.प्र. मो 9893437616

...100 04042023(1)

(बुं)देलखंड कौ आजादी में पने अपने क्षेत्र कौ योगदान

संदर्भ - क्रांतिकारियों की सरन स्थली रड़ दतिया

– विनोद मिश्र सुरमणि

...नुनों जो बुंदेलखंड गारी, बधाईरांचरो डिमरियाऊ, राई के ...नईयां इते कै छत्रसाल जू विरसिंह देव जू हरदौल जू ...शाह जू की वीरता के संगे उनकी मरजादा कौ पालन करवो ...देश के लाने मरमिटवो हैं। सोने के आखर में सोई लिखी है ...की वीरता हमाये सीना को चौगौनी सोई करत है और काय ...कवि वासुदेव गुसाई ने कईती

छत्रपति छत्रसाल की मिसाल मिले किते, दुष्ट दल दर्प की ...जौ बुंदेलखंड।

दानवीर वीर सिंह देव की तुला सी भासी वायुदेव न्याय ...जौ बुंदेलखंड।

धर्मवीर हरदोल मधुकर साह जू की जन्मभूमि पावन धरा है ...लखंड।

तुलसी के नंदन नै चंदन घिसो हैं इते भारत को तुलसी घरा हैं ...खंड।

...रम होए वीरता होय आस्था होवे चाये संस्कारन की रकछा ...न सबमें बुंदेलखंड ढोंप पे मानौ जा तरानी लक्ष्मीबाई जू खों ...जानत अपनी तलवारन सै काट काट के अंग्रेजन की ऐसी ...कर दई रानी जू ने।

वैसे तो पूरो बुंदेलखंड अपने देश खां आजाद कराने में ...लम से लड़त रओ जीतत रओ और काम खो पूरो करकै मानो। ...केले हम सब औरन खो कछु ऐसी बातें हैं नई पढ़ाई गई न बताई ...ई जिनमें भारत खो आजाद करावे में उन बातन कौ घटनान कौ ऐसे ...स लोगन कौ समरपन रओ हैं। कछु गुरुजननमें और जनमानस में ...रचा होत रई सौ ऊ खोई बतावे की जो साहस जा लेख से करो जा ...ओ।

बुंदेलखंड कौ सबसे छोटओ अकेले कला संस्कृति और धार्मिकता में बहुत [illegible] नगर दतिया एक कलंक लेकर झांसी वारन की आत्मा से कोसी जात। जामें ना तो काऊ को दोष है ना काऊ की इच्छा। अज्ञानता नासमझी को कारन एकई है के गांव-गांव में भेंड़ धसानन सोई चलत हैं वैसई कछु बातें चल ऊठी के झांसी रानी को साथ दतिया के राजन नेनई दओ और रानी के पिता खो फांसी पे चढ़वा दओ अब भैया औरै जा संबंध में जौ समझ लेने चईये ऊके पांछे कारण का का है।

जब रानी से अंग्रेजन को जुद्ध चल रओ अंग्रेजन हट करे कै रानी जा झांसी छोड़ो आपके उत्तराधिकारी नईयां पेंशन की भी कोऊ बातें बतात हैं। इते दतिया के राजा विजय बहादुर देव बहुतई गंभीर बीमार चल रये ते। सब जानत के विजय बहादुर और झांसी के राजा गंगाधर राव में मित्रता रई है सो मित्रता में साथ तो दओ जेहैं, अकेले बीमार लाचार राजा, तापे ऊकै कोऊ संतान नई सो भवानी सिंह भसनेह बारे परमारन की रावर सै ओली पे बुलाओ गओ ऐसे में लड़बे की सामर्थ नहीं हती। ईसै अंग्रेज दतिया में डंडा डारें। संधि कराएं बैठे लाचार राजा ना उत्तराधिकारी बो भी मोड़ा सौ संजोग न सको। जई बेरा राज्य के यह गद्दार ने धोखे से और लालच में आकै अंग्रेजन खो रानी के पिता जो दतिया से निकल रए ते कि सूचना दे दई जा खबर दतिया किले को भी पतो नई हती। सब उल्टी होत चलो गओ।

विजय बहादुर ने रानी की सेना में दतिया राज्य सै अनेक सैनिक भर्ती कराए ते। नौनेर के रघुनाथ सिंह परमार उनकी खास सेना में हते, बडोनकला के मंसाराम गूजर रानी के अंगरक्षक सेना में हते ऐसे अनेक सैनिक और सुरक्षा के लाने वीर सिपाही झांसी की सेना में भेजे गए थे उनकी चर्चा आज लौ नो कभउ नई आई। जाकी चर्चा इतिहासकारन ने काय दुकाई का डर से नहीं लिख पाए आज बतावो मुश्किल है।

– पकौरिया महादेव
दतिया, म.प्र.
मो. 9893437616

वृषभानकुंवर का भक्ति साहित्य

–हरीराम साहू [illegible]

भारत का हृदय स्थल बुंदेलखण्ड का विरासती वैभव समृद्धशाली रहा है, यहाँ की धरा पुरासम्पदा से भरी पूरी है, पुरातत्व, संस्कृति के साथ-साथ चतुर्थ धाराओं की संगम स्थली रही है एवं ललित कलाओं को पुष्पित एवं फलित होने का पूर्ण अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ है। इस धरा पर अनेको साहित्यकारों ने साहित्य के क्षेत्र में जो साधना की उसको सदैव स्मरण किया जायेगा यहाँ की साहित्य कला के अंतर्गत कवि मनिषियों मं तत्कालीन ओरछा राज्य के बुंदेला वंश में साहित्यिक भक्ति काव्य की सेवा करेन वाली राजपरिवार से कवियित्री वृषभान कुवर ने पाण्डुलिपि साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, अत: आपके भक्ति काव्य ने ओरछा राज्य के नाम को गौरवांवित किया है। भक्ति के क्षेत्र में राजवंश के जो कवि हुये है, जिनका भक्ति काव्य अपने उपासक के लिये साधना के रूप में समर्पित है चाहे वह श्रीराधाकृष्ण या श्रीरामलला से संबंधित क्यों न हो इन नरेश कवियों में से बड़ा दतिया के राजा पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' किशनगढ़ के राजा सावंतसिंह नागरीदास और जयपुर के राजा प्रतापसिंह वृजनिधि सम्मिलित है।1 वृषभानकुवर का भक्ति साहित्य श्रीराम कथांशर्क पर आधारित ओरछा के महाराज एच.एच. श्री सवाईमहेन्द्र प्रतापसिंह जू देव बहादुर के.एस.आई. आपका शासन काल सन् 1874 से 1930 ई. तक रहा आप दिगौड़ा के मदन सिंह जागीरदार के पुत्र थे। बीस वर्ष की उम्र में आपको गोदी में ओरछा की गद्दी पर आसीन कया गया था आपका पाणिग्रहण संस्कार वृषभान कुवर के साथ सम्पन्न हुआ था धार्मिक उदारता, सरल स्वभाव साहित्य सेवा की लगन आपके जीवन में रही है। साहित्य सेवा से समाज को नई दिशा मिली है। पाण्डुलिपि भक्त विरदावली भक्ति काव्य के साथ-साथ, पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक ज्ञान का स्रोत है। यह काव्य बुंदेली की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें स्वछन्द का भाव लोकरीति में सम्पन्न हैं। यह पाण्डुलिपि राजकोय पुरातत्व संग्रहालय दतिया (म.प्र.) के पुस्तकालय में उपलब्ध है।

ग्रंथ में एक स्थानगत ब्यालीस पृष्ठ संलग्न है। पत्र के दोनों ओर काली एवं लाल स्याही से लेखन सम्पन्न है। साथ ही प्रत्येक पद छन्द के अंत में अंक संख्या अंकित है, साथ ही छन्द के पूर्व में संबंधित राग का नाम लाल स्याही से लेखबद्ध है। श्रीराम की कथांशयों की भक्ति का भावपूर्ण ग्रंथ है, काव्य के माध्यम से कवियित्री ने रागो की अवधारणा को प्रस्तुत किया है।

ग्रंथ प्रारंभ में मंगलाचरण का भाव श्री गणेशजी की वंदना से है पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि में श्रीवैरन्नू टीकमगढ़ ने संवत 1944 मिती कार्तिक कृष्ण पूर्ण की है। ग्रंथ में प्रथम श्री रामजी के जन्मोत्सव बधाई को पढ़ा गया है संगीत एक ऐसी विद्या है कि इसमें स्वर, ताल, और आवाज का सामंजस्य रहता है। ग्रंथ में राग के साथ उसकी मात्राओं का भी उल्लेख हुआ है। क्योंकि प्रत्येक राग के वंदेश में भिन्न-भिन्न मात्राओं का योगदान होता है। अत: [illegible] संगत का भी ये ज्ञानवर्धक काव्य है। हिन्दुस्तानी संगीत में कई [illegible] के रागो का प्रचलन था, जब रागो का गायन नियमानुसार [illegible] परख स्वर संगति का प्रयोग जब होता है तो परिणाम अनेक [illegible] उदय होते है, जब रागांग स्वर संगीत ही कही जाती है और [illegible] द्वारा एक राग के अनेक प्रकार के राग बने है। यथा-मल्हार, [illegible] बिलायत, कल्याण, केदार, भैरव, कानड़ा, आदि है।2 भारतीय [illegible] का इतिहास बहुत पुराना है प्रथम शताब्दी में ध्रुवगान [illegible] प्रस्फुटन हो गया था और गुप्त काव्य और हर्षवर्द्धन के काल [illegible] ध्रुवगान समाज में सुप्रतिष्ठा चित हो गया था।3 भारतीय [illegible] कालचक्र से घिरा हुआ है जैसे- गीष्मकालीन राग बर्षाराग [illegible] बसंत होरी आदि के प्रभाव से क्षेत्र बिस्तुत हो गया है। पौराणिक कथाओ के आधार पर सर्वप्रथम संगीत कला के पास था इन्हीं द्वारा शिव को शिव से देवी सरस्वती को ओसिसी क्रम से [illegible] गन्दर्भ, किुर,एवं अप्सराओ को संगीत प्राप्त हुआ एवं भूलोक [illegible] संगीत का नारद, भरत, हनुमान आदि ने अबतरित किया शिव ने [illegible] पार्वती की शयन मुद्रा को देखकर अंग प्रत्यंगो के आधार [illegible] 'रूद्रवीणा' बनाई और अपने पाँच मुखो से पाँच राग अर्थात् भैरव हिडोल, मेघ, दीपक, और श्री की उत्पत्ति की एवं पार्वती [illegible] कौशिक राग की उत्पत्ति की गई इन्हीं रोगो की परमपराओं में [illegible] काल में अनेकों रोगों का प्रादुर्भाव हुआ है।

पाण्डुलिपि में राग साक्षातार तितारौ के अंतर्गत पढ़ा गया है श्री राम के जन्मोत्सव अवध सी सखियाँ सामूहिक रूप में [illegible] है, दादरौ झूम को प्रस्तुत किया जा रहा है नृपत दशरथ के [illegible] बाजे है, आनंद से मन को सुख का अनुभव इसी क्रम में [illegible] का गायन प्रारंभ कर बाल तितारो यानो बंदश को लेकर [illegible] कुछ नगर की सखियों ने यह शुभ समाचार सुना तो कहने लगी कि महारानी कोशिल्या ग्रह चलो चार पुत्र हुये है। कुछ सखियाँ [illegible] उद्घोषणा रही है कि आज अवधनगरी की सुंदरता को निहारने के लिये ब्रह्मणी भी आई हुई है। राग खंभावच तितारौ को गाया जा रहा है- बधाई सुन हर्ष हृदय न समाई, नृपत दशरथ सुखदाई। [illegible] प्रगट भये चारो भाई, भरथ लखन रिपु दलन मनोहर पूर्ण [illegible], [illegible] मधुधारा तजारी, चार जोग समुदाई'

जो जैसे तैसे उठधाई, जहाँ जो भें मधु पाई'
कोशिल्या कि कई सुमित्राराम की लेत बलाई'

वृषभान कुवर या नित नव आनंद चरण कमल सिवकाई। संस्कारो से अभिप्राय शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिये किये जाने वाले अनुष्ठानों में से है जिनसे वह समाज में पूर्ण विकसित सदस्य हो सके।4 महाराज दशरथ के राजभवन में भी रामजी के विभिन्न

रो का आयोजन समसुसार किया गया है। राग कंहारौ नोतापिरझोका प्रदर्शन अवधेश के दरवाजे या कलाकारो के द्वारा यंत्रो को बजा कर किया जा रहा है। चहुओर आनंद का माहौल गलियो में अतर का छिड़काव किया गया है रागो के आयोजन में तारगति तितारौ का स्थान आधारित है। इस राग में जो गीत गाया का भाव है कि अवध में चारों सुकुमार पृथ्वी का भार उतारने के लिये प्रगट हुये है। वहाँ सुमन की वर्षा हो रही है। प्राचीन भारतीय संगीत के पुरावशेष प्राप्त हुये है। सिन्धु वासियों के कलानुराग के रूप में हड़पा से प्राप्त एक मुद्रा में किसी समारोह का दृश्य उकेरा गया है सिन्धु सभ्यता के अवशेषो में वीणा के भी चित्रांकन मिलते जो कि सिन्धुवासियों की संगीत प्रियता के द्योतक है।5 राग झिंझोटी दादरो की प्रस्तुती में महारानी अपने चारो पुत्रो को पालने में झूला झुला रही है, राग सारंग दादरौ का स्वर अपनी गति पर है और माता कोशिल्या के राजभवन के द्वार पर याचक लोग आये है जब संगीत का वातावरण निर्मित हो जाता है तो उस स्थान पर आनंद की अनुभूति अंत:करण में होने लगती है। इसी क्रम में राग हमीर तितारौ गाया जा रहा है।

जब श्री श्रीराम एक वर्ष के हो गये तब वर्षगांठ का आयोजन है राजभवन में सभी नगरपुरवासी दर्शन करने के लिये आये हुये है। भवन में राम अपने भाईयो के साथ सरजू के तट पर क्रीड़ा कर रहे हैं वहीं संगीत जनो से राग पूरिया तितारौ को सुंदरभाव प्रस्तुत रहे है। रागो के उस्ताजी द्वारा समय स्थानक राग का गायन किया गया है। जब मुनि विश्वामित्र नृप दशरथ ग्रह आये उस समय राम झिंझोटी जिल्लौ विखरा हुआ था। जब समाचार मिथलेस ने सुना कि मुनि के साथ में राम लक्ष्मण आये हुये है रागो का प्रचलन पुरातन काल से जारी है पाण्डुलिपि में राग सूहौ, तारधीमतितारौ, दरवारी कन्हरौ, विहंगतारतितारौ, पीलूदादरौ का भाव प्रधान है। भारतीय रागों में भोपाली दादरो भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

> रागदरबारी – प्रथम अवधेश सेहरा बनेरे बनै।
> भरथ और लक्ष्मनसत्रधन तीनो जनै।
> माथे मौर कंचन को पनरथ में हीरा धनै।
> व्याह के भूषन बसन हैतड़ित धन ज्यौ अतिसनै।
> क्रती है सव आरती, जनकपुर मंगल हनै।
> निरख-निरख देववधु बाराती भूषन भनै।
> ब्रहमाणी वा कदांनी कहै मेरे तो जीवन धनै।
> वृषभान कुवर जुगल छवि परमा धुरी कवि को गनै।6

राग दरवारी कानड़ा (कन्हार) में आन्दोलन भय मिश्रित गंभीरता के साथ भाव की स्पष्ट झलक स्थाई करने में अधिक सहायक होते है इस राग के स्वरो की जो खूबियाँ है उनके बिल्कुल विपरीत मियाँ-मल्हार राग के स्वरो की रचना तानसेन ने की है। वर के रुप में जनकपुर की सखियाँ वरखना; श्री रामजी से अखियाँ लगाती है इनकी स्थिति कलम अमनकारी रतनारी और मदनखान की घायल करने वाली है। संगीत स्वर लहरियाँ जब ताल के साथ लय और गति के मेल के साथ होती है तब राग की झांकी उपस्थित होती है। मनुष्य का सामाजिक जीवन सुलभ बनाने के लिए संस्कारो की व्यवस्था की गई है संस्कारो में पाणिग्रहण पुरातन है रामजी सहित सभी भाईयो की शादी के शुभ अवसर पर महाराज जनक जी की ओर से जो सम्मान दिया गया उसको कभी भुलाया नहीं जा सकता साथ ही दोनो समधियो का पारस्पर मिलन इतिहासिक है। बुंदेली में रागो का भाव प्रधान था राग वहारतारव, काफी, ईमन, अंगला, ईमनलेद, गाईकी का दौर प्रचलन में था। इसके साथ-साथ विलावन, यमन, काछीगारा, देशआरमी, पछाड़ी बरवा, कुमकुम, तोड़ी, बहादुरी लोढ़ी, किरवानी, आदि रागो का प्रभाव क्षेत्रांतर्गत था। जिनको वृषभानकुवर ने रामभक्ति काव्य के अंतर्गत पढ़ा है। पाण्डुलिपि रीति में राग सारंग से बुंदेली शब्दावली में श्रीराम जी की फागुन मास मे होरी की लालसा हेतु भाव है-

> राग सारंग-
> रसिया मेरो छैल अवध बासी!
> मृदु मुस्काये वदन छवि चितवन में डारी फासी।
> खेलत रंग भरेसिय स्वामिन, पिंचकन झरकन मगरासी
> वृषभान कुवर कौ फगवा दीजै, टहल यहल की सब खासी।7

पाण्डुलिपि में उल्लेख हुआ है कि महाराज मधुकरशाह की धर्मपत्नि गनेश कुवर अवधनगर से पुष्प नक्षत्र में श्री राम को लेकर ओरछा आई थी। यह भाव ग्रंथ के अंतिम पद में आया है। साथ ही इसी के अंतर्गत महाराज सवाई महेन्द्र प्रतापसिंह कृषभानकुवर की प्रभुताई का वर्णन किया गया है।

> पद- यह भक्ति बिरदाबली नीकी।
> थाली परम पुनीत पावनीश, रघुपति भक्ति अमीकी।
> पुरओर छौ विदित जग झांकी, राम चन्द्रसिपीकी।
> रहत भीरदर्शन हित निशदिन, संत महंत जती की।
> तुंगारैण्य यह बहत तट धारा, सरिता वेत्रबती की।
> तापुर नृपबुंदेल बीरबर, जिन सब बहुत यही की।
> विक्रम नृप शोभा सरसाई, टीकमगढ़ नगरी की।
> श्री प्रताप महेन्द्र सबाई, सेवा रघुवर जी की।
> तिहि पत्नी वृषभान कुवर जू, अनुचैर सबधपति की।8

पाण्डुलिपि भक्त विरदावली में अनेक प्रकार के रागो को पढ़ा गया है। श्री राम कथा पर आधारित भक्ति काव्य का सुंदर ढंग से संक्षिप्त में सरलीकरण भाव के साथ बुंदेली शब्दावली में प्रस्तुत किया है। साहित्य के क्षेत्र में कवयित्री वृषभान कुवर का महत्वपूर्ण स्थान है।

वरिष्ठ मार्ग दर्शक
पुरातत्व संग्रहालय, दतिया (म.प्र.)
मो. 8720013664

अनी मुड़क गयी बिछिया की

– प्रीति

बुंदेली का एक बहुत ही प्यारा लोकगीत सुन रही थी लोकगीत की पहली पंक्ति थी 'पथरीली पिया तोरो देश निगत में अनीमुरक गयी बिछियन की' गायिका इस लोकगीत को मधुर स्वर में गा रही थी और मेरा ध्यान बिछिया पर अटक गया था। बिछिया बुंदेलखण्ड का एक आभूषण है इसका बिछिया नाम क्यों पड़ा जब मैंने इस पर विचार किया तब मुझे लगा कि ये शब्द बिच्छू से लिया गया हे हो सकता है कि प्रारंभ में इस आभूषण की बनक बिच्छू जैसी रही हो और इसी आकृति के कारण इसे बिछिया कहा जाने लगा हो। बिच्छू से कुछ पुल्लिंग शब्द भी बने है जैसे- बिछुआ बिछुआ एक ऐसा हथियार है जो तलवार की बहुत छोटी सी आकृति का होता है इसे अक्सर कंधे से लेकर कमर तक की लटकन बनाकर पहना जाता है। पंजाब में तो इसका एक तरह से इसका पहनना अनिवार्य सा है किन्तु अन्य स्थानों पर इसे अक्सर दूल्हा पहनता है बिछुआ दूल्हा का श्रृंगार होता है इसके धारण करने का अर्थ है कि हम अपनी आत्मरक्षा के लिए सजग है। इस हथियार का नाम बिछुआ क्या पड़ा जब मैं इस पर विचार करती हूँ तो मेरा ध्यान बिच्छू के डंक पर जाता है। इस हथियार की आकृति बिच्छू के डंक जैसा होता है इसी वजह से इसे बिछुआ कहते है लेकिन मैं तो बात बिछिया की कर रही थी बिछिया बिच्छू का स्त्री लिंग शब्द है इस आभूषण को स्त्रियाँ पाँव की ऊंगली में पहननती है यह एक प्रकार की अंगूठी है लेकिन इस अंगूठी पर एक आकृति बनी रहती है जो छोटे बिच्छू जैसी होती है अब इस आकृति में फूल जैसी डिजाइन निकाली जाती है परंपरा के अनुसार पहले सुहागन स्त्रियाँ ही धारण करती थी। अब बदली हुई परिस्थिति में प्राय: अब सभी धारण करती है बिछिया से पैरो की सुंदरता बढ़ जाती है। इसका संबंध शारीरिक स्वास्थ्य से भी है बिछिया धारण करने से गठिया घुटनों का दर्द समाप्त होता है। बिछिया चाँदी की बनाई जाती है। इसका अधिकतर प्रयोग नववधु के चढ़ावे में तो होता ही है अन्य प्रसंगों में भी इसे उपहार के रूप में दिया जाताहै अक्सर जो महिलायं पहली बार नववधू को देखने जाती है तो उपहार में बिछियाले जाती है मैंने प्रारंभ मे जिस लोकगीत की चर्चा की उसमें बिछिया की अनी मुड़कने की बात कही गयी है। बिछिया में आगे की तरफ नोंक होती है और नायिका पथरीली जगह में चलने की आदि नहीं है। उसकी ऊगलियाँ छोटे-छोटे पत्थरों से रगड़ जाती है और उसकी बिछिया की नोंक मुड़ जाती है और वह नायक को उलाहना देती है कि तुम कहा मुझे पथरीली जमीन पर ले आये हो मेरी सुंदर सी बिछिया टूट रही है यह एक तरह से प्रेम से भरा उलाहना है बिछिया को लेकर बुंदेली में अनेक लोकगीत रचे गये है बिछिया केवल पाँव की ऊंगली में धारण की जाती है नेग जोग में भी बिछिया दी जाती है अक्सर ननंद भाभी से संबंधित लोकगीतों में बिछिया की चर्चा आती है पाँव के अँगूठे में जो आभूषण पहना जाता है उसे अगुष्ठाना कहा जाता है। ये एक सीधी सादी सी बड़ी अंगूठी होती है। कहने को तो बिछिया छोटी होती है लेकिन इसका दबदबा सभी तरह से आभूषणें से भारी होता है। देवीसीता के द्वारा रावन के रथ से आकाश मार्ग से फेकें गये अपेन आभूषणों में बिछिया भी एक आभूषण था जब भगवान राम ने लक्ष्मण से इन आभूषणों को पहचानने की बात कही तो उन्होंने कहा था कि भईया मैंने सीता भाभी के अन्य आभूषणों को नहीं पहचानता बल्कि उनकी बिछिया को पहचानता हूँ मैंने कभी भी सीता भाभी के चरणों के अलावा कोई ओर अंग नहीं देखे इसलिए मैं दूसरे आभेपणों को नहीं पहचानता। लेकिन ये बिछिया जरूर सीता भाभी के है इस तरह से बिछिया की चर्चा रामायण के प्रसंगों में भी मिलती है इसेस यहपता चलता है कि यह आभूषण प्राचीन काल में भी था।

श्री चंडी जी वार्ड
हटा (दमोह) म.प्र.

बुंदेलखंड में बिआव की बिलुप्त होती परंपराएं

– पं. रामकुमार तिवारी

हमाओ नाती वड़ी होली फूलो आओ और हमाई गोदी में
कै कैन लगो दादा जी दादा जी कल रात विआव में खूब मजा
ो मन मन की चीजें खाने खौं मिली और खूब नाच गाना भओ
ा लड़कियों लुगाई लुगवों ने खूब नचाई करी के हम आपसी
नहीं सकत। आपके पुराने समय में भी का ऐसे विआव होत ते
ा नानी से कई के भैया विआव पैले के आज से भी जादा अच्छे
ते। पैलऊं के विआव में जादा शोर सरावो तो ने होत तो लेकिन
द खूब आउत तो। आज काल के विआव में झूठो दिखाओ और
खा दिखावै में जादा पैसा खर्च करौ जात है एक दूसरे सौं नीचे
वे में लोग अपने धन खौं लूटा रये हैं लेकिन पराई वुराई करने
कहु नई चुकत सौं वे दूसरों के विआव में एक नई कई वुराई ढूंड
है और विआव करवे वारे के सवरे मनसूवों पै पानी फेर देत हैं।
फरेव करके आज के लोग जो पाप की कमाई कर रहे उखौं
ी की धार विआव में वहा रहे हैं। वेईमानी की कमाई जाव समय
ा टिकट सोई नैयां। हमाये जमाने में लोग वड़ी ईमानदारी से पैरा
ाउत हते और पाप की कमाई करवे में डरात हतो आज के कछु
ग छल छिद्र करके खूब पाप की वेईमानी की कमाई कर रहे है।
ा कर वे में वे विलकुल नई डरा रहे जौन लौक सो जाने हैं उकी
लकुल चिंता नई कर रय हैं। पैले के लोग ई लोक और परलोक
ई खौं डरा के वड़ी ईमानदारी से और वड़ी सच्चाई की कमाई कर
। अव जमानों वदल गओ है। आज के नये लोग धन खौं सव कछु
न कैं चल रये चाहे वो कोनऊं प्रकार से आवौ जा तो भई नीति
ौर धरम की वात। अव भैया सुनो पैले के समय के विआव की
ती। जव लड़का देखवे लरकिया वारे के जात ते सो उ वस्ती में दो
ार घरे जाकै लड़का को कुल गोत्र और खानदान के वारे में
जानकारी लेत ते। जव पुरा वस्ती के लोगों की वातों से मन भर जात
तो फिर लड़का वारे के घरे जात ते और समाज के तथा पर विरादरी
के इज्जदार लोगों के सामने लड़का खौं छेड़त ते याने रूपैया नारियल
देकै लड़का खौं फलदान देत। वस्ती की औरतें गावौ वजावौ करत
तीं फिर पंडत जू खौं वुलाकै विआव की महूरत निकरवाओं जात तो
और विआव को महूरत, मुरकरा वलया कै लरका-लरकिया वारे खौं
सौपों जात तो फिर ईके वाद पर पक्ष के लोग कन्या की ओली भरवे
के लानै कन्या पक्ष के घरे जाकै कन्या की सगाई (ओली) भर
आउत ते। घर के जेठे सयाने वा रिश्तेदारों में मामा, फूफा, मौसिया,
वहनाई पिता चाचा आदि क्रम से लरकिया की ओली भरत ते। कन्या
पक्ष की औरते भगवानके मंगलगीत गाउत ती। हर काम बड़ी मर्यादा
में होत तो। जव विआव के दिन नजदीक आउत ते माने लगुन आवे
के दस पन्द्रह दिन पैले वार कन्या दोनों पक्षों के घरों में गेहूँ, चाँवर,
दाल, आदि की नुकायनो होन लगत तो पुरा परोसकी स्त्रियाँ आकै
मंगल गीत गा गा के नुकायनों करत तीं दूर-दूर तक उनके मांगलिक
गीतों की आवाज गूंजत ती उनके गीत सुनकै मन वड़ो प्रसन्न हो जात
तो। पैले विजली व इंजन से चलने वारी चकियां तो चलत ने हतीं
सो पुरा परौस के घरों की स्त्रियाँ वियासैंता घरों में गेहूँ अपने अपने
घरै जाकै जातै से जव पीसत तीं और घर-घर में ऐसे ऐंसै मंगल गीत
सुनाई देत ते कै हम ऊंखौं अपने शब्दों में वर्णन नई कर सकत। ऐसौ
लगत तो मानों सव घरों में विआव होने होवे। स्त्रियाँ वड़े प्रेम भाव
से एक दूसरे से मिलत जुलत हतीं और उनमें आपस में वड़ी दोस्ती
और एकता रैतती। उनमें आपस में कोउ छोऔ वड़े और अमीर गरीव
को भेद ने मानौ जात तो। एक के घर की विआव पूरे पुरा वस्ती के
घरों को मानो जात तो। लगुन के विना गांव वस्ती के लोगों के साथ
सातई जा के लोग नेवते में वुलाये जात ते फिर रात में पंगत के वाद
लड़का वारों के रमतूला, अंग्रेजी वाजे वजत ते और वड़ी हंसी खुशी
और वाजे गाजे के साथ लगुन को कार्य शुरु होत हतो। लगुन के एक
दो दिन पैले ही वहिनें, मौसी, फुआ, फूफा, आदि करीवी रिस्तेदार
आकै काम में हाथ वटाउन लगत ते अव भैया सुनो जव वरात जात
ती तो ऊ समय में तेज चलते वारे वाहन साधन तो मिलत ने हते
जैसे- कार, वस, ठेला आदि सो विआवता घर के लोगों के जितनी
वैल गाड़ी होत तीं वे और वस्ती के लोग अपनी अपनी वैलों खौं
नेकैं वारात में जात ते और वैलों के चरवे के लाजै भुसा चारौ पूरा धर
लेत ते अगर वरात तीन दिन में लौटने तो चार पांच दिन के वैलों खौं
चरवे धर लेत ते। वाजे गाजे के साथ वारात जात ती रस्ता में अच्छे
भजन लोक गीत गाउत भये वारात जात ती। लरकियाँ वारों के जव
वरात पौंचत ती तो गांव वस्ती में कोनउ पेड़े के नैचे या मंदिर या
स्कूल में वरात को डेरा दव जात हतो। रात में गांव वस्ती के लोगों
के साथ लरकिया पक्ष के लोग आकै वरात की अगवानी करत ते
कन्या पक्ष के घर के द्वार लरका को टीका होत हतो। फिर वारात को
स्वागत सत्कार होवे के वाद वरात अपने जनवासे पौंचत तो फिर
वरात वारों को डेरा में पोंछक दई जात हती प्रत्येक वराती खौं एक-
एक पुड़ी पै शकर रखकै सम्मान सहित जात ती। इतै एक वात और
वता रये कै जव लरका की वरात जात ती तो वरात के वर पक्ष के
लोग वरात के हिसाब से अपने घर से आटा तथा आलू भटा टमाटर
आदि रखकै चलत ते, के अगर कन्या पक्ष के घरे यदि भोजन

<1tb-E> e:\stand07\Hata2023\bund23.pm5 .... inset ....105 04042023(1)

व्यवस्था में कछु कमी दिखात ती तो वे बरात के डेरा में ही भोजन बना के खान लगत ते लेकिन कोनउ प्रकार से लरकिया पक्ष के लोगों की मान हानि ने करत ले। दूसरे दिना लरकिया खौं चढाव चढत तो जैसी जी की हैसियत रैत ती सो ऊ हिसाब से लरका वारे लरकिया खौं चडाये की रेशमी साड़ी ब्लाउस मोरे मुकुट और सोने चांदी की चीजें जैसे बिंढिया, तिढानों, माला, हार गरे खौं और कमर खौं चांढ़ी को डेरा, चौरासी पांव केलाजैं, रूले, तोड़ल, पायजेव, पायलें आदि चडाव में कन्या खौं देत्ते फिर जब चीजें बसत अर्थात गौनों गुरिया कन्या पैर लेत ती फिर कंकन पूर के कन्या पक्ष की औरते कन्या खौं कंकन बांधत तीं फिर तीसरे दिन कन्या के माता पिता कन्या दान करत ते और उके बाद वर कन्या की भांवर परिक्रमा को कार्य संपु होत हतो। पंडत सात पांच वचन कै कें भांवर के कार्य खौं संपु करत ते। बीच में नाती हमें टोक के कैन लये दादा जी आपने विआव की पंगत की तो हमें बात नई बताई के विआव में कै पंगते होत ती हमने कई उबनी दिना तो केवल पौंछक दई जात हती फिर दूसे दिना जब चडाव चडत तो उके बाद कच्ची पंगत दई जात ती ऊ में कड़ी, दार, भात, रोटी, दरया, पापर शक्कर परसी जात ती और शुद्ध घी तो बिलकुल ने पूछो काय से रोटी घी में चुपर के नई दै जात ती बलकी केटली में भर कैं शुद्ध घी परसो जात तो। जब तक पंगत जेवे वा घी खौं मना ने करत तो तब तक घी वारो डारत जात तो। तीसरे दि भावर परबे के बाद पक्की पंगत होत ती ऊ में पुड़ी दो तीन प्रकार की तरकारी, रायतो, मीठा में बूंदी, सेव, रसगुल्ला, बालू साई, बूंदी, ल पंगत में परसे जात ते। पंगत होत समय गांव की लुगाई बड़े मीठे सु में विआव की गारी गाउत तीं तो ऐसौं लगत तो कै सुनतई रयें। फि पंगत के बाद बरात के डेरा में गांव की औरतें दूल्हन खौं लेवे आउ ती और रहस बधायें की रश्म अदा करी जात ती। चारण, भाट जा के लोग आकै वर एवं कन्या पक्ष के लोगों का बुंदेली भाषा में कवित्त गा–गा के यशोगान करत ते। और वर पक्ष के द्वारा इनाम पाउत ते। कन्या पक्ष की औरतों की बतासा आदि से ओली भरी जात ती फिर वर कन्या की न्याछावर करके नाउ दीमर खौं दई जात ती इ प्रकार से विआव के कार्यक्रम सम्पन्न होत ते। नाती हमाई बातें सुनकें खड़े हौके ताली बजा के नचन लगौ और कैन लगो दादा जी हमें पुराने जमाने के विआव की कहानी सुनकै खूबई अच्छो लगो।

एम.ए.
पूर्वव्याख्याता शासकीय महाविद्यालय
दमोह (म.प्र.)

...106 04042023(1)

'गुना' गुणों की खान

–अमितकाम दुबे

विवाह के उपरांत जब नई बहू पहली बार ससुराल आती है उसकी मुँह दिखराऊनी का नेग होता है। तब तक गीत गाया ता है। बहू है तो गुनन की पूरीं गुना में मुख देखेरी। ये मैं गुणा द पर अटक गया, आखिर ये गुना में से मुख देखना क्या है। देलखंड में गुना में से मुख देखने का प्रचलन बहुत पुराना है। गुना क पकवान है जो केवल बहू का मुख देखने के लिए बनाया जाता । यह बेसन से बनता है और चूड़ी जैसी आकृति का होता है इस विभिन्न प्रकार की डिजाईने भी निकाली जाती है। इसे बहू के यके से ही बनाकर चुलया में रखा जाता है। बहू ससुराल के वाजे पर आती है तब एक नेंग होता है जिसे मोंचायना कहा जाता । मोंचायने का अर्थ है नई बहू के मुख देखने की इच्छा। नई बहु ब आती है तब वह घूंघट डाले होती है ताकि कोई उसका मुँह नहीं ख सकता। अड़ौस-पड़ौस रिश्तेदार, गाँव घर की सभी औरतें बहू ा मुख देखने के लिये लालायित रहती है। मुँह देखने का नेग भी ाता है, इसमें मुँह देखने वाली औरतें बहू को रुपया पैसा या ाभूषणदेती है, फिर मुँह देखने का अवसर मिलती है। बहू का मुख खना भी कोई सहज कार्य नहीं है क्योंकि उसका मुख घूंघट लटकर नहीं देखा जाता क्योंकि वह घूंघट डाले रहती है और घूंघट के किनारों के बीच में ही गुना के वृत्त में से नई बहू का मुख देखा जाता है। अब इस गुना में से कितना कैसा मुँह देखा गया यह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन यह गुना है एक नायाब पकवान। गुना नाम के पीछे इसके आकार-प्रकार का भी आधार है। यह शून्य आकार का है और शून्य जब किसी अंक के पीछे आ जाता है, तब वह कई गुणा हो जाता है। इसलिये कि यह चीजों को कई गुणा कर देता है। ऐसा नववधू के मुख से सौंदर्य को कई गुणा बढ़ाकर दिखाता है। ऐसा इसलिए कि मुख ढ़का हुआ भी है और दिखाई भी दे रहा है सौंदर्य ढ़ंका हुआ हो और दिखाई भी दे तो वह अनंत गुना बढ़ जाता है।

गुना का संबंध गुणों से भी है। बहू का केवल चेहरा नहीं देखा जाता बल्कि उसके गुण भी इस के माध्यम से अनुभव कर लिये जाते है। अधिकतर इस गुना नामक पकवान के वृत्त से जब बहू का मुख देखा जाता है तब उसकी आँखे अधिक दिखाई देती है और आँखे ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती है। यही वजह है कि गुना बहू के गुणों को देखने का भाव भी अपने भीतर छिपाये है।

गुना को गोंठा भी जाता है गोठना क्रिया सज्जा से संबंधित है। गुना की परिधि पर गौठ कर बेल जैसी काढ़ी जाती है उस पर और कला उकेरी जाती है गौंठना भी गुना शब्द का मूल हो सकता है। यह है बहुत आकर्षक शब्द इसलिये नवबहू के सुंदर मुख की झलक इससे जानी जाती है।

गुना से मुख देखने की परंपरा कैसे और कब बनी होगी। इसके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता है किंतु यह निश्चित है कि यह परदा प्रथा के साथ ही आई परंपरा है। ससुराल में चाहे जो नव वधू का मुख न देख पाये। एक उत्सुकता बनी रहे इसलिए यह परंपरा बनायी गयी होगी। हमारी अनेक परंपरायें उत्सवधर्मी हैं। यह दिखरावनी भी एक उत्सव है। गीत गाये जाते है बतासा बाँटे जाते है। भीड़-भाड़ होती है। सभी चाहते है कि नवबहू के मुख की सुंदरता देखें। किंतु यह ऐसा सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं है। महिलाएं इस सार्वजनिक आयोजन को विशेष बनाती है। और इस विशेष को प्रदर्शित करता है गुना। गुना में से बहुत संक्षिप्त झाँकी बहू के मुख की देखी जाती है और वह भी केवल महिलाओं के द्वारा अब देखिये कि गुना में कितने गुण छिपे हुए है। समय बदला और अब 'गुना' भी उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। परदादारी कम हुई है। अब नवबहुएं पूरा मुँह ढाँक कर नहीं आती है। फिर भी हमारे घरों में अब हमारी परंपरायें विद्यमान है, भले ही वे प्रतीक रूप में ही सही। हमारा तो मत है कि ये या इस जैसी परंपरा को विलुप्त होने से बचाना चाहिये। इन परंपराओं में हमारी संस्कृति छिपी हुई है।

श्री चंडी जी वार्ड
हटा (दमोह) म.प्र.

बुंदेली बिलवारियों का समीक्षात्मक प्रदेय

–संदीप चौरसि

डॉ. कुंजीलाल पटेल बुंदेली धरातल से जुड़े हुए लोकसाहित्यकार है। जिन्होंने विलुप्त हो रही लोकमान्यतायें, लोकपरंपरायें एवं लोकगीतों का संकलन तथा संरक्षणक साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। इनका पूरा जीवन बुंदेली भाषा, संस्कृति और साहित्य की सेवा में समर्पित रहा है इन्होंने विलुप्त हो रहे इस वाचिक लोकसाहित्य को गांव-गांव घूमकर लोक कलाकारों और ग्रामीण महिलाओं से संकलित किया है। इसके साथ उत्तर-मध्यकालीन बुंदेली भाषा के किवियों की रचनाओं पर खोजपूर्ण कार्य किया है वर्तमान में आप उच्च शिक्षा विभाग में महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय छत्तरपुर (म.प्र.) में अपनी सेवाएं दे रहे हैं एवं साहित्य जगत को समृद्ध कर रहे हैं।

सभी संकलनों का विस्तृत अध्ययन के उपरान्त 'बुंदेली लोकगीत बिलवारी' (पृ.41-54) ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया, क्योंकि यह लोकगीत लोकजनमानस में रचे बसे हुए हैं। इस आलेख का मूल उद्देश्य लोकपरंपरा से विलुप्त हो रहे वाचिक परंपरा के बिलवारी लोकगीतों को संकलित कर उन्हें संरक्षित करना है, क्योंकि आधुनिकता की इस दौड़ में यह लोकगीत दूर-दराज दिखाई नहीं दे रहे हैं। लोकगीत ग्रामीण जनमानस को हमेशा उत्साहित करते हैं गांव के लोग परिश्रम की थकान को मिटाने के लिए इन्हीं पारंपरिक लोकगीतों का उत्साह वध्रक गायन करते हैं। जिससे उनमें नवीन ऊर्जा ख्रु होती है। बिलवारी लोकगीत कृषिपरक लोकगीत होते हैं। इन लोकगीतों को किसान ओर कृषि मजदूरों द्वारा खेत-खलिहाना में सामूहिक धुनों में गाये जाने के कारण बिलवारी लोकगीत कहा गया है। बुंदेली लोकजीवन में बिलवारी को 'अपूर्णा' तथा 'खेती की रानी' कहा जाता है।

बुंदेली के बिलवारी लोकगीतों में क्षेत्रीय भौगोलिकता, प्राकृतिक सौंदर्य एवं पारिवारिक संस्कृति की स्वच्छंद त्रिवेणी प्राप्त होती है। बुंदेली बिलवारी गाने के लिए साज-बाज की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रस्तुत आलेख में बुंदेली बिलवारियों मे पारिवारिक संबंधों के खट्टे-मीठे अनुभव प्रचुर मात्रा में देखने को मिलते हैं। पारंपरिक लोकप्रचलित बिलवारी लोकगीत 'पथरीले पिया तोरे देरा हमारी' में नायिका नायक को बड़े ही अद्भुत ढंग से लोकगीतों के माध्यम से उलाहना देती है। इसी प्रकार इन लोकगीतों में बुंदेलखण्ड चरखारी और पन्ना राज्यो की संस्कृति को दिखाया गया है। बुं के बिलवारी लोकगीतों में चरखारी के स्वर्णकारी का यशोगान कि गया है तथा समाज में छुआ-छूत की परंपरा को रेखांकित करते ननद-भौजाई एवं पति-पत्नी के मनमुटाव को लोकगीतों से प्रद किया गा है।

ग्रामीण अंचलों में खेती-किसानी की प्रधानता प्राचीनका से ही रही है। ग्रामीण लोकजीवन मे जीवनयापन के लिए खे किसानी और मेहनत-मजदूरी के अलावा और कोई चारा नहीं इसलिये बिलवारी लोकगीतों में चैत्र कटाई, फसलों से पक्षियों उड़ाना, प्राकृतिक आपदाओं जैसे अकाल की स्थिति को प्रद किया गया है।

बुंदेलखण्ड में संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित रही है। के ग्रामीण क्षेत्रों में दराई-पिसाई करते समय बिलवारी का गा किया जाता है। बिलवारी लोकगीतों में अकाल की स्थिति का ब ही दयनीय वर्णन देखने को मिलता है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण लो कर्ज में दबकर अपनी बेटियों का विवाह गरीब और मजदूरी क वाले घर में कर देते हैं। इस व्यथा को बिलवारी लोकगीतों रेखांकित किया गया है।

बिलवारी, लोकसाहित्य की एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण लो विधा रही है। इन लोकगीतों में पारिवारिक संस्कृति, प्राकृ सौंदर्य, लोकजनमानस का सुख एवं दुख रेखांकत होता है। आधुनि युग में न तो पारंपरिक संसाधन बचे है और न ही कटाई-गहाई पुराने तौर-तरीके, इसलिए शताब्दियों पुरानी ग्रामीण लोकमान्यतायें लोकपरंपरायें एवं लोकगीत विलुप्त हो रहे हैं। ग्रामीण लोकसाहि वाचिक परंपरा के द्वारा जीवंत है, इसलिए वाचिक परंपरा की विधाओ का संकलन एवं संरक्षण करना हम सब बुद्धिजीवियों का सांस्कृतिक तथा साहित्यिक लोकधर्म है।

अतिथि विद्वान
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केंद
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्व विद्यलय
छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9939656130

गोखा

गोखा शुरू में गैया की आंख की नाई होत तो ईसे ईखों संसकिरत में गवाक्ष कई जात ती। ...रें ई शबद को घिसबो भओ और जो वन गओ 'गोखा'। जो दीवार में गोल आकार को होत थोड़ो-थोड़ो दोई ओर खिंचो भओ सो जो घर की आंख जैसो दिखान लगत है। जैसे घर देख ...ओ होय। कहूं-कहूं ईखो मोखा सोई कई जात है। ई गोखा में से आप झांक हो तो घर बायरे की ...नायें दिख है जे घटनायें आप खों कई भावों से और विचारों से भर देहे। जे कहाऊती है कथायें, ...हानियां। इन कहानियों खों आप पढ़ो ई गोखा में।

तुलसी महारानी व्रत कथा

–डॉ. दुर्गेश दीक्षित

अपनें बुंदेलखण्ड में बिरछन खौं देवता मान कै समय-समय पै उनकी पूजा करी जात। ऊसै तौ सबई बिरछन में देवतन कौ वास है। जैसे अकौवा उर धतूरे में शंकर जी को वास, तुलसी-पीपर उर बरिया में भगवान विष्णू कौ वास, उर ऊमर में प्रेतन कौ वास मानों जात। ओई हिसाब सैं बिरछन की पूजा करी जात। जैसे चौदस खौं अकौवा, वसंत खौं आम को मौर, बरसात खाँ बरिया, कातक में सोम्वा अमाउस उर शरद पूने खौं तुलसी की पूजा करी जात। तुलसी खौं तौ पूजा में धरऊ जात। बिना तुलसी दल के भगवान खौं भोग नई लग सकत। कातक के पुनीत मईना में तौ कातक अनाऊत में सबसैं पैला तौ तुलसिअई की पूजा करी जात। औरतें ऊ बेरा एक सुर में गाँउन लगतीं तुलसी महारानी नम-नमों। सोम्मा अमाउस खौं तौ तुलसी घरूवई खाँ परकम्माा दये जात। शरदपूने खौं सत्यनारायन भगवान के लड्डुवन की पूजा तुलसी घरा के सामनई हुन करी जात। बुंदेलखण्ड के हर भरे पूरे परवार के घरन के आँगन में तुलसी धुरूवा बने रत। बउयें बिटिया सपर खोर कैं सबसैं पैंला तुलसी के बिरछा की पूजा करकैं ऊदबती लगावतीं उर आरती करत हैं। फिर घर केंकौनऊ दूसरे काम काज करत हैं। ऐसई तुलसी माता की पूजा करत में इतें की बऊयें बिटियां एक कथा सुनाउन लगत हैं।

ऐसई ऐसे एक गाँव में एक नद भौजाई रतीं। ननद भौजाई की कैऊ ठऊआ कानियाँ कई जात हैं। उन दोईयन में खुट पुट तौ होतई रत। ननद रोज भुन्सरा नहा धाके सबसै पैला घर कै तुलसी घरा नौ जाकै तुलसी महरानी की पूजा मन लगाकै करत ती फिर पछारों कोनऊ और काम करवे की सोसत तीं। ऊकौ मन तुलसी की पूजा में भौतई लगत तौ। ऊकी पूजा देख-देख कै भौजाई खाँ भौतई चिड़ होत ती। ननद भौजाई की नोक झोंक तौ भोतई होत रत। एक दिना हँसी-मजाक में भौजी ने ननद सैं कई के तुमाये सबई काम ऐई तुलसी घरूआ से पूरे हुइयै। का ब्याव होवे पे तुमई तुलसी घरा खौं सासरे लै जैय। ननद तौ भौतई भोरी भारी हती। वा कनलई के भौजी हम का जाने, येई तुलसी मइया जाने। हमसै तौ जैसीलटी दूबरी बनत सो सेवा पूजा में लगे रत। ऊकी भौजी तौ भौत चालू हती। वा ननद खौं नैचो दिखाये के चक्कर में हती। उर वा मौका की बाट हेरे बेंठी ती। पूजा करत-करत ननद याई स्यानी हो गई। उर ब्याव लाख हो गई, ऊकौ भइया ने एक गाँव में अच्छौ रौ लरका देख कै बैन कौ ब्याव तैकर दओ। ब्याव कौ समय आवे पै बाजे-गाजे रौं बरात आ गई। टीका हो गओ उर फिर भोजनन के लाने आँन में पंगत बैठ गई। मौका देख कै भौजी खौं खुरापात सूझी। जईसै बरतन खौं पत्तले परसी गई, सोऊ भौजी ने अपने आदमी बुलाकै पातरन पै तुलसी घरूवा की माटी परसुवा दई। अकेले भगवान की ऐसी कृपा भई कै पातरन पै माटी की जगा पै छप्पन बिंजन बन गये। बरतयन ने खूब छककै, भोजन करे। उर भोजन की भौत तारीप करी। जौ सब देख के भौजी ता करकैरै गई। ऊकी जा चाल बेकार चली गई, उर वा हात मीड़त रै गई। अकेले भौजी ने हार नई मानी। ऊनें बिदा की बेरा दायजे में तुलसी घरूवा धर दओ। उर उये पैरवै खाँ तुलसी की मंजरी उर माला धर दई। भगवान की ऐसी कृपा भई कै तुलसी घरूवा के तौ सोने चाँदी के ढेरन बासन भाड़े बन गए।

उर तुलसी की माला उर मंजरी के कैऊ तरा के हीरा-मोती उर सोने के जेवर बन गये। वा अपनौ करम ठोक कै रै गई। उर सोसन लगी कै मैं तो ईकौ कछूअई नई बिगार पाई। साँसऊ ईकै ऊपर तुलसी माता की पूरिअई कृपा है।

कछू दिना में ओई भौजी की बिटिया ब्याव लाख हो गई। ऊर्न सोसी कै 'घर के तुलसी धरा में तौ भौतई जादू है। बिनई कछु करे धरे पूरे काम बन जात। हम काय खौं ब्याव के लाने कोनऊ इंतजाम करबे। वा तनक कैवे सुनवे खौं अपनी बिटिया सें तुलसी की पूजा करवाउन लगी। ऊने बिटिया कौ ब्याव पक्कौ करवा दओ। दोरे बरात आ गई, उर जईसै बरात की पंगत बैठी सोऊ ऊनें पातरन में ननद की घाई तुलसी धरूवा की माटी परसुवा दई। अकेलै होत का हतो जौतो ऊकौ ढोंग धतूरों हतो। पातरन में भोजन की जगा माटी देखकै बरतया नाराज हो-हो कै पातरै छोड़-छोड़ के बायरे भग गये। और भौजी के घर की भौत निंदा भई। ऐसई जब बिटिया की बिदा होन लगी सो भौजी ने दायजे की जगा तुलसी धरा धर दओ। बिटिया की ससुरार में ऊके बाप माताई की भौतई थू-थू भई। उर फिर जीवन भर खौं चुराई की गाँठ बंध गई। उर हमेशा के लाने बिटिया को मायको छूट गओ। कजन कोऊ काऊयें गड़ा खोदत तौ भगवान की कृपा सें दूसरे को कछू नई बिगरत। अकेले वे गड़ा खोदवे वारे खुदई गड्डा में गिरत। देखो ऊने ननद कौ तो कछू नई बिगार पाओ, उर भौजी की बिटिया को जीवन भर के लाने मायकों छूट गओ। जो साँरो मन सैं तुलसी मइया की सेवा करत। उनकी ऊपै हमेसई कृपा बनी रत। ढोंग ढकोसला से कछू नई होत। जौ तौ हतो ऊ भौजी को हाल। अकेले ऊकों भइया तो अपनी बैने खौं भौत चाऊत तो। जब बिलात दिना से बैन नई मिली तो एक दिन भइया ने पअनी घरवारी रो कई कै देख री बिलात दिना हो गये। हम अपनी बैन की खबर-दबर लैन जा रये। कछू भेंट के लाने धरे होय तो दै देव। वा तो पैलऊ रौं ऊसे जरी भुनी बैठी ती सोस रई ती कै मैं ऊरड़याल कौ कछू बिगार नई पाई। हमने ऊकौ बुरऔ करो उर ऊको भलो होत गओ।

हमाई बिटिया सों खड़न खपरन मिल गई ऐसी सोच कैं ऊने एक इया में जुनई के कनूँका बाँध कैं कई कै जाव चले जाव अपनी इली बैंन के घरै। बिटिया के ना जाबे की तों तुम कभऊँ चर्चई नई रत। भइया मौंगो चाली जातनई ऊने वा पुटइया बैन की सास खाँ आ दई। तुलसी मइय की कृपा सैं वे जुनईके कनूँका हीरा उर वाहरात बन गये। देखतनई सबखाँ भारी हाल फूल भई। बैन भइया मिलकै फूली नई समा रईती। भइया की भौत खातर दारी भई। दो र दिना रैके अपनी बैन खाँ लुआ कैं घरै लौट आये। देखो जो होत क्ति कौ फल। भक्ति कभऊँ निरफल नई होत। बाढ़ई ने बनाई कटी उन हमाई कानियाँ निपटी।

कुण्डेश्वर (टीकमगढ़)
मो. 9630792227

(बुंदेली व्यंग्य)

अपन औरें तो फटे ढोल ढैरे

-डॉ. (सुश्री) शरदसिंह

काए शरद [illegible], जे अपनो मूंड़ पकर के काए बैठी? भुनसारे से भैया आन टपके।

'कछु नई! ऊंसई' मैंने कहीं।

'जे ऊसई का कहात आए? अरे कछु तो हूहे। कोनऊ बुरौ सपनों देख नौका? काए से के दत्ते भुनसारे और तो कछु सल्ल नई हो सकत आए।

'कहीं ना, कछु नइयाँ। कछु खास बात नोई। मैंने अैयाजी सों टालबो चाओ।

'मनो ने बताने होए सो ने बताओ। हम को लगत तुमाए।' भैयाजी तो ठैरे भैयाजी, रिसावे को स्वांग भरत भए बोले।

'अरे, कछु नई भैयाजी, ऊसई मूंड़ पिरा रओ। मोए बताने पड़ी।

'हें! त्बीयत तो ठीक आए ने तुमाई? कछु दवा सवा तो नई चायने? काय सै के तुमाई भौजी को तो आए दिना मूड़ पिरात रैत आए।' भैयाजी फिकर करत भए बोले।

'नई-नई भैयाजी, दवा की कौनऊ जरूरत नईया। अपनोई आप ठीक हो जेहे।' मैंने कही।

चलो ठीक है, फेर बी कछु जरूरत परे तो सोवता दईयो। खुद को अकेलो ने समझियो।' भैयाजी लाड़ करत भए बोले।

'आपकी किरपा भैयाजी, बाकी जे अपनो आप ठीक हो जेहो। आप फिकर ने करो।' भैयाजी की बात सुन प्रान लेने का? जे आप इच्छाधारी वक्ता न बनो।

कछू गम्य खाओ।' मैने भैया खों बताई।

'सो तुमने उनसे ऐसई बोल दई?' भैयाजे चकित होत गए वोले।

'अरे, काए खों! बेलने पाई, सभई से मोरो मूड़ सो पिरान लगो। वोल लेती सो उनई जी जुड़ा जातो।' मैंने बताई।

हैं? सो जे बात आए। हमने तो सोची के यूक्रेन की लड़ाई के कारन तुमाओ मूढ़ पिरा रओ।' भैयाजी बोले, 'ये लेलो, ब जे यूक्रेन की लड़ाई से हमाओ मूड़ को का लेवो देवो?' मोए हैरत भई।

'अरे, जे ने कहो बिन्ना! आज काल जो कछु हो रओ, जो अब कछु ससुरो यूक्रेन की लड़ाई के कारन हो रओ' 'का मतलब?'

'मतलब जे कि पेट्रोल के दाम बढ़ गये सो यूक्रेन की लड़ाई के कारन, पिसी मँगी हो गई सो यूक्रेन की लड़ाई के कारन, साग-भाजी मँगी हो गई सो यूक्रेन की लड़ाई के कारन, पाइयें मँगी हो गई सो यूक्रेन की लड़ाई के कारन, निबुआ मँगे हो गये सो यूक्रेन की लड़ाई के कारन। मोए तो लगत आए के कोनऊ को तलाक बी हुइए सो वो बी यूक्रेन की लड़ाई के कारन।' भैयाजी बोलत बोलत तैस खान लगे। सो, मैंने बात बदलने की सोची। 'अरे, सुनो भैयाजी, निबुआ से खयाल आओ के वे तो वाकई मँगे हो गये हैं। कल वो ठिलिया वारो आओ रहो, मैंने उसे पूँछी के निबुआ कैसे दे रए? सो बा बोलो के दस रुपइया को एक, बाकी दीदी, आप के लाने बीस कै तीन लग जे हैं। सो, मैंने ऊसे कहा के इती मेहरबानी करने की जरूरत नैयाँ। मोए नहीं चाहने निबुआ विवुआ। बढ़ा लेओ ठिलिया अपनी।' मैंने भैयाजी को ध्यान निबुआ पे अटकानी चाओ। के मोरो दिल भर आओ। कोब्रउ दो बोल मिसरी घाईं बोल दे तो अंसुआ से आन लगत आएँ। मनो बिन्ना, हमें पतो है के तुमाओ मूड़ काए पिरा रओ आए।' भैयाजी तनक सोंचत भये बोले। 'सो, कल संझा के बारे में आपको सोई पतो पर गओ। कौन ने बताई?' मोए अजरज भओ के भैयाजी के भैयाजी को कोन ने बता दओ।

ईमें कोऊ का बतेहे? ई दिना जो कछु हो रओ ई दुनिया में वा सब कछु युक्रेन औ रूस की लड़ाई के कारन सो हो रओ। भैयाजी बोले।

'मोरे मूड़ के दरद को रूस युक्रेना की लड़ाई से का लेवो देवो? जे तो कल संझा की गोष्ठी के कारन पिरा रओ आए।' मैंने भैयाजी को बताओ। 'का हो गयो कल गोष्ठी में?' भैयाजी अनमने से हो के बोले।

होने का हनो। एक भैया को कल्ले 12 मिनिट देओ गयो रओ अपनी बात बोलबे के लाने। पर उन्ने तो बारह के ब्यालीस कर दये। बे भैया माइक से ऐसे चिपके के हटबे को नांव ई नई ले रये हने। कहने थी आम की, बोल गये नीम की। औ बेसरमी ऐसी के अखीर में कैन लगे के हमें सो अबै और बोलने रओ, बा तो संचालक जी ने टेम की पाबंदी लगा दई सो हम पूरी बात ने कर सके। मेरो तो जी करो के ठाड़ी हो के कहों के भैया इते कोनऊं सत्यनारायण की कथा नोई हो रई के आज ई सगरी बाँच देओ। कछु अगली बेर लाने बी रैन देओ। काए इते सबई के जे ई तो हम कै रये के निबुआ दस के एक हो गये सो यूक्रेन की लड़ाई के कारन।' भैयाजी फेर उतईं पाँच गये।

अरे सुनो तो भैयाजी! अभी परों के रोज व्हाट्सआप पे एक चुटकुला पढ़ो मैंने, के एक मोड़ी अपने बायफ्रेंड से बोली के हमाओ तुमाओ पेंचअप भए चार मईना बीत गये पर तुमने हमाए लाने कछु गिफ्ट शिफ्ट नई लाओ। कहूँ प्रेम ऐसो करो जात आए? जे सुन के बायफ्रेंड बोलो के अरे, तुम बताओ तो हम तुमाए लाने ताजमहल बनवा दें, चाँद तारे तोड़ लाये, एक बार कह के तो देखो। ई पी वा

ड़ी बोली, हमें ताजमहल के नांव पे अपनो मुकरवा नईं बनवाने, ने हमें चाँद तारे चाने, तुम तो हमाए लाने दो दर्जन निबुआ ला औ ने तो हमाओ तुमाओ प्रेम अप हो जेहे। समझ लेओ। जे सुन के बायफ्रेंड बोलो, ब्रेक अपई हो जान दओ इत्तो मैंगों निबुआ लाने से तो आए के ब्रेकअपई हो जाए। जे कै के बायफ्रेंड ब्रेकअप करके तै से चलो गओ।' मैंने भैयाजी को चुटकुलो सुना डारो ताकि भैयाजी यूक्रेन की लड़ाई खों भूल जाएँ।

हऔ बिन्ना, ई समै तो ई बानपे कोनऊ खों ब्रेकअप हो जाए। तो, ईके पांछू बी यूक्रेन की लड़ाई को हाथ कहानों। ने लड़ाई होती औ ने निबुआ मैंगो होनो औने ब्रेकअप....। भैयाजी बोले।

'भैयाजी, मोरी तो सुनो...' मैंने भैयाजी को टोकों, पर वे कहाँ सुनने वारे।

हमाई जिनगी में ई समै जो कछु बी होरओ सबई में जेई तो कहो जा रओ के अबां यूक्रेन की लड़ाई के कारन फलां यूक्रेन की लड़ाई के कारर्न रामधइ, ऐसो लगत है के हमाओ सबरो व्यापार यूक्रेन और रूस के संगे होन रओ आए। आए के कोनऊ खों कब्जीयत बी हुइए सो ऊबो जेई लगहै के यूक्रेन की लड़ाई के कारन पेट अटां गओ। कोनऊँ की मोड़ी भरे से भा जेहे के यूक्रेन की लड़ाई के कारन भाग गई। कोनऊ चलत चलत रपट पड़हेसो कहो जेहे के यूक्रेन की लड़ाई के कारन रपट गओ। मैंगाई मनो रोकत नईं बन रई, सो कोऊ के मूड़ पे ठीकरा फोड़ई जैहे, सो फोड़ो जा रओ।' भैयाजी मों बनात भए बोले।

'के सो तुम साँची रै भैयाजी! प्र करो का जा सकत आए। इनसो लड़ने, उनखों लड़ने, सगरी मुसीबतें सो अपन ओरन के मूंड़े पड़ने। भैयाजी, अपन ओरें तो फटे ढोल ठहरे, चाय इते से थपड़याओ चाये उने से थपड़याओ चूंस बोलहे। निबुआ चाये पचास को एक बिके पर अपन ओरें कछुने बोलहे। बाकी जे ओरें कबलों लड़हें, कुल्ल मईना निकर गए लड़त लड़त। जे ओरें बोर नईं भए? नासमिटी कई के! मोए सोई रैस आन लगो। सो, अब भैयाजी बात बदलवे खों ठाडे हो गये।

अब तुमाओ मूड़ को दरद कैसो है? भैयाजी ने मोसे पूछी।

'अब तो ठीक लग रओ।' मैंने कही।

'जे ई तो! एक से ध्यान बिलोरबे के लाने दूसरी अड़ी विधी देओ, फिर देखो, फेर वोई-वोई दिखान लगन आए।'

भैयाजी हंसत भए बोले, 'अब मोए चलन देओ बिन्ना। पंद्रा मिनट में दूध ले के मोए लौटने रओ, ओ अब हो गये घंटा खांड़। तुमाई भौजी लमकत भई मिलहें।

'सो, के दईयो भौजी से के भैंसिया दूध नईं दे रई इती यूक्रेन की लड़ाई क कारन।' कहत भई मोए हंसी छूट परी। भैयाजी सोई हँसत चले गये। मोई सोई बंकाव करनी सो कर लई। बाकी रूस जाने, फूस जाने, दफ्तर वारे घूस जाने। मोए का करनें बतकाव हती सो बढ़ा गई, हंड़िया हती सो चढ़ा गई। सो सबई जनन खों शरद बिन्ना की राम राम!

एम-3, शांतिविहार, रजाखेड़ी, मकरोनियाँ
सागर, (म.प्र.) 470004

(कहानी)

जुड़वां

-डॉ. प्रेमलता नीलम

गाँव में तीन भाई राम, श्याम और नारायण का परिवार रहता था। राम के दो बच्चे लव और कुश और श्याम के एक बच्चा देव था। लव कुश और देव तीनों बच्चे आपस में बहुत प्रेम से रहते थे।

तीनों घर में बहुत उत्पात मचाते और हंगामा करते थे। एक दिन तीनों बच्चे एक दूसरे के पीछे से शर्ट को पकड़ खेल रहे थे। लव सीटी बजाता और छुक-छुक करता हुआ आगे भाग रहा था। उसे पीछे से पकड़कर देव और उसके पीछे कुश, वो दोनों डब्बे बनकर छुक छुक छुक छुक कर रहे थे, तीनो रेल गाड़ी खेल रहे थे।

तीनों बच्चों को आँगन में खेलता देख कर नारायण बहुत प्रसन्न होता था। पर इसकी पत्नी बहुत दुखी रहती थी, क्योंकि उनका स्वयं का कोई बच्चा नहीं था, पर ईश्वर की कृपा से कुछ समय पश्चात नारायण के घर के जुड़वां बच्चियों ने जन्म लिया।

नारायण ने उनका नाम दुर्गा और लक्ष्मी रखा। राम ने उनके जन्म के अवसर एक विशाल कन्या शाला भवन का निर्माण कराने का संकल्प लिया, राम और श्याम नारायण के घर में कन्याओं के जन्म होने पर बहुत प्रसन्न हुए। उनके घर में कई पीढ़ियों के बाद कन्याओं ने जन्म लिया था, वह भी जुड़वा। कन्याओं के जन्म के साथ ही उनके घर में सुख समृद्धि बढ़ती गई और उनका परिवार गाँव के समृद्ध परिवार में गिना जाने लगा।

दुर्गा और लक्ष्मी जब थोड़ी बड़ी हुई तो वह भी लव कुश और देव के साथ मिलकर खेलने लगी। एक बार पाँचों बच्चे आँगन में चोर सिपाही खेल रहे थे। दुर्गा ने कहा 'मैं तो पुलिस इंस्पेक्टर ही वनूंगी तुम लोग चोर बन जाओ मैं तुम्हें झटपट पकड़ लूँगी।' दुर्गा पढ़ाई में वहुत होशियार थी जब भी स्कूल में टीचर उससे पूछते 'वताओ दुर्गा तुम क्या वनना चाहती हो?' दुर्गा उत्तर देती 'मैडम मैं जो पुलिस इंस्पेक्टर वनना चाहती हूँ।' एक बार दुर्गा और लक्ष्मी की मौसी उनके घर मिलने आई। मौसी को दो लड़की थी, उनका नाम सोना और चंदा था। दुर्गा ने मौसीसे कहा मौसी कोई खेल बताओ ना हम कोन सा खेल खेलें। मौसी ने दुर्गा और लक्ष्मी को बताया 'हमारे बुंदेलखंड में विभिन्न खेल खेले जाते है जो छोटी कुंवारी कन्या खेती है उन्हीं में से ये एक खेल है माहुलिया।

लक्ष्मी ने अचरज से पूछा 'मौसी यह माहुलिया क्या होता है? मौसी ने बताया 'माहुलिया खेल बारिश के मौसम में जब प्रकृति हरियाली का श्रृंगार कर लेती है, तब खेला जाता है' अरे मौसी पहेलियाँ मत बुझाओ बताओ ना यह कैसे खेला जाता है?' दुर्गा ने उतावली होकर मौसी से पूछा। मौसी ने कहा- हाँ...हाँ... वही तो बता रही हूँ। बेर वृक्ष की कटीली डालियों को रंग बिरंगे फूलो से सुसज्जित किया जाता है। एक कन्या उसको हाथ में पकड़ती है और आगे-आगे लेकर चलती है, पीछे-पीछे बालिकाएं झुंड बनाकर चलती है, जो कन्या कटीली डाली लेकर आगे चलती है उसके माथे पर तिलक लबाकर ककड़ी के 9 छोटे टुकड़े एवं भुंजे चले कन्या को दिए जाते है। वह मुँह में डालकर होठ बंद करती है और नदी या ताब की ओर चलना शुरू कर देती है। एक सहेली पूजन थाल हाथ में लिए चलती है। फूलों से सजी कटीली डाल की ही महुलिया कहते है, संग चलने वाली सखियाँ गीत गाते हुए आगे बढ़ती है।

'माहुलिया के फूल सजइयो मोरी माहुलिया
जहाँ मोरे बाबुल का खेत उतई बैठ। माहुलिया,
जहाँ मोरी माता का बाग उतई सजे माहुलिया,
ककरी चना मुँह में डाले ठुमक-ठुमक चली माहुलिया।
चंपा चमेली फूल से सजइयो कंटीली डार भटक चली माहुलिया।'

मौसी इस खेल से हमें क्या सीख मिलती है। लक्ष्मी ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की! मौसी ने कहा 'बेटी माहुलिया हमें संयम, अनुशासन और बुद्धि का पाठ पढ़ाना है।' इस तरे बेटी लक्ष्मी और दुर्गा ने अपनी बहन सोना और चंदा के साथ माहुलिया का खेल खेला।

एक दिन लक्ष्मी ने सोना और चंदा से कहा 'तुम दोनो मरीज बन जाओ, मैं तुम्हारा इलाज करूंगी।' लक्ष्मी ने सोना और चंदा को लिटा दिया और थर्मामीटर से उनका बुखार चेक करने लगी। इसी तरह बीतते रहे और सभी बच्चे धीरे-धीरे बड़े हो गए एक दिन लक्ष्मी ने अपने पिता से कहा पिताजी मैं डाक्टर बनना चाहती हूँ।' सुनकर उसके पिता नारायण बड़ा प्रसन्न हुए और उसका एडमिशन जबलपुर के मेडिकल कॉलेज में करा दिया। दुर्गा शुरू से ही पुलिस में जाना चाहती थी। उसने इंस्पेक्टर की परीक्षा दी और उसमें सफल हो गई, ट्रेनिंग के लिए जबलपुर गई।

गाँव में सभी लोग बड़े प्रसन्न हो रहे थे कि गाँव की बिटियां डाक्टर और इंस्पेक्टर बन कर आ रही है।

जैसे ही दुर्गा लक्ष्मी ट्रेन से उतरी गाँव के मुखिया ने हार पहनाकर उनका स्वागत किया! उनके चाचा श्याम, ने सरपंच जी से कहा 'अब गाँव के लोगों को इलाज करवाने शहर नहीं जाना पड़ेगा।'

सरपंच जी बोले पर भैया गाँव में अस्पताल कहाँ है? तुरंत ही श्याम ने अस्पताल के लिए एक भवन कराने की घोषणा कर दी! सभी लोग डाक्टर लक्ष्मी और इंस्पेक्टर दुर्गा का अभिवादन करने लगे।

जल्दी ही अस्पताल बनकर तैयार हो गया और गाँव के लोग
पना इलाज कराने डाक्टर लक्ष्मी के पास आने लगे। वाहर डॉक्टर
क्ष्मी के पिताजी नारायण बैठ के सब मरीजों से राम-राम करते
र सांत्वना देते।

'धीरज धरो तो उतराहू पारा
नही डूबत सकल परिवारा।'

यानी धैर्य धारण करो सब ठीक हो जाएगा और लक्ष्मी के
लाज से लोग ठीक भी होने लगे।

काव्यकुंज, बी-29,
एरोरा कालोनी, दमोह
मो. 2425406017

(बुंदेली किसा)

दूसरन को सम्मान

– डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही'

ई धरती पै कउँ वर्धमान नाँव कौ एक नगर हतौ। ओइ नगर में दंतिल नाँव कौ एक भौत बड़ौ तमेरौ रात्तौ। बासनन कौ रुजगार ऊकौ इत्तौ बडौ हतो कै बौ नगर कें सबइ बानियन कौ प्रधान हतौ। बौ नगर पालिका कौ काम तौ देखतइ हतौ संगै राजा कौ काम काज सोउ समाँरत्तो। ईसें नगर के मान्स ऊसें पूरी तराँ खुश रात्ते। जादाँ का काँयँ ऊकौ जैसो चतुर न तो कभँउँ भओ औ न सुनबे में आओ। पै कौन कइ जात कै राजा कौ भलौ चायबे बारे सें मान्स जरन सोउ लगत औ जनता को ख्याल करबे बारे खों राजा छोड़ देत। जौ गलत नईंयाँ कै एक कौ भलौ दूसरे कौ बुरौ। ईसें ऐसौ कौनँउँ बिरलौइ हुइयै जोंन राजा औ जनता दोउ कौ भलौ एक संगै कर सकै। दंतिल ऐसौ दुरलब मान्सन में एक हतो।

ई तराँ दंतिल कौ समय बड़े मजे में कटत रओ। फिर दंतिल की बिटिया के ब्याव को औसर आओ तौ ई औसर पै ऊनें नगर बासियन, राजा के सेवकन ओ अधिकारियन खों न्यौतौ दओ, उनें प्रेम सें भोजन कराओ औ जाती बखत भरपूर विदाइ दइ। बियाव के बाद उन्हें राजा खों उनके अन्त:पुर की सखियन के संगै अपने घरै बुलाओ औ उनकी खूब आवभगत करी। ऊसें बस तनक सी चूक हो गइ।

भओ जौ कै राजा के इतै गौड़म नाँव कौ एक झारबे बारौ चाकर हतो। ऊनें बुलाओ तौ ऊखों सोउ हतो, पै बौ आकें ऐन ऊँचे आसान पै बैठ गओ। जाँ उयै ना बैठो चाइए। ई बात पै गुस्सा होकें ऊने उयै धकयाकें बायरें काढ़ दओ।

बौ बदले की आग में ई तराँ सुलगत रओ कै रातभर ऊखों नीद लौ नँइँ आई बौ हरदम एकइ बात सोसत रओ कै दंतिल खों कौन जुगत से मजा चिखाओ जाय। झाड़ूबरदारइ सई पै बौ हतो तौ राजभवन कौ झाड़ूबरदार। ऊकी अपनी एक इज्जत हती, जोंन दंतिल के घमंड से धूरा में मिल गई ती।

बौ अपने खों धिक्कारत रओ, जोकँउँ मैंने दंतिल की दिमाग ठिकाने नँइँ लगा दओ तौ मोरी जीबौ बेकार है। पै उयै कौनँउँ उपाव सूज नँइँ रओ तो। आखिर में कछू अनमनौं सौ होकें सोसन लगो कै बौ बेमतलम में चिन्ता में अपनी खून जरा रओ। ऊके करें दंतिल कौ बुरौ तौ होवेइ सें रओं बौ हतो तो मूरखइ, पै ई बखत उयै सोउ एक सूक्ती याद आ रइ ती। 'जोंन आदमी कौउ कौ कछू नँइँ बिगार सकत होय, बौ निरलजय काउ पै गुस्सा करें काए? काएरें अकेलौ चना कितनँउँ उचकै, का बौ भार फोर सकत।'

पै जोकँउँ मान्स कौनँउँ एकइ विषय पै सोसत राय तौ कौनँउँ न कौनँउँ उपाव तौ सूजइ आउत। उयै सोइ एक जुगत सूज परी। एक दिनाँ बौ झाड़ू लगा रओ तो, राजा अबै नींद टूटबे सें पैले की खुमारी में परी तो। राजा की खटिया के ऐंगर झाड़ू लगाउत-लगाउत ऊने कइ 'दंतिल की मजाल तौ देखौ अब बौ रानी कौ सोउ आलिंगन करबे लग गओ।'

जौ सुनतइँराजा झट्टइँ उठ बैठो, ऊनें पूँछी गोड़म, तें जौ का कै रओ तो, का जा साँसी आय,' गोड़म नें कइ, 'मैं रातभर जुआ खेलत रओ, छिन भर लौ नँइँ सो पाओ अबै-अबै मोय तनक झपकी आ गई ती। मैं नँइँ जानत मोरे मों से का निकर गओ?

राजा कौ सक और पक्को हो गओ। बौ जर भुँजकें रै गओ। ऊनें सोसी गोड़म तौ रनबास में आउत रातइ है। जरूरइ ईनें कौनँउँ बखत दंतिल खों रानी की आलिंगन करत देख लओ हुइयै। काएसें जोकँउँ ऐसौ न होतो तौ बौ अंट-सेंट ना बकतो। कात हैं कै, बरौंटन में आदमी उनँइँ बातन खों देखत औ कात है जॉन बो जगतन में देखत कै कर चुकत होय। जगतन में आदमी तो झूँटइ बोल सकत फिर बरौंटन में अचेतन में ऊखों कौनँउँ बात कौ बंधन नँइँ रात ईसें ऊमें बौ साँसिय कात, कै करत है।

औ फिर जनियन को तो सुभसावइ कछू ऐसी है, कै वे एक मान्स सें बात कर हैं, औ लुकी नजरन सें कौनँउँ दूसरे खों हेरत रैंहें। मन कौनँउँ तीसरे में लगो रैहै। उनको तो काउसें साँसी प्रेम होइ नँइँ सकत।

लुगाइयन की बुराइ के बारे में ऊके मन में तरा-तरा के बिचार आउन लगे औ जेठे स्यानन के तरा-तरा के सुझाव औ उपदेश दिमाक में कोंदन लगे। इनकौ सार जौ हतो कै लुगाइयन की कामुकता कौ कौनँउँ पार नहँयाँ। ईसें उनके ऊपर भरोसो करबो मुरखता आय। बे कौनँउँ एक आदमी सें छ्कतियँइँ नइँयाँ। जैसें आगी में कितनँउँ नकरियाँ डारत जाऔ, ऊकी तृप्ती होइ नँइँ सकत। जैसें समुन्दर में कितनँउँ नदियाँ आके काए न गिरें बौ भर नँइँ सकत। जैसें कितनँउँ मान्स काय न मर जाँयँ काल की तृप्ति न हुइयै, ऊसइ कितनउ मान्स काय न मिल जाँयँ लुगाइयन को कामना पूरी नँइँ हुइयै। लुगाईंयन के सतित्व के बारे में कओ गओ है कै जोकँउँ उनें औसर न मिल पाय, जगा न मिल पाय, कै कौनँउँ चायबे बारौ न मिल पाय, तबँइँ उनकौ सतीत्व बचो रै सकत है।

लुगाईंयन की उन सबइ बुराइयन खों सोसत भओ जोंन कै आदमियन में खास करकें होतीं हैं। कै लुगवन में सोइ होतीं हैं। पै उतै बुराइ नँइँ मानी जातीं हैं। राजा दंतिल सें गुस्सा रान लगो औ ऊ कै मैहलन में आबे जाबे पै रोक लगा दइ। दंतिल की समझ में आइ नँइँ रओ तो कै राजा ऊकी कौन सी गलती पै नाराज हो गओ है। बौ–

ओउ भौतउँ चिन्ता में रान लगो बौ मनँईंमन बिचार करन लगो औ उयै सोउ तराँ-तराँ कै किताबी विचार घेरन लगे। 'धन दौलत पाबे के बाद कौ है जियै घमण्ड न होय? ऐसे आराम करबे और मान्य के दुखन को कभँउँ अंत भओ है? लुगाइयन नें कौन मान्स कै जी खों दुखी नँईं करो? राजा खों भलाँ कोउ कभँउँ प्यारी भओ है? की है जी पै काल की नजर न परी होय? कौ ऐसौ भिकमंगा है जीखों दुतकारौ न गओ होय? कौन सी ऐसौ मान्स है जींन दुष्टन के बहकाबै में न आकें सकुशल बच सको होय?

राजनन के बारे में जेठे स्यानन नें जो कछू कओ है बौ लुगाइयन के बारे में उनके विचारन से भौत कछू मिलत जुलत है। ई एक मामले में राजा और दंतिल की सोच कछू मिलत जुलत सोउ है। बौ सोस रओ तो जैसी कउवा में पवित्रता नँईं हो सकत, जुआरी साँसी बोलबे बारौ नँईं हो सकत, साँप क्षमा करबे बारौ नँईं हो सकत, लुगाइयन की काम लिपसा कभँउँ खतम नँईं हो सकत, कायर मान्स में धीरज संभव नइँयाँ औ शराबी में विवेक नँईं हो सकत। ऊसइ कौनँउँ राजा से दोस्ती भी संभव नइँयाँ।

पै इतनँईं सें ऊखों चैन नँईं मिलौ। आखिर ओइ राजा के इतै ऊकौ इत्तौ मान-सम्मान हतौ बौ सोसन लगौ कै मैंने राजा के संगै कै ऊकै चहेते सेवकन के संगै कभँउँ कौनँउँ बुरौ बरताव तौ करो नइँयाँ तौउ बौ मोसें अनमनौं काय हो गओ? बात समज में नँईं आ रइ ती।

एक बार ऊे सोसो कै काए न दरबार में जाकें राजइ से पूँछ लइये कै ऊसें का चूक हो गइ औ ईके लानें राजा सें आज्ञा माँगबौ चाइ तो दरबारियन ने उयै भीतर जाबेइ सें रोक दओं ठीक ओइ मौंका पै गोड़म सोउ उतै आ पाँचो। ऊनें ठिठौली करत भए दरबारियन से कओ, 'तुम सब जनन खों पतौ हैं कै तुम कियै रोक रए हौ? जे राजा के लाड़ले दंतिल जू आँयं इनें राज ने अधिकार दओ है कै जे जियै जी में आय इनाम दैदें औ जियै चाय उल्टो लटका दें। तौउ तुम सब जनन ने इनै भीतर जाबे से रोको तौ जे तुम सबजनन खों धक्का दैकें निकरवा दैहें।

अब दंतिल खों होस आओ। हो ना हो जा कारिसतानी ई गौड़म की आय। अब ऊकी समज में आओ कै राजा की सेवा में लगो आदमी कैसउ काय न होय, कितनँउँ मूरख, कितनँउँ तुच्छ काय न होय, मान्स ई बात कै लानेंइ ऊकी आदर करत हैं कै बौ राजा कौ सेवक आय।

राजा कौ सेवक डरपोक औ कायर होबे पैउ आम आदमियन के बीच कभँउँ हारत नइँयाँ डरपोक औ कायर मान्स सोउ राजा की सेवा में आबै के बाद शेर घाँईं सैजोर औ निडर समजो जात है। बड़े सें बड़ौ मान्स सोउ उयै पछाड़ नँईं सकत।

सब असलियत जान लैबे के बाद बौ मनँईंमन पछतान लगो। लाज औ बेइज्जती सें मूँड़ झुकायँ गिलानी सें भरो बौ अपने घरै लौट आओ। रात के ऊनें मसकँईं गौड़म खों बुलवाओ औ उयै धोती औ दुपट्टा दैकें ऊकौ आदर करो औ फिर बोलो 'मैंने तोय खुन्स के कारन घर से नँईं काड़ो तो तोसें एक चूक जा हो गइ ती कै तुम बामनँईं सें पैलेंईं जा बैठे ते। ईसें मोय तुमें उतै से हटाने परो। तो अब जो होनें तो सो हो गओ। ई बात खों जी सें निकार देव औ मोय क्षमा करौ।

गौड़म खों तौ उन दोउ उन्नत सेंईं मानों सुरग कौ राज मिल गओ होय। बौ खुश होकें बोलो- 'मैंने अपुन खों क्षमा कर दओ। अब अपुन देखौ मैं का चमत्कार करत हों।' ऊके मन में जौ बदलाव देखकें दंतिल सोसन लगो कै तखरिया की डाँढ़ी औ निडुर मान्सन कौ सुभाव एक जैसोइ होत है। वे तनकइ में इतै उतै सेंईं कै तौ तरें आ जात है कै बिलकुल ऊपर चले जात हैं। दूसरे दिना ठीक ओइ ब्रह्ममहूरत में राजा जगबें सें पैलाँ उसनींदौ सौ हतो। गौड्म ने कओ, 'महाराज की सोइ मति मारी गइ जो निजात के बखत ककौरिया खात रात हैं।'

राजा की नींद फिर खुल गइ औ ऊनें पूँछी 'गौड़म तें का बकबास कर रओ? तें घर कौ पुरानों चाकर ठैरौ ईसें छोड़ें देत नइँतर तोरी जान लै लेतो। कबै देखौ तैनें मोय निजात के बखत ककौरिया खात?

गौड़म ने फिर ओइ पुरानों उत्तर दोहरा दओ। 'महाराज क्षमा करें मैं काल रातभर जुआ खेलत रओ। ईसें एकाएक झपकी आ गइ ती। मोय पतौ नइँयाँ मोरे मों सें का अनाप-सनाप निकर गओं मोय तो कछू खबरइ नइँयाँ।

अब राजा खों होस आओ। ऊनें सोसो दूसरे कौनँउँ की बात होती तो सक कौ कछू सबाइल हतो। मैंने तौ आज लौ कभँउँअँईं ऐसौ कौनउ काम करोइ नइँयाँ। फिरउँ ई मूरख नें ऐसी उटपटाँग बात कै डारी। मैं सोउ कित्तौ मूरख हों कै ई की बातन में आकें दंतिल जैसे बिसवासपात्र पै सक करन लगो। ईनें ऊ बखत सोइ अनरगल बात करी हुइयै। दंतिल की बेइज्जती करकें मैंने भौतइँ बुरौ करो। बौ भलौ आदमी जीके बारे में कभँउँ कौउसें कौनँउँ उल्टी सीधी बात सुनबै खों मिलयइ नँईं हती। बौ भलाँ मोरे महल में आके ओछौपन कैसें कर सकत। राजा खों अब जा सोउ खबर आन लगी कै दंतिल के न रैबे सें उनके काम काज में कित्ती गिरावट आ गइ। अब का हतो, राजा ने तुरतँईं दंतिल खों दरबार में बुलवाऔ। उयै इनाम दओ औ ऊकै पुराने अधिकार बहाल कर दए।

ईसें कै रओ तो कै जोंन मान्स तड़ी में आकें छोटे हौदा बारन की इज्जत नँईं करत उनकी दशा दंतिल घाँईं होत। 'किसा खतम पइया हजम'

- शारदा मंदिर, छतरपुर म.प्र.
मो. 9406762156

(बुंदेली कहानी)

'बाट हेरैं'

– शकूर मोहम्मद

भौंत रात कड़ गई तो, सुआटे पर गय। आज रेलगाड़ी सकारूँ सई टेम पै आई और टेसन पै तनक ठैर कें चली गई।

अबेर न हो जाय सो दीनानाथ हाँपत दौरत आय, लिंगा पौंचवे के पैलाँ रेलगाड़ी ने टेसन छोड़ दई। अब का करैं, झेल हो गई। वे अपने आबे बारे की बाठ हेरैं ते जीखौं ई भीड़ में ढूँडबे को जतन कर रय ते। जी की बाठ हेरैं बैठे ते सो ऊके न आवे सैं मन मसोस कें रै गय। फिर दूर जात भई रेल खौं देखन लगे जो उनकी आँखन सैं औलट होत जा रई ती।

अपनौं आज फिर नई आओ, जीसैं उनने लामी हर साँस लई। जैसई वे घर तरप लौटन लगे तो देखत का है, कै टेसन की दूर वारी बैंच पै उनै कछू झाँई सी परी, बुड़ापे की निंगा, उने लगो जैसें उतै कौनऊँ बैठो होवे। उनकौं घरै जावे को विचार फिलहाल बदल गऔ और न चाउत भय उनके पाँव आसा सैं बंदे उनै ऊ बैंच नौ ले गय।

दीनानाथ ने नैंगर जाकें देखो कै ऊ बैंच पै एक लरका और एक बिटिया ई सन्नाते में चुपचाप बैठे जैसें उनै जावे की कौनऊँ उलात न होवे। सामान के नाव पै उनके नैंगर पीट पै टाँगवे बारो थैला और एक पानी की बोतल भर समज मे आई। दीनानाथ उन दोई जनन खौं देखकें थमथमया गय, कायसें उते उनमें अपनो नई हतो। अब का करै, मन मैं धीरज धरो और अपनौ पन बतात भय कई कै, बेटा----! रेल खौं गये तो भौत झेल हो गई। घरै नई जाने का? लरका बिटिया ने कौनऊँ ऊतर नई दऔ जैसें उनने उनकी बात सुनी न होवे, वे कौनऊँ घुनीते मै बीदे ते। इतनी सुनकें यैसें लगो जैसें कौनऊँ सपने सैं जगे होवें। बे दोई जने हड़बड़ा कें ठाँड़े हो गय जैसें उनकी चोरी पकरी गई होवे, अब का ऊतर देवैं? वे एक दूसरे कौ मौं देखन लगे।

बिटिया ने हकलात भय, इतनी भर कै पाई कै बाबा---। हम---। बिटिया मौं में बुदबुदान लगी ओर आँखन सैं अँसुअन की धार टपकन लगी। तनक झेल खौं उतै सन्नाटो छा गऔ।

दीनानाथ खौं समजबे में देर नई लगी। उनके बार घाम में सेत नई भय ते। जीवन कौ लम्बौ अनुभव हतो। मौका ताड़ कें उनने इत्ती भर कई कै, बेटाहो---। घबराओ नई। भगवान पै भरोसो राखौं तो वे कौनऊ साजीगली बता देत। अब तुम जा समजो कै तुमाई ई विपदा की घरी मैं उनने हमें इतै पौंचा दऔ। सो, चलो-----। उठो---। हमाय संगे घरै चलो।

दीनानाथ चलन लगे। पाछे सैं उनै कौनऊँ पैरो नई मिलो सो उनने पीछै मुँड़ के देखो, जे दोऊ लरका, बिटिया अपनी जगाँ ठाँड़े जैसे कौनऊँ दुवदा मैं फँस गय होवे, जे दोई जने गुर भरो हँसिया हो कें रै गय। दीनानाथ ने अपनौ पत बतात भय, ललकार कें कई, चलो-----। जाँदा सोस विचार कौ समइया नइयाँ। हमाय ऊपर भरोसो करौ, तुमाय संगे कौनऊ धोको नई हुइये, हम कौनऊँ चोर उचक्का नइयाँ। आजकल कौ समइया भौत खराब है सो तुमे मालूम भऔ चइये कै इतै उतै आदमी की खाल मै नखी जनावर घूम रयै। भौत रात हो गई और फिर जा टेसन आय। कौनऊँ बिद्दक न बिद जाय। ईसैं जादाँ न सोसो, उलात करो।

इतनी सुनकें जे दोई जने मनधरयात, भगवान खौं सुमर कै, दीनानाथ के पीछें, पीछें, डगैं धनन लगे। इतनई मै उतै टेसन के दो पुलिस वारे आ टपकें बे गुर्रा के बोले, चलो यहाँ से! क्यों दादा! अभी तक तुम यहाँ पर क्या कर रहे? ट्रेन को गये तो काफी विलम्ब हो चुका।

भइया-----। दीनानाथ कव लगे बो का है कै जे हमाय रिस्तदार आँय। जे इतै पैली बेर आय ते सो जे हमाई बाठ हेरैं बैठे ते। तनक ठाँड़े होकें घर परवार की नौनी बुरई बातैं होन लगी। जीसैं जा झेल हो गई।

चलो-----चलो----- बेटा हों जल्दी करौ। इतनौ देख सुन कै जे दोई जने समज गय ते कै पुलिस वारे दादा की जान पैचान के हैं। तब कऊँ जाकें इनके मन खौं साता परी।

दीनानाथ कौ घर टेसन सैं तनक दूर हतो। सो जे सब जने बतयात भय चलन लगे। अब जे दोई जनै ई विपत्ती की बेराँ तनक देर खौं सब कछू भूल गय, अपनौं पाकें बरावरी सैं चलन लगे। दो चार पगइया चले हुइयें कै, दीनानाथ ने मौन टोरो फिर कई के बेटा हो----। जब हम सब खौं भगवान ने मिला दऔ, अपनौ बना दऔ तो फिर एक दूसरे खौं जानबे की काय कसर रै जाय। बेटा हो----! पैलाँ तुम दोई जने अपनौ नाव गाँव तो बताऔ? लरका ने अपनौ नाव निखिल तो बिटिया ने अपनौ नाव सिल्पी बताओ। दीनानाथ ने नाव सुने तौ इतनी भर कई कै, हूँ----- भले घर में जान परत। चलो नौनी रई, जान पैचान भय सैं मनकौ बोज कम हो जात। अब हम अपनी कबैं। हमाई पत्नी सान्ति, हम दोऊ जनैं मास्टर हते। हमाव नाव दीनानाथ आय।

हम अपनी कथा तुमै का सुनायँ। हमाऔ हल्कौ सुखी परवार, सुख चैन की नौनी बन्सी बज रई ती। हमाय सौरब अकेले पूत। ओर सै पड़वे लिखबे में छोछायलो हतो। हमैं लगत तो कै, हमाऔ जो बेटा हमाई ई बऊत नैया खौं नौने सै पार लगा दे। हम दोऊ जनन ने जा सोस राखी ती कै, चाय हमाई गिरस्ती लग जावे पै भैया खौं

डक्टर बनाने। हमें सोराना पक्को भरोसो हतो हमाय भैया हमाई जा अवलाखा पूरी करै। जीसैं गाँव असपेर में हमाऔ नाव ऊँचै हुइये।

हमाय जमाने में कोऊ कोचिंग कौ नाव नई जानत ते। पै आजकल तौ पीँ दरजा सैं देखा देखूँ ऊँची पड़ाई और अपने नाव के लाने कोचिंग को येसौ भूत सवार भऔ कै कछू कऔ नई, धन्दो बन गऔ और होड़ लगन लगी।

सो, डाक्टर की कोचिंग के लाने बड़े सहर में जावे कौ विचार बनो, हमने आगो पीछो न विचार कैं हँसी खुसी सैं पौंचा दऔ। भइया खौं पइसा टका की बिवूचन न परै ईको पूरौ ध्यान राखो।

हम उनके संगे नई रै सकत ते, उनपै आँख मूँद कैं भरोसे करो। नई जगा, उनके उते कितने का वास्त। उठवो बैठबो, हमें का पतौं। दोस्तन की लेन लग गई। जाती बेराँ बेटा खौं तरन-तरन समजाओ तो कै बेटा सूदी गली आइयो जइयो, इतनी कै सकत ते काय सैं बेटा जो ठैरे। दूर तक की हम नई सोस पाय, इतई हमाई चुक हो गई।

एक दिना सौरब कौ फोन आओ कै, पापा----! हमाय टेस्ट की तारीख बड़ गई, फुरसत है। अगर अपुन की आग्या मिल जाय तो ताजमहल घूम आवै। हमाय दोस्त जा रय, फिर इते हम अकेले का करैं? ना चाउत भय हमने हामी भर दई, का करते?

येसई येसई तीन चर दिन कइ गय। एक दिना संजा की बेराँ, भइया को फोन आओ, पापा----! इतै कोरोना सैं कोचिंग की किलासैं कछू दिनन के लाने बन्द हो गई सो हम संजा वारी गाड़ी सैं घरै आ रय।

हम ऊ दिना संजा वारी गाड़ी खौं देखबे टेसन पौंचे इतै सैं उतै देखते फिरे, सौरब नई आय। सोसी के लाइले कुँवर जो ठैरे, हमें हैरान कर रय होवें। हमाय ढूँडबे के सबई जतन बेकार। हम जल्दी सैं घर पौंचे, सायद भैया कौनऊँ दूसरी गली सैं सीदे घरैं पौंच गय होवें।

हमें दोरे पै अकेलो देख सान्ती ठगी सी ठाँड़ी रै गई और बन्न बन्न के सवाल-जबाव करन लगी। काय सौरब नई आय?

अब मन काँ तक धीर धरतो, पेट में खलबली मच गई। येसे समइया पै बन्न बन्न के बुरय खियाल आन लगत। सानती अपने बार नोचन लगी, घर काटबे खौं दोरबे, भियाँयदो लगन लगो। येसे में सान्ति खौं कैसै धीरज बँदाबे, भैया की न कौनऊ खबर न पाती। कन लगत कै जब घरकी टाठी हिरात तो गगरी में हाँत डारन लगत।

दूसरे दिना भोर सै सौरब के दोस्त यारन सैं चरचा करी सो सबने अपने हाँत ठाँड़े कर लय। सान्ती पगलया गई, खाबो पीबो छोड़ दऔ बो न्यारो। पुलिस थाने में बिनती करी, अखवारन में फोटू छपवाई, सबई जतन बेकार, कोऊ बतान न देबे। थाने कचैरी के चक्कर काट-काटकै पावन के तरूआ घिस गय। आसा टूटन लगी। मन नई मानो सो ओई नम्बर सैं फोन लगाओ जीसैं आखिरी बात भइती सो दूसरी तरप सैं जा खबर आई कै जो नम्बर सेवा में नइयाँ।

हराँ हराँ आज चार सालै कड़ गई। सान्ती ओई दिना सैं रोज येई गाड़ी खौं देखबे की हट करती कै भेया काल नई तो आज जरूर आ जेय। रोज गाड़ी देखत, पै भइया अबै तक नई आय।

वा दिना से आज तक रोज घर से टेसन और टेसन सैं घर तक दौरे फिर रय। जनी मान्स जो हमें चीनत नइयाँ वे सब हमाय ई फटे हाल और भिखमंगा मानकैं हमाय हातन पै पाँच-दस रूपइया भीक दैकें निकरन लगे। वे हमाय अन्तस की पीरा खौं का जाने, जाकै पाँव न फटी बिमाई वो का जाने पीर पराई। हम हारे जुँआरी की नाई रोज ठाँड़े-ठाँड़े दूर जात भई रेल खौं देखत रै जायें। जेई हमाई दिनचरिया बन गई।

भगवान की किरपा सैं आज निखिल बनकैं सौरब लौट आय। टेसन सैं चलत चलत टेम कौ पतो नई चलो कै कबै दौरे पै आ ठाँड़े भय। दोरे की साँकर बजाई, सान्ती ने किवार खोले, बे पागल जो ठैरी, दौरी आई और निखिल सैं लिपट गई, चूमन पुचकारन लगी, लाड़ करन लगी। हमाय सौरब भइा आ गय। निखिल खौं ई की आसा नई हती, घबरा गऔ जो का हो रऔ भगवान। ममता को हाँत फिरतन निखिल पथरयाके ठाँड़े रै गये।

जे सब देखकैं दीनानाथ चिल्ला परे, सान्ती----! होस में आओ, जे सौरब नइयाँ, जे निखिल आय। निखिल ने तुमाई सुनी सो तुमसे मिलवे आय। इतनी सुनकैं सानती ने निखिल खौं छोड़ दऔ। माँ कौ जौ ममता कौ रूप देखकैं निखिल और सिल्पी दोई जनैं जितै ठाँड़े ते उतई पाखान के होकैं भगवान की लीला के दरसन करन लगे।

सिल्पी खौं यैसो लगो जैसैं कौनऊँ भियाँयदो सपनो देखकै अबई अबै जगी होवे। ऊनै बाबा और अम्माँ खौं अपनी संतान के लाने बिलखत देखो, जिनकौ रोम रोम उनकी हिरदै की पीरा कै रओ तो। जे दोई जने जियत जागत पुतरा बनकैं रै गये जिनै जो संसार खावे खौं दौर रऔ तो उनको हरीरों बगीचा उजर गऔ।

सिल्पी मछइया सी तड़पन लगी, अब हम का करै? हमने अपने हाँत सैं अपने पाँव पै पथरा पटक लऔ। सिल्पी खौं अपनी करनी पै पछतावौ होन लगो पै अब का करत, तीर तौ कमान सैं निकर गऔ। अब हम की खौं मौं दिखा पैं।

दीनानाथ के गरे सैं लिपट कैं रोन लगी, बाबा----! हम ठैरे बड़े दुर्भागी जीने अपने पापा को मौं तक नई देख पाऔ। हमाई मम्मी ने हमें बाप-मताई दोई जनन को दुलार करो। हमाई मम्मी सुभाव की भौत तेत हैं। मास्टरनी जो ठैरी। हाँ, पड़ाई लिखाई पैरबे

ओड़बे में उनने कौनऊँ कसर नई छोड़ी।

जब हम सियाने भय बड़ी किलास में पाँचे तो पैलाँ तो हमने सोसी कै सायद मम्मी अब हमें घरै बिठार लै, पै उनने राजी खुसी सैं हमाऔ दाखला कालेज में करा दओ, ऊ दिना हमें मन में भौत खुसी भड़ती और हमैं मम्मी भौत अच्छी लगी ती।

उनकी एकबात अखरत ती, संजा कैं जैसई हम कालेज सैं लौटबैं पल-पल को हिसाब पूँछती, का पड़ो लिखो?का करो? और तो और हमाऔ रोज मोबाल देखती। उनकौ जो रोज-रोज को काम हमें मनई मन अखरन लगो। जीसै हमै उनसैं चिड़सी होन लगी, पै गलकौ सो दैकें रै जावैं, मताई जो ठैरीं। हम अपने घर मैं बंदुआ से होकें रे गय। ई कौ मतलब जो भऔ कै मम्मी खौं हमाय ऊपर भरोसो नइयाँ। हम अपने घर में पराये से होकें रै गय। आज पापा होते तो उनके कँदा सैं लगकै मन की कै लेते। हमै येसो लगन लगो कै हमें सोने के पिंजरा मै बन्दर कर दऔ होवै। हम आजादी के लाने चिरइया से फरफरान लगे।

कालेज में निखिल सैं जान पैचान हो गई। भले घर के सीदे सादे और पड़ाई लिखाई मैं हुसियार रय, सो दोस्ती हो गई। पड़ाई लिखाई पै चरचा करबो, एक दूसरे सैं बतयाबे के लाने भौत हतो।

घर और कालेज एक जगाँ रत रत मन उकता गऔ। येसैं लगे कै दो चार दिनन के लाने सैर सपाटे खौं जाओ चाइये। येई उधेर बुन मैं एक दिना मम्मी सैं कौनऊँ तीरथ पै जावे की चरचा करी। हमाये मौंसें सुनी सो मम्मी ने लाल पीरी आँखें दिखाई और चार अनुतरी सुना दई और जावे से सपाट मना कर दई। हमै ईकी आा नई हती। हम मन मसोस कै रै गय।

एक दिना इन्टरवल में हम सब जने बैठेते, गप्प सड़ाका हो रयते। हमने मौका देखकें अपने मन की बात निखिल खौं बता दई। निखिल ने पैला तो सुनी और अनसुनी कर दई और हमाऔ मौं देखन लगो फिर एक सरत पै हामी भरी कै तुम अपनी मम्मी सैं पूंछ लो, वे अगर राजी होवें तो----?

अहमदावाद में हमाय चाचा हैं उते उनको अपनो घर दौर और नौनो कारोवार है। वड़े बूड़न की आग्या सैं दो चार दिनन खौं चलत, ई मैं का परेसानी है।

हमाय मौमें कीरा परैं। हमने दूसरे दिना निखिल सैं सपाट झूटी कै दई कै मम्मी ने जावे के लाने हामी भर दई। फिर का देर करने, झटपट अहमदाबाद के दो टिकिट मँगा लय। इतई हमपै जिन्दगी की सबसै बड़ी भूल हो गई। हमें अच्छे बुरय की सुद नई हती, आँखन पै पट्टी बँद गई और हमपै लछमन रेखा पार हो गई। मम्मी कौ हमाय जावे पै का हाल हुइये ई तरप हमें सोसबे की फुरसत नई हती।

आफत मुसीबतें हमाय लाने पलक पाँवड़े डारैं ठाँड़ी ती। निसफिकर होकें हम दोई जने रेल में जा बैठे। हमने देखो जी डिब्बा मैं हम औरें बैठे ऊमैं सवारी कम हतीं। सोची, चलो जो नौनो रओ आराम सें सीटन पै परबे बैठवे मिल जेय।

आवे वारे पल को हमें का पतो वो तो भगवान जानत कै अब का होने। जैसई अगली टेसन आई। सबई सवारीं उतर गई। अब ऊ डिब्बा मैं हम दोई जनन के अलावा एक बीस-पच्चीस साल को लरका बैठौ रै गऔ। सकल सूरत सैं अच्छौं नईं लग रऔ तो। अब ऊकी आँखैं चमक गई जो रेल के मन्द उजयारे में नौने से दिखाई नई दई। जो देखकैंहमाय भीतर धुक-धुकी चलन लगी, थूंक सूक गऔ परवारौ। हमने बोतल सैं दो घूँट पानी पियो।

इतनै में हमने देखो के लरका ने कौनऊँ सैं फोन पै बतकाऔ करो। तनक झेल में उतै को जाने काँ सैं दो-तीन मुसटन्डा डिब्बा मैं आ गय। जैसैं बे जेई बाट हेरैं बैठे ते। बे सब के सब हम दोई जनन की सीट के अंगाई पिछाई बैठ गय। हमैं उनकी मन्सा नौनी नई जान परी। हम दो जनै और जा दौरत भई रेल?

वे सीटी बजान लगे, लुच्चयाई बातैं करैं। सबसै पैला उनने निखिल खौं लऔ दओ, घेर कैं बैठ गय। सवाल जवाब करन लगे जो कैवे सुनवे मैं नौने नई हते। बे निखिल खौं दिमागी तौर सैं टोरन चा रय ते।

अब मम्मी याद आ गई। सबरे दई देवता सुमरे। डरन के मारे हम थर थार कपन लगे। आज जान पै आन परी, जान बचे तौ लाखौं पायै। बे लरका जा सौराना समज गये कै हमें भौत दूर जाने। इतनई मैं रेल की सीटी बजी। मन में सोसी कै कौनऊँ टेसन आबे बारी है। गाड़ी की चाल धीमी होन लगी और फिर हमाय भाग सैं रेल तनक झेल के लाने टेसन पै ठाँड़ी हो गई।

जादाँ सोस विचार को टेम नई हतो, अबे चूके तो फिर का होने असाइ कौ चूको किसान और डगार कौ चूको बंदरा भगवान जानत, हमाई तौ औकात का है। हमने नैचे उतरबे कौ मनई मन फैसला ले लऔ। निखिल सै कई, निखिल---। उतरौ अपनी टेसन आ गई।

निखिल ने बिना हाँ हूँ कै अपनौ थैला उठाव और दोई जनै रेल से नैंचे उतर गय। उतर कै हम दोई जनन ने चैन की साँस लई। हम लुटबे पिटबे सैं बच गय। हमने उन लरकन खौं देखो, वे सब ठगे से ठाँड़े होकें एक दूसरे कौ मौ देख रय ते।

रेल अपनी गली चली गई। हम दोई जनै हात पै हाँत धरैं, भगवान भरोसे अनजानी जगा, समासई रात मैं अपने भाग भरोसे आन बैठे। अब आगे जो कछू होवे सब देखो जेय, जा निपटी सो बा निपटे।

बाबा------! भगवान ने अपुन खाँ हमाई सहायता खाँ देवदूत बनाकै पाँचा दऔ। सो बाब जा हमाई किसा हती। हम बिलुर गय सो अपुन हमै ई भौंरजाल सें बायरैं कड़बे की जुगत बताओ। हम जानत उतै हमाई मम्मी कौ बुरऔ हाल हुइये। परोसी न जाने का का न कै रय हुइयें।

देखो, बेटा हो----। धीरज सें काम लो, उकतावे सें और काम बिगरत। जा तौ सौराना साँसी आय कै तुमने अनीति की गली जाकें मरजादा टोरी है। अब पछ्तावे के सिबा और अपनी करनी खाँ मान लैवो येई में बड़ी जीत है।

दीनानाथ बोलत रय----! ई देस दुनियाँ में मताई-बाप सो प्रेमी, अपनी औलाद के लाने दिया लै कै ढूँड़ौ तौ दूसरौ कऊँ नई मिले। वे अपनी आस औलाद की खुसी के लाने का नई करत? मरजादा बनी रबे, बेटा बिटेरू नौनी गली चलैं, संस्कारी बनें। ई के लाने वे नारियल जैसे सखत बने रत। सिल्पी बेटा----! ठीक येसई तुमाई मम्मी को सुभाव है, जो वायरे सैं कछू और भीतर सें कछू ओर। तुमने उनै पैचानवे में बड़ी भूल करी।

अब तो घरी बीत गई, घड़ी की सुई आँग कड़ गई। पछताबे की गली अबे बची है। आज गाँव समाज में सबई जनै लरकन खाँ दोसी मानत आ रय, जो हो सकत। पै बेटा----! इतै तुमाई सोराना गल्ती है। हम तो जा मानत कै ई में निखिल दोसी नइयाँ।

इतनी सुनकें सिल्पी टेर दैकें रोन लगी, जे बातैं ऊके भीतर तक उतरत गई। सान्ति के गरे सें लग गई, मम्मी----! टब अपुन हमाओ सहारौ बनो, हम तौ अन्दयारे कुआँ में जा गिरे। हमें कछू नई सुजा रऔ।

हम भगवान सें, बिनती करत कै सौरब भैया जाँ कऊँ होवें, देस विदेस आकास पाताल कऊँ लुके होबैं जल्दी सै राजी खुसी सें अपने घरै आ जावें। अब अपुन अकेले नइयाँ, हम सब जनैं अपुन के संगे हैं। उनै ढूँड़कें अपुन के आँगे ठाँड़ो करैं।

सान्ती ने का खोओ का पाओ उनै ईकी सुद नई हती। वे ऊपर आसमान में दूर से दूर देख रई ती। उनने एक लामी साँस लई और निखिल और सिल्पी खाँ गरे सें लगा लऔ, जैसे उनै सब कछू मिल गऔ होवे।

वे बोली, चिन्ता न करो, सब ठीक हुइये। उनकी आँखन में चमक सी आ गई, जैसें उनै जीबे कौ सहारो मिल गऔ होवे।

सान्ति ने ओई बेराँ सिल्पी सें पूँछकै उनकी मम्मी खाँ फोन लगवाओ।

पैलाँ तो सिल्पी की मम्मी खाँ धीरज धराओ, हिम्मत वंदाई। सिल्पी के संगे अपनो पतो बताओ और समजात भय कई कै आज कल के मौड़ी मौडन के संगे जरूरत सै जाँदा अनुसासन नई थोपो चइये। बात बिगरतन कुन देर लगत ईको अपुन ने धियान नई दऔ। ऊपै अपुन ने भरोसौ न करकें, रोज-रोज की टोका टाकी सें विटिया अपुन सें दूर होत गई जी को परनाम जो भऔ कै, सिल्पी अकेली होत गई। अपुन अध्यापक हैं, विचार करो चाइये तो।

सिल्पी हमाय लिंगा नौनी है अपुन चिन्ता न करो। वा तो नौनी भई कै सिल्पी के भाग सें निखिल भइया समान दोस्त मिलो, नातर आजकल की को गौर करै, कछू भी हो सकत तो। घवराओ नई, धीरज धरो। हम सब जनै बड़े भुन्सरा सिल्पी खाँ लुवा कैं तमाय लिंगा पौच रय।

बड़े भुका भुकें पौ नई फट पाई ती कै कार मंगा कैं, दीनानाथ, सान्ती सवई जने हँसी खुसी सिल्पी के गाँव खाँ चल दय।

- कुण्डेश्वर
मो. 7898640061

(उपन्यास अंश)

ओरक्षा की गनेसकुँवर के रामराजा

- प्रो. दया दीक्षित

वाराणसी के मणिकार्णिका घाट में आज तिल रखने की भी जगह नहीं थी, इतनी भीड़ तो तब होती थी जब कोई पर्व या स्नान हो या शिवरात्रि जैसा महापर्व हो। यह भीड़ आज की नहीं पिछले दो दिनों से हो रही थी! आज तो इसमें और भी वृद्धि हो गई थी! बनिया, महाजन, पंडा, पुरोहितों के आनंद का तो कहना ही क्या था! बनिया महाजनो को अपने व्यवसाय से पल भर की भी फुर्सत नहीं थी! हो भी क्यों? जितना बड़ा जनसमूह, उतनी ही बड़ी उसकी जरूरतें, बाजार यदि चौबीस घंटे भी खुला रहता, तब भी वणिक समाज के लिए समय कम पड़ता! पंडे पुरोहितों को यजमानों के पूजापाठ आदि कर्मकांडों की अधिकता से घड़ी भर भी विश्राम का अवसर नहीं था! काशी के बड़े-बड़े सेठ साहूकारों ने जनता जनार्दन के लिए सदावर्त खोल रक्खे थे। इन सदावर्तो में सुस्वादु व्यंजनों का निरन्तर वितरण होता रहता था!

वैसे तो महराज श्री अनिरुद्ध सिंह जी को वाराणसी से (करैया-दतिया) आए हुए एक लंबा समय हो गया था किंतु जब भी कोई विशेष आयोजन होता था, तो वे अपने लाव लश्कर के साथ वाराणसी प्रवास के लिए आ जाते थे। इस समय भी वे काशी में ही थे। वे महान धर्मात्मा थे। धर्मानुयायी एवम् गुणग्रही थे। उन्होंने विशेष प्रयास करके संत शिरोमणि भक्तराज तुलसीदास को रामकथा कहने के लिए वाराणसी आने को राजी कर लिया था! मुगलकालीन भरत में उस समय तुलसीदास जैसा वेद वेदांगों षड्दर्शनों का ज्ञाता कोई दूसरा नहीं था! वे अनेक पराविद्याओं के सिद्धहस्त विद्वान एवम् विशेषज्ञ थे! इनकी कथावाचन की शैली इतनी सम्मोहक कि जो भी सुनता वह चित्रलिखा सा निश्चल हो, उनके श्रीराम कथा रस से सम्मोहित हो उठता। बड़े बड़े राजा महराजा श्रेष्ठि सामंत उन्हें महीनों पहले ही कथावाचन का आमंत्रण देने लगते थे! हाल यह था कि नित्यप्रति आठ-दस संदेशवाहक कथावाचन का संदेशा लेकर उनके द्वारे पड़े रहते थे। महीनों वर्षोंके अंतराल पर राजाओंको समय मिल पाता था।

काशी में आज महातमा तुलसीदास का रामकथा कहने का तीसरा दिन था! कथारसिकों की भीड़ इतनी कि कंधे से कंधा छिल रहा था। यहाँ ही नहीं, जहाँ भी तुलसीदास कथा कहते थे, वहाँ अपार भीड़ हो जाती थी। तुलसीदास कथावार्ता के साथ ही रामलीला का मंचन भी करवाते थे। मंचन इतना शानदार और जीवंत होता था कि लोग दांतों तले उंगलियां दवा लेते थे। रामकथा के प्रसंगों के अनुसार तुलसीदास ने वाराणसी में कई मंचनस्थलों को रामकथा के चरित के अनुसार नाम भी दिये थे- भरतमिलाप, लंका, आदि ऐसे ही स्थल थे।

आज दानवों, राक्षसों के अत्याचारों से पीड़ित गऊ रूपिणी पृथ्वी की व्यथा का कथाप्रसंग था! जब इस प्रसंग का मंचन हुआ तब तो व्यथित पृथ्वी की व्यथा से व्यथित होकर अनेक नरनारियों के आंसू बहने लगे। नन्हीं गनेस कुंवरि भी हिलक हिलक कर से रही थी। उसे गोद में लेकर दासी ने समझाने की बहुत कोशिश की किन्तु गणेश कुंवरि का रुदन यथावत जारी था! रानी विजय कुंवरि का ध्यान पुत्री के रुदन पर गया तो उन्होंने दासी को जाने का संकेत किया! दासी, गनेस कुंवरि को गोद में लेकर मंचल स्थल से दूर रनिवास की ओर चल दी! इधर रानी विजय कुंवरि का ध्यान भंग हो जाने से अब आगे की लीला में उनका मन न रमा, कुछ समय बाद वे उठीं, उन्हें उठते देख महराज अनिरुद्ध सिंह ने हाथ से 'क्या हुआ' का संकेत किया, उनके प्रश्न का रानी ने संकेत से ही सिर हिलाकर उत्तर दिया, जिसका आशय था कुछ नहीं हआ। रानी को आते देखकर शिविका (पालकी) लेकर कहार उनके सम्मुख आए, रानी अविलंब शिविका पर आरूढ़ हो गई। उनके बैठते ही कहार महलों की ओर चल दिये।

रास्ते भर रानी का चित्त व्यग्र रहा! नन्हीं सी राजकुंवरि का सिसकता चेहरा उन्हें रह रह कर बेचैन कर रहा था! उनका वश चलता तो उड़कर अपनी बेटी के पास पहुँच जातीं!

थोड़ी देर में ही शिविका महल की ड्योढ़ी पर आकर रुक गई। रानी शिविका से उतरीं उन्हें महल के भीतरी भाग के बड़े से उद्यान में दासी दिखलाई पड़ी। रानी वहीं आ गई! इनकी प्राणाधिक प्यारी पुत्री उद्यान में विश्राम स्थल की मखमली गद्दी पर दासी की गोद में सो रही थी, पास में बहुत सारे लकड़ी के खिलौने अपनी रंग बिरंगी आभा बिखेर रहे थे। हरियल सुआ, गैया, बछड़ा, घोड़ा, हाथी, ग्वाल ग्वालिन, छोटी बड़ी फिरंगियों के साथ रामसीता की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ! रानी ने दासी की गोदी में सिर रखकर सोई गनेस कुंवरि को देखा! अभी वे कुछ कहतीं कि दासी बोल पड़ी- 'रानी साब मसां (मुश्किल) कें कुंवरबाईजू सोई हैं सो उनें अबै (अभी) सो लैन देओ! मैं बिन्नू राजा के पास बैठी हूँ! जब वे सोकर उठ जायेंगी, सो आपके पास चली आयेंगी। आप तो महात्मा जू की ब्यारी (रात्रि भोजन) की तैयारियाँ परखौ (देख लो)'।

दासी के कहने पर उन्हें याद हो आया कि आज रात्रि का भोजन तो महात्मा तुलसीदास जी महल में करेंगे! वे बिना कुछ कहे, रात्रि भोजन की तैयारियों को देखने पाकशाला की ओर चल दीं।

सायंकाल रात्रि के प्रगाढ़ आलिंगन में बंधकर उसी में लय हो

गया था! थके हारे पाखी पखेरु अपने अपने घोंसलों में सुखनिद्रा में लीन हो चुके थे! वातावरण शांत और रातरानी की मंदिर सुगंध से सुगंधित हो उठा था, यह सुगंधि महल के इस विशाल कक्ष के झरोखों से प्रविष्ट होकर पूरे कक्ष को बनुपम सुगंध से सुवासित कर रही थी। दीवारों पर लगी बड़ी-बड़ी कलाकृतियों को देखकर जड़ी चाँदी की तिमाई पर बैठे महात्मा तुलसीदास आनंद में निमग्न हो महराज अनिरुद्ध सिंह की कलप्रियता को मन ही मन सराहना कर रहे थे। महराज अनिरुद्ध सिंह अपनी रानी विजयकुंवरि के साथ चांदी के थाल में तुलसीदास जी के चरण पखार रहे थे। चरण पखारने के बाद उन्होंने मुलायम वस्त्र से चरण पोंछे, तब तक एक सेवक ने चांदी का थाल उठाया और भीतर चला गया।

थोड़ी ही देर में चाँदी की चौकियों पर व्यंजनों के थाल परोसे जाने लगे! श्रानी और महराज ने बड़े भक्तिभाव और श्रद्धा के साथ महात्मा जी को भोजन कराया! रानी ने भोजनोपरान्त चांदी की तश्तरियों में लोंग, इलायची, चांदी के बरक लगे पानों के बीड़ा मुखवास के लिए महात्मा जी के आगे कर लिये, महात्मा जी ने केवल लोंग व इलायची ग्रहण की। इसी समय नन्हीं गनेस कुंवरि रानीमां, रानीमां कहती हुई दौड़ी आई! महात्मा जी को देख उसने बड़े आदर के साथ उनके चरण स्पश्र किये रामजुहार की! महात्मा तुलसीदास एकटक कुंवरि को निहार रहे थे, उनको अपनी ओर देखते देख कुंवरि खिलखिला कर हंस पड़ी, फिर हंसते हंसते रानी से बोली- 'रानीमां, हम चंदा पौआ खेलबे (खोलने) जा रये, खिरिया दाई चौपर बिछा रई है।' यह कह कर जिस तरह दौड़ी आई थी, वैसे ही पान का बीड़ा उठाकर दौड़ी दौड़ी चली गई। राजा रानी ने बेटी के इस कृत्य परप एक दूसरे को देखा। उनके चेहरों पर मुस्कराहट फैल गई। महात्मा तुलसीदास कुछ सोचते हुए से महराज और रानी से बोले- राजन्! आपकी पुत्री साक्षात भक्ति की स्वरूप है! इसके मुख पर वुधादित्य योग का तेज झलक रहा है, यह परम विदुषी व कवित्तशक्ति से भरपूर होगी भक्त नारियों में इसका नाम अजर अमर होगा, यह दोंनो कुलां की यशपताका फहरायेगी!

महात्मा जी के मुख से यह सुनकर महराज अभिभूत हो महात्मा जी के चरणों में नतमस्तक हो गये कहने लगे- भक्त शिरोमणि आप वरदानी हैं, जो वरदान देते हैं, यह फलीभूत होता है!

तुलसीदास- यह वरदान नहीं है महराज, यह तो आपकी पुत्री का भविष्यत् है, मैंने तो बस इस भविष्य को वाणी दे दी है! राजन, इस बात का ध्यान रहे कि अपनी पुत्री का विवाह आप तभी करें जब कोई कृष्णभक्त आपसे इसका हाथ माँगे, विवाह की याचना करे!

महराज- अपकी आज्ञा शिरोधार्य है। अब ऐसा ही होगा! नहीं तो हम तो दो एक महीने बाद ही इसका विवाह संबंध पक्का कर देते। दो तीन उच्च कुल के राजघरानों से बात चल रही थी! मगर अब उन सबको सादर मना कर देंगे!

तुलसीदास अभी कुछ और कहते कि उन्होंने देखा राजपुत्री गनेश कुंवरि उन्हीं को देखती हुई तीव्र गति से आ रही थी। आते ही उसने जी से पूछा- माता क्या रोती

तुलसीदास- बेटी तुम्हें क्या इसके बाद का प्रसंग ज्ञात नहीं है?

गनेसकुंवरि- हमें तो खिरिया मां अपने साथ ले आई थीं, आगे क्या हुआ, हम नहीं जानते।

तुलसीदास- बेटा, श्रीहरि कभी किसी शरणागत प्राणी का कष्ट में नही रहने देते! गऊमाता के रूप में पृथ्वी अपना दारुण कष्ट मिटाने के लिए पहले सभी देवताओं के पास गई, फिर देवों के देव श्रीहरि की शरणागत हुई और श्रीहरि भगवान विष्णु ने उसको विश्वास दिलाया कि जल्दी ही वे राम रूप में उसके दुख संताप मिटाने के लिए आयेंगे। उसे सताने वाले दुष्टों का वध करेंगे।

गनेसकुंवरि ने बालसुलभ जिज्ञासा व्यक्त की क्या सचमुच भगवान खुद आकर उसका दुख हरेंगे।'

तुलसीदास- हाँ राजपुत्री भगवान स्वयम गोरूप धारिणी पृथ्वी का संताप मिटायेंगे।

गनेसकुंवरि- 'क्या भगवान बताने पर आ जाते हैं? क्या मेरे बुलाने पर भी आयेंगे।'

तुलसीदास- हाँ कुंवरि जो उन्हें सच्चे भाव से करुणार्द्र होकर प्रेम विहवल स्वरों से पुकारता है, वे अवश्य उसके पास चले आते हैं!

गनेसकुंवरि- 'क्या भगवान आपके पास भी आए हैं? आपने बुलाया क्या उनको।'

इस सरल से गूढ़ गंभीर प्रश्न को सुन एकाएक महात्मा जी कुछ कह न सके, फिर मुस्कुरा कर बोले- 'सो सुख जानहूं मन उरगाना, नहिं रसना सों जाहि बखाना।'

बेटी, जिसने उसे जान लिया है वह उन्हीं का हो जाता है ईश मिलन के सुख को जिहया से मुख से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह सब बताने का नीं जानने का अनुभव का विषय है।

बाली उमर वाली कुंवरि महात्मा के इन गूढ़ वचनों को कुछ कुद तो समझी, कुछ को नहीं समझ सकी। सिर खुजलाते वहाँ से बाहर चली आई।

आगले दिन महराज अनिरुद्ध सिंह, रानी विजय कुंवरि व राजपुत्री गनेसकुंवरि कथास्थल पर समय से पूर्व चले आए थे। अभी महात्मा तुलसीदास को आने में विलंब था! महाराज महारानी को

सवारी देख भिखमंगों के एक बड़े दल ने उन्हें घेर लिया, रोते गाते चिथड़े लपेटे हुए उस बाल वृद्ध नर नारी वाले दरिद्र समूह के करुण क्रदंन को देख गनेस कुंवरि बिलख बिलख कर रोने लगी, माता पिता के लाख समझाने पर भी उसके आंसू नहीं रुक रहे थे, बार बार यही कह रही थी- ये इतने सारे लोग इतने गरीब, पहनने के लिए ढंग के कपड़े नहीं, खाने के लिए कुछ नहीं एक एक पाई को तरसते हाथ फैलाए हुए लोग, हे भगवान.... हे भगवान... इतनी निर्धनता.... अविरल अश्रुधार से नन्हीं बालिका का मुख भीग गया, ठीक इसी सतय महात्मा जी, जो यह दृश्य देख रहे थे, गनेस कुंवरि के पास आए, उसके बहते आंसू पोंछे फिर बोले- कुंवरि जितना ये निर्धन होने का आडंबर कर रहे हैं, उतनाँ नहीं, ये बदमाश हैं! अच्छा मेरे साथ आओ, महात्मा जी उसे कुछ आगे ले गए, जहाँ रुके वहाँ भिखारियों का एकद्द दूसरा दल खड़ा था, महात्मा जी ने कुछ मुद्राएं निकालीं फिर उस समूह से बोले- 'जरा इन मुद्राओं का फुटकर दे दो! तुम लोगों को मैं इसके बदले में कुच्छेक मुद्राएं दे दूँगा!

यह सुनतही भिखारी दल के नरनारियों ने अपनी अपनी झोली से निकाल कर फुटकर सिक्कों की ढेरियां बना दी, कहा, जितना चाहिये ले लो! महात्मा जी ने एक ढेरी उठा ली, एवज में कुछ अधिक मुद्राएं उस ढेरी वाले को पकड़ा दी। भिखारी दल प्रसन्न होकर वहाँ से चल दिया, यह सब देखकर कुंवरि चकित हो उठी। महातमा जी ने उससे कहा- बेटी ये सब बदमाश है, भीख मांगना इनका पेशा हो गया है, तुमने देखा कि इनके पास कितने सिक्के थे फिर भी ये भीख मांग रहे है!। ये बदमाश तुम जैसे भोले, कोमल हृदय वालों को ठगते रहते हैं! समझीं! चलो अब आंसू पोंछो! नन्हीं राजकुंवरि गनेस ने वस्तुस्थिति की वास्तविकता को समझा और शांत मना हो अपने आंसू पोंछे!

इधर तुलसीदास सोच रहे थे बालिका गनेसकुंवरि के बारे में। कितना सुकोमल, निश्छल, करुण, वत्सल और निर्मल मन है कुंवरि का। अनायास अपने कवित्त की एक पंक्ति गुनगुनाने लगे-

'निर्मल मन जन सो मोहि भावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।' पावा,

128/367 वाई वन ब्लॉक,
किदवई नगर, कानपुर- 208011

बुंदेली कहानी

उदास आवाज

—लखनलाल पाल

(गंगाराम पटेल और बुलाखीराम से क्षमा याचना सहित)

गंगाराम पटेल अपने देसाटन की पहली मंजिल पार कर रहे ते। उनकौ बलासखा बुलाखीराम उनके संगै तो। वे दोउ हमउम्मर हते औ बचपन में संगै खेले कूदे हते। पीढ़ियन सें उनको जई रिस्ता चलो आ रही है। उनकी खांटी दोस्ती मैं ऐसौ है कि जो कहने हैं ऊ कह डारत। गंगाराम पटेल खें देसाटन को जित्तौ सौक है उत्तौ बुलाखी खें नहियां। कह सकत हैं कि बुलाखीराम जात्राभीरू है।

बुलाखी देसभ्रमन पै नई आवो चाहत तो पै पटेल साब के आंगू ओखी एक न चली। गंगाराम पटेल ओखें फुसला-पोट खें मना ल्याओ तो। बुलाखी मान तो गओ पै ओनै एक सरत धर दई कि जतुन थान पै हम ठहर है वहां की कौन्हउ घटना या कहानी के बारे में जानकारी देने पर है। अगर तुमने जानकारी न दै पाई तो मैं तुम्हें उतई छोड़ खें भग आहाँ। गंगाराम पटेल ने बुलाखी की जा सरत मान लई।

पटेल साब ने अपनी पड़ाव काका हाथरसी की नगरी हाथरस में डारे। पटेल साब गैलेक्सी होटल में ठहर गए। बुलाखीराम ने बैग से सामान निकार खें मेज पै धर दओ। ओनै अपनी औ पटेल साब कौ मोबाइल फोन चार्ज पै लगा दओ। थके हारे ते सो वे हाथ मों धो कें आराम करन लगे।

दो घड़ी आराम के बाद बुलाखी ने चाय कौ आडर दै दओ। चाय पी खें गंगाराम पटेल ने रुपइया दैखें बुलाखी सें कहो कि बजार सें मोय लानै सिगरेट औ अपने लानै गुटखा खरीद लइए। और हां जल्दी लौट आइए, चार घंटा न लगाइए।

– 'पटेल साब मोखें समै में न बांधौ। मोय विचार से हमें घरै लौट जाओ चहिए। खेती बारी दिखनै है। देसभ्रमन फालतू की चीज है।'

पटेल साव मुसकाए और हुँ देसभ्रमन पै एक लम्बी भाषन खींचो। बुलाखीराम भाषन सुनवे खें नई रुको। ऊ बाहर निकर आओ।

हाथरस के बजार में ओखौ मन नई लगी। ऊ सूधौ रोड धरें 'तालाब चौराहे' पै आ गओ। सामूं ई रिक्सा ठाड़ो तो। ओनै धियान से दिखो कि एक मरियल सौ आदमी सीट पै बैठो सवारियन कौ इंतजार कर रहो तो। बुलाखीराम यूं ही ओमें बैठ गओ।

रिक्सा वालो बोलो– 'कहां जाना है?'

– 'भइया, कहूं ढंग-ढौरे के ठौर पै घुमा दे। मैं यहां घूमन आओ हों। कौन्हउ ऐतिहासिक जगह पै ले चल।'

रिक्सा वाले ने ओखें अजूबा की नाईं घूरो। बुलाखीराम ओखें मालदार दिख रहो तो। ओखें विसवास हो गओ तो कि आज की दिहाड़ी जई सें पूरी हो जैहै।

रिक्सा वालौ बोलो– 'मैं यह स्थान दिखा तो दूंगा पर रुपया पांच सौं लगेंगे। जाना हो तो राधे-राधे नहीं तो अंत रास्ता नापो।'

बुलाखीराम मोलभाव पै उतर आओ। अंत में ओनै चार सौ रुपइया में ओखें राजी कर लओ।

बुलाखीराम रिक्सा पै बैठ गओ। रास्ता में ओनै रिक्सा वाले से पूछो– 'तुम्हाव ई-रिक्सा कितेक कौ आओ?' रिक्सा वालौ झुंझला गओ– 'हमारे यहां इसे टिर्री कहते है।'

रिक्सा वालौ ओखें हाथरस सें पचीस किलोमीअर दूर गढ़ी बीरबल लै गओ। वहां ओनै खेतन में धान की हरी-भरी बालियन खें झूमत दिखो। ऊ बालियन की खूसबू ओखे तन-मन खें रोमांचित करन लगी।

वहां ओखें कछु ओर नजारे दिखे। पै वे सब ओखे लानै बेस्वाद हते। एक ठौर पै रिक्सा वाले ने अपनी रिकसा ठाड़ो कर दओ औ उतर खें ऊ अलँग-पलँग दिखन लगे। कछु दूर जाखें ऊ मूंड़ पै हाथ धर खें बैठ गओ। उतै दो खंभन के बीच की पट्टी में गांव कौ नाव लिखो तो। रिक्सा वालौ उदास आवज में बोलो– 'मैं तुम्हारा वादा पूरा न कर सका, मुझे माफ कर दो।'

बुलाखीराम जौ नाटक दिखखें रिक्सा से उतर आओ। ओनै ओसें पूछो– 'तैं जौ का बड़बड़ा रहो?'

– 'तुम भी बड़बड़ा लो, सारी गलतियां माफ हो जाएंगी।'

बुलाखीराम खें ओपै गुस्सा आ गई– 'पता नहियां कहां लैखं आ गओ?'

बुलाखी खें गुस्सा भलई आ रही ती पै ऊ आवाज ने ओखें उरझा दओ तो– 'बड़बड़ाए सें कहूं गलतियां माफ होत है, जौ तो बावरौ हो गओ।'

बुलाखी ओखें आधौ पागल समझ खें गांव के बाहर कछु बूढ़न सें बातें करन लगो। जई बातन के बीच में ओनै उदास आवाज पै चर्चा कर दई। बूढ़न से उदास आवाज कौ रहस जान खें ऊ उत्साह सें भर गओ। बुलाखी ने मारे खुसी के कए हाथ पै अपनौ दूसरौ हाथ दै मारो– 'पटेल साब ई रहस कौ उत्तर न दै पाहै। उत्तर न दै पाए तो मोखें घर जावे सें व न रोक पाहैं।'

ओनै रिक्सा वाले सें लौटवे कौ आदेस करो। रिक्सा वाले ने अपनी रिक्सा लौटा लओ।

हाथरस में आखें ओनै रिक्सा वाले को किराव चुकाओ और बजार में घुस गओ। सौदा खरीद खें बुलाखौ सूधौ होटल पहुंचो।

ओनै सबरी सौदा मेज पै धरी औ पटेल साब से बोलो- 'मैं घर जा रहो, मो काम खतम।'

गंगाराम पटेल बोले- 'का बात है बुलाखी? तबियत तो सही है।'

- 'तबियत तो मोई सही है पटेल साब। एक पंच फंस गओ, ओखें तुम न सुरझा पाहो, ईसें अब मैं अपनी सामान बांध रहा हों।'

- 'अरे बुलाखी। मैंने खाने कौ आर्डर दै दओ है। इतई संग-साथ भोजन कर हैं फिर भोजन के बाद लॉन में टहल है वहीं तोय पेंच खें सुरक्षा है।'

खाना खाबे के बाद वे लॉन में आ गए। वे उतई मुलायम घास पै टहलन लगे। गंगाराम पटेल ने सिगरेट सिलगा लई। एक कस खींचें के बाद वे बोले- 'हां, अब बता बुलाखी, तैं कौन सौ पेंच फंसा खें आओ है?'

बुलाखी उत्साह में बताउन लगो कि एक गांव है गढ़ी बीरबल। उतै की उदास आवाज कौ रहस मोई समझ में नई आओ। तुम बता पाहौ?

गंगाराम पटेल मुसकाए औ बोले- 'सुन बुलाखी..............

गढ़ी बीरबल गांव में ठाकुर भरमसींग रहत ते। उनकी माली हालत ठीक न हती। वे मंजूरी कर न सकत ते काए कि जौ काम उनके सान के खिलाफा तो। वे पइसा की जुगाड़ में इतै-उतै फिरन लगे। पै कहूं उनकौ सढ़ी न परो। काम ढूंढ़त-ढूंढ़त एक दिना उनकी दानेलाल सें भेंट हो गई। ऊ पूरब सें लुगाई ल्याउत तो औ पच्छिम में वेच देत तो। ई काम में पइसा खूब मिलत तो।

बुलाखी तैनें पसु-पंछियन की खरीद-बेंच दिखी- सुनी हो है पै यहां इंसान की खरीद-फरोख्त हो रही ती। एखें का कहो जाय? विडंवना।

जई बीच बुलाखी के फोन की घंटी बज उठी। पटेल साब की कहानी में व्यवधान आ अगो। पटेल साब गुस्सा गए- 'बुलाखी कछु जाननै हैं तो फोन खें स्विच आफ राखे करे।'

बुलाखी ने स्विच आफ कर खें मोबाइल जेब में डार लओ।

दानेलाल खें एक मीडिएटर चाहिए हती ताकि माल खपत हो जाय। धरमसींग लालच में आ गओ औ ओनै ई व्यौसाय में अपनी हाथ डार दओ।

धरमसींग ने एखौ श्रीगनेस अपयं गांव से करो। गांव में जितने अनव्याहे लरका व्याव खें रह गए ते ओनै सबको ब्याव जई खरीदी लुगाइयन सें करवा दओ। एखी उवज में ओनै उनसें मोटी रकम बसूली। हंरा-हंरा जा बात पूरे असफेर में फैल गई।

सुरुआत में आदमिन ने ई लुगाइयन की जाति-जाति खोती, पै वे सफल न हो पाए। कुछ लोगन ने इन्हें जाति बाहर करबो चाहो पै लगातार बढ़ती संख्या ने उनके पांव पाछूं खींचे पै जमबूर कर दओ। परमसींग जुन जाति वाले खें लुगाई बेंचत तो ओखें वा लुगाई वई जाति की बता देत तो। फिरउं कछु लोग ऐसे ब्याव खें हेय मानत रहे।

गंगाराम पटेल ने सिगरेट कौ आखिरी कस खींचो औ सिगरेट कौ टोटा कूडादान में डार दओ। जई बीच बुलाखी ने गुटखा रगड़ खे मुं में डारो।

गंगाराम पटेल ने बुलाखी के कंधा पै हाथ धर खें कहो- 'गांव में खरीदी बहुअन की खूब चर्चा होन लगीं इनकी उत्पत्ति में जनश्रुतियां अपनी भूमिका अदा करन लगी। कछु लोग कहत कि पूरब में बिटियई बिटियां हैं, वहां लरका नई होत। होत्तउ है तो बहुत कम। जाई सें ब्याव के लानै उन्हें यहां आनै परत। कछु इन्हें जाति विहीन बताउत।

कथा सुनत भए बुलाखी ने गुटखा उतई बुलक दओ। पटेल साब गुस्सा हो गए- 'गुटखा नाली में थूके कर।'

बुलाखी खें अपनी गलतीं कौ एहसास भओ। ओनै पटेल साब सें छिमा मांगी।

बुलाखी अपनी झेंप मिटाउत भओ बोलो- 'ऐसौं तो वहां नई सुनी।'

- 'अधूरौ ग्यान खतरनाक होत। ईसें पूरी ग्यान सुन।'

आदमियन की तो छोड़ वहां की अम्मन की राय जा है कि पूरब में बहुएं आसमान में उतरत। वे बरसा के पानी की नाईं परित्तर होत। धरती पै आखें उनकी जाति बनत। वा जुन घर में पांव धर देत ओई ओखी जाति हो जात। जे लच्छमी कौ औतार होत। जुन घर में इनके चरन पर जात ऊ घर दूद करूला करन लगत। जई सें गरीब से गरीब आदमी पइसा उठा धरखें बहुएं खरीदत।

ऐसइ एक अम्मा की बहू जातिविहीन परंपरा से आई है। अम्मा जा बात सें खुस है कि हमाओ खानदान अब खूब दूद करूला कर है।

धरमसींग को असफेर में नाव हो गओ तो। लोगन के बंस चलावे कौ गैरकानूनी लैसंस ओखें मिल गओ। आदमी धराधर बाल बच्चा पैदा करन लगो। अब ब्याव - स्याव की केखें चिन्ता ती? धरमसींग है न! लोगन के बीच ओखौ मान बढ़ गओ तो। मान - सम्मान के संगै पइसा-रुपइया आउन लगो तो। असफेर कौ मालिक धरमसींग। मालिक सबद सें ओखें गुदगुदी होत। बात सही वऊ है, सबके घरन की चिन्ता करन वालौ मालिक तो होतउ है। ऊपर वाले सें थोरई सौ कद कम हतो।

गंव में ऊ चहां काऊ खें गरया दे, कोऊ उफ लौ न करत तो। धरमसींग की झिरकी, गारी-गलौज आदमी अपनी ओली में लेत

पूरे गांव कौ अकेली बसीठ जो हतो। बहुअन सें घर भरत तौ-घर उजयारत वाली---।

बहू की 'यात्रा'बड़ी लम्बी ती। कई हाथन सें होखें इतै लौ पाउत ती। और इतै गंगा अस्नान के बाद सुद्ध होखें घर लच्छमी जात ती।

धरमसींग ई छेत्र की जरूरत बन गओ तो। हर कोऊ जई पै आश्रित। हल्के पूरे तो छोड़ौ, असफेर के दबंग मलखान दादा खें धरमसींग की जरूरत महसूस भई। मलखान दादा बात की बात में गोली चलाउन वालौ। कछु दिमागउ सें हलो भओ तो, ईसें आदमी और दंदकत तो। बंदूक हाथ में है तो धरई देनै है, ऊ आंगू-पाछू नईं सोचत।

सदा तौर पै लोग बाग ओखे सामूं जावे सें घबरात। ओखे कारनामे जगजाहिर ते। दूसरन के लए रुपइया कभऊं नईं लौटाए। कइयन की जमीनें लिखवा लईं पै काऊ ने चूं नईं करी। दादा कौ काऊ ने थेला नईं लै पाओ। काऊ खें रुपइया दाए तो दो के चार वसूले। वहां ओखौ भै काम करत तो।

मलखान दादा धरमसींग सें मिलो। धरमसींग के लानै जा फ़िकर की बात हती। इत्तौ नामी-गिरामी दबंग दरबज्जे याची के तौर पै ठाड़ो तो। दादा अपने नातेदार के लानै बहू चाहत तो। पहलूं तो धरमसींग कछु अचको फिर ओनै हां कर दई। बैसें जौ काम ओखे बाएं हाथ कौ खेल हतो जासें ओंखें कौन्उह डर-भै न तो। आनै दादा सें दुगने रुपइया लैखें टिया धर दओ।

बिटियन की खरीद-फरोख्त वाली बात पूरब में जोर-सोर सें उठन लगी। पूरब की सरकार सजग हो गई। सरकार ने सीमा चाक-चौबन्द कर दई। धरमसींग बिलबिला गए। दादा सें करो वादा अब पूरौ होत नईं दिखा रहो तो। ऊ का करै, आखें सम तरें नईं आ रहो तो।

दादा के नांव सें अब धरमसींग के हाड़ कंपन लगे। दादा के दए रुपइया पूरे खरच हो गए ते। वादा पूरौ न भओ तो ऊ दुष्ट चमड़ी उधेर लेहै। दादा चौगुनी रकम बसूल है। क्रेक आदमी को का भरोसौ? बन्दूक बरहमेस आखे हाथ में रहत। उतै ट्रेगर दबो इतै प्रान कढ़े।

धरमसींग सोचत तो कि कारी, गोरी नक्टी बूची कैसउ एक लुगाई मिल जाए ऊ मलखान दादा खें टिपा देहै। पै ओखे बॉस ने पहलई हाथ ठाड़े कर दए। दानेलाल ने ओखें सलाह दई कि दो-चार महीने सांत रौ, सांत रौ, मामलौ ठंडी परतई एक की दस लुगाई ल्या देहें। धरमसींग खें ओखी सलाह कौ बोध न भओ। बॉस कछु समझबे खे तइयार न तो। इतै ओखी सांसें अटकी परी ती उतै बॉस उपदेस झार रहो तो।

धरमसींग के दिमाग सें मलखान दादा हट नईं रहो तो। ओखों भ्यास लगो तो कि अब मौत टर नईं सकत। ऊ भलौ आदमी काऊ की न सुन है। तुरई भौसागर पार उतार है।

धरमसींग अपनौ कृपा ठोंकन लगो- 'हाय री किस्मत? जैसई उ कालदूत के पइसा लए ऊसई सीमा सील हो गई।' ओखी चीत्कार वे आवाज बाहर आउन लगी- 'सीमा सील नईं भई, मोई जिनगी सील हो गई।' भै के मारें उ आतमहत्या की सोचन लगो।

प्रान दैबो इतनी आसान होत का? ओउ साठ की उमर में। जा उमर आतमहत्या की नईं होत। वा उमर निकर गई। जौ काम तो ज्वानी में होत। ज्वानी में सब कछु होत, वा चाहे तो बिनास कर दे औ चाहे तो निर्मान कर दें। क्रांतयउ खें ज्वानी के कंधा की जरूरत होत। ई काम खें अगम जान खें धरमसींग अपयं बचाव की तरकीब सोचन लगो।

गलत काम कौ परिनाम एक दिना भुगतने परत। लुगाइयन की तस्करी साजौ काम नईं तो। आज नतीजा ओखे सामूं हतो।

गंगाराम पटेल ने बुलाखी सें कहो- 'ओखौ चित थिर न तो।' धरमसींग दुन्द में फंस गओ। ओखे बिचार देर पै देर पल्टी मार रहे ते- 'जौ गलत काम कैसें भओ? मैंने न जाने किते बंसहीनन के घर आबाद करें। काऊ कौ घर वसाबो पाप है का?'

उ बेचैनी में पहलू बदलत रहो। दिमाग की सुई दोउ कोद घूम रही ती- 'औरत कोउ चीज-बसत नुहै जेखें खरीदो बैंचो जाय। ओउ इंसान है, हाड़-मांस की बनी। अपने स्वास्थ के लानै ओखौ उपभोग करबों मानवता विरोधी है।'

धरमसींग अपने भीउर की आवाज सें दहल गओ। ऊ जौ नईं सोचबो चाहत तो पे बिचारन की आवाजाही ओखें परेसान करें ती। ई समै ओखे अपने से धतकरम याद आउन लगे।

मनव की जिजीविषा बड़ी निष्ठुर होत। खुद के बचाबे के लानै काउ खें मार सकल-कठिन सें कठिन डगर सें गुजर सकत। अपने विजई अभियान में मानव बरहमेस आंगू बढ़ो है।

धरमसींग एक निरनै पै पहुंच गओ। दादा सें लड़ खें ऊ नईं जीत सकत। ओनै अपने बचाव के लानै एक उपाय सोच लओ। अपयं बनाए पिलान में बच गओ तो ठीक है, नईं तर का होहै? मलखान दादा मूंड़ मूंड़ लैहै टुंघरौ न मूंड़ पाहै।

आज मलखान दादा खें बहू लैबे आनो है। सबेरे दस बजे कौ टैम दओ तो दादा खें।

मलखान दादा अपने लाव-असगर के साथ गांव पहुंच गए। धरमसींग के घर में दादा खें अलग नजारौ दिखें खें मिली। घर की औरतें सुबक-सुबक खें रो रही तीं।

ओनै जातनई धरमसींग खें पुको स्यानी औरत ने बताओ

कि वे तौ बहू कौ क्रिया-करम करन मरघटा गए।

मलखान दादा उतावले पांव मरघटा पहुंच गए। अब सुन बुलाखी। दादा वहां का दिखत हैं कि एक चिता जल रही है। वहां बैठो धमरसींग उदस आवाज में बड़बड़ा रहो है- 'हे ऊपर वाले! मुझे माफ कर दे, मैं दादा का वादा पूरा न कर सका।'

मलखान दादा ने ओखौ बड़बड़ाबो सुनो। ओनै धरमसींग सें पूछो- 'का बात है? तू क्यों बड़बड़ा रहा है?'

धरमसींग मलखान दादा के पांवन पै गिर खों रो परो- 'दादा मेरी किस्मत खराब है। मैं तुम्हारा वादा पूरा न कर सका। कल बहू लाया था। रात में अचानक तबियत बिगड़ी और तड़के मर गई।'

दादा की आंखीं सिकुड़ गई- 'बहू को कौन सी बीमारी हो गई थी?'

- 'कुछ नहीं दादा, बहू ने जैसे ही देहरी लात मारी, कै-दस्त शुरू हो गए। सुबह तड़के खेल-बेल हो गया।' इत्तौ कह खें धरमसींग डिड़कार छोड़ खें रो परो। धरमसींग रुंधी आवाज में बोलो- 'रुपए के रुपए चले गए और बहू चली गई।' मलखान दादा पसीजत वाले न ते पै धरमसींग की हाय किलपना ने उन्हें मजबूत कर दओ। वे इत्ते मजबूर हो गए कि उनकौ हाथ अनायास जेब में चलो गओ। दादा ने जेब से रुपइया निकारे औ ओखे हाथ पै धर खें बोले- 'धरमसींग रोना-धोना बन्द कर, ये रुपइया ले, दूसरी बहू ले आना।'

धरमसींग ने रुपइा लैबे में आनाकारी करी तो दादा ने जबरई ओखी जेब में डार दए। धरमसींग मूंड़ झुकाएं बोलो- 'दादा फलां हैजा फैली है। दो-तीन महीने का सब्र करना पड़ेगा।'

- 'कोई बात नहीं, दो-तीन महीने बाद ले आना।' इत्तौ कह खें दादा ने चिता में लकरिया डारी औ लौट गओ।

दादा के जातई धरमसींग के जी में जी आ गओं। ओनै दिखो कि दादा चले गए मारे खुसी के ऊल परो। ओखी तरकीब काम कर गई ती।

हे बुलाखी! तुम जा बात तो मान ही कि डिरानो आदमी हद सें गुजर जातं ओनै सोचो कि मौतइ होनै है तो बहू की काए न हो। ओनै भुनसारें चिता सजाई औ खजूर के सूखे पेड़ खें आदमकद काट खें चिता में धार दओ औ आग लगा दई। ओनै बहू के मरें कौ सफल स्वांग रच डारो।

कालान्तर में ऊ थान की मान्यता हो गई कि परेसान आदमी उदास आवाज में माफी मांगे तो उसै माफी किल जात। अब तो आदमी हरेक परेसानी के लानै उतईं माफी मांगन जात। हे बुलाखी! तुम ओई आवाज सुन खें आ रहे हो।

बुलाखीराम सोच में पर गओ। पटेल साब खें इत्ते छोटे से गांव की घटना की जानकारी कैसें मिली। काए कि जो थान इत्ती जादा परसिद्ध नहियां।

गंगाराम पटेल ने बुलाखी के मन की बात जान लई। पटेल साब मन इ मन मुसकाए- 'बुलाखी तैं क समझत तो कि तहीं हुसियार है। मैंने ऊ रिक्सा वोल खें हजार रुपइया दैखें तोय पाछूँ लगा दओ तो कि जौ आदमी जहां जाबो चाहै वहां लिबा जइए ओर जो कछु दिखै-सुनै मोखें बताइए।

बुलाखीराम धुरा की नाईं अपनौ दिमाग खपा रहो तो। अंत में बुलाखी ई निरनै पै पहुंचो कि पटेल साब सें पार पाबो कठिन तो है पै असंभो नहियां। अगली मंजिल में मैं इन्हें ढंग सें बिंधाहौ।

गंगाराम पटेल ने बुलाखी कोद दिख खें कही- 'चलें।'

बुलाखी बोझिल कदमन सें रूम कोद बढ़ गओ।

कृष्णा धाम के आगे अजनारी रोड
नया रामनगर उरई जिला जालौन
उत्तर प्रदेश 285001
सम्प्रति- प्रवक्ता हिन्दी
जनता इटर कालेज सिकरता हाथरस
उत्तर प्रदेश 204212
मो. 7668715109

(बुंदेली कथा)

किस्मत को फेर

–ओ.पी. रिछारिया

शेरपुर गाँव के वासिन्दे – भोतऊ मेंहनती कास्तकार हते। खेती वन्ज, व्यापार तो अब भईया-करे-करे को होत हे। – बिना छाती मारे को तो कौनऊँ काम नई होत।

– गाँव को रेबे बारो एक गरीब आदमी हतो। नाम हतो 'बालकिशन'। कैत है, के – पैसा तोरे तीन नाम- परसा परशु, परशुराम ओ में के हते बालकिशन। – गरीबी ने बालकिशन से उन्हें 'बलुआ' बना दओं

–लिलार को लिखो भला को मेट सकत? 'बलुआ' अकेले राम हते। 'किस्मत'– के भरोसे और भगवान की दया पे – उनके सब काम होत हते। – 'बल्लू' –बचपन से दूसरों के घरों को बेगार करत आ रहे हते। नई जानत कब से बलुआ के मन में एक अभलाखा हती के हमाओ खुद को एक छोटो से खेत होतो तो उम्दा रहतो।

–दिन-रात सोचत रैत तो के कबऊँ तो किस्मत जोर मार है जब हमाओ खुद को खेत हो जैहे। –अब आशा से तो आसमान टँगो है। –से एक दिन ऐसों आओ के बिलैया के भाग से सीमों टूट परो।–

–गाँव में डेम बँध रओ हतो। शेरपुर गाँव की जमीन डूब में आ रई हती। सो किसान हैरान परेशान हते। ऊपर से- 'जमीन बन्दोबस्त' के कारण से सिरकारी – जाँच, लगान, की तैयारी अलग से चल रई ती। –गाँव के जमींदा ने सोची के – जो-तो- करो हौलरो बन गओ। ऐस बचवे के लाने – वे अपनी जमीन – खों टुकड़ों में बाँट-बाँट के चाऐ जोन- 'मुगरें' के नाव लिखवान लगे। सो ओई – हलबंग में – एक खड़ेरा नीचट पथरीली – जमीन को टुकड़ा 'वलुआ' के नाम कर दओ –।

– 'वलुआ' – खों पैले तो भोत खुशी भई। – मनों बाद में – पतो चलो के ओ जमीन मे तो 'चरोखर' तक नई होऐ। बताओ – किस्मत ने जोर तो मारो–। मनो – आधो अधूरो। अगर जमीन्दार साहब ढँग को खेत दे देते तो सोने पे सुहागो हो जातो। अब जमीन्दार के दिल की जमीन्दार जानत। – कई 'धनी को खिरका हिराऐ, भँड़यो खों एक एक बछिया–।' खैर बलुआ ने अपनाकर जो बज्जुर को कर लओं और सोची अब आँगे जो हुइऐ सो देख ले हैं।

कछु दिना बाद – किस्मत ने फिर जोरमारो – गाँव को 'गेंवड़ो' – जमीन्दार की जमीन में पड़त हतो। –बा जमीन-मालक साहब ने अपनी आवाद करा लई। – सो गाँव बारों ने – 'बलुआ' – की जमीन पे गवड़ो बना लओ।

– गाँव के लोग लोटा ले के 'बलुआँ की जमीन में जान लगे। गोबर, कूड़ा, करकट भुसा सब पटकन लगे।

धीरे धीरे बा जमीन पैदावारी करबे बारो 'खेत' – बन गओं – ऐसई ऐसे लग गओ बरकारो। – आसपास में करिया बादर छान लगे। – अब 'बलुआ' घबरान लगो। बोनी कैसे होवे? घर में खावे तो अु को दानो नइयाँ, बोवे कहाँ से?

बल्लू ने सोची – अगर – महाजन के पास खेत गिरवी रख देवे और कर्ज में बीज उठा लऐं तो बोनी हो सकत है। सां भैया पौचे महाजन के जरो महाजन ने पैले तो साफ मना कर दई बोले – तोरे जैसे धुरचट्टा खों बीज कर्ज में देबो- मानें – 'ऊखरी में मूँड' देवो बराबर है। इसे तुमाई दार ने गल पा हे। फिर महाजन ने कई एक शर्त पर बीज दे सकत हे। शर्त जा है

फसल आवे के बाद- 'बीज को दूनो भाग' वापस करने पर है। मंजूर होवे तो बोलो। – बल्लू खों तो किस्मत पे पूरो भरोसो हतो – सो शर्त पे राजी हो गओ। महाजन ने एक बोरी 'कोदो' बल्लू खो दे दई।

किस्मत ने साँचऊ – जोर मारो। बारिश अच्छी भई। सो खूब उम्दा फसल आ गई। मनों संगे संगे खेत में खूब 'खर-पतवार' सोई भर गई पेट पालवे के चक्कर में बल्लू दूसरों के खेतों में काम करत हने। अब खुद के खेत की 'निदाई-गुड़ाई' – कैसे होत? बललू एई फिकर में दूबरे हो रऐ ते। – बताओ – जैसे-तैसे – खेत में फसल आई- सो 'दावागीर' – तो हजार ठा

ड़े – मनों – अब तो बारगा ही – फसल खाऐ लेत? राम अब कैसो करो जाऐ? निदाई-गुड़ाई कैसे हो पावे?

बल्लू की किस्मत ने फिर जोर मारो। – एक दिना की बात है क महाजन के घर में 'भैइया' घुस गऐ। –महाजन ने ऐरो पा के तुरतई- पुलिस बुला लई। भँड़यो – खो पिरानों की परी। सो गदबद् देत आए। और बल्लू के खेत मे पिढ़ गऐ। 'बल्लू' – विचारे – अकेले निंदाई खों झुके ते। – जैसई नजर परी भँड़यो पे सो बल्लू – खिच्चया परो – को है रे? खेत में काय पिढ़े? भँड़यों ने बल्लू को गोड़े-पकर लऐ। और हाँथ बिनती जोर के बोले – बचा ले दद्दा हमें। – हमाऐ पाछे पुलस लगी है। – हम तुमाई पूरी निदाई-गुड़ाई करें देत। मनो हमें बचा लेव न 'रामधई'

मर जै है हम। बल्लू – बोलो रे। हमें उचमना में ने पारो – पुलस बारे हमें चींथ है फिर हम का के है?

कछु नई बस इत्ती कैने है – के जे हमाये – मजदूर आऐ...। दिन मजूरी से लगे है। भुन्सारे से नींद रऐ है। बल्लू तैयार हो गए। फिर बोले तो उठातो खुरपी नींदन लगो। भड़या खेत नींदन लगे।

थोड़ी देर बाद उते दरोगा और मुंखी- पूँछत आ गऐ। – और

...data2023\bund23.pm5 .... Inset ......129 04042023(1)

बल्लू से ऐंड के बोले –

'क्यों बे तुझे वहाँ से भागते हुऐ :- आदमी तो नही दिखे? बल्लू आँगे खों आके बोले :-

'हूजूर इते गाँव के गेवड़े को आहं? पुलिस की नजर खेत में काम कर रहे चोरों पे पड़ी उन्हें देख कर दरोगा बोले – ये कौन है?

'ये हमाऐ मजूर आए मालक।' आन गाँव से बुलाए है, दिन मजूरी से। बल्लू ने सफाई दई। ठीक है, जरा नजर रखना कोई नया आदमी आता जाता दिखे तो बताना।- हम चलते है अभी। – इत्ती कह के मुँशी दरोगा जान लगे। – बल्लू ने हुसियारी खेली – बो बोलो – साहब गाँव से बहर जावे वारी जा एकई गैल है। चोर ने भग पाऐ हुइये तो इतई से कढ़ है। सो आप औंरे तो इतई बिराजो हम खटिया डारे देत है। थोड़ी देर सुस्ता लेव। ठण्डो पानी पियो जौ लौ। हम चिलम -तम्बाखू लऐं आत है। बल्लू ने खाट बिछा दई।

मुँशी जी, दरोगा जू उतई खाट पे डट गऐ। बल्लू चोरों खों - हलकार के बोलो 'जल्दी जल्दी करो रे...।' का मुफत की मजूरी लेहो? काम करत रओ। जल्दी – जल्दी हाँथ चलाओ। ऐंसई - ऐसे संन्जा तक जब पूरी निदाई गुड़ाई हो चुकी। सो चोरों खों भगाते हुए बोलो – चलो जाओ भियाँने...उलायते काम पे आ जइयो - मुनगा बारो दूसरो खेत करने हैं...। चोर हते सो जान बचा के भग गऐ।

तब से जा कहावत बन गई के- 'किस्मत मोरे जोर- सो कोदो नींदे चोर'। ई से शिक्षा जा मिलत कहाई के अपनी मेहनत और किस्मत के प्रति आत्म विश्वास इंसान खों जरूरी रखो चहये।

सफलता अवश्य मिलत है देर सबेर बस है भैया किस्त को फेर...।

परकोटा वार्ड, कबीर आश्रम
रिछारिया घाट के पास सागर (म.प्र.)
मो. 9755811972

बुंदेली कहानी)

जौ काय मचो

– दीनदयाल तिवारी 'बेताल'

…नसिंह जमींदार के दरबाजें कोंड़ौ जल, रव, जमींदार पिड़ी …बैठें ताप रय। कौंढ़े के चारउ तरफै चार पाँच जनें बैठे-बैठे ताप रय …। एइ बीच प्रेम आकेंउतइ बैंठ गव, पछाइ सें एक जमींमंस बिनियाँ दौड़त भइ उतइ आ गइ। रोउत रोउत वा जमींदार से बोली कै काजू …ई ठटरी के लगे प्रेम ने मोरे लरका खों इतनों मारौ इतनों मारो कै बौ …बेहोस डरौ, ई की लग जाय नकरिया ऐसी कै कें जोर जोर से रोउन लगी। ऊकी रोबे की आवाज सुनकें पुरा मुहल्ला के लोगें लुगाई अपने-अपने घर से बायरें आ गय और जमींदार के दरबाजे ठट्ट लग गव। इतने में बिनियाँ को घरवारौ जसरथ आव और बिनियाँ को हाँथ पकर के अपने घरै लुवा गव, तनकइ चलौ सो जसरथ कौ भइया दौरत-दौरत आव और हाँपत-हाँपत बोलो कै भइया जा भौजी केवल लरवे फिरत अपनेलरका खों तौ समाजउत नइयाँ, वौ मुहल्लावारनं खो दारू पी के अवै सोउ गाइं दैवे लगो। मोय लगो कै जा भौजी जमींदार के दरबाजे लर नई परवै सो मैं भगत आव।

जमींदार बोले के कायरे प्रेम तैंने उऐ काय आ मारो, प्रेम बोली कै कका जू ऊनें मोय मताइ बिटियन की गाइं दइं ऐसी गाइं को सुन लैय सो मैंने मार दव। बीच में बात काटत भव कलू ने कइ कै ककाजू जमानों इकाउ बदल गव। कोउ से बोलवे कौ धरम नइं रै गव, अपन खों बचकें चलने परै। सो प्रेम ने कइ कै जब पानीअइ मूड के ऊपर से बै जाय तो कछू तौ करनेइ परै। कलू बोलों बराबर। बातें आँगे बड़ी, जमींदार बोले भैया अपने गाँव में पेलें कोउ दारू नइं पियत तौं, कोउ खो कजन बिड़ी पीने आउत ती तो वौ दुक कें पियत तौ। मैंने तौ जा सुनी कै जसदथा को लरका ऊ रौनक तो उठत भुन्सराँ से दारुअइ कौ करूला करत। वौ चौवी सउ घण्टा दारु में भुत्त रत। जयराम ने कइ कै ककाजू रौनक नइ अब तौ गाँव के सबरे लरका बिगरत जा रय। गाँव की सबरी मान मर्यादायें टूटत जा रइं। हमाय परौसी के इतै तो सवरे सदस्य एक संगै बैठकें दारु पी रय। और तो और ऊकी मौड़ी सैली खों देखों वा तौ पूरे रँग से बाहरी रँग में रँग गई। वा खुदई तो दारु पियत और सिकरेट तौ ऊके मौंसे छूटतइ नइयाँ। ऊकी का कने पक्की मेम बन गई। प्रेम बोलो कै बा तौ भुन्सरा से जीन्स पैर कें एक लतैया आँग पै बिदैके स्कूटी पै बैठकें सिकरेट पियत सहर खों चली जात और लौलैया लगे घरै लौटत। ककाजू जो काय मचो। जमींदार ने पूछी कै इतनों पइसा ऊनें काँ से आउत। बाप तौ पैली पैली भर कोदों माँगत फिरत फिर इतनी सौंक काँ से हो रइ कलू बोलो कुजने ककाजू।

हीरा ने कइ कै ओइ की काय कत राधे के लरका खैं तौ देखौ ऊके हाँत से तौ तास छूटतइ नइयाँ चौवीसउ घण्टा दारुपी रव और जुआ खेल रव घर की नास कर दइं घर में कछुअइ नइ बचो। खावे पीवे के लाले पर रय ई के बाद भी वौ दूला सौ सजो रत। कलू ने कइ कै जुआ तौ गाँव भर के लरका खेलन लगे। बाप मताइ रोकत नइयाँ कजन रोकत तो वे उनइ पै बदल परत। रोज पुलस गाँव में आ रइं और एक दो लरकन को पकर-पक कै लै जा रइ सो जमींदार ने कइ कै पुलिस को मिलौ आ हो रव। गाँव कौ पइसा कड़त जा रव। हीरा ने कइ कै हव ककाजू गाँव वारन नौ पइसा है सो कड़ रव। प्रेम ने कइ कें ऐसे कव तक बचें एक न एक दिन तौ बकरा की मताइ खों अधाइ-बधाइ नचनेइ परै। हीरा बोलो कै साँसी आ कै रय। गाँव के सबरे लरकन पै दो-दो, चार-चार मुकदमा दर्ज हो गय। प्रेम ने कइ कै दूर काय जात एइ रौनक खों तौ देखौ बा बिनियाँ।

रोउत फिरत ती ऊ पै कैउ मुकदमा लद गय। वौं जसरथ हराँ कें पइसा खुलका आउत सो पुलस गिरफ्तार नइ कर रइ। जिदना जेल चलो जानें उदना रोबे मजूर नइ मिलने और जमानत दैवे वारौ नइ मिलनें। अपनौ गाँव कितनों अच्छौ हतो अब इकाउ बिगर रव और बदनाम हो गव जा कलू ने कइ। सो प्रेम मजाकियया अंदाज में बोलों कै सब ककाजू की ढील आ है। इतनी सुनकें जमींदार बोले कै जो प्रेम बिनियाँ से नइ कुटपाव अब जौ कुटोंय चल रव। अब इयै कुटने आ है। सबरे बैठेया जोर जोर से हँसन लगे उदसी कौ माहौल हँसी में बदल गव।

जमींदार बोले कै कायरे प्रेम जा आगी तौ मद्दी हो गयी उठ ईमें नकरियाँ डार सो प्रेम ने कइ कै काय ककाजू इतइ बैंठो रने सोउने नइयाँ सो जमींदार बोले कै तनक और बैठ। सो प्रेम तपाक से बोलो कै चाय वाय पियाउने नइयाँ तनक और बैठ। जा सुनके सबरे हसन लगे। इतने में भीतर से चाय बनके आ गइ चाय देखके के सब सान्त हो गय। एक पल के लाने बातावरण बिल्कुल सान्त। सबहो चाय की चुस्की लेन लगे। बात खो आगें बडाउत भय जमींदार बोले कै भैया हो तुम सबने अपनी-अपनी बाते कइ मैंने सुनी अब मोरी सुनों। गाँव में ठलुवाइ मची जब आजकाल के मौड़ी मौड़ी ठलुआ रैंयेंय तौ वे तो उद्या करैंइ कन लगत कै खाली दिमाग सैतान को घर। सो सबने कइ कै हवजू साँसी आ कै रय अपन। इतने में गाँव के सरपंच सोहन उतई आ गये जमींदार खौ रामराम करके कौडे पे बैठ के तापन लगे।

जमींदार ने सरपंच से पूछी कै नौ बजे राते कायं फिर रये? सरपंच ने ज्वाप दव कै ककाजू पैले पुरा न्याव हो गयी और इतनी भइकै मारा मारी हो गइ। चार पाँच जने तो रक्ता रेन हो गये। काजू ने

पूछी के न्याव का बात पे हो गइ? सरपंचे न कइ के गॉव में दारू और जुआ दो तौ कामइ हो रव सो न्याव होतन का लगत कमला आदवासी को लरका और रधिया को लरका दोइ जने लर परे लराइ इतनी बड़ी कै बड़न बड़न में लट्ठ चल गय। रधिया भगत आइ कै सरपंच साब चलियौ नइ तो एकाद मरो जात। सौ उते आ गवतौ। सो प्रेम ने पूँछी कै का कर आय? सरपंच ने कइकै मोरी सासकन खौ समजा तौ आय न्याव सान्त करवा आय अब फिर लर परवे तौ मैं का करों? कलू ने कइकै कछु काम नइया तौ न्यावइ सइ। परपंच ने कइकै काम का सरकार ने मुफ्त को रासन दैके सबखौ निकम्मों बना दव सब परै परै खा रय और गर्रा रय एक-एक घर से चार-चार पाँच रासन कार्ड बने है सो पेलों रासन मिल रव सौ खा रय और बेच बेच दरू पी रय जुआ खेल रय और लर रय। अब कोउ काम काय खौ करे। आज देखौ गॉव में मजूर नइ मिल रय मजूरनन कै लाने जाव तो बे बायरे नइ कडत भीतर घूस जात देख के।

जमींदार बोले भैया जे सब कारन तो विगारइ रय, संगै-संगै मसीने चल गइ ई मसीनी युग नै मजूरन की हालत खराब कर दइ। अब आदमी करैं तौ का? फिर सरपंच के कइ ककाजू कजन अपन चार कौमें गॉव में चलकें सबखों समजाकें कयँ के भइया हौ जो करमकुकरम छोड़ दो अपनों गॉव बदनाम हों रवो, तौ कछू तो असर परै ससरन पै सो जमीदार ने कइ कै सरपंच जा बात तुमनें अच्छी सोसी! अरे कछू तो असर परै। कलू बोलो कै बे नइ मान सकत। सो प्रेम बोलौ कै हडुआ बोलै जब भ्याभदौ बोलै। सबरे हो हँसन लगे। जमीदार के कइ कै ओ भइया देवी बरदान नइ दैय, तौ लोटा तौ छुड़ा नइ लैय। तौ जौ काम भुन्सरइ से हो जाय प्रेम ने कइ सो जमींदार बोलें कै जे काम उत्काय से नइ होत काल सब जने हो फिर से बैठ

लो ओर पक्की रूपरेखा बनाव फिर काम करों। कलू नै कइ कै ककाजू अयन खों अँगाइ होने आय जवइ सव पै असर परे सो जमींदार के कइ कै अच्छें कामन में हम हमेसयी तैयार हैं, हम चलें संगै।

सरपंच नै कइ कै हम मास्टर साब से कैयँकै ग्राम सुधार के नाव से एक जलूस काड दो ई जलूस से सोउ गॉव बारन मैं असर परै। दो तीन अधिकारी बुला लेयें सो झंकाफंका अच्छौ हो जैय। लरकन बिटियन खौ मिठाई बटवा दइ जैय। जलूस में नारे और गीत गाउत लरका बिटिया चलै जैयें। इतनी सुन के जर्मीदार ने कइ के अच्छौ विचार है करौ। कलू नै कइ के एक चौकडिया दारू पै है कजन अच्छी लगै तो वा सोउ लरका गाव में सुना सकत जमींदार बोले कै सुना ला चौकडिया। कलू में चौकडिया गाइ-

मदिरा मद की दैबे बारी, जा घर नासनहारी।
एक पियत हैरान हात सब, रोग बडावे बारी।
सबरी पानी गव पानी सौ, सान चली गइ न्यारी।
पीवेबारे मुक्तिधाम की, धर रय गैल सरारी।

सरपंच बौले बा.... जा तौ अच्छी मौका की चौकडिया है काम बन जैय। ई कौ गाँव बारन पै जरूर असर परै। जमींदार ने कइ कै काल फिर बैठ लैबू। रात जादा हो गइ चलौ सोइए। सइब जने एक दूसरे से राम राम कै कें अपने अपने घरैं चले गये।

लेखक ने सोउ सुभरात्रि।

श्री सिद्धबाबा कॉलोनी
वार्ड नं.6, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 7987603728

बुंदेली लोककथा-

'भअे दाऊ'

– अजीत श्रीवास्तव

ऐंसे-ऐंसे एक किसान औ ऊकी जनी एक गांव में रत ती। किसान अपने कआ पै साग सब्जी लगात तौ। औ रखनवाई करत हतो सो ऊकी घरवाई खेत में खेवे कलेऊ, ब्याई खों रोटी पै-पै कें नई दे आउतती। एक दिना किसानन ने खेत से कछु भटा तोरे और घरै ले आई। घर में ऊनें हंसिया से भटे पौलवी को काम शुरू करो। हल्के हल्के गतरा-गतरा कर डारेर औ अखीर कौ भटा जैसई पौलन लगी सो सबसे जबर वौ भटा कनलगो- 'मताई-मताई, मोखों न पौलो हम तुमाऔ कछु काम कर देहें' किसानन पैलें डरा गई, फिर अचरज करन लगी, कै जे भटे दाऊ बोलत है। किसान-किसानन के कौनऊ बाल बच्चा न हते सो ऊनै ऊखो नई पौलो, पै पूंछ बैठी 'काहो भटे दाऊ, तुम हमाऔ का काम कर सक।'

भटे दाऊ ने कई 'मताई मैं दद्दा खों रोटी दे आहों, खेतन की रखनवाई कर देहों,' किसानन भौत खुश भई। ऊये विसवास नई भऔ सो फिरके पूंछी 'काये सांसी आ कै रऔ, कै मसखरी कर रओ-रओ' 'आं हां मताई रामधई मैं सांसी कै रओ। तैंई का कै, तैं मोय रोटी बना कै दे, अबै दद्दा खो बौड़ाय आउत।' किसानन खों जा बात जम गई सो ऊनै जाकै ब्याई बनाई औ रोटी सब्जी एक उन्ना के चीथरा में लपेट के पुटरिया बना ल्याई। जो देख भटे दाऊ भौतई खुश हो गये 'वा मताई, कितेक उलायती तुमने सगरे काम कर डारे' किसानन तनक शरमा सी गई 'हओ, पै पैल जा तो बता कै ते ब्याई कैसें लै जैहै।'

भटे दाउ नै कई 'मताई मोरी पूछ पै पुटईया टांग दो।' ऊनै अपनी पूंछ ठाड़ी कर दई, सो ऊकी मताई नै ऊमें पुटईया गठांन लगा के लटका दई जात जात भअे दाऊ कन लगे' मताई मताई मोय लाने मऊआणौ लटा बना दइये 'चटा कऊँ कौ, भग इतै से' मताई ने हंसकैं गुस्सा दिखाओ। भटे दाऊ ने मुस्की मार कें कई 'मताई, राम-राम जा रये।' मताई नैं कई 'जियत रऔ दूदन सपरौ पूतन फरौ, पै तैं इतै से उतै तक जै कैसें?' 'मताई नायें से मायें तौ मैं गाड़ी घाई जैहो तुम तो मोय तना इतै से ढ़रका भर दो।' मताई नें भटे दाऊ खों तना लुढ़का दओ सो भटे दाऊ लुढ़कत-ढुरकत कुआं ताईं जान लगो। भटे दाऊ ऐसई ऐसई कुआं तक पौंचई रओ तो पै गैल में एक पानी को नरवा पड़त तो सो भटे दाऊ नै ऊखों पार करवे की कोशश करी तो ऊके कीचर में फंस गये। कड़बौ मुशकल हो गऔ सो मई से वे चिचयान लगे' 'दद्दा-दद्दा इतायें खों भगत आऔ, जल्दी निंगआऔ, मैं नाले के पानी में तो आ फेस गऔ, नईं तौ मैं काये खों आ चिचयाउतौ जू 'किसान नै पुकार सुनी सो गदबद ठोक नरवा कुंदाऊं पोंचों, औ भटे दाऊ, खों निकार लओ। भटे से परिचै पूंछो सो अपनों लरका जान खुश भओ, ब्याई भी छोर लई।

संजा के खा-पीकें बौ फुरसत भऔ सो भटे दाऊ से बोलो 'भटे दाऊ तुम पिड़िया पै बैठ कैं तना रखनवाई करौ मैं तना रमलू कक्का के कंआ ताई हो कै आउत' 'हओ दद्दा तुम तो बेफिकर जाऔ, तब तक तुम नईं आउत तब तक हम सब देखौ भालो करत रै। 'किसान चलो गओ औ भटे दाऊ पैरे पै पधारमान हो गयें पै होनी खों तौ और कछु मंजूर हतो। उतै से राजा की सवारी कड़ी, और वे ओई खेत में से निकरे। औ राय साग-सब्जी रौंदत बढ़न लगी सो भटे दाऊ खों ताव आ गऔ उन्नें राजा से कई 'सारे, हमारो खेत खों आ रौंदत-रौंदत जा रये। हमाये दद्दा ने तो मर-मरकं खेत लगाव, कुलच्छियन खों दिखात नईंयाँ, निकसान कर रये। आन दो दद्दा खों वे मुण्डा घरलवैंहों कि चौंथी के बार तक द्वार जै हैं।'

राजा बड़ौ गुस्सा भऔ उसनै किसान खों पकरवा कें गिरफ्तार कर लओ और अपनै संगे बांध के लो गऔ। अब भटे दाऊ रोत घरैं भग लगे। घरैं जाकें हिचकोले लै ले के ऐन तान के रोन-गाउन लगे। मताई नें पूंछी सो सबरी बात बताई, सुनतनई किसानन ड़िड़्यान लगी, सो भटे दाऊ मोंग गये औ बोले- 'मताई ऐंसें रोबे कूटबे सें कछु नईं हौंनें, मैं दद्दा खों छुरावे जात' मताई कन लगी 'तुम कैसे राजा की जेल से दद्दा खों छुड़ा सकत।' सो भटे दाऊ नें कई- 'मताई तैं ठठेरे की हलकी सी गाड़ी बना दै उमें चार टर्र-टर्र मेंदरे जोत दै, फिर देख मैं का करत।' मताई ने वैसई करौ जैसो भअे दाऊ ने कई तौ।

तनकदेर में भटे दाऊ लरवे खों रवाना हो गये। गैल में नें एक 'चिनटी' मिली, वा बोली भटे दाऊ मोई खों लैं चलो गाड़ी में, मैं ई कछु काम आ जैहों।' भटे दाऊ ने उनै गाड़ी में बिठा लओ, तकन अगांऊ चलवै पै 'आगी' मिली, ऊने भी जेई कई सो बौ भी गाड़ी में सवार हो गई। ऐसई चलत-चलत में 'पानी' मिलो, बौ भी भटे दाऊ संग पछ्या गओ, फिर किले के करके एक कीरा (सांप) मिलो, सो भटे दाऊ नें ऊयें सोई गाड़ी में बिठाल लओ।

गाड़ी मेहलन के द्वारे पे आ गई सो राजा के पैरेदारन नै रोक दओ। सो भटे दाऊ नें कई 'गैल छोर दो हम राजा सें लरबे आ आये।' सब हंसनलगे, सो भटे दाऊ नें 'कीरा' खों इशारा दऔ सो बौ करिया सांप फनफना के पैरेदारन पै दौरो वे साक्षात काल देख डरकें गदबद दै के भीतर भगे। राजा से जा बात कई, सो राजा कड़ आये। भटे दाऊ के सामनै आ गये। भटे दाऊ नें कई 'राजा हमाओ

दद्दा खों छोर दो नई तौ........।' राजा ने हंस के कई 'नई तौ का करौ'? भटे दऊ नें चिनटी 'खों इशारौ दओ सो वा चिन्टी हाथियन के डेरे ताईं बढ़ चलो। फिर भटे दाऊ नें 'आगी' खों उकसा दओ सो छिन मर में आगी ने महलन में जां-तां आग लगाबौ शुरू कर दऔ।

तनकई देर में महलन में भगदड़ मच गई। राजा हाथियन कुदांई दौरो सो चिन्टी नें उनकी सूड़न में काट खाओ, तो, सो वे मायें मचल रये ते। चिचयांटो मचै तो। राजा सोई सकपका गय वे चिल्लया कें बोले- 'भटै दाऊ, भटे दाऊ, मैं अबई तुमाये दद्दा खों छोरत, तुम जौ लराई-झगड़ा बंद करौ। आगी खों रोकौ।' भटे दाऊ नें कई 'आँ हाँ पैलें दद्दा खों छोरौ औ बग्गी में सोनौ-चांदी रख कें पौंचाओ तबई' मैं रूक सकत, नईं तौ.......।'

राजा ने मंत्रियन सें फौरन जा बात पूरी करवे कई। तन में दादा बग्गी पै आ गये। भटे दाऊ ने चिन्टी, कीटा खों बिढ़ाओं औ वे खुदई बैठ गये। 'पानी' सें उन्ने कई 'आपुन म की आगी बुझा दो' पानी, आगी बुझान लगी। भटे दाऊ नें दद्दा खों लै कें गैल धरी। किसा हती सो निपटी।

- अजीत श्रीवा
'राजीव सदन' नायक मुहल्ल
टीकमगढ़ (म.प्र.) पिन- 47200
मो. 882719284

बुंदेली लघुकथा

'सौ कौ नोट'

-राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

एक बेहम पत्नी फटफटिया से बाजार जा रस हते कै गैल में अचानक मोय एक सौ रूपए की नोट डरौ भऔ दिखानौ, छट्ट ने फटफटिया तनक धीमी करी सो भीतर से दिल ने कइ रन दे, तभइ चंचल मन ने तुरंत कइ अबे ईदस कौ नइ सौ रूपए को नोट है तू नइं तो कोउ और उठा लेहे, दिमाग खौं जी बात सइ लगी तुरंत हात को आदेश दऔ दोनों हाथों ने अतिउत्साह में दोनों ब्रेक एक संगे धर दबाये और फिर का हतो हम गिर परे।

मैंने छट्ट दौर के पैला तो वो सौ कौ नोट उठाओ देखों असली हतो। फिर फटफटिया उठाई और उतै से जल्दी से खिसक लये कउ कौनउ और न देख ले, कछु देर बाद कछु दर्द गोडन में भओ तो दिल ने दिल्लगी करी तूने नोट काय उठाओ? मना करी थी न? तब मन फिर हँसते भए कइ-अबे, दस कौ नइं वो सौ का नोट हतो करकरो।

संपादक 'आकांक्षा' पत्रिका
अध्यक्ष- लेखक संघ टीकमगढ़
संपादक- 'अनुश्रति' बुंदेली त्रैमासिक ई पत्रिका
अध्यक्ष- वनमाली सृजन केन्द टीकमगए
पूर्व महामंत्री- अ.भा. बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद
शिवनगर कालौनी, टीकमगढ़ (म.प्र.) बुंदेलखण्ड, (भारत)
मो. 9893520965

(...नाफरी लोककथा)

कोरी का दामाद

– ज्योति

...रहै कोरी का दामाद, वा गा तै अपने ससुरारै। वही घरै ...हुँचत अधयार हुइगा। कोरी का दामाद अपने मन मा स्वाचै ...कइहें कितना उरैत है अधयारे तक मा आ गा है। तौ फिर वा ...पूरी राज काट देत हैं। जइसै सुबेर हो है वा तुरतै घर पहुँच ...सब जने हैरान हुइके पूछत है कि सब कुछु ठीक तौ है ना? ...बहुत सुबेरे आ गे हऊ। इत्ता पूछै पर दामाद कहत है कि हाँ ...छु ठीक है।

...दामाद रात भर का तो भूखो परो रहै तो ओसे रहित ना गया ...हत है मैं बहुत भूखो हऊँ। सास कहत है कि अबै तो कुछु नहीं ...बनो। सो दामाद कहत है कि रात मा जौन सिकाहरे मा रोटी ...धोऊ वयीं दई द्या। सब ने हैरान हुइगे, तुम्हें कइसे पता? सो ...कहत है कि मैं इतना जानकार हऊं।

कोरी का दामाद सोचत है मैं या दरकी कुल दिन मा आव ...कुछु दिन रह लेओं, स्वागत पूरी भी बढ़िया हइ रहो है। एक दा ...के बिटिया गिती तलवा नहाएं सो बाखा कोऊ ने हार चुरा ...। अइसे-अइसे राजा का पता चलो कि कोरी का दामाद बड़ा ...कार है। अब राजा ने अपने पहरेदार भेजिस कि कोरी के दामाद ...मोय सामने पेश करो जाय। कोरी का दामाद दरबार मा आव अब ...ी पूरी बात बताई गै। वा ने कहिस कि मैं सकाए बतइहौं हार का ...ने चुराव है। अब कोरी के दामाद का मारै चिन्ता के नींद न आवैं ...द आमैं के लाने कहत है कि-

'आ मोरी निंदिया, सुखनिंदिया
सुबेरे काट राजा मोर घिचिया'

कोरी के दामाद की दो सारी रहैं। एक का नाम रहै निंदिया और दूसरी का नाम रहै सुखनिंदिया। बात या रहै कि जब राजा कै बिटिया तलवा नहए गैती। तबहीं निंदिया और सुखनिंदिया भी तलवा नहाऐं गयइतीं। इन दोऊ जने ने राजा के बिटिया का हार चुरा कै पत्थरा के तरे लुका दओ तैएन। उन्हें दोऊ बहिनिन का पता रहै कि जीजा तौ जानकार है यही से लागत है कि हमार नाम लेत है। दोऊ बहिनी सुचती हैं कि जीजा का बता दइये तो सही है, नहीं तौ राजा का पता चल जई तौ हमाई घिचिया कटा दई। यह सब सोच कै दोऊ बहिनी अपने जीजा का बता देती हैं कि जीजा हमई ने वा हार का चुरा कै पत्थरा तरे लुका दीन हैं। अब कोरी के दामाद ने राहत कै सास लइके सोगा।

अगले सुबेरे फिर बड़ठक लाग कोरी का दामाद भी पहुँचो। एखे बात वा राजा का लिवाकै वहीं तलवा के भीट मा धरो पत्थरा के हयां पहुँच गा। अब कहत है राजा साहब या पत्थरा का उलटाबा, यहीं हार धरो है। पत्थरा उलटाओ गा तो हार वयीं धरो रहे। कहे से निंदिया और सुखनिंदि ने बता दओ तैएन कि हार पत्थरा के तरे धरो है। अइसे विधान से राजा के बिटिया का बहुमूल्य हार मिल जात है। कोरी के दामाद का इनाम भी दओ जात है। अइसे-अइसे कोरी के दामाद कै बहुत सिद्धि होए लाग।

धीरे-धीरे समय बीते लाग। एक आदमी कोरी के दामाद के ह्यां आओ अब कहैं लाग कि एक महीना से मोई गइयां हिरा गई हैं। तुम तौ भइया जानत हऊ, विचार कै बता द्या कि मोई गइयां कहां हुइहैं?

कोरी के दामाद कै अइसी किस्मत कि जबै वा ससुरारै आवत ता, वही ने उयीं गइंयन का एक टूट-टूट घर रहे वही मा घुसेर दओ तएस। कोरी का दामाद भितरै-भितरै हँसो अब कहिस कि सकाय आए। मैं बतइहों कहाँ हैं तोई गइयां? इत्ता सुनकै वाने राहत कै सांस लयेस अब अपने घरै चलो गा। अगले सुबेरे कोरी का दामाद ने गइयां वाले का और गांव के दुइ - चार आदमिन का लिबा कै वयीं पहुँच गा, जहाँ वाने गइयंन का घुसेरो तयेस। जाकै कहत है कि खोल टटवा तोई ह्याई गइयां घुसी हैं आइसे से वाखी गइयां भी मिल जाती हैं। कोरी के दामाद कै वाह-वाह होये लाग। कोरी के दामाद का सब कोऊ 'कोरी का दामाद जानपाडे' के नाम से जानै लाग।

अब जिन्हा दामाद के घर कै तैयारी बनै लाग तौ सास ने ध्याधौं बनाकैं खबा दैस। वही या ध्याधौं इतना नीक लाग कि गली मा ध्याधौं-ध्याधौं बोलत चलों जात ता। ध्याधौं-ध्याधौं ऐसे बोलत ता कि अपने घरै जाकै बनवइहाँ। वही गली मा एक आदमी मिल गा जो अपनी जुंढी के बाड़ा उड़ाबत तै। कोरी के दामाद से कहिस, कहे भइया वाही कइती का जात हई, तौ मोर एक संदेश कह दइहे का? सो दामाद ने कहिस कि बता भइया का संदेश कहैं का हई? तौ वा आदमी ने कहिस कि तै कह दए बाड़ा हे-बाड़ा है, वा मोर बात समझ जई। एखे बात गली मा बाड़ा है - बाड़ा हे रटत चलो जात तै। आगे चलकै कोरी के दामाद ने बाड़ा हे-बाड़ा है संदेश बता दयेस। अइसे-अइसे दुई -तीन का संदेश बता दैस। अब हँसी कै बात तौ या रही कि वा संदेशन-संदेशन मा खुद कै बात भूल गा।

कोरी के दामाद ने अपने दिमाग मा बहुत जोर डारकै सोचिस लेकिन वही ध्यानै न आबै। स्वाचत-स्वाचत वा अपने घरै पहुँच गा। अब जायकै कहत है अपेन मिहरिया से, जौन तोए मइके मा बनाओ तैन। वही तै बना दे, वा मुही बहुत नीक लागत है। वाहै मैं खइहौं।

मिहरिया ने बहुत देर तक पूछिस कि नाम बता द्या सो मैं बनाए देत हुऊं। लेकिन जब वही ध्यानैं न आवै तौ वा का बतावै। यही बात मा दोऊ जनै के लड़ाई हुइगे। अब कोरी के दामाद ने अपने मिहरिया का लै डण्डा झोर डारिस।

या सब देख कै गांव के आदमी एकट्ठा हुइगे। आदमिन ने बात पूछी कि का हुइगां भइया? कहे आ लड़त हुऊ? कोरी के दमाद ने कहिस कि मैं कहत हऊं जो तोए मइके मा बनो ता वही बना दे। तौ या बनउतै निहाय। सो आदमिन ने कहो कि नाम बतइहे जब तौ वा बनाई। वाखै मिहरिया ने बताएस कि इत्ते बात मा तौ मुही मारो हएस।

आदमिन ने कहो कि अच्छा हई तै यार आदमी इत्ती बात मा तै मार-मार कै ध्याधौं बना दओ हई। ध्याधौं नाम सुनतैं ही कहत है मैं जोन स्वाचत तऊं पा गयौ-पा गयों। अब कोरी का दामाद कहत है कि मै इत्ती देर से ध्याधौं बनामैं के लाने तौ कहत रओ हऊं। अइसा सुनकै जित्ते जनै रहैं सब हसैं लागत हैं।

पी.एच.डी. शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय,
छतरपुर (म.प्र.) मो. 9754126434